रिक्शावाला



लाओ श

रिक्शावाला

उपन्यास

लाओ श

परिकल्पना प्रकाशन
लखनऊ

अनुवाद : रघुवीर सहाय

ISBN: 81-87425-89-X

मूल्य : रु. 65.00

पहला संस्करण : **जनवरी, 2006**

परिकल्पना प्रकाशन
द्वारा, जनचेतना, डी-68, निरालानगर,
लखनऊ-226 020 द्वारा प्रकाशित

क्रिएटिव प्रिन्टर्स, 628/S-28, शक्तिनगर, लखनऊ द्वारा मुद्रित

आवरण : **रामबाबू**

RICKSHAW WALA: *by* ***Lao She***



लाओ श

लेखक के बारे में

लाओ श (1899-1966) लेखक शू शय्वी (शू छिङछुन) का साहित्यिक नाम है। उनका जन्म पेइचिङ में हुआ था।

लाओ श एक ग़रीब परिवार में पैदा हुए थे। उनके पिता शाही मानचू गारद के सदस्य थे और बॉक्सर विद्रोह के समय 1900 में आठ देशों की संयुक्त सेना के साम्राज्यवादी सैनिकों के हाथों मारे गये। उस समय लाओ श महज़ एक बरस के थे। उनकी माँ और बड़ी बहन सैनिकों के कपड़े धोकर और मरम्मत करके अपनी जीविका चलाती थीं। बाद में उनकी माँ एक प्राइमरी स्कूल में महरी का काम करने लगीं। सारा परिवार निरक्षर था। लाओ श ने खैराती स्कूलों में पढ़ाई की और फिर नार्मल स्कूल से डिग्री ली। वह परिवार में अकेले व्यक्ति थे जो लिख-पढ़ सकते थे। पढ़ाई के दिनों में अक्सर जब वह दोपहर के भोजन के समय घर आते तो बटलोई खाली मिलती थी। वह पूछते "कुछ खाने को है?" और जब जवाब मिलता कि नहीं है तो साहसपूर्वक भूखे पेट स्कूल जाकर तीसरे पहर की कक्षाओं में पढ़ने बैठ जाते।

लाओ श ने एक जगह लिखा है, "बचपन में मैंने ऐसी कहानियाँ नहीं सुनीं जिनमें दुष्ट राक्षस बच्चों को खा जाते हैं; मेरी माँ ने मुझे जिन विदेशी शैतानों के बारे में बताया वे बहुत बड़े मुँह और भयानक दाँतों वाले परीकथा के किसी भी राक्षस से ज़्यादा बर्बर और क्रूर थे। और परीकथाएँ तो परीकथाएँ होती हैं, जबकि मेरी माँ की कहानियाँ सौ फ़ीसदी सच्ची थीं, और वे हमारे पूरे परिवार को प्रभावित करती थीं।"

कड़ी मेहनत करते हुए लाओ श ने पीकिङ टीचर्स कॉलेज से डिग्री ली। पढ़ाई पूरी करने के बाद कई छोटी-छोटी नौकरियाँ करते हुए वे अपना और अपनी माँ का ख़र्च चलाते रहे। सिर्फ़ 17 वर्ष की उम्र में उन्होंने एक प्राथमिक विद्यालय के प्रिंसिपल का काम किया और बाद में ज़िला सुपरवाइज़र बने। 1924 से 1929 तक लाओ श

ने लन्दन विश्वविद्यालय के "स्कूल आफ ओरियण्टल स्टडीज़" में चीनी भाषा के लेक्चरर के रूप में काम किया। यहीं पर उन्होंने ख़ूब साहित्य पढ़ा, ख़ासकर चार्ल्स डिकेन्स के उपन्यास, और अपना पहला उपन्यास लिखने का निर्णय किया। उनके पहले तीन उपन्यास लन्दन में ही लिखे गये।

1930 में स्वदेश लौटने के बाद, उन्होंने चीनान के छीलू (चीलू) विश्वविद्यालय और छिङ्ताओ के शानतुङ विश्वविद्यालय में अध्यापन किया। इस दौरान उन्होंने लिखना भी जारी रखा और जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध (1937-1945) के दौरान जब वह छुङछिङ में थे, राष्ट्रीय लेखक और कलाकार प्रतिरोध संघ को संगठित करने में सक्रिय रूप से भाग लिया। 1933 में प्रकाशित उनका उपयास 'बिल्ली देश' चीनी समाज के बारे में एक तीखी व्यंग्य रचना थी। अगले वर्ष आये उपन्यास 'स्वर्गिक भेंट' में उन्होंने अपनी व्यक्तिवादी सोच को त्याग दिया और समाज व्यवस्था के विरुद्ध व्यक्ति के अकेले संघर्ष की निरर्थकता पर बल दिया। 1936 में लिखा गया 'रिक्शावाला' उनका सबसे प्रसिद्ध उपन्यास है जो गाँव से शहर आये एक मेहनती रिक्शावाले की बर्बादी की दास्तान है।

चीन पर जापानी आक्रमण (1937-45) ने लाओ श के विचारों को आमूल बदल दिया। 1937 से 1945 के बीच उन्होंने कई नाटक लिखे, क्रान्तिकारी प्रचार का काम किया और अखिल-चीन जापान-विरोधी लेखक महासंघ के अध्यक्ष रहे। दूसरे विश्वयुद्ध के बाद तीन खण्डों में लाओ श का एक वृहद उपन्यास प्रकाशित हुआ जिसमें मंचूरिया पर जापानी कब्ज़े के दौरान पीकिङ के जीवन का वर्णन है। 1946 से 1949 के वर्षों में लाओ श अमेरिका में रहे। उन्होंने इस दौरान अनेक लेक्चर दिये और लेखन कार्य भी करते रहे। 'रिक्शावाला' का अंग्रेज़ी अनुवाद 1945 में प्रकाशित हुआ था और अमेरिका में 'बेस्टसेलर' का दर्ज़ा पा चुका था। हालाँकि अनवादक ने मनमाने ढंग से उसका अन्त सुखद बना दिया था।

1949 में क्रान्ति के बाद लाओ श चीन लौट आये। वह नये चीन के नवनिर्माण में तन-मन से लग गये और केन्द्रीय सरकार प्रशासन परिषद की संस्कृति व शिक्षा समिति के सदस्य, राष्ट्रीय जन-प्रतिनिधि सभा के प्रतिनिधि, चीनी जन राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन की स्थायी समिति के सदस्य, साहित्य और कला क्षेत्रों के चीनी महासंघ के उपाध्यक्ष, चीनी लेखक संघ के उपाध्यक्ष और पेइचिङ लेखक व कलाकार महासंघ के अध्यक्ष के रूप में काम करते रहे।

नये चीन की स्थापना के बाद उन्होंने "ड्रैगन दाढ़ी नाला", "वसन्त के फूल और शरद के फल", "फाङ चनचू", "टी हाउस" और अन्य बहुत से लोकप्रिय नाटक लिखे। उन्हें चीन में अत्यधिक सम्मान प्राप्त है, तथा उनको "जन-कलाकार" और "भाषा का महापण्डित" कहा जाता है। 1966 में उनका निधन हुआ।

'रिक्शावाला' उपन्यास के बारे में

बचपन और किशोरावस्था में लाओ श के सभी पड़ोसी भी गरीब थे। वह उन्हें समझते थे और उनके बारे में सब कुछ जानते थे। ये पड़ोसी अलग-अलग धन्धों में लगे हुए थे। कुछ रिक्शा चलाते थे, अन्य कुछ कुली, रद्दी बटोरने वाले, कलाकार, ख़िदमतगार या फेरीवाले थे।... स्वयं लाओ श ने रिक्शा कभी नहीं चलाया, मगर उनके दोस्त रिक्शा चलाते थे और उन्हीं के साथ रहकर वह बड़े हुए थे। रिक्शावाला के सोलहवें अध्याय में उन्होंने विस्तार से उस चाल का वर्णन किया है जिसमें श्याङचि और बाघिन रहते थे। वह बताते हैं कि ईंटों के ठण्डे फ़र्श पर बूढ़े भूखे सो जाया करते थे, औरतें बूढ़ों और छोटों के सो जाने के बाद दूसरों के कपड़े धोने, सिलने और मरम्मत करने में मिट्टी के तेल की ढिबरी जलाकर बैठ जाया करती थीं। जवान लड़कियों के पास पायजामे नहीं होते थे जिससे उन्हें घर में बन्द रहना पड़ता था और वे अपने इस स्वाभाविक कारागार में चिथड़े लपेटे हुए माँओं का हाथ बँटाया करती थीं। इन सब व्यक्तियों को लाओ श ने अपने बचपन की स्मृतियों के आधार पर चित्रित किया है। एक लघु निबन्ध में उन्होंने बताया है कि नव वर्ष के उत्सव के आगमन पर उन्हें कभी ख़ुशी नहीं होती थी क्योंकि यह उत्सव उन्हें बचपन के उन अनेक अवसरों की याद दिला जाता था जब घर में कुछ खाने को नहीं था और वह दूसरों के पटाखों का शोर सुनते-सुनते रात को जल्दी ही सो गये थे।

लाओ श कभी विश्वविद्यालय पढ़ने नहीं गये। नार्मल स्कूल से उत्तीर्ण होने के बाद अध्यवसायी अध्ययन करके उन्होंने ज्ञान प्राप्त किया था। कम उमर में ही उन्हें सारे परिवार के भरण-पोषण का भारी दायित्व सम्भालना पड़ा। एक घनिष्ठ मित्र ने याद किया है कि उसने एक बार उन्हें कड़ाके के जाड़े में नाकाफ़ी कपड़े पहने कमरे में बड़ी मेहनत से काम करते देखा, और वहाँ हवा के झोंके आ रहे थे। लाओ श ने पीड़ा को छिपाते हुए मुस्कराकर उसे बताया कि बूढ़ी माँ के वास्ते कुछ पैसे चाहिए थे, इसलिये उन्होंने अपना फ़र का लबादा गिरवी रख दिया था। निस्सन्देह ये सब अनुभव रिक्शावाला के लेखन में प्रचुर आधार-सामग्री बने परन्तु लाओ श इतने से ही सन्तुष्ट नहीं थे। पुस्तक लिखते समय उन्होंने अन्य सामग्री एकत्र करने में बहुत समय लिया। और अनेक मित्रों से अनुरोध भी किया कि पेइफिङ के रीति-रिवाज़ों के विषय में जो कुछ जानते हों समय-समय पर या बाक़ायदा बताते या लिखकर देते रहें। यह सारी जानकारी उन्होंने बड़ी सावधानी से एकत्र की, चाहे वह उनके लिये उपयोगी रही हो या न रही हो।

रिक्शावाला के अन्तिम पैरा में लाओ श ने लिखा है, "श्याङचि, माननीय, उद्यमी, स्वप्नजीवी, स्वार्थी, विद्रोही, सशक्त, महा श्याङचि असंख्य अन्तिम संस्कारों में शोक

मना चुका था। और उसे नहीं पता था कि वह पतित, आत्मकेन्द्रित, अभागा उस व्यक्तिवादी रुग्ण समाज में मरीज बन गया है तथा उसे स्वयं अपने को कब और कहाँ दफ़न करना होगा।" लाओ श ने श्याङचि के जीवन को अन्त दुखभरा दिखाया था। वह अन्त ठीक वैसा ही था जैसा बछेड़े के प्यारे बाबा ने कहा था, "अकेले अपना भाग्य बना पाना दुनिया में सबसे मुश्किल काम है। अकेले आदमी का भविष्य ही क्या है? कभी टिड्डा देखा है? वह अकेले बड़ी लम्बी छलाँग लगा लेता है, मगर किसी छोटे बच्चे को उसे पकड़ने और बाँधने दो और वह उड़ भी नहीं सकता। लेकिन उनका पूरा गिराह हो तो क्या कहने! वे कुछ दिनों में ही कई एकड़ फसल चाट जाते हैं और कोई कुछ नहीं कर पाता!" एक ही रास्ता है कि सैकड़ों और हज़ारों श्याङचि संगठित होकर एक साथ संघर्ष करें और मुक्ति पायें। श्याङचि के जीवन के दुखान्त का यही सामाजिक सन्देश है।

पहला अध्याय

यह कहानी श्याङचि के बारे में हैं, ऊँट के बारे में नहीं, क्योंकि ऊँट तो श्याङचि का सिर्फ उपनाम था। तो हम श्याङचि से आरम्भ करें। इसी बहाने यह भी बता देंगे कि ऊँटों से उसका नाम कैसे जुड़ गया।

पेइफिङ के रिक्शाचालक कई विविध श्रेणियों में बाँटे जा सकते हैं। एक श्रेणी में नौजवान आते हैं, जो तगड़े, तेज चलने और रात दिन काम कर सकने वाले हैं। वे बढ़िया रिक्शा किराये पर लेते हैं और अपनी मनमरजी से काम शुरू या छुट्टी करते हैं। वे अपने रिक्शे रिक्शा अड्डे पर या किसी हवेली के फाटक पर ले जाते और तेज ले जाये जाने वाले ग्राहक का इन्तज़ार करते हैं। क़िस्मत अच्छी हुई तो एक बार में ही एक या दो चाँदी के युवान* कमा लेंगे। मगर ऐसा भी हो सकता है कि सारा दिन निठल्ले बीते और रिक्शा का भाड़ा भी न कमा पायें। जो भी हो, यह नफ़ा-नुक़सान उठाना उन्हें आता है। इन बेचारों की आम तौर पर दो इच्छायें होती हैं एक यह कि माहवारी तनख़्वाह पर काम मिल जाये और दूसरी यह कि अपना स्वयं का रिक्शा हो। अपना रिक्शा होने पर इससे फर्क नहीं पड़ता कि उन्हें माहवारी काम मिला है या छिटपुट सवारियाँ ले जानी हैं क्योंकि रिक्शा तो उनकी सम्पत्ति है ही।

दूसरी श्रेणी में कुछ ज़्यादा उमर के आदमी और कुछ ऐसे आदमी आते हैं जो सेहत के कारण इतना तेज नहीं दौड़ सकते या वे जो कि पारिवारिक कारणों से एक दिन की दिहाड़ी भी छोड़ नहीं सकते। उनमें से ज़्यादातर काफ़ी नये-नये रिक्शे चलाते हैं और चालक तथा रिक्शा दोनों साफ़-सुथरे और चुस्त होने के कारण अच्छी मज़दूरी माँग सकते हैं। उनमें से कुछ तो सबेरे से लेकर दिनभर और फिर रातभर काम करते हैं, कुछ सिर्फ आधा दिन। इन आधे दिन वालों में जो ज़्यादा फुर्तीले हैं वे बारहों महीने रात की पाली पसन्द करते हैं। रात को अधिक सावधानी और होशियारी ज़रूरी है। इसलिये मजूरी भी ज़्यादा है।

चालक चालीस के ऊपर और बीस के नीचे हों तो उन्हें इन दोनों श्रेणियों में से किसी में भी जगह मिलना कठिन हो जाता है। इनके रिक्शा खड़खड़िया होते हैं और वे रात की पाली में चलने का साहस नहीं कर पाते। इसलिये उन्हें तड़के ही काम शुरू कर देना पड़ता है ताकि तीसरे पहर तीन-चार बजे तक रिक्शा भाड़ा चुकानेभर का पैसा तो कमा ही लें और दिनभर की कमाई में से जीवन की ज़रूरतें भी पूरी हो जायें। उनकी खड़खड़िया गाड़ियाँ और सुस्त चाल कम पैसों पर कई-कई खेप दौड़ने

* चीनी मुद्रा का नाम

को उन्हें मज़बूर करती हैं। यही लोग तरबूज, फल या तरकारी बाज़ारों तक सौदा ढोकर ले जाते हैं। इसमें कमाई कम है परन्तु इतना तो है कि धीरे-धीरे ढो सकते हैं और काम भी मिल जाता है।

बीस से कम उम्र वाले—इनमें से कुछ ग्यारह या बारह वर्ष की उमर से इसी धन्धे में लगे हैं—शायद ही कभी तेज चालक बन पाते हैं क्योंकि लड़कपन में ही अपनी ताकत पर बहुत ज़्यादा बोझ लादकर वे चुक गये होते हैं। वे जीवनभर रिक्शा चलाते रहें तो भी अव्वल दर्जे के मज़दूर इस धन्धे में भी नहीं बन पाते। चालीस के ऊपर वालों की बात पूछें तो उनमें से कुछ आठ-दस वर्ष रिक्शा चला-चलाकर अपनी टाँगे बेदम कर चुके हैं और अब यह सोचकर कि देर सबेर एक दिन लुढ़ककर सड़क पर जान गँवा बैठेंगे, वे दूसरे दर्जे का स्थान पाकर भी खुश हैं। उनका रिक्शा चलाने का अन्दाज़, मोल-भाव करने में उनकी चतुराई, कभी छोटे रास्ते से तो कभी लम्बे रास्ते से सवारी को ले जाने की उनकी होशियारी ये सब अपने अतीत के गौरव का स्मरण दिलाकर उन्हें खुश रखने के लिये काफ़ी है और वे रिक्शाचालकों की नौजवान पीढ़ी को तिरस्कार से देखते हैं। परन्तु अतीत के गौरव की ये झाँकियाँ उनके धुँधले भविष्य को कम धूमिल नहीं कर सकतीं। इसलिये वे जब पसीना पोंछते हैं तो हर बार आह भरते हैं।

तो भी चालीस के ऊपर वाले चालकों के अन्य एक समूह से तुलना करें तो दिखेगा कि उनका हाल अभी एकदम बिगड़ा नहीं है। इस समूह में वे लोग हैं जिनका रिक्शा से कभी कोई सम्बन्ध नहीं रहा; उन्हें तो मज़बूरी के कारण यह धन्धा करना पड़ा था। जब पुलिसकर्मी, स्कूल के चपरासी और सफाई कर्मचारी नौकरी से हटा दिये जाते हैं और बेरोज़गार कारीगर या दिवालिया दुकानदार इतने गरीब हो जाते हैं कि घर की कोई चीज़ बेचने या गिरवी रखने तक को नहीं बचती तो वे दाँत भींचते हैं, आँखों में आँसू भरकर हताशा में यह आख़िरी कदम उठाते हैं, यह जानते हुए कि यह एक अन्धी गली है। इन लोगों ने अपने जीवन का सबसे अच्छा समय पहले ही बेचकर खा लिया है और अब मक्के के टिक्कड़ों पर इनका गुजारा होता है, और उन्हीं से वह खून और पसीना बनता है जो सड़क पर टपकता चलता है। इन निर्बल अनुभवहीन और अकेले व्यक्तियों को इनके साथी चालक भी तिरछी नज़र से देखते हैं। उनके रिक्शा बेहद बुरी हालत में हैं और टायर भी बार-बार पंक्चर होते रहते हैं। रिक्शा दौड़ाते समय भी वे सवारियों से माफ़ी माँगते रहते हैं और पन्द्रह थुङछ्येन* मिल जायें तो भी उसे अच्छी दिहाड़ी मान लेते हैं।

चालकों की एक और श्रेणी भी है। उनकी विशेषता यह है कि वे ख़ास-ख़ास इलाकों में सवारियाँ ले जाते हैं और उन्हें बहुत से खास तौर तरीके भी मालूम हैं। शीयुवान और हाएत्येन के इर्दगिर्द पश्चिमी उपनगर में रहने वाले चालकों का येनचिङ

*थुङछ्येन (चौकोर छेद वाला ताँबे का सिक्का) = चाँदी के युवान का हज़ारवाँ हिस्सा।

और छिङह्वा विश्वविद्यालयों में अथवा पश्चिमी पहाड़ियों में सवारियाँ ले जाना पसन्द करना स्वाभाविक ही है। आनतिङमन दरवाज़े के बाहर के उत्तरी उपनगर के चालक छिङहो और पेइयुवान मार्ग पर चलना चाहते हैं और युङ तिङमन दरवाज़े के बाहर दक्षिण में रहने वाले नानयुवान तक सवारी ले जाने में भी एतराज नहीं करते।... ये लम्बे रास्तों पर रिक्शा दौड़ाने वाले जरा-जरा दूर सिर्फ तीन या पाँच थुङछ्येन के लिये जाना पसन्द नहीं करते। लेकिन तुङच्याओमिनाश्याङ के "राजनयिक क्षेत्र" वाले रिक्शाचालकों के आगे वे भी कमजोर पड़ जाते हैं।

असल में लम्बे रास्तों पर दौड़ने वाले चालक ये ही हैं। वे सिर्फ विदेशी व्यापारियों को ले जाते हैं और राजनयिक बस्ती से जेड फव्वारा पर्वत, ग्रीष्म प्रासाद या पश्चिमी पहाड़ियों तक एक ही साँस में दौड़ने की अपनी क्षमता पर उन्हें घमण्ड है। दम का सवाल तो अलग है, उन्हें ऐसी तरकीब भी आती है कि उनके प्रतिद्वन्द्वियों के लिये उनकी सवारियाँ छीन ले जाना नामुमकिन है—वे सबके सब विदेशी भाषाएँ बोलते है। अंग्रेज और फ्रांसीसी सैनिक ग्रीष्म प्रासाद, युङहो लामामठ या "आठ गलियाँ" रण्डी बाजार जाना चाहें तो वे फौरन समझ सकते हैं। अपनी विदेशी भाषाएँ वे किसी को सिखाते नहीं। उनका दौड़ना भी कुछ विशेष है। सिर झुकाये, न दायें देखना न बायें और प्रकटतः दुनिया से विरक्त लेकिन सम्पूर्ण रूप से आश्वक्त होकर सड़क के किनारे लीक में दौड़ते रहना उनकी विशेषता है। वे विदेशी सवारियाँ लेते हैं, इसलिये बाकी रिक्शाचालकों के लिये ज़रूरी नम्बरदार सलूका पहनना उनके लिये अनिवार्य नहीं है। उसकी जगह वे सब बाँहदार सफ़ेद कुर्तियाँ, ढीलीढीली काली या सफ़ेद पतलूनें पहनते और टखनों पर उन्हें फीतों से बाँधकर काले कपड़े के मोटे तलों वाले जूते चढ़ाए रहते हैं, जिनके ऊपर बीचोंबीच पट्टी सिली रहती है। वे साफ़, चुस्त और चौकस हैं। बाकी रिक्शावाले उनकी यह सजधज देखकर न तो सवारी के लिये उनसे खींचतान करते न उनके साथ दौड़ने में होड़ लगाते हैं। वास्तव में वे किसी बिल्कुल अलग धन्धे के ही लोग लगते हैं।

इस संक्षिप्त विश्लेषण के बाद हम श्याङचि के अपने रुतबे की ओर लौटें ताकि उसे सही तौर पर जान सकें कि इस मशीन में वह कौन सा खास पेंच है। श्याङचि को ऊँट कहा जाने से पहले वह तुलना में औरों से अधिक स्वाधीन रिक्शाचालक था। दूसरे शब्दों में वह जवान और तगड़ा और खुद अपने रिक्शा का मालिक था। अपना रिक्शा होने से वह अपने भाग्य का आप स्वामी था यानी ऊँचे दरजे का चालक था।

मगर यह स्थिति प्राप्त करना आसान नहीं था। इसमें उसे कम से कम तीन या चार साल लगे थे और पसीने की हज़ारों बूँदें उसने अपना खुद का रिक्शा हासिल करने में बहायी थीं। इसके लिये उसने आँधी और बरसात में दाँत भींचकर रिक्शा दौड़ाया और खाने-पीने में बहुत किफ़ायत की थी। वह रिक्शा उसके संघर्षों और

कष्टों के सुफल का प्रतीक था, जैसे सैकड़ों मोर्चों पर लड़ चुके योद्धा की विजय का प्रतीक केवल एक पदक हुआ करता है। जिन दिनों वह रिक्शा किराये पर लिया करता था, उसकी दशा सूर्योदय से सूर्यास्त तक उत्तर, दक्षिण, पूरब और पश्चिम में हरेक के हुक्म पर नाचते हुए लट्टू की सी रही थी। मगर इस नाचने से वह इतना कभी नहीं चकराया कि अपना उद्देश्य ही भूल बैठे।

उसकी कल्पना में अभी वह रिक्शा प्राप्त होना बाकी था, जो उसे स्वाधीन और स्वतंत्र बना देता और खुद हाथों और पैरों की तरह उसका अंग ही बन जाता। अपना रिक्शा होने पर रिक्शा मालिक उसे डरा-धमका न पाते और खुद उसे किसी की खुशामद न करनी पड़ती। अपने बूते और खुद अपने वाहन से रोज़ी कमाना बायें हाथ का खेल हो जाता।

श्याङचि संकटों से नहीं डरता था, न उसे बहुतेरे चालकों जैसी कोई बुरी आदतें ही थीं। अपना सपना साकार करने के लिये उसमें बुद्धि और कठिन परिश्रम करने की यथेष्ट शक्ति थी। अगर उसकी परिस्थिति कुछ बेहतर रही होती और वह थोड़ा और पढ़ा-लिखा होता तो वह "च्याओफी ध्यान"* में कभी न आया होता। और वह कोई भी धन्धा क्यों न पकड़ता, उसने हर अवसर का अधिक से अधिक उपयोग किया होता। दुर्भाग्य से, रिक्शाचालक बनने के अलावा उसके सामने कोई चारा नहीं था। जब बन गया तो उसने सोचा कोई बात नहीं इस काम में भी वह अपनी योग्यता और बुद्धि साबित कर दिखायेगा। अगर वह नरक में पड़ी आत्मा भी होता तो शायद अपनी परिस्थिति का अच्छे से अच्छा उपयोग करके दिखा देता।

श्याङचि गाँव में पैदा हुआ और पला था। माँ-बाप और उनकी कुछ मू** अनोपजाऊ जमीन गँवा दी और अठारह वर्ष की उमर में शहर भाग आया। जब वह आया तो उसमें ग्रामीण युवक की सी दृढ़ता और सरलता थी, और उसने अनेक ऐसे कामों पर हाथ आजमाया जिनमें सिर्फ बल की ज़रूरत थी। लेकिन शीघ्र ही वह समझ गया कि रिक्शा चलाना धन कमाने का अपेक्षाकृत आसान रास्ता था। बाकी कठोर परिश्रम वाले कामों में वेतन सीमित था जबकि रिक्शा चलाने से विविध अनुभव और अनेक अवसर मिलते थे क्योंकि यह तय नहीं था कि कब और कहाँ किसी को आशा से अधिक आमदनी हो जाती। निश्चय ही वह यह भी जानता था कि यह केवल संयोग की बात नहीं होती और रिक्शा को सुन्दर और रिक्शाचालक को फुर्तीला भी दिखना चाहिए, नहीं तो समझदार सवारियाँ पास नहीं आतीं।

सोच-समझकर श्याङचि ने पाया कि उसके पास ज़रूरी योग्यताएँ हैं क्योंकि वह युवा और हृष्टपुष्ट था। यद्यपि अनुभव न होने के कारण वह आरम्भ में ही नया रिक्शा नहीं चला सकता था पर यह कोई अकाट्य बाधा नहीं थी; और अपने सुगठित

* रिक्शाचालकों की व्यवस्था के लिये स्थानीय नाम।

** पन्द्रह मू = एक हेक्टर।

शरीर के कारण वह आश्वस्त था कि दस दिन या दो सप्ताह के बाद वह बड़ी सुधराई से रिक्शा चलाने लगेगा। तब वह एक लकदक नया रिक्शा भाड़े पर लेगा और हो सकता था कि जल्द ही एक मासिक काम मिल जाता। फिर कुछ बरस के अन्दर किफ़ायत और बचत करके वह अपने लिये एक सचमुच बढ़िया रिक्शा खरीद सकने लायक हो सकता था। अपनी कसी हुई देह को देखकर वह जान गया कि उसका सोचना सही था; केवल कुछ समय लग सकता था। यह लक्ष्य जो अपने सम्मुख रखा था, चंडूखाने की बात नहीं था। यह निश्चय ही पूरा होता।

अभी वह बीस का भी नहीं हुआ था परन्तु लम्बा और तगड़ा दीखता था। उमर ने उसके शरीर को अभी कोई निश्चित भंगिमा नहीं दी थी परन्तु वह पुरुष दिखने लगा था—जिसके चेहरे पर सादगी झलकती हो और कुछ-कुछ खिलवाड़ का भाव भी हो। ऊँचे दर्जे वाले चालकों को देख-देखकर उसने भी योजना बनायी कि वह कैसे कमर पर पेटी कसकर अपनी सीधी कमर और तने हुए सीने को दिखाएगा जिसका लाभ उसे मिलेगा ही। उसने गर्दन उठाकर अपने कन्धे निहारे; वे कितने चौड़े और सुन्दर थे! उसकी छरहरी कमर, चौड़ी सफ़ेद पतलून और काले फीतों से बँधे टखने उसके "बड़े" पैरों को प्रदर्शित करेंगे। निश्चय ही वह नगर का सबसे विशिष्ट रिक्शाचालक हो जायेगा। अपने भोलेपन में यह बात मन ही मन सोचकर वह खुश हुआ।

श्याङचि रूपवान नहीं था। वह आकर्षक लगता था तो अपने चेहरे के भाव के कारण। उसका सिर छोटा था, आँखें गोल-गोल थीं, नाक मोटी थी और भौंहें घनी और छोटी थीं। खोपड़ी वह हमेशा सफाचट रखता था। गालों पर माँस चढ़ा हुआ नहीं था मगर गर्दन लगभग उतनी ही मोटी थी, जितना सिर। उस जमाने में उसके चेहरे का रंग गुलाबी था और गाल की हड्डी से लेकर दाहिने कान तक एक बड़ा चमकदार निशान पड़ा हुआ था। बचपन में पेड़ के नीचे सोते समय एक गधे ने उसे काट खाया था। तभी यह निशान पड़ गया था। वह अपनी शक्ल-सूरत पर बहुत ध्यान नहीं देता था। उसके लिये शक्ल और शरीर दोनों ही एक जैसे प्यारे थे, क्योंकि दोनों ही सुगठित और सशक्त थे। वास्तव में उसकी दृष्टि में उसका चेहरा उसके शरीर का एक और ही अंग था और उसमें शक्ति होना ही दरकार था। शहर में आने के बाद भी वह काफ़ी देर तक हाथों के बल खड़े होने का व्यायाम कर सकता था और जब वह इस दशा में खड़ा रहता तो उसे लगता कि सिर से पैर तक वह एक सीधा वृक्ष बन गया है।

श्याङचि था भी कुछ कुछ वृक्ष की भाँति, सशक्त, मौन परन्तु जीवन से पूर्ण। वह समझदार था और उसकी अपनी योजनाएँ थीं परन्तु वह उन्हें किसी को बताना नहीं चाहता था। रिक्शाचालकों के बीच निजी शिकायतें और कठिनाइयाँ सार्वजनिक चर्चा का विषय रहती हैं और रिक्शा अड्डों पर, छोटे चाय घरों में या भीड़ से भरे आँगनों में

हर कोई अपनी दिक्कतें बताता है या उनको सबके सामने रखता है। फिर ये लोकगीत की भाँति एक से दूसरे कान तक पहुँचती और सार्वजनिक सम्पत्ति बन जाती हैं। देहाती होने के कारण श्याङचि नगरवासियों की तरह वाक्पटु नहीं था; यदि मुखरता को एक प्राकृतिक देन माना जाये तो उसे यह प्राप्त नहीं थी। अतः उसने नगरवासियों की तरह चुगलखोरी की ही नहीं। उसने अपने काम से काम रखा और जबान पर बस, जिससे उसे अपने अन्तर में झाँकने का हमेशा अवसर मिलता रहा और सोचने का भी। अपने मन में पक्का निश्चय कर वह अपनी योजना के अनुसार आगे बढ़ता और फिर उसमें सफलता न मिलने पर दो-तीन दिन के लिये मौन हो जाता। इस बीच वह दाँत भींचकर संकल्प किये रहता मानो अपने ही हृदय को दण्ड दे रहा हो।

जब उसने एक बार रिक्शाचालक बनने का फैसला कर लिया तो काम शुरू करने में देर न की। सबसे पहले उसने एक टूटा सा पुराना रिक्शा किराये पर लिया ताकि कुछ अभ्यास कर ले। पहले दिन सच पूछो तो उसे कुछ काम न मिला; दूसरे दिन धन्धा अच्छा रहा। मगर वह अगले दो दिन चित्त पड़ गया क्योंकि उसके टखने बुरी तरह सूज गये थे। उसने यह दर्द बर्दाश्त किया क्योंकि वह जानता था कि यह अनिवार्य है। और जब तक वह इस परीक्षा में उत्तीर्ण नहीं होता, वह वास्तव में कभी आगे बढ़ नहीं पाएगा।

उसके टखने जब चंगे हो गये तो वह भलीभाँति दौड़ने लगा और उसे खुशी हुई कि अब उसे किसी बात का डर नहीं रहा था। असल में वह नगर के भूगोल को बखूबी जानता था और कभी लम्बा रास्ता भी पकड़ ले तो फ़िक्र नहीं करता था क्योंकि उसके पास ताकत काफ़ी से ज़्यादा थी। जब यह सीखने की बारी आयी कि रिक्शा कैसे चलाना चाहिए तो वह काम भी मुश्किल नहीं रहा, क्योंकि उसे पहले का बोझ ठेलने, उठाने और लादने का तजुर्बा था। इसके अलावा उसने हिसाब लगाया कि सावधानी बरतकर और पैसे के लिये सवारियों के वास्ते होड़ न लगाकर वह मुसीबतों से बचा रह सकता था।

जब भाड़े के मोलभाव का मौका आता तो वह बोलने में इतना सुस्त और जल्दी घबड़ा जाने वाला साबित होता कि अपने चतुर साथियों से मुकाबला न कर पाता। इसलिये वह रिक्शा अड्डों पर शायद ही कभी जाता, बल्कि वहीं खड़ा इन्तज़ार करता जहाँ दूसरे रिक्शे न होते। ऐसी एकान्त जगह में वह आहिस्ते-आहिस्ते मोलभाव कर लेता और कभी-कभी तो सिर्फ इतना कहना काफ़ी मानता कि "चलो-चलो, जो चाहे दे देना!" उसका ईमानदार, सीधा-सादा, दिलकश चेहरा देखकर उस पर विश्वास न करना कठिन हो जाता, क्योंकि लोगों की निगाह में यह असम्भव ही था कि ऐसा देहाती मूर्ख कभी किसी को ठग सकेगा। लोग यह समझ सकते थे कि वह देहात से नया-नया आया है, इसलिये न रास्ता जानता है न किराये की दरें। अगर कोई पूछता "क्या तुम यह पता जानते हो?" तो वह किसी मसखरे की तरह सब जानते हुए

खीसें निकालकर अपनी सवारी को दंग कर देता।

दो-तीन सप्ताह के अन्दर उसने दौड़-दौड़कर अपनी टाँगों को वाकई अभ्यस्त बना लिया और वह जानता था कि उसे दौड़ते देखने में मजा आता है। असल में दौड़ने की शैली ही बताती है कि रिक्शाचालक कितना कुशल है और उसका दर्जा क्या है। वे जो पाँव की ऊँगलियाँ बाहर को फैलाकर तलवों को ताड़ के पंखों की तरह पटकते हुए दौड़ते हैं निश्चय ही गाँव से आये हुए नौसिखिए माने जाते हैं। वे जो सिर झुकाकर पाँव घसीटते हुए दौड़ते हैं उनका दौड़ना कहने भर को ही दौड़ना होता है। वे पचास के ऊपर के लोग होते हैं। बाकी चालक जिनकी देह से शक्ति निचुड़ गयी है उनका तरीका दूसरा ही होता है। वे आगे को झुककर जोर लगाकर टाँगें ऊँचे-ऊँचे उठाते और हर कदम पर सिरों को ऊपर की ओर झटकते हैं, जैसे शक्ति और शालीनता से रिक्शा खींच रहे हों मगर वास्तव में उनकी रफ़्तार औरों से ज़्यादा नहीं रहती और यह अभिनय वे केवल आत्मसम्मान बनाये रखने के लिये ही करते हैं।

स्वाभाविक था कि श्याङचि ने इनमें से कोई शैली नहीं अपनायी। पीठ सीधी रखे लम्बे डग भरते और हर कदम शान्त, लचीले ढंग से उठाते वह दौड़ता था और रिक्शा के बम हचकोले नहीं खाते थे तथा सवारी बड़े धीरज से सुरक्षित पहुँच जाती थी। चाहे वह कितना ही तेज दौड़ रहा हो, वह अपने बड़े-बड़े तलवों को धरती पर एक दो बार हल्के से रगड़कर पलक मारते रिक्शा रोक सकता था। पीठ को तनिक झुकाये रिक्शे के बमों पर हल्की सी पकड़ के साथ वह फुर्तीला, लचीला और पाबन्द था और कभी हड़बड़ी में न दिखने पर भी वह सधे कदमों से तेज दौड़ता था। ये सब मासिक वेतन पर रखे गये रिक्शाचालकों में भी दुर्लभ गुण माने जाते थे।

उसने नया रिक्शा चलाना शुरू किया। उसी दिन पूछताछ करने से उसे पता चला कि लोचदार कमानियों, पीतल की उम्दा शिल्पकारी, तिरपाल के टप और सामने परदे, दो बत्तियों और लम्बी आवाज करने वाले पीतल के भोंपू वाले उस जैसे रिक्शा की क़ीमत चाँदी के एक सौ युवान से ऊपर थी। अगर रंग-रोगन और पीतल की शिल्पकारी बहुत अच्छी हालत में न हो तो वैसा रिक्शा खरीदने के लिये एक सौ युवान काफ़ी होंगे। रोज़ यदि वह एक माओ* अलग रखे तो तो सौ युवान जमा करने मे एक हज़ार दिन लग जायेंगे। एक हज़ार दिन! अरे, वह तो उसके लिये गिनना भी कठिन था कि यह कितना लम्बा अरसा होगा। पर वह अपना निजी रिक्शा खरीदने पर उतारू था, भले ही उसमें हज़ार छोड़ दस हज़ार दिन ही क्यों न लगें।

उसने तय किया कि पहला कदम तो मासिक वेतन पर एक काम ढूँढना है। अगर कोई ज़िन्दादिल मालिक मिल गया, जिसकी बड़ी मित्रमण्डली हुई, तो वह महीने

* युवान का दसवाँ हिस्सा।

में दस दावतों में जायेगा ही और बख़्शीश के तौर पर दो या तीन युवान भी देगा ही। इसमें वेतन से बचाए एक या दो युवान वह जोड़ दे तो तीन से पाँच युवान हर महीने यानी पचास से साठ युवान सालाना बचत हो जायेगी! इस तरह वह अपने लक्ष्य के काफ़ी ज़्यादा निकट पहुँच जायेगा। और न तो वह तम्बाकू, शराब या जुए में पैसा फूँकता था तथा न ही उसे परिवार चलाना पड़ता था, इसलिये उसे बस कठिन संकल्प करके जुट जाने की ज़रूरत थी और आगे सब कुछ ठीक-ठाक होना निश्चित था। उसने मन ही मन प्रण किया कि डेढ़ साल में वह, श्याङचि अपना खुद का रिक्शा चलाने लगेगा। और वह रिक्शा एकदम लकदक नया होगा, रंग-पोतकर नया बनाया हुआ नहीं।

वाकई उसने मासिक नौकरी हासिल कर ली। परन्तु यथार्थ का आशाओं से पूरी तरह मेल नहीं बैठता और डेढ़ साल तक दाँत भींचकर जुटने के बाद भी उसकी कल्पना साकार नहीं हो पायी। यह सच है कि उसने मासिक वेतन पर कई काम किये और काम मेहनत से किये। परन्तु संसार में ताली दो हाथों से ही बजती है। और उसकी चौकसी भी उसके मालिकों को उसकी छुट्टी करने से रोक न सकी। कभी दो या तीन महीने बाद और कभी केवल सप्ताह या दस दिन बाद ही उसे नई नौकरी ढूँढ़नी पड़ी। स्वाभाविक था कि नई नौकरी की प्रतीक्षा करते हुए उसे फुटकर सवारियाँ बैठानी पड़ीं। यह कुछ ऐसा ही था जैसे कोई आदमी एक घोड़े की तलाश में दूसरे घोड़े पर सवार हो। बात यह थी कि वह निठल्ला रह ही नहीं सकता था।

जब-जब ऐसा होता तो काम बिगड़ जाता। वह कसकर मेहनत करता, सिर्फ रोज़ी कमाने के लिये ही नहीं बल्कि अपना रिक्शा खरीदने के लिये पैसा बचाने के वास्ते भी। जो हो अपने पर इतना जोर डालना हमेशा जोखिम से भरा होता है और उसे दौड़ते समय ध्यान केन्द्रित करने में कठिनाई होने लगी। उसका मन विचलित रहता और जितना अधिक वह सोचता उतना ही आतंकित और अशान्त हो जाता। ऐसे ही रहेगा तो वह अपना रिक्शा कब ले पाएगा? ऐसा हो क्यों रहा था? क्या वह यथेष्ट परिश्रम नहीं कर रहा था? इन विचारों में डूबा वह पहले की तरह सतर्क नहीं रह पाता था। उसके टायर कील-काँटों से पंक्चर हो जाते, और तब सारे दिन के लिये काम रोक देने के अलावा कोई रास्ता न बच रहता। इससे भी बुरा यह था कि कभी कभी वह सड़क चलतों से टकरा जाता और एक बार तो चौराहे को तेज़ी से पार करते हुए भीड़ मे उसके एक पहिए की टोपी ही खो गयी। कहीं उसके पास मासिक नौकरी होती तो यह सब क्यों होता, परन्तु इस हताशा ने उसे फूहड़ और अनाड़ी बना दिया था। निश्चय ही उसे हरजाना भरना पड़ा और हताशा बढ़ गयी। इससे वह और बड़ी मुसीबतों से बचने के लिये कभी-कभी सारा दिन सोया रहता। जब उठता तो समय बरबाद करने की ग्लानि उसके मन में भर जाती।

ऐसे कालों में भी वह जितना ज़्यादा चिन्तित होता लोहे का बना होने के भ्रम में

उतनी ही ज़्यादा मेहनत करता और किफायत बरतता। किन्तु उसे पता चला कि वह भी बीमार पड़ सकता है। फिर भी दवा पर पैसा खर्च करने में वह बहुत कुढ़ता रहता। परिणाम यह हुआ कि उसकी दशा बिगड़ती गयी और दवा पर पैसा तो फूँकना पड़ा ही उसके साथ कई-कई दिन लगातार आराम भी करना पड़ा। इन रुकावटों पर वह दाँत भींचता तथा और भी ज़्यादा मेहनत करने के लिये मजबूर हो जाता, लेकिन इससे धन आने में कोई तेजी नहीं आयी।

आख़िरकार उसने किसी तरह चाँदी के सौ युवान जोड़ ही लिये। इसमें पूरे तीन साल लग गये थे।

अब वह और प्रतीक्षा नहीं कर सकता था। शुरू में तो उसने एकदम नया और उम्दा रिक्शा खरीदने की सोची थी परन्तु अब उसे लगा कि सौ युवान तक में मिलने वाले रिक्शे से ही सन्तोष करना पड़ेगा। नहीं, अब वह और अधिक प्रतीक्षा कर ही नहीं सकता था, क्योंकि ऐसा कुछ भी हो सकता था कि वह कुछ युवान गँवा बैठे! संयोग से उसने सुना कि एक लगभग वैसा ही रवायती बनावट वाला रिक्शा बिक रहा है जैसा वह चाहता था और उसका भावी खरीदार दाम चुका नहीं पा रहा था। खरीदार का अपनी पेशगी रकम पर हक नहीं रह गया था, इसीलिये रिक्शा दुकानदार असल दाम, जो सौ युवान से ऊपर था, से कम लेकर भी रिक्शा बेचने को तैयार था।

उत्तेजना के मारे तमतमाए हुए श्याङचि ने काँपते हाथों से छियानवे य्वारन खनका कर गिनते हुए कहा, "मैं यह रिक्शा लूँगा!"

दुकानदार दाम बढ़ाकर सौ युवान करने की उम्मीद में रिक्शे को दुकान के अन्दर से बाहर और बाहर से अन्दर ले गया, टप को खोला और बन्द किया और भोंपू बजाकर सुनाया तथा इस बीच गाड़ी की धुआँधार प्रशंसा करता रहा। अन्त में उसने पहिये के अर ठोंककर दिखाये।

"इनकी आवाज सुनो," वह बोला। "घण्टी की तरह टनटनाते हैं! तुम इसे चला-चलाकर इसकी धज्जियाँ उड़ा दोगे मगर एक भी अर मुड़ेगा नहीं। अगर मुड़ जाये तो लाकर मेरे सिर पर पटक देना! सौ से एक फ़न* भी कम नहीं, और यह तुम्हारा हो गया!"

श्याङचि ने अपना धन फिर गिना। "मैं यह रिक्शा चाहता हूँ। छियानबे!"

दुकानदार समझ गया कि एकतरफा दिमाग़ वाले आदमी से पाला पड़ा है। उसने पहले धन को देखा, फिर श्याङचि को और अन्त में आह भरी, "अच्छा, लो दोस्ती की ख़ातिर मैं तुम्हें दे देता हूँ। छह महीने की गारण्टी है और सारी गाड़ी चकनाचूर न कर लाये तो हर तरह की मरम्मत भी कर दूँगा। लो, यह गारण्टी ले जाओ!"

श्याङचि ने जब गारण्टी लेकर रखी उसके हाथ और भी ज़्यादा काँप रहे थे और

*युवान का सौवाँ हिस्सा।

जब रिक्शा बाहर निकाला तो आँसू फूट निकलने को हो रहे थे। वह रास्ते से काफ़ी दूर एकान्त जगह पर जाकर अपनी उस क़ीमती जायदाद की जाँच करने के लिये रुक गया। चमकदार रोगन में उसने अपना प्रतिबिम्ब देखा और रिक्शा को बार-बार देखकर उस पर मोहित होता रहा। रिक्शा के वे हिस्से, जो उसे पूरी तरह पसन्द नहीं आये थे, भी अब नज़रअन्दाज़ कर सकता था। वे उसे बुरे नहीं लगे क्योंकि रिक्शा तो उसका अपना हो गया था। दिलभर देखकर वह नये गलीचेदार पायदान पर बैठ गया और बम से जुड़े हुए पीतल के चमकीले भोंपू को निहारने लगा। सहसा उसे याद आया कि अब वह बाईस वर्ष का हो गया है। उसके माता-पिता बचपन में ही गुजर गये होने की वजह से वह अपने जन्मदिन की सही तारीख भूल गया था और नगर में आने के बाद उसने कभी जन्मदिन मनाया ही नहीं था। ठीक है, आज उसने अपना रिक्शा खरीदा था तो क्यों न उसे ही अपना जन्मदिन बना ले? इससे यह याद रखना आसान होगा। और वैसे भी रिक्शा उसके ही खून और पसीने की कमाई था तो उन दोनों का जन्मदिन एक ही क्यों न हो जाये?

यह "दोहरा जन्मदिन" भला कैसे मनाया जाये? श्याङचि ने सोचा कि उसकी पहली सवारी सजा-सँवरा पुरुष होना चहिए, स्त्री तो कदापि नहीं, और गंतव्य होना चाहिए छ्येनमन दरवाज़ा या तुङआन बाज़ार। वहाँ जाकर वह खाने के सबसे बढ़िया स्टाल पर भेड़ के भुने हुए गोश्त के साथ तवे पर बनायी मोटी रोटियाँ खायेगा; फिर अगर एक या दो अच्छी सवारियाँ उठा पाया तो बेहतर; यदि नहीं मिलीं तो दिनभर छुट्टी करके आराम करेगा। आख़िरकार, वह उसका जन्मदिन था!

अब रिक्शा उसका अपना हो जाने पर जीवन में उसे आशा दिखायी देने लगी। मासिक वेतन पर नौकरी मिले या फुटकर सवारियाँ हाथ आयें, उसे भाड़े चुकाने की फ़िक्र नहीं रह गयी थी, जो भी कमाता उसी का अपना था। मन में सन्तोष आने पर वह अधिक मिलनसार हो गया, और उसका धन्धा चमकने लगा। छह महीने होते होते उसमें आत्मविश्वास जागा कि इसी गति से उन्नति करने पर अधिक से अधिक दो वर्ष में वह एक और रिक्शा खरीद लेगा और फिर एक और! वाह! क्यों, तब तो वह रिक्शों का अपना धन्धा शुरू कर सकेगा!

किन्तु ज़्यादातर आशाएँ फलवती नहीं होती और श्याङचि की आशाएँ भी कोई अपवाद नहीं थीं।

दूसरा अध्याय

इस नई खुशी से उसका साहस बढ़ा और अपने नये रिक्शे के साथ उसके दौड़ने की रफ़्तार भी तेज हो गयी। निश्चय ही वह अपनी नई सम्पत्ति के प्रति कुछ अधिक

ही सतर्क था, परन्तु अपनी ओर और उसकी ओर देखकर उसे लगा कि अगर वह अपनी ओर से सर्वश्रेष्ठ प्रयत्न नहीं करेगा तो यह एक तरह से उसका पतन होगा।

नगर में आने के बाद से वह एक इंच और लम्बा हो गया था। और सहजबोध से वह जान गया कि वह और लम्बा होता जायेगा क्योंकि पहले से अधिक हृष्टपुष्ट होने और मसें फूटने के बाद उसे और ज़्यादा लम्बा होना ज़रूरी लग रहा था। हर बार किसी गली के फाटक या दरवाज़े से गुजरने के लिये उसे झुकना पड़ता तो उसका दिल इस जानकारी के आन्तरिक सन्तोष से खिल उठता कि वह अभी भी लम्बा हो रहा है। वयस्क हो जाने पर भी बालक जैसा बने रहने का अहसास उसे गुदगुदा जाता था।

अपने तगड़े शरीर और सुन्दर रिक्शा दोनों को देखते हुए उसे वास्तव में तेज दौड़ना उचित जान पड़ता था। रिक्शे की कमानियाँ इतनी लचीली थीं कि उसके बम मानो काँप-काँप जाते लगते थे; चमकदार ढाँचा, साफ़-सुथरा सफ़ेद गद्दा और जोरदार भोंपू—ऐसा था उसका खूबसूरत रिक्शा। उसे तेज दौड़ाने की इच्छा में घमण्ड न था, कर्तव्य की भावना थी। तभी छह महीने बीतने के बाद उसका यह प्यारा रिक्शा चलाने वाले की हरकत को समझ रहा लगता था : हर बार जब वह मोड़ लेता, एक टाँग झुकाता या पीठ सीधी करता, रिक्शे पर तुरन्त और बेहद सन्तोषजनक असर होता। रिक्शा और रिक्शाचालक में कभी भी तनिक भी गलतफहमी नहीं होती थी। जब कभी वे सपाट, खुले रास्ते पर पहुँचते तो श्याङचि बम को केवल एक हाथ से सम्भाले हुए दौड़ता और पीछे रबड़ के टायरों की मधुर सरसराहट उसे तेज और सधी हुई चाल से दौड़ने को उकसाती रहती। अपने गन्तव्य पर पहुँचने पर उसके कपड़े पसीने से ऐसे तर होते मानो अभी पानी में से निकाले गये हों और वह थका मगर इतना प्रसन्न और गर्वित महसूस करता मानो किसी बढ़िया नस्ल के घोड़े पर दसियों ली* का रास्ता तय करके आया हो।

साहस का अर्थ दुस्साहस नहीं है और श्याङचि साहसी होने पर भी असावधान कभी नहीं रहा। अगर मन्थर गति से जाना सवारी के प्रति बेईमानी हो, तो इतना तेज दौड़ना कि रिक्शा ही बिगड़ जाये खुद उसके प्रतिकूल होगा। यह रिक्शा ही उसकी जान था और वह उसकी भलीभाँति देखभाल करना खूब जानता था। साहस और सावधानी के मेल से उसका आत्मविश्वास बढ़ा और उसने उसे इस बात का कायल बना दिया कि वह और उसका रिक्शा दोनों ही अनश्वर हैं।

इस तरह वह न केवल पौरुष और ऊर्जा सहित दौड़ता रहा बल्कि उसने अपने विश्राम की ओर भी ध्यान नहीं दिया। आजीविका के लिये रिक्शा चलाना उसकी दृष्टि में संसार का सबसे बड़ा पौरुष था और यदि वह काम करना चाहता तो कोई उसे रोक नहीं सकता था। नगर में फैलने वाली अफवाहों पर वह ध्यान ही न

*एक ली=आधा किलोमीटर।

देता—शीयुवान में सैनिकों की उपस्थिति, छाङशिनत्येन में दुबारा युद्ध, शीचिमन दरवाज़े के बाहर सेना में जबरन भर्ती, छीह्नमन दरवाज़े का आधे दिन बन्द रहना—इन सब बातों से वह परेशान नहीं होता था। हाँ, जब दुकानदार दुकानें बन्द कर देते और सशस्त्र पुलिस और सुरक्षा बल सड़कों पर छा जाते तो वह मुसीबत मोल लेने न जाता और बाकी सबकी तरह तुरन्त काम रोक देता। मगर अफवाहों पर उसे यकीन नहीं होता था। वह सतर्क रहना सीख चुका था, खास तौर से इसलिये कि उसका रिक्शा उसका अपना था तो भी देहात का होने के कारण वह नगरवासियों की तरह खतरे के प्रति उतना सावधान नहीं रहता था। इसके साथ ही उसे अपनी शक्ति में विश्वास था और जानता था कि अगर किसी मुसीबत में फँस भी गया तो उससे बच ही निकलेगा। आख़िरकार उस जैसे चौड़े सीने वाले किसी लम्बे युवक को आसानी से डराया धमकाया भी तो नहीं जा सकता था।

क़रीब-क़रीब हर वर्ष युद्ध की अफवाहें और खबरें वसन्त में गेहूँ के बढ़ने के साथ-साथ उभर आती थीं। गेहूँ की बालियाँ और संगीनें उत्तरवासियों की आशाओं और आशंकाओं के प्रतीक बन गयी कही जा सकती थीं।

श्याङचि को रिक्शा खरीदे अभी छह महीने ही हुए थे कि गेहूँ की फसल के वास्ते वसन्त की वर्षा की आवश्यकता थी। सबसे ज़्यादा आशा होने पर वर्षा का होना तो लाजिमी नहीं होता लेकिन युद्ध चाहो या न चाहो हमेशा आ धमकाता है। परन्तु इस बार की खबर झूठी थी या सच्ची, इसे छोड़ भी दें तो श्याङचि इतना बदल चुका था कि कभी खेती की होने की बात वह भूल गया लगता था और उसने इसकी ज्यादा परवाह न की कि युद्ध से फसलें नष्ट हो जायेंगी या वसन्त की वर्षा न होगी। उसका समूचा सरोकार अपने रिक्शे से था। यही उसे रोटी और खाने की सब चीज़ें दे सकता था। यही उसकी कामधेनु थी, जो बड़ी विनम्रता से उसके पीछे पीछे चलती थी। श्याङचि जानता था कि वर्षा की कमी और युद्ध की खबर दोनों के कारण अन्न का मूल्य बढ़ जाता है, परन्तु दूसरे नगरवासियों की तरह वह भी केवल शिकायत कर सकता था, उपाय उसके पास था नहीं। यदि अनाज महंगा हो तो कोई क्या कर सकता था? वह अपने इसी दृष्टिकोण से देखकर केवल अपनी जीविका की बात सोचता रहा और विपत्तियों की कल्पना तक उसने अपने मन से निकाल दी।

नगरवासी कई मामलों में शक्तिहीन होते होंगे परन्तु वे कुछ एकदम झूठी और कुछ सिर्फ रत्तीभर सच्चाई वाली अफवाहें फैलाना अच्छी तरह जानते हैं। इससे वे यह सिद्ध करना चाहते हैं कि वे न तो मूर्ख हैं और न ही निठल्ले। वे तो टेंगड़ों की तरह जब उनके पास करने को कुछ नहीं होता पानी की सतह पर तैर आते हैं और आत्मसन्तोष के लिये बेकार बुलबुले उठाया करते हैं। बाकी सब अक्सर बेसिरपैर की मनगढ़न्त होती है जैसे भूतों और परी-आत्माओं के किस्से जो कि आप जानते हैं कभी मूर्त ही नहीं होंगे। लेकिन युद्ध की अफवाहें इसलिये सबसे ज़्यादा पैगम्बरी

साबित होती हैं कि युद्ध के विश्वस्त समाचार मिल ही नहीं पाते। ब्योरों की बात करें तो वे अफवाहें अक्सर हवाई निकलती हैं, मगर लड़ाई होगी या नहीं के बारे में वे दस में से आठ या नौ मर्तबा सही साबित होती हैं। "मुठभेड़ होने वाली है!" ये शब्द एक बार कहे गये हों तो देर-सबेर लड़ाई छिड़ना निश्चित ही है। किन सेनाओं के बीच संघर्ष होगा और वे कैसे लड़ेंगी, इसके बारे में सबके अपने-अपने बयान होते हैं।

श्याङचि इससे बेखबर नहीं था। परन्तु रिक्शाचालकों सहित अपनी मेहनत बेचने वाले कभी युद्ध का स्वागत नहीं करते, उससे बर्बाद होने की भी उन्हें ज़रूरत नहीं है। सबसे अधिक घबराहट अमीरों को होती है। स्थिति बिगड़ने की भनक मिलते ही वे भागने की सोचने लगते हैं। धन उनके रास्ते खोल देता है और वे अविलम्ब चल देते हैं। वे खुद-ब-खुद दौड़ नहीं सकते क्योंकि उन पर अपनी सम्पत्ति का बहुत ज़्यादा बोझ लदा रहता है, इसलिये उन्हें जाने कितने लोगों की टाँगें किराये पर लेनी पड़ती हैं। बक्से ढोने होते हैं, बूढ़ों और बच्चों को लादकर ले जाना पड़ता है। अपनी मेहनत बेचने वालों को तभी पता चलता है कि इसकी अच्छी क़ीमत मिल जायेगी।

"छ्येनमन दरवाज़ा, पूर्व स्टेशन!"

"कहाँ?"

"पूर्व... स्टेशन!"

"ठीक, बस एक युवान चार माओ दे देना। मोलभाव करने की ज़रूरत नहीं, देखते नहीं सेना तबाही मचा रही है!"

ऐसी ही परिस्थितियों में श्याङचि अपना रिक्शा शहर के दरवाज़ों के बाहर ले गया। दस या बारह दिन से अफवाहें उड़ रही थीं और महंगाई बढ़ गयी थी परन्तु लड़ाई अभी पेइफिङ से दूर ही लगती थी। श्याङचि ने अपना धन्धा पहले की तरह जारी रखा और अफवाहों को छुट्टी मारने का बहाना न बनाया। एक दिन वह नगर के पश्चिमी हिस्से में गया और उसने कुछ असाधारण ही देखा। हूक्वो मठ मार्ग के पश्चिमी सिरे और शिनच्येखओ पर शीयुवान अथवा छिङह्वा विश्वविद्यालय जाने के लिये कोई भी सवारी नहीं थी। वह उस इलाके में कुछ समय मँडराता रहा और उसने सुना कि कोई भी वाहनचालक नगर से बाहर जाने का साहस नहीं कर रहा है क्योंकि सभी ठेले और रिक्शे शीचिमन दरवाज़े के बाहर ही पकड़े जा रहे थे। उसने एक कटोरा चाय पीने और दक्षिण की ओर जाने का फैसला किया। रिक्शा अड्डे पर हलचल न होना सचमुच खतरे का निशान था और श्याङचि डरपोक तो नहीं था मगर उसे फँदे में अपना सिर डालने का कोई कारण भी नज़र न आया। ठीक उसी समय उत्तर को जाते हुए दो रिक्शे दिखायी दिये। सवारियाँ दो विद्यार्थियों जैसी दिखती थीं और चालक दौड़ते-दौड़ते चिल्ला रहे थे, "है कोइ छिङह्वा जाने वाला, छिङह्वा?"

रिक्शा अड्डे से किसी रिक्शावाले ने जवाब नहीं दिया। कुछ खिसिआयी हँसी

हँसते हुए उदासीनता से देखते रहे तो कुछ होंठों में छोटे पाइप दबाये बैठे रहे और सिर उठाकर देखने की तकलीफ़ भी नहीं की।

"क्या तुम सब बहरे हो? छिङ्हा!" दोनों चालक आवाजें लगाते रहे।

"दो युवान दो तो जाऊँगा!" छोटे कद के घुटे सिर वाले लड़के ने मज़ाक में कहा और खामोश हो गया।

"चलो, कोई और ढूँढ लो!" दोनों रिक्शा रुक गये।

लड़का चकरा गया। फिर भी कोई आगे नहीं आया। श्याङचि समझ गया कि शहर से बाहर जाना सचमुच जोखिम का काम है, नहीं तो सिर्फ छिङ्हा जाकर दो युवान कमाने के अवसर कौन छोड़ता जबकि उतने फासले के आम तौर पर दो या तीन माओ मिलते थे? वह खुद भी जाना चाहता था। मगर घुटे सिर वाले लड़के ने तय कर लिया लगता था कि कोई साथी चालक मिल जाये तो वह यह जोखिम उठा लेगा। उसने श्याङचि को देखा और बोला, "लम्बू चलोगे?"

"लम्बू।" यह सुनकर श्याङचि को मजा आया, यह तो तारीफ थी। उसने इस प्रस्ताव पर सोचा। इस प्रकार की प्रशंसा सुनकर तो उसे घुटे सिर वाले साहसी छोटू को सहारा देना चाहिए। फिर दो युवान जैसी अच्छी रकम रोज़-रोज़ तो नहीं मिलती। यह भी कहाँ तय था कि वह जोखिम में पड़ ही जायेगा? सिर्फ दो दिन पहले उसने सुना था कि स्वर्गिक मन्दिर के उद्यान में सैनिक भरे हैं पर उसने एक भी सैनिक की छाया तक भी खुद नहीं देखी थी। इस तरह की दलीलबाजी के साथ वह अपना रिक्शा आगे लाया।

जब वे लोग शीचिमन दरवाज़े पर पहुँचे तो सड़क पर यातायात नहीं के बराबर था। श्याङचि के दिल में आशंका पैदा हुई। दूसरा चालक भी बेचैन था, पर उसने खीसें निकालते हुए कहा, "चले चलो यार, किस्मत ही खराब होगी तो कोई क्या कर लेगा!" श्याङचि जानता था कि वे मुसीबत मोल ले रहे हैं मगर इतने वर्ष नगर में धक्के खाने के बाद अब वह किसी बुढ़िया की तरह पीछे कैसे हट सकता था।

नगर के दरवाज़े के आगे एक ठेला तक भी नज़र नहीं आया। दायें या बायें देखने का साहस न जुटा पाते हुए श्याङचि ने सर झुका लिया और उसका दिल जोरों से धड़कते हुए पसलियों से टकराने लगा। जब वे काओल्याङ पुल पर पहुँचे तो उसने चारों ओर नज़र दौड़ायी और यह देखकर राहत पायी कि एक भी सैनिक नज़र नहीं आ रहा था। उसने अपने मन में सोचा, आख़िरकार दो युवान दो युवान ही होते हैं और ऐसे अप्रत्याशित लाभ के लिये साहस की ज़रूरत होती है। सड़क पर इतना सन्नाटा था कि घबराहट होती थी और आम तौर पर न बोलने के आदी श्याङचि की भी एकाएक अपने साथी से बात करने की इच्छा हुई।

"कच्ची सड़क के छोटे रास्ते से निकलें तो कैसा रहेगा? यह सड़क।..."

"ज़रूर, ज़रूर।" दूसरा फौरन समझ गया। "वह रास्ता ज़्यादा सुरक्षित है।"

मगर मुख्य सड़क से हटकर कच्ची सड़क पर पहुँचने से पहले ही दोनों चालक, उनके रिक्शे और सवारियाँ सबके सब कोई एक दर्जन सैनिकों के हाथों में पड़ गये।

माया शिखर पर मन्दिर में श्रद्धालुओं के धूप दान करने का मौसम आ गया होने पर भी रात की खुनकी में एक पतली कमीज काफ़ी न थी। श्याङचि को कोई दिक्कत न थी क्योंकि वह बदबूदार भूरी सैनिक कुर्ती और नीले कपड़े की पतलून पहने हुए था—उसके उन्हें पहनने से पहले से ही वे पसीने की बदबू से भरे हुए थे। उसे अपनी सफ़ेद सूती कमीज और अस्तर लगे जम्बुकी नील रंग के सूट की याद आ गयी। वे कितने चुस्त और साफ़-सुथरे थे! इस संसार में जम्बुकी नील रंग के कपड़े से अधिक सुन्दर कपड़े भी ज़रूर होंगे मगर श्याङचि जानता था कि साफ़-सुथरे पन और बनाव-ठनाव के उस स्तर पर पहुँचना भी उसके लिये कितना श्रमसाध्य रहा था। अब अपने कपड़ों की खट्टी गन्ध से उसे अपने पिछले संघर्ष और सफलताएँ पहले से दस गुना ज़्यादा भव्य लगने लगीं। वह अतीत को जितना ज़्यादा याद करता उन सैनिकों से उतनी ही ज़्यादा घृणा करने लगता। उसकी हर चीज़ छिन गयी थी—उसके कपड़े, जूते और टोपी, उसका रिक्शा, यहाँ तक कि उसका कपड़े का कमरबन्द भी। उसके पास बचा था केवल स्याह और नीला जिस्म और छालों से ढके पाँव। खैर, उसके कपड़े कुछ भी नहीं थे, उसके घाव भी भर जाते परन्तु उसका रिक्शा, वह बहुमूल्य रिक्शा जिसके लिये उसने सालों खून और पसीना बहाया था, हाथ से जा चुका था! बैरकों तक ले जाने के बाद वह गायब ही हो गया। अपनी दूसरी सभी मुसीबतें वह टाल और भूल सकता था परन्तु उस रिक्शे को वह कभी भी कैसे भूल सकता था?

उसे कठिनायों से डर नहीं लगता था परन्तु दूसरा रिक्शा खरीदने में उसे और कई साल लगेंगे। उसकी अभी तक की सारी कोशिशें मिट्टी में मिल गयी थीं, उस एक बार फिर नये सिरे से शुरुआत करनी पड़ेगी। यह विचार आते ही श्याङचि रो पड़ा। वह उन सैनिकों से, सारी दुनिया से नफ़रत करने लगा। लोगों को धमकाने और जलील करने का उन्हें क्या हक है? क्या हक है?

"क्या हक है?" वह चीखा।

उसकी अपनी आवाज की गूँज—भले ही उसे कुछ राहत दे गयी हो—सहसा उसे आसन्न संकट की याद दिला गयी। फिलहाल बाकी सब कामों के रुके रहने में कोई हर्ज नहीं, सबसे अहम काम तो अपनी जान बचाकर भाग निकलना था।

पर वह था कहाँ? वह निश्चित रूप से नहीं कह सकता था। पिछले दिनों वह पीछे हटते सैनिकों के पीछे पीछे सर से पाँव तक पसीने से तर रहता चलता रहा था। कूच करते समय उसे सैनिकों का सामान लादना, ठेलना या खींचना पड़ता था; जब वे पड़ाव डालते तो उसे पानी लाना, चूल्हा जलाना और भारवाहक जानवरों को चारा डालना पड़ता। सबेरे से रात तक वह शरीर की शक्ति की एक-एक बूँद हाथों और

पैरों से निचोड़ डालता और उसका दिमाग़ एकदम खोखला हो जाता। अन्त में जब वह लेटता तो जमीन पर सर रखते ही दिये की तरह बुझ जाता और उसे लगता कि अगर फिर कभी न भी जागे तो बहुत बुरी बात न होगी।

उसे सैनिकों के पहले माया शिखर की ओर पीछे हटने की धुँधली सी याद थी; फिर जब वे पर्वत के उत्तर में पहुँचे तो उसका पूरा ध्यान पहाड़ पर चढ़ने में लगा था, क्योंकि उसे घाटी की तलहटी में गिर पड़ने और चील-कौओं द्वारा नोच-नोचकर खाए जाने का भया था। वे कई दिन पहाड़ों में भटकते रहे, फिर भूभाग कम पहाड़ी होता चला गया और एक शाम को उनके पिछवाड़े सूरज डूब रहा होने पर उसे काफ़ी दूरी पर समतल भूमि दिखायी दी। जब रात के खाने का बिगुल बजा तो कन्धों पर राइफलों टाँगे कई सैनिक कुछ ऊँटों को लाते हुए दिखायी दिये।

ऊँट! श्याङचि के दिल की धड़कन तेज हुई और सहसा उसके दिमाग़ ने फिर काम करना शुरू कर दिया, मानो किसी भटके हुए पथिक को कोई परिचित पथचिह्न दिख जाने से राह मिल गयी हो। ऊँट पहाड़ पर चढ़ नहीं सकते अर्थात वे मैदानी इलाके में पहुँच गये थे। जहाँ तक उसे जानकारी थी ऊँट पेइफिङ के पश्चिम के गाँवों में पाले जाते थे। कहीं ऐसा तो नहीं कि घूमफिरकर वे मोशि दर्रे पर पहुँच गये थे? वह नहीं जानता था कि यह कौनसी सामरिक नीति थी या केवल लूटने और लौटने में सक्षम उन सैनिकों की कोई रणनीति थी भी या नहीं। परन्तु वह एक बात के बारे में निश्चित था कि अगर वे लोग सचमुच मोशि दर्रे पर पहुँच गये थे तो सैनिकों ने जान लिया था कि वहाँ से पहाड़ों में से कोई राह नहीं है, इसलिये वे भाग निकलने के वास्ते मैदानों की तरफ चल रहे थे। मोशि दर्रा पूर्वोत्तर में पश्चिम पहाड़ियों और दक्षिण में छाङशिनत्येन या फङथाए के बीच एक सामरिक स्थल था, और वहीं से पश्चिम की ओर एक और रास्ता जाता था। उसने सैनिकों की सम्भावित गतिविधियों पर सोचते हुए अपने भागने का रास्ता भी सोच लिया। उसके भाग निकलने का सही समय आ गया था। अगर सैनिक पीछे हटते हुए दोबारा पर्वतों पर चले गये, तो वह उनसे बच निकलने पर भी भूखों मर जायेगा। इसलिये यही अवसर था कि वह चाहे तो भाग जाये। एक बार सैनिकों के पंजों से छूट निकलने पर उसे सीधे हाएत्येन लौट जाने की आशा थी! वह इन दोनों स्थानों के बीच के सभी स्थल पहचानता ही था।

क्यों, उसे अपने सामने नक्शा देखने के लिये सिर्फ अपनी आँखें ही बन्द करनी थीं : यह रहा मोशि दर्रा—कृपालु ईश्वर, यह मोशि दर्रा ही हो! अगर वह पूर्वोत्तर की दिशा में स्वर्ण शिखर पर्वत और राजकुमार ली की क़ब्र से आगे पहुँच जाये तो पाताछू पहुँच जायेगा। फिर वहीं से सिफिङथाए से और पूर्व की ओर मुड़कर बढ़ने से खूबानी दर्रे और नानशिनच्वाङ पहुँच जायेगा। ज़्यादा आड़ में जाने के लिये उसका पहाड़ियों से सटकर चलना बेहतर होगा और पेइशिनच्वाङ से वेइच्याच्वाङ होते हुए उत्तर की

ओर, फिर उत्तर में नानहथान और उत्तर में ही लाल शिखर और राजकुमार च्ये के महल और अन्ततः चिङई उद्यान पहुँच जाना चाहिए। वहाँ पहुँच जाने पर तो वह आँखों पर पट्टी बँधी होने से भी वापस हाएत्येन पहुँच सकता था। सीने में उसका दिल धकधक कर रहा था। पिछले दिनों उसे लगता रहा था किउसका खून उसके हाथ-पाँवों में जमा हो गया है मगर अब वह फिर उसके सीने की ओर बहने लगा था और उसका दिल अँगारों की तरह गर्म मगर बाँहें और टाँगे बर्फ जैसी ठण्डी थीं। विह्वल आशा उसे सर से पाँव तक कँपा रही थी।

आधी रात को भी उसकी आँख नहीं लगी। आशा उसे उल्लसित कर रही थी तो भय से उसे घबराहट हो रही थी। वह सोना चाहता था परन्तु सूखी घास पर पसरकर लेटने पर भी नींद नहीं आयी। सब कुछ स्थिर था, केवल तारे उसके हृदय से ताल देते हुए स्पन्दित हो रहे थे। एकाएका पास ही कहीं एक ऊँट करुण स्वर में बिलबिलाया। रात में सहसा मुर्ग़े की बाँग सुनकर लगने जैसा अकेलापन उसे महसूस हुआ मगर इसमें भी राहत थी।

दूर कहीं तोप गरजी। वह बहुत दूर थी मगर थी निश्चय ही तोप। उसने हिलने तक का साहस नहीं किया परन्तु सारे शिविर में तत्काल हलचल शुरू हो गयी। उसने मारे डर के साँस रोक ली, अब उसके लिये मौका आ गया था! सैनिक निश्चय ही दोबारा पीछे हटना शुरू करेंगे और सबसे ज़्यादा सम्भावना है कि पर्वतों की ओर ही जायेंगे। पिछले दिनों के अनुभवों से उसने सीखा था कि ये सैनिक बन्द कमरे में फँसी मधुमक्खियों की तरह पेश आते हैं, हर दिशा में भाग-भागकर टकराते रहते हैं।

सैनिक तोप की गरज सुनकर ज़रूर भागेंगे, इसलिये उसे जरा चौकन्ना रहना चाहिए। वह डर से साँस रोके आहिस्ते-आहिस्ते रेंगते हुए ऊँटों की तलाश करने लगा। वह भलीभाँति जानता था कि ऊँट उसकी कोई मदद नहीं कर सकेंगे। मगर उन सबके सहबन्दी होने के कारण वह उनसे अपनापन महसूस करता था। तब तक शिविर में भगदड़ मच चुकी थी। उसने ऊँटों को मिट्टी के टीलों की तरह अँधेरे में दुबके बैठे देखा। उनकी साँस जोरों से चल रही थी मगर वे एकदम शान्त थे, मानो उन्हें किसी भी बात से घबराहट न हुई हो। इससे उसका साहस बढ़ा और वह उन्हीं के बगल में दुबक गया जैसे सैनिक रेत की बोरियों के पीछे आड़ ले लेते हैं। तभी उसे सूझा कि दक्षिण से तोप की गोलाबारी का मतलब वास्तविक युद्ध भले ही न हो परन्तु वह कम से कम यह चेतावनी तो थी ही कि उस दिशा से भागने का मार्ग अवरुद्ध है। इसलिये सैनिकों को दुबारा पर्वतों में लौटना पड़ेगा। ऐसी हालत में वे शायद ऊँटों को न ले जा सकेंगे। इस तरह श्याङचि और ऊँटों की नियति ऊँटों को न ले जा सकेंगे। इस तरह श्याङचि और ऊँटों की नियति एक ही थी। अगर सैनिक ऊँटों को ले गये तो वह बचकर भाग नहीं पायेगा पर अगर वे उनको भूल गये तो वह निकल सकता था। वह धरती से कान सटाकर पगध्वनियाँ सुनने लगा, उसका दिल

बेतहाशा धड़क रहा था।

उसे ज्ञात नहीं कि वह कितनी देर प्रतीक्षा करता रहा, परन्तु ऊँटों की नकेल पकड़कर ले जाने के लिये कोई नहीं आया। अन्त में उसने साहस जुटाकर ऊँट के दोहरे कोहने के बीच से झाँका। चारों ओर अँधेरा था, वह कुछ भी देख नहीं पाया। यही भाग निकलने का ठीक समय था, बेहतरी या बदतरी के लिये!

तीसरा अध्याय

श्याङचि बीस या पच्चीस कदम ही भागा होगा कि एकाएक रुक गया, ऊँटों को छोड़ जाने की उसकी इच्छा नहीं हो रही थी। अब दुनिया में उसके पास अपनी जान के सिवा और कुछ बचा ही नहीं था। वह बड़ी खुशी से जमीन पर पड़ी फालतू सन की रस्सी भी उठा लेता, इससे हाथों के एकदम खाली न होने के अहसास से उसे राहत मिलती। निस्सन्देह, उसके लिये मुख्य बात अपनी प्राणरक्षा ही थी, लेकिन सब कुछ लुट चुके खाली जीवन का क्या फायदा? उसे ऊँटों को अपने साथ ले ही जाना चाहिए, हालाँकि उसे कुछ पता नहीं था कि उनका वह करेगा क्या। वह महज इसलिये उन्हें ले जाना चाहता था कि वे कुछ तो थे, फिर काफ़ी बड़े कुछ भी थे।

उसने झटके से नकेलें खींचकर ऊँटों को उठाया। वह ऊँटवानी नहीं जानता था परन्तु गाँव का होने के कारण वह जानवरों को समझता था और ऊँटों से डरा हुआ नहीं था। बहुत धीमे धीमे ऊँट उठ खड़े हुए और उन सबके खड़े होते ही वह चल दिया। वह यह देखने के लिये भी नहीं रुका कि वे सब एक ही रस्सी से बँधे भी हैं या नहीं और उसने इस ओर भी ध्यान नहीं दिया कि सारे ऊँट उसके पीछे आ रहे थे या नहीं।

एक बार चल पड़ने पर उसे अपने निर्णय पर खेद होने लगा। ऊँट भारी बोझ ढोने के आदी होने के कारण धीमे चलते हैं। यही नहीं, वे फिसल जाने के डर से कदम भी सावधानी से रखते हैं। रास्ते में पानी की गड़ही या थोड़ा सा कीचड़ पड़ जाये तो उनकी टाँग टूट सकती है या घुटने में मोच आ सकती है। ऊँट की टाँगें ही महत्वपूर्ण हैं, टाँगें खराब हो गयीं तो ऊँट भी खत्म हो जाता है। पर श्याङचि तो जान बचाने के लिये भाग रहा था!

फिर भी वह ऊँटों को पीछे न छोड़ सका। वह भाग्य में आस्था रखकर बिना परिश्रम के हाथ लगे ऊँटों को अपने साथ लिये चलता रहा।

लम्बे अरसे तक रिक्शा चलाते रहने से श्याङचि का दिशाबोध अच्छा था। फिर भी वह खोया सा महसूस कर रहा था। ऊँटों की खोज में जुटे होने के कारण वह

अँधेरे और उत्तेजना में भूल गया था कि ऊँटों को पुचकार, खींचकर खड़े करने के बाद वह कहाँ था। अगर तारों को देखकर भी वह अपनी स्थिति पहचानना जानता होता तो भी यह करने का साहस न करता, क्योंकि तारे और भी ज़्यादा उन्मत्त दीखते थे और अँधेरी रात में एक दूसरे से टकरा-टकरा जा रहे थे। ऐसे आकाश की ओर दोबारा देखने का उसका साहस न हुआ और उसने सिर झुका लिया। बेसब्री से बेचैन होते हुए भी वह तेजी से आगे बढ़ने में डर रहा था। उसे सूझा कि ऊँटों को लेकर उसे तराई के रास्ते नहीं बल्कि मुख्य सड़क से जाना पड़ेगा। मोशि दर्रे—अगर वह सचमुच मोशि दर्रे था—और ह्वाङछुन के मध्य सड़क सीधी चली गयी थी और इसलिये उस पर ऊँटों के पहुँच जाने से उसके रास्ते से भटक जाने का डर नहीं था। दूसरी बात रिक्शाचालक के लिये बेहद महत्व की थी, परन्तु सड़क पर छिपने के लिये कोई आड़ नहीं थी। कहीं वह सैनिकों की एक और टुकड़ी से टकरा गया तो क्या होगा? अगर न भी टकराया, तो भी उसकी सेना की चिथड़ा-चिथड़ा वर्दी, कीचड़ से सने चेहरे और बढ़े हुए बाल देखकर कौन यकीन करेगा कि वह ऊँटवान है? नहीं, वह निश्चित रूप से ऊँटवान नहीं दिखता था। वह तो देखने में ही भगोड़ा लगता था! सैनिकों के हाथों पड़ना उतना बुरा नहीं था परन्तु अगर कुछ ग्रामवासियों ने उसे पकड़ लिया तो कम से कम उसे ज़िन्दा ही दफ़ना देंगे! वह सर से पाँव तक थरथर काँपने लगा। पीछे पीछे चल रहे ऊँटों की पदचाप से आतंकित होकर वह सहसा चौंक उठा। अगर वह भाग निकलना चाहता था तो यह सब बोझा पीछे छोड़ देना ही बेहतर था। यह सोचकर भी वह नकेल को हाथ से छोड़ देने का संकल्प नहीं कर सका। वह कहीं भी क्यों न पहुँच जाये, बढ़ते चलना ही बेहतर होगा। समस्या आने पर ही उससे निपटेगा। अगर वह जीवित बच गया तो उसे कुछ जानवर मुफ़्त में मिल जायेंगे; न बचता तो बहुत बुरा होता!

फिर भी उसने अपनी सैनिक जैकेट उतारी और उसके कालर को फाड़कर फेंक दिया। उसके बाद पीतल के दो बटन, जो अपना कर्तव्य निर्वाह किये जा रहे थे, नोचकर अँधेरे में उछाल दिये। उनके जमीन पर गिरने से टनटनाहट भी न हुई। उसने नई बिना कालर और बिना बटन की जैकेट को कन्धों पर लटका लिया और दोनों आस्तीनों से सीने पर ऐसे गाँठ बाँध ली जैसे पीठ पर बोझ ढो रहा हो। उसे लगा कि वह पराजित सैनिक जैसा कम दीख रहा था और उसने अपनी पतलून और ऊपर चढ़ा ली। हो सकता था कि वह असली ऊँटवान तब भी न दिखता हो परन्तु कम से कम वह भगोड़ा तो पहले से कम नज़र आ रहा था। चेहरे पर कीचड़ और पसीने से शायद वह कोयला खनक ही ज़्यादा लगता था।

श्याङचि का दिमाग़ कुछ सुस्त मगर बखूबी चलता था और एक बार कुछ सूझने पर वह तुरन्त उस पर अमल करता था। घुप अँधेरे में उसको देखने वाला कोई नहीं था इसलिये उसे तुरन्त कुछ कर गुजरने की ज़रूरत नहीं था। परन्तु वह प्रतीक्षा भी

नहीं कर सकता था क्योंकि उसे ज्ञात नहीं था, कि तब क्या समय था, शायद दिन जल्दी निकल आता। चूँकि वह पहाड़ियों में से नहीं जा रहा था और रास्ते में छिपने की कोई जगह भी नहीं मिलने वाली थी इसलिये यदि उसे दिन में यात्रा करनी हुई तो उसे राह चलतों को कायल करना होगा कि वह कोयला खनक है। इस धारणा पर आचरण करके उसके मन को कुछ चैन मिला मानो संकट टल गया ओर पेइफिङ अगले ही मोड़ पर था। उसे निरन्तर नगर की ओर चलते जाना और जरा भी समय नहीं गँवाना चाहिए क्योंकि उसके पास न धन था और न ही भोजन। उसने सोचा कि ऊँट पर चढ़कर चले जिससे शरीर की शक्ति बचे और भूख टले, परन्तु ऊँट पर बैठने से पहले उसे ऊँट को झुकाना पड़ता और उसमें और ज़्यादा देर लगती। तब वक़्त ही धन था। इससे भी बढ़कर यह था कि ऊँट की पीठ पर बैठे हुए उसे जमीन दिखायी न देती। अगर ऊँट गिरता तो वह भी लुढ़कता हुआ उसके साथ गिर जाता। नहीं, पहले की तरह ही चलते रहना बेहतर था।

उसे कोई अनुमान नहीं था कि वह कहाँ था और किधर जा रहा था, परन्तु उसे आभास हुआ कि वह ज़रूर राजमार्ग पर ही चल रहा होगा। रात में बहुत देर हो जाने, थकाकर चूर कर देने वाले पिछले कई दिनों और उसके रोमाँचकारी ढंग से भाग निकलने की भयावहता की वजह से उसे अपने पूरे शरीर में बेआरामी और दिल में बेचैनी महसूस हुई। कुछ दूर पाँव घसीटते हुए चलने के बाद उसे लगा कि उसकी मन्थर चाल उसे नींद में डुबो रही है। घुप अँधेरे और गीले कुहासे से वह और भी खोया हुआ सा महसूस करने लगा। उसने जमीन पर नज़र गड़ाकर देखा तो वह उसे ऊबड़खाबड़ दिखायी दी परन्तु उसके पाँव समतल भूमि पर ही पड़ते थे। सावधानी और धोखा खा गये होने की भावना ने उसकी बेचैनी और चिढ़ और बढ़ा दी। उसने भूमि की ओर न देखने, बल्कि सामने ताकते हुए चलते रहने का फैसला किया। अपने चारों ओर उसे कतई कुछ भी नज़र नहीं आ रहा था। ऐसा लगता था कि संसार का समूचा अन्धकार उसके इन्तज़ार में खड़ा हो और वह एक काली दुनिया से दूसरी में जा रहा था। मौन ऊँट लगातार उसके पीछे-पीछे चलते रहे।

धीरे-धीरे वह अँधेरे का आदी हो गया और उसके दिमाग़ ने काम करना बन्द कर दिया लगता था। उसकी आँखें अपने आप मुँद गयी। क्या वह अभी तक चल रहा था या स्थिर खड़ा था? उसे सिर्फ उतार-चढ़ाव सा लग रहा था, मानो किसी काले सागर में उसकी नौका डोल रही हो और वह अन्धकार उसकी संवेदनाओं में अस्थिर और अस्तव्यस्त ढंग से विलीन हो गया था। सहसा उसे एक झटका सा लगा, जैसे उसने कोई आवाज सुनी हो या कोई विचार उसके मन में कौंधा हो—वह ठीक-ठीक कह नहीं सकता था। उसकी आँखें खुल गयीं, वह आगे ही बढ़ रहा था, और सभी कुछ अभी शान्त था। उसे कुछ क्षण पहले क्या हुआ था वह भी उसके ध्यान से उतर गया था। थोड़ी देर उसका दिल बुरी तरह धड़का फिर धीरे धीरे शान्त हो गया।

उसने अपने आपको बताया कि दोबारा आँखें बन्द न करे, अज़ीबोग़रीब विचार भी मन में न आने दे और जल्दी नगर पहुँचना ही सबसे प्रमुख है। परन्तु दिमाग़ खाली होने पर उसे एक बार फिर झपकी आ जाती, जागते रहने के लिये उसे किसी एक बात पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। यहि वह चलते चलते बैठ जाता तो वह जानता था कि पूरे तीन दिन और तीन रातें सोते ही बीत जातीं।

उसे किस विषय पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए? उसका सिर चकरा रहा था और वह बेआरामी की हद तक उदास था। उसके सिर में खुजली और पाँवों में पीड़ा हो रही थी और मुँह का स्वाद कसैला हो गया था। अपनी खेदजनक दुर्दशा के अतिरिक्त उसके पास और सोचने के लिये था ही क्या, परन्तु इस पर भी वह ध्यान न लगा पाया क्योंकि दिमाग़ इतना ज़्यादा खाली और चकरा रहा था। यह कुछ ऐसा था कि जैसे ही उसे अपनी प्रतीति हुई और वह अपने आपको फिर भूल गया, जैसे बुझती हुई मोमबत्ती के जलते रहने के प्रयत्न करने पर भी उसकी रोशनी अपने लिये भी काफ़ी न रह गयी हो। साथ ही चारों ओर के अँधेरे से उसे महसूस हो रहा था कि वह एक काले मेघ पर बैठा मण्डरा रहा है। वह जानता था कि उसका अस्तित्व है, वह आगे बढ़ रहा था, परन्तु इसे साबित करने के लिये और कोई प्रमाण नहीं था। इसलिये वह अपने विषय में समुद्र में अकेले भटक रहे होने की तरह अनिश्चित था। अनिश्चितता और अत्यन्त अकेलेपन की ऐसी वेदना उसने कभी सही नहीं थी। सामान्य जीवन में उसे भले ही मित्र बनाने का बहुत शौक न था, फिर भी खिली धूप में चारों ओर हर चीज़ पास होने पर उसे भय नहीं लगता था। वह अब भी भयभीत नहीं था परन्तु हर चीज़ के प्रति यह अनिश्चितता उसकी बर्दाश्त के बाहर हो गयी थी।

अगर ऊँटों की देखभाल घोड़ों या गधों की तरह मुश्किल होती तो उसे खुद को उसके लिये तैयार करना पड़ता पर वे तो इतने सभ्य थे कि उसी से दिक्कत हो रही थी, इतने अनुशासित थे कि श्याङचि को चिढ़ होने लगी। उसका उलझाव चरम पर था तो सहसा उसे सन्देह हुआ कि उसके पीछे चल रहे ऊँट गायब हो गये हैं। इससे कुछ क्षण वह उद्विग्न रहा। उसने लगभग मान लिया कि वे भीमकाय पशु बिना उसके जाने ही किसी अँधेरी गली में सहसा लुप्त हो सकते हैं और धीरे धीरे पिघल सकते हैं, मानो वह अपने पीछे-पीछे बर्फ की सिल्ली लेकर चल रहा हो।

किसी जगह—उसे याद नहीं कब—वह बैठ गया। अगर उसी समय वह मर गया होता और मरने के बाद उसकी स्मृति लौट आयी होती तो वह बता नहीं पाता कि क्यों और कैसे वह वहाँ बैठ गया था या वह पाँच मिनट बैठा रहा अथवा घण्टेभर। उसे यह भी मालूम नहीं था कि वह पहले बैठा और फिर सो गया या सोते-सोते बैठ गया। शायद वह पहले सो गया था और फिर बैठ गया था, क्योंकि वह इतना थका था कि खड़े-खड़े सो जाना भी उसके लिये सम्भव था।

सहसा वह जाग पड़ा। यह धीमी गति से स्वाभाविक तौर पर जागना नहीं था। लेकिन वह अकस्मात चौंककर जागा था, उसे आँखें खोलने में जो क्षण लगा उसी में वह कूदकर एक संसार से दूसरे में जा पहुँचा था। अभी तक चारों ओर अँधेरा था, पर उसने मुर्ग़े की बाँग स्पष्ट रूप से सुनी। यह बाँग इतनी साफ़ सुनायी दी कि उसके दिमाग़ को चीर गयी लगी और वह पूरी तरह जग गया। ऊँट कहाँ गये? उस क्षण सबसे महत्वपूर्ण यही था। रस्सी अभी तक उसके हाथ में थी, ऊँट अब भी उसके पास थे। उसे सन्तोष मिला। उठने में उसे बड़ा आलस जान पड़ा, सारे शरीर में पीड़ा थी, पर दोबारा सो जाने का साहस भी वह नहीं कर सका। अभी तो उसे बहुत गहराई से सोचना चाहिए था। तभी अचानक उसे अपने रिक्शा की याद आयी और उसके मुँह से चीख निकल पड़ी, "क्या हक है?"

"क्या हक है?" फिर भी चिल्लाने से कुछ होने वाला न था। वह ऊँटों को गिनने लगा कि कितने हैं? हाथों से टटोल-टटोलकर उसने तीन ऊँट गिने। उसके लिये वे बहुत ज़्यादा नहीं बल्कि बहुत कम थे ओर अब उसने उनके बारे में विशेष तौर पर सोचना शुरू किया। यद्यपि उसने यह तो नहीं तय किया था कि उनका सबसे अच्छा उपयोग क्या करेगा परन्तु उसने मोटे तौर पर समझ लिया था कि उसका भविष्य पूर्णतया उन पर निर्भर करता है।

"उनको बेचकर क्यों न दूसरा रिक्शा खरीदूं?" यह सोचकर वह मानो उछल पड़ा। परन्तु फिर हिला-हुला नहीं क्योंकि उसे इस पर शर्म आयी कि उसने यह अत्यन्त स्वाभाविक और स्पष्ट उपाय पहले क्यों नहीं सोचा। पर इस विचार की खुशी शर्म से बड़ी थी और उसने अपना मन पक्का कर लिया। मुर्ग़े की बाँग क्या उसने पहले कभी नहीं सुनी थी? अगर मुर्ग़ा सबेरे एक या दो बजे भी बाँग दे तो इसका मतलब था कि भोर होने ही वाला है। और जहाँ मुर्ग़े होंगे वहाँ गाँव भी ज़रूर होगा। हो सकता है कि यह पेइशिनआन हो जहाँ लोग ऊँट पालते हैं। उसे जल्दी-जल्दी चलकर पौ फटने से पहले वहाँ पहुँच जाना चाहिए। एक बार वह ऊँटों से मुक्त हो जायेगा तो शहर पहुँचते ही दूसरा रिक्शा खरीद लेगा। युद्ध चल रहा होने पर आज के अस्थिर समय में रिक्शा का दाम भी कम होना चाहिए, अब तो उसके मन में केवल रिक्शा खरीदने की धुन थी। ऊँटों को बेचने में उसे कोई कठिनाई नज़र नहीं आयी।

यह सम्भावना देखकर उसका मन पुलकित हो उठा और उसकी सारी बेचैनी गायब हो गयी। इन तीन ऊँटों के बदले यदि वह एक सौ मू भूमि खरीद लेताक या कुछ मोती ले लेता तो भी उसे इतनी खुशी न हुई होती। वह झटपट उछल पड़ा, ऊँटो को खड़ा किया और चल पड़ा। वह कोई नहीं जानता था कि उन दिनों ऊँटों का दाम क्या था, पर उसने सुन रखा था कि पुराने जमाने में अब रेलगाड़ियाँ नहीं थी तब एक ऊँट की पचास औंस चाँदी मिल जाती थी, क्योंकि ऊँट तगड़े होते हैं और घोड़ों

तथा खच्चरों के मुकाबले कम खाते हैं। उसे तीन ऊँटों के तीन युवानपाओ* मिलने की प्रत्याशा तो नहीं थी परन्तु अस्सी से लेकर सौ युवान तक मिल जाने की उम्मीद ज़रूर थी—इतने में रिक्शा आ ही जाता।

उसके चलते जाने पर उसके सामने आकाश में आलोक भरता गया। हाँ हाँ, निश्चय ही वह पूर्व दिशा में जा रहा था। अगर वह गलत सड़क पर था तो भी दिशा सही थी। वह जानता था कि पर्वत पश्चिम में थे और नगर पूर्व की ओर। उसका परिवेश काला स्याह रहा था परन्तु अब वह उजाले और अन्धकार में फर्क कर सकता था। पर अभी तक वह रंगों में अन्तर नहीं कर पा रहा था, खेत और दूर के वृक्ष धुँधलके में आकार ग्रहण करते दिखायी दे रहे थे। तारे धूमिल हो गये और धुँधलाहट से घिरा आकाश, जो धुँध या बादलों की हो सकती थी, पहले से कहीं ज़्यादा ऊँचा लगने लगा। श्याङचि ने दोबारा सिर उठाने का साहस किया। वह एक बार फिर पथ के पास उगी हुई घास की गन्ध सूँघ और दो चार चिड़ियों का चहचहाना सुन सका। जब उसे सारी चीज़ें अस्पष्ट ही सही, पर पहचान में आने लगी थीं तो वह अपनी अन्य ज्ञानेन्द्रियों का उपयोग भी कर पाने लगा। वह फिर खुद को देख सका, यद्यपि उसकी हालत बुरी थी पर वह कम से कम जीवित तो था—इसमें कोई शक न था। जीवन खास तौर पर मधुर जान पड़ा, जैसा दुःस्वप्न से जागने के बाद लगता है।

अपने को अच्छी तरह देख चुकने के बाद वह ऊँटों को देखने लगा। वे भी उसी की तरह मैले-कुचैले थे, और उसे अपने जितने ही प्रिय जान पड़े। वह पशुओं के रोएँ झड़ने का मौसम था इसलिये ऊँटों की मटमैली लाल चमड़ी के झब्बे उनके निस्तेज बालों के बीचोंबीच से दिखायी देने लगे थे। ऐसा लगता था कि लटकते लम्बे बाल अभी नीचे गिर पड़ेंगे। वे पशु राज्य के बड़े भिखारियों जैसे थे। उनकी बिना बालों वाली लम्बी गर्दनें, बेडौल और झुकी हुई, दुबले-पतले, घबरा देने वाले ड्रैगनों की तरह आगे निकली हुईं, दयनीय जान पड़ती थीं। परन्तु वे कितने ही मरियल से क्यों न हों, श्याङचि को उनसे घृणा नहीं हुई, कम से कम वे जीवित तो थे।

ईश्वर ने उसे ऐसे तीन बहुमूल्य प्राणी दिये थे, जिनके बदले वह रिक्शा ले सकता था। इसलिये वह अपने आपको संसार का सबसे अधिक सौभाग्यशाली व्यक्ति मानने लगा। ऐसा भाग्य प्रतिदिन नहीं उदय होता। वह बरबस हँसे बिना न रह सका।

धूमिल आकाश लाल होने लगा, खेत और दूर के वृक्ष पहले से भी अधिक गहरे दिखायी देने लगे। लाल और धुमिल मिलकर ऐसे हो गये कि आकाश कहीं-कहीं गुलाबी, कहीं किरमिजी और उसका अधिकांश भाग काले अँगूरों की तरह बैंगनी नज़र आता था। फिर लाल के भीतर से चमकीला सुनहरा रंग प्रकट हुआ और सभी रंग दमक उठे। सहसा सारा दृश्य स्फटिक के समान उज्ज्वल हो गया। फिर पूर्व में प्रभातकालीन मेघ गहरे लाल हो गये और ऊपर आकाश नीला दिखने लगा। लाल

* एक युवानपाओ (प्राचीन चीनी मुद्रा का नाम) पचास औंस चाँदी के बराबर था।

मेघों को भेदते हुए सुनहरी किरणें फूटीं ओर दक्षिणपूर्व के आकाश में बादलों के ताने और किरणों के बाने से एक राजसी, जगमगाता वस्त्र बुना गया। खेतों, वृक्षों और जंगली घास का रंग गहरे हरे से बदलकर चमकीला मरकती हो गया। चिरन्तन चीड़ों की टहनियाँ कुन्दन-रंगी हो गयी, उड़ते पंछियों के पंख झिलमिलाने लगे, सारी चीज़ें मुस्करा रही लगती थीं। श्याङचि को लगा कि वह इस लाल प्रकाश के विस्तार को अभिवादन करे क्योंकि जब से सैनिकों ने उसे पकड़ा था तब से उसे महसूस हो रहा था कि उसने सूर्य के दर्शन ही नहीं किये थे। सिर झुका होने, दिल में गालियों के रहते वह एक तरह से सूरज, चाँद और आसमान को भूल चुका था। अब वह आज़ादी से एक पथ पर आगे बढ़ रहा था और उसके बढ़ने के साथ-साथ पथ उज्ज्वलतर होता जा रहा था। धूप ने घास पर पड़ी ओस की बूँदों को चमका दिया, वह उसकी भौंहों और बालों पर पड़ती हुई उसके हृदय में उल्लास भर रही थी। वह अपने सब संघर्ष, जोखिम और दर्द भूल गया। वह फटेहाल और मैला-कुचैला था तो इससे क्या? सूर्य की ऊष्मा और प्रकाश ने उसे अपनाया था, वह रोशनी और गर्माहट के संसार में जीवित था। वह इतना प्रसन्न था कि उसका मन आनन्द से गा उठने को हो रहा था।

अपने चीथड़ों और पीछे चले आ रहे झड़ते बालों वाले तीन ऊँटों पर हँसते हुए उसने सोचा कि यह कितनी अजीब बात थी कि चार लथेड़े हुए प्राणी जोखिम से बच निकलकर इस धूपीले रास्ते पर चल रहे थे। यह सोचने की ज़रूरत नहीं थी कि कौन सही था और कौन गलत। उसके लिये तो वह सब ईश्वर की इच्छा से ही हुआ था। आश्वस्त होकर वह अपने रास्ते पर धीमे-धीमे चलता रहा। ईश्वर के उसकी रक्षा करने तक उसे किसी से डरने की जरूरत नहीं थी। वह कहाँ था? यह पूछने का उसका मन नहीं हो रहा था, हालाँकि खेतों में किसान काम करते दिखायी दे रहे थे। सबसे अच्छा था कि वह चलता जाये और यदि ऊँटों का तत्काल बेचा न जा सका तो कोई बात नहीं। वह नगर पहुँचने पर भी उन्हें बेच सकता था। दोबारा पेइफिङ पहुँचने की उसे कितनी अधिक ललक हो रही थी! यद्यपि वहाँ उसका परिवार या जायदाद न थी तो भी उसका घर तो वहीं था। सारा नगर ही उसका घर था और एक बार वहाँ पहुँच गया तो वह कोई न कोई रास्ता निकाल ही लेगा।

वहाँ से कुछ दूर एक काफ़ी बड़ा गाँव दिखने लगा। उसके बाहर सरो के वृक्ष ऐसे दीख रहे थे जैसे लम्बे पहरेदार पंक्ति बाँधे खड़े हों और चूल्हों से उठते धुएँ के लच्छे नीचे-नीचे मकानों पर मण्डरा रहे थे। दूर से कुत्तों का भौंकना उसे मधुर लगा। वह सीधे गाँव की ओर बढ़ा। ऐसा तो नहीं था कि वहाँ उसे अपनी किस्मत चमक जाने की आशा थी, परन्तु वह दिखाना चाहता था कि वह किसी से डरता नहीं। आख़िरकार वह ईमानदार था और उसे भले ग्रामीणों से क्यों डरना चाहिए था? क्या वे सभी उसी शान्तिमय धूप में ताप नहीं रहे थे? उसे आशा थी कि वहाँ पीने का पानी मिल जायेगा, परन्तु अगर न मिला तो भी कोई बात नहीं। पर्वतों में मृत्यु से बचकर निकल आये व्यक्ति के लिये थोड़ी सी प्यास क्या थी?

कुत्तों के भौंकने से उसे चिन्ता नहीं हुई, परन्तु औरतों और बच्चों के घूरने से वह घबड़ाने लगा। उनके उस तरह घूरने से उसे लगा कि वह अवश्य ही बहुत विचित्र ऊँटवान दीखता होगा। इससे उसे चिढ़ हुई। पहले तो सैनिकों ने उसे कूड़े कचरे की तरह तिरस्कृत किया था और अब सभी गाँववासी उसे देख रहे थे जैसे वह कोई राक्षस था। इसके बारे में वह क्या कर सकता था? उसे अपने शरीर और शक्ति पर सदा गर्व रहा था परन्तु पिछले दिनों अकारण उससे घिनौना व्यवहार किया जाता रहा था। एक घर की छत पर उसने दोबारा धूप की झलक देखी परन्तु वह महज एक क्षण पहले देखी हुई धूप से कुछ कम मनोहर लगी।

गाँव में केवल एक मुख्य रास्ता था। उस पर जगह-जगह सुअरों तथा घोड़ों के बदबूदार मूत्र से भरे हुए हुए गड्ढे दिखायी देते थे। ऊँटों के फिसलकर गिर पड़ने की आशंका से श्याङचि ने थोड़ी देर आराम करना ठीक समझा। रास्ते के उत्तरी ओर किसी अपेक्षाकृत अमीर ग्रामीण का मकान था। उसमें पीछे की ओर खपड़े जड़ी एक इमारत थी परन्तु सामने महज एक जालीदार दरवाज़ा था और कोई कायदे का फाटक या ड्योढ़ी नहीं थी। श्याङचि का हृदय उत्तेजित हो उठा। खपरैल की छत का मतलब था कि घर का मालिक सम्पन्न होगा जबकि ड्योढ़ी के बजाये जालीदार दरवाज़े से जाहिर होता था कि वह ऊँटों का स्वामी होगा। बहुत अच्छा है, वह थोड़ी देर यहीं आराम करेगा और भाग्य ने साथ दिया तो ऊँटों का सौदा भी कर पाएगा।

"सुह, सुह, सुह!" करते हुए उसने ऊँटों को घुटनों के बल झुकाने के लिये टेरा। ऊँटों को टेरने की यही आवाज वह जानता था, और उसने बड़े गर्व से यह हाँक लगाई, ताकि गाँव वाले जान लें कि वह सचमुच अपना धन्धा जानता है। ऊँट सचमुच झुक गये और वह भी इठलाते हुए सरो के छोटे वृक्ष के तले बैठ गया। हर किसी ने उसे घूरा और उसने भी जवाब में उन्हें घूरकर देखा। वह जानता था कि सन्देह दूर करने का यही एकमात्र तरीका है।

तभी आँगन में से एक वृद्ध बाहर आया। वह सामने से खुली हुई नीली सूती कुर्ती पहने हुए था और उसके चेहरे पर चमक थी। देखते ही जान सकते थे कि वह धनी व्यक्ति है। श्याङचि ने तुरन्त एक निर्णय किया।

"महाशय, क्या आपके यहाँ पानी होगा?" मैं एक कटोरा पीना चाहता हूँ।"

"आह!" वृद्ध ने रगड़कर अपने सीने पर से कीचड़ छुड़ाते हुए श्याङचि को ताड़ा, फिर सावधानी से तीन ऊँटों का जायजा लिया। "पानी है। तुम कहाँ से आये हो?"

"यहाँ से पश्चिम से।" श्याङचि ज़्यादा सुस्पष्टता से बताने का साहस न जुटा पाया क्योंकि उसे तब भी मालूम नहीं था कि वह कहाँ था।

"क्या वहाँ सैनिक हैं?" वृद्ध की नज़र श्याङचि की सैनिक पतलून पर टिकी

हुई थी।

"उन्होंने मुझे अचानक पकड़ लिया था, किसी तरह भाग निकला हूँ।"

"आह! पश्चिमी दर्रे के बाहर ऊँटों को कोई खतरा तो नहीं है?"

"सब सैनिक पर्वतों में चले गये हैं। अब बहुत शान्त है।"

"हूँ!" वृद्ध ने धीमे-धीमे सर हिलाया। "जरा ठहरो, मैं तुम्हारे लिये पानी लाता हूँ।"

श्याङचि उसके पीछे आँगन में गया और वहाँ उसने चार ऊँट देखे।

"आप मेरे तीनों ऊँट क्यों नहीं ले लेते? इस तरह एक काफिला बना पाएँगे।"

"हूँ! एक काफिला! तीस वर्ष पहले मेरे पास तीन काफिले थे। मगर वक़्त बदल गया है। आजकल कौन ऊँट पाल सकता है?" वह सूनी-सूनी आँखों से अपने चारों जानवरों को खड़ा ताकता रहा। कुछ देर बाद वह फिर बोला, "कुछ दिन पहले मैं सोच रहा था कि अपने एक पड़ोसी से तय करके इन्हें उसके ऊँटों के साथ चरने के लिये दर्रे के बाहर भेज दूँ। परन्तु पूर्व में सैनिक और पश्चिम में भी सैनिक होने पर बाहर जाने की हिम्मत कौन करता? गर्मियों में इन्हें यहाँ कैद में घुटते देखकर मुझे दुख होता है। मुझे सचमुच पीड़ा होती है। जरा उन मक्खियों को तो देखो! गर्मी बढ़ने पर मच्छर भी होंगे। अच्छे भले जानवरों को कष्ट उठाते देखकर तरस आता है और ऐसी हालत में इन्हें कष्ट तो होगा ही!" यह कहकर वह बार-बार सिर हिलाने लगा, जैसे इस दुख और निराशा से वह बहुत विचलित हो।

"मेरे तीनों ऊँट ले लें, जनाब, और सब ऊँटों को दर्रे के बाहर चरने ले जाइए।" श्याङचि लगभग अनुयय कर रहा था। "इतने जानदार जानवर गर्मियों में यहाँ रहे तो मच्छर और मक्खियाँ इन्हें अधमरा कर देंगी।"

"पर उन्हें खरीदने के लिये धन किसके पास है? आजकल ऊँट रखने की हैसियत किसकी है?"

"आप रख लीजिए, जो क़ीमत चाहें, दे दें। मेरे सर से यह जिम्मदारी उतर जाये तो मैं शहर जाकर रोज़ी कमा लूँगा।"

वृद्ध ने एक बार फिर श्याङचि को ताड़ा—कोई चोर-उच्चका नहीं था। फिर उसने घूमकर बाहर खड़े तीनों ऊँटों पर नज़र डाली और लगा कि वे उसे सचमुच पसन्द आ रहे थे। पर वह यह भी अच्छी तरह जानता था कि उनका कोई उपयोग वह नहीं कर पायेगा। परन्तु पुस्तक प्रेमी के प्रत्येक पुस्तक खरीदना चाहने और अश्वप्रेमी के नये घोड़ों की तलाश में रहने की तरह, वह व्यक्ति जिसके पास कभी ऊँटों के तीन काफ़िले रहे हों, हमेशा और ज़्यादा ऊँटों के लिये उत्सुक रहता है। इसके अलावा श्याङचि उन्हें सस्ते में भी दे रहा था। जब किसी गुणग्राहक को कोई अच्छा सौदा करने का मौका मिलता है तो भूल जाता है कि उस सौदे की उपयोगिता क्या है।

"नौजवान, अगर मेरे पास काफ़ी अतिरिक्त धन होता तो मैं सचमुच इन्हें रख

लेता!" यह बात वृद्ध के हृदय से निकली थी।

"इन्हें हर हालत में रख लीजिए, दाम कुछ भी दे दीजिएगा!" श्याङचि इतना गम्भीर लग रहा था कि वृद्ध सचमुच असमंजस में पड़ गया।

"जवान, सच बात तो यह है कि तीस वर्ष पहले ये ऊँट तीन युवान पाओ होते, परन्तु आज के समय में, जब चारों और युद्ध जारी है और उथलपुथल मची हुई है तो कोई क्या कहे।... तुम कहीं और कोशिश कर लो।"

"दाम की मुझे परवाह नहीं!" श्याङचि कहने के लिये और कुछ सोच ही न पाया। वह जानता था कि वृद्ध सच बोल रहा था। मगर वह ऊँटों को बेचने की कोशिश में जगह जगह घूमना नहीं चाहता था। अगर उसने इन ऊँटों से छुटकारा न पाया तो वह किसी और मुसीबत में भी पड़ सकता था।

"देखो, मैं तुम्हें सिर्फ बीस से तीस युवान देते हुए शर्मिन्दा हूँ परन्तु ईमानदारी की बात तो यह है कि इतने भी निकाल पाना मेरे लिये सचमुच कठिन है। आजकल के वक़्त में करने के लिये कुछ भी तो नहीं है।"

श्याङचि का दिल बैठ गया। बीस से तीस युवान? क्यों, वह तो रिक्शे के दाम से कहीं कम था! परन्तु वह सौदा निपटाने की जल्दी में था और उसे इस पर भरोसा नहीं था कि उसके ऊँट खरीदने वाला और कोई ग्राहक टकरा जायेगा।

"जनाब, आप जो भी दे सकते हैं, दे दीजिये!"

"जवान, तुम्हारा धन्धा क्या है? यह स्पष्ट है कि तुम ऊँटवान तो हो नहीं।"

श्याङचि ने उसे सब सच बता दिया।

"अहा, तो तुमने इन जानवरों की खातिर अपनी जान तक को जोखिम में डाला!" वृद्ध ने उससे सहानुभूति प्रकट की और यह जानकर सन्तुष्ट हुआ कि ऊँट चोरी के नहीं हैं। श्याङचि का ऊँटों को ले आना चोरी से भले ही अधिक भिन्न नहीं था पर कम-से-कम बीच में सैनिक तो थे ही। युद्ध के समय सामान्य प्रतिमानों के आधार पर कोई निर्णय नहीं किया जा सकता।

"देखो, दोस्त मैं तुम्हें पैंतीस युवान देता हूँ। अगर मैं कहूँ कि मुझे ऊँट सस्ते में नहीं मिल रहे हैं तो मैं कमीना हूँ। और अगर मैं इससे एक युवान भी अधिक देता हूँ तो भी कमीना ही हूँगा। मैं साठ से ऊपर का हूँ, मैं इससे अधिक तुमसे क्या कह सकता हूँ?"

श्याङचि के पास कोई उत्तर नहीं था। वह हमेशा कंजूस रहा था। परन्तु वृद्ध के मित्रों के समान स्पष्टवादी तरीके के सामने और सैनिकों के साथ उसके हाल के अनुभवों के सन्दर्भ में और अधिक मोलभाव करने में वह शर्मिन्दा महसूस कर रहा था। इसके अलावा हाथ में पैंतीस युवान दस हज़ार युवान की आशा से कहीं अधिक विश्वसनीय थे। यह अलग बात है कि जान को जोखिम में डालने के बदले यह

रकम वाकई बहुत थोड़ी थी। तीन ज़िन्दा और तन्दुरुस्त बड़े-बड़े ऊँट निश्चय ही पैंतीस युवान से अधिक क़ीमत के थे। परन्तु वह कर भी क्या सकता था?"

"ये लीजिए ऊँट आपके हैं, जनाब। बस एक अनुग्रह और कर दीजिए। मुझे एक कमीज और खाने के लिये कुछ दे दें।"

"ठीक है!"

श्याङचि ने जीभर ठण्डा पानी पिया। फिर अपने पैंतीस चमचमाते हुए युवान और मक्के की दो रोटियाँ लेकर और एक फटी-फटी सी सफ़ेद कुर्ती, जिससे उसका सीना भी ढकता नहीं था, पहनकर वह चल दिया। वह एक ही छलाँग में नगर पहुँच जाने के लिये कितना उत्सुक था!

चौथा अध्याय

तीन दिन तक श्याङचि हाएत्येन की एक छोटी सी सराय में कभी बुखार से तपता तो कभी ठण्ड से काँपता पड़ा रहा। इस बीच उसका दिमाग़ एकदम खाली सा रहा था। मसूड़ों के आसपास बैंगनी रंग के छाले निकल आये थे। प्यास के मारे बेहाल था मगर भूख बिल्कुल नहीं थे। तीन दिन कुछ भी न खाने के बाद ज्वर तो उतर गया मगर देह में मानो जान ही नहीं रह गयी थी। शायद इन्हीं दिनों में लोगों ने उसके प्रलाप में ऊँटों का ज़िक्र सुना था। इसलिये अन्ततः जब वह होश में आया तो उसका नाम "ऊँट श्याङचि" पड़ चुका था।

नगर में आने के बाद से वह "श्याङचि" के नाम से ही जाना जाता था, मानो उसका कोई कुलनाम था ही नहीं। अब नाम में "ऊँट" जुड़ जाने से लोगों ने उसके कुलनाम के बारे में सोचना ही छोड़ दिया। वह स्वयं अपने नाम के विषय में कभी चिन्तित नहीं रहा था परन्तु अब वह सोचने लगा कि यह सौदा तो महँगा पड़ा, क्योंकि जानवरों की क़ीमत भी बहुत कम मिली और यह उपनाम भी पड़ गया।

वह खड़ा होने लायक हुआ तो उसने फैसला किया कि बाहर जाकर चारों ओर देखे। मगर टाँगें बेहद कमजोर थीं और वह सराय के दरवाज़े पर पहुँचा तो एकाएका जवाब दे गयीं और वह भहराकर जमीन पर गिर पड़ा। बड़ी देर तक वह हैरान सा गुमसुम बैठा रहा, माथे पर ठण्डे पसीने की बूँदें थीं। यह उसने निर्मम होकर झेला। फिर आँखें खोलीं और उसे अपने पेट में गुड़गुड़ाहट होने की आवाज सुनायी दी। उसे थोड़ी भूख महसूस हुई। धीरे-धीरे वह खड़ा हुआ और एक खोमचे वाले के पास पहुँचा जो अँगीठी लिये उस पर हुनथुन* तैयार करके बेच रहा था। उसने एक कटोरा हुनथुन खरीदा और फिर जमीन पर बैठ गया। पहले घूँट से ही उसे मतली सी हुई और उसे घूँट को जबरन घुटकने से पहले वह थोड़ी देर उसे मुँह में रखे रहा। फिर और शोरबा पीने का मन ही नहीं हुआ। खैर अगले क्षण शोरबा उसके पेट मे पहुँच गया लगा और उसे दो बार जोरदार डकारें आयीं। इससे वह जान गया कि वह ज़िन्दा रह सकता था।

पेट में कुछ खुराक जाने पर उसने एक बार फिर अपना जायजा लिया। वह बहुत दुबला हो गया था, उसकी चिथड़ा-चिथड़ा पतलून बेहद गन्दी हो गयी थी। उठने का तो उसका मन नहीं था परन्तु उसे फिर से साफ़-सुथरा हो जाने की जल्दी थी। वह जमाने का मारा हुआ नज़र आता नगर में नहीं पहुँचना चाहता था। पर सजने-सँवरने के लिये तो पैसा खर्च करना पड़ता। हजामत बनवाने, नये कपड़े बदलने, नये जूतों-मोजों सब में पैसा लगता ही। मगर पैंतीस युवान में से एक थुङछयेन तक भी उसे खरचना नहीं चाहिए था, वे रिक्शा खरीदने के लिये पहले ही बहुत कम थे। उसे अपने ऊपर बहुत तरस आया। उसने सैनिकों के साथ बहुत दिन तो नहीं बिताए थे मगर वह अनुभव ऐसा दुःस्वप्न जैसा जान पड़ने लगा था जिसके दौरान वह मानो बूढ़ा हो गया था, जैसे रातोंरात उसकी उमर में कई वर्ष बढ़ गये थे। उसके बड़े-बड़े हाथ और पाँव स्पष्टतः उसके अपने ही थे, फिर भी उसे लगा कि वे अचानक उसे कहीं से मिल गये थे। उसका मन बहुत क्लान्त था और अतीत के अन्यायों और जोखिमों को याद करने का साहस उसमें नहीं रहा था, वैसे वे सब उसी तरह उसकी चेतना में समाहित हो चुके थे जैसे वर्षा के दिन में बिना आकाश को देखे ही कोई भी कह सकता है कि बादल घिरे हुए हैं। उसे अपना शरीर विशेष रूप से रक्षणीय जान पड़ा, उसे वाकई उस पर अत्याचार नहीं करना चाहिए। वह खड़ा हो गया। यद्यपि वह जानता था कि वह अभी बहुत कमजोर है परन्तु उसे साफ़-सुथरा बनने में विलम्ब नहीं करना चाहिए। उसे विश्वास था कि एक बार सिर घुटाते और कपड़े बदलते ही उसकी शक्ति एकदम वापस आ जायेगी।

कुल मिलाकर उसे अपने आपको फिर से सजाने-सँवारने में केवल दो युवान दो माओ लगे। बिना रंगे मोटे कपड़े की पतलून और सलूके पर एक युवान, काले कपड़े के जूतों पर आठ माओ, मोटे सूती मोज़े पर एक माओ पाँच फन लगे और सरपत का टोप दो माओ पाँच फन का मिला। अपने पुराने लत्तों के बदले उसने माचिसों के दो पैकेट ले लिये।

माचिसें हाथ में सम्भाले हुए वह मुख्य सड़क पर शीचिमन दरवाज़े की ओर बढ़ा। वह ज़्यादा दूर भी नहीं गया था कि उसे थकान और कमजोरी महसूस होने लगी परन्तु उसने हिम्मत से काम लिया और चलता गया। वह रिक्शा पर सवार नहीं हो सकता था, उसे हर तरह से यह कल्पनातीत लगा। किसी किसान के लिये आठ से

* उबालकर बनाया गया समोसे की तरह का एक पकवान। इसके साथ शोरबा भी होता है। इसे दक्षिण चीन में ज़्यादा पसन्द किया जाता है।

दस ली कोई खास फासला ही न था और वह खुद भी रिक्शाचालक था। इसके अलावा उस जैसे लहीम-शहीम आदमी के लिये मामूली-सी बीमारी से पराजित हो जाना भी बेतुका था। यदि वह गिरकर मर न जाता तो वह हार मानने के बजाये पेइफिङ तक घिसटता-लुढ़कता चला ही जाता! अगर वह आज नगर नहीं पहुँच पाया तो फिर वह गया। उसे अपनी शक्ति में परम आस्था थी, इससे उसे कोई फर्क नहीं पड़ा था कि उसे क्या बीमारी हुई थी।

किसी तरह लड़खड़ाता हुआ वह बढ़ता गया। हाएत्येन से कुछ दूर जाने पर ही उसे दिन में तारे नज़र आने लगे। उसने अपने आपको सम्भालने के लिये सरो के एक वृक्ष को पकड़ा। धरती और आकाश तेजी से घूम रहे महसूस होने पर भी वह हार मानकर बैठा नहीं। उनके घूमने की चाल पहले धीमी पड़ी और फिर वे थम गये तो उसका हृदय मानो बहुत ऊँचाई से गिरकर उसके सीने में अपनी जगह पर आ गया। उसने माथे से पसीना पोंछा और फिर अपने रास्ते पर आगे चल पड़ा। उसका सिर घुटा हुआ तथा कपड़े और जूते नये-नये थे। वह समझता था कि उसने अपने लिये तो काफ़ी कुछ कर लिया है, अब उसकी टाँगों को अपना काम करना, यानी उसे ले चलना चाहिए था!

दोबारा दम लेने के लिये रुके बगैर वह घिसटकर चलता हुआ क्वानश्याङ पहुँच गया। घोड़ों और लोगों का घालमेल, आवाजों का बेसुरापन, पैरों के नीचे मुलायम धूल की गन्ध उसे ललचा रही थी कि वह झुककर उस बदबूदार धरती को चूम ले। उसे उस धरती से प्यार था और वह जीविका का स्रोत थी। उसके माता-पिता या भाई न थे, न ही कोई कुटुम्बी था। उसका एकमात्र मित्र यही प्राचीन नगर था। इस नगर ने उसे सब दे दिया था। इसलिये वह यहाँ भूखों भी मरता तो भी देहात से अधिक प्यार इसी को करता। यहाँ देखी जा सकने वाली घटनाएँ घटती थीं, सुनी जा सकने वाली बातें थीं, रोशनी और आवाज हर जगह थी। उसके जमकर परिश्रम करते रहने तक उसे अनगिनत पैसा मिलता जाता। कभी न खत्म होने वाली बढ़िया वस्तुएँ भी थीं—उसके खा और पहन पाने से कहीं ज़्यादा मात्रा में। यहाँ तो भिखमँगे को भी गोश्त वाला शोरबा मिल जाता था जबकि देहात में मक्के के आटे के सिवा कुछ था नहीं। वह काओल्याङ पुल के पश्चिमी ओर पहुँचा तो तट पर बैठ गया और अतिशय आनन्द के कारण आँखों से आँसू बह निकले।

पश्चिम में सूर्यास्त हो रहा था। किनारों पर सरो के पुराने वृक्ष तिरछे बढ़े हुए थे और उनकी फुनगियों पर सुनहरी आभा झलक रही थी। नदी में पानी बहुत कम था, परन्तु सेवार की बहुतायत से वह एक लम्बी चिकनी हरी पट्टी जैसी जान पड़ती थी। उसकी गहरी हरियाली में से एक हल्की-सी बास उठ रही थी। उत्तरी तट पर गेहूँ की बालियाँ निकल आयी थीं और उनके छोटे सूखे तनों पर पत्तियाँ धूल से ढकी थीं। दक्षिण में कुमुदनियों के तालाब में छोटी, शिथिल हरी पत्तियाँ तैर रही थीं, जिनके

इर्दगिर्द रह-रहकर छोटे-छोटे बुलबुले उठ रहे थे। पूर्व की ओर पुल पर यातायात जारी था। सूर्य की तिरछी किरणों में वह और भी जल्दबाजी में प्रतीत होता था मानो झुटपुटे के आते ही होने ने सभी को बेचैन कर दिया हो। परन्तु श्याङचि के लिये यह सब बहुत मोहक था। उसके लिये यही एकमात्र नदी थी, यही वृक्ष, कुमुदनियाँ, गेहूँ और पुल कहे जा सकते थे—आख़िर वे सभी पेइफिङ के थे।

वह खामोश बैठा रहा, उसे जाने की कोई जल्दी न थी। चारों ओर सब कुछ इतना परिचित और इतना प्रिय था कि वह बड़ी खुशी से मरते दम तक वहीं बैठा आँखें सेंकता रहता। लम्बे समय तक विश्राम करके वह पुल के सिरे पर एक कटोरा लाओतओफू* खाने के लिये गया। सिरका, सोया सॉस, लाल मिर्चों वाला तेल और च्योछाए** के कतरे हुए टुकड़े जब उबलते हुए सफ़ेद लाओतओफू मे डाले गये तो उसकी सुगन्ध इतनी रुचिकर थी कि वह स्तब्ध रह गया। कटोरे को हाथों में थामे, उसकी नज़रें गहरे हरे च्योछाए की कतरनों पर टिकी हुई होने पर उसके हाथ काँपने लगे। एक बड़ा कौर मुँह में डाला था कि उसे लाओतओफू जलाते हुए गले से पेट तक उतरता लगा। किसी तरह उसने मिर्चों वाले तेल के और दो छोटे चम्मच भरकर उसमें डाले। कटोरा खाली कर डालने तक उसका कमरबन्द पसीने से भीग चुका था। अधमुँदी आँखों से उसने अपना कटोरा आगे बढ़ाया और फिर एक कटोरा लाओतओफू लिया।

जब उठकर खड़ा हुआ तो उसने दोबारा इंसानों की तरह महसूस किया। पश्चिम में सूर्य लगभग डूबने वाला था, सूर्यास्त के बादल नदी को गुलाबी पुट दे गये थे। आनन्द के मारे उसका चिल्लाने का मन हुआ। अपने चेहरे पर के चिकने दाग़ को छूते और जेब में पड़े पैसों को टटोलते हुए उसने मीनार पर पड़ती हुई धूप को तिरछी नज़र से देखा। वह अपनी बीमारी भूल गया, सभी कुछ भूल गया। मानो किसी बड़ी चाहत से प्रेरित होकर उसने नगर में प्रवेश करने का निश्चय किया।

नगर की ऊँची, मोटी प्राचीर में बने हुए बड़े दरवाज़े में तरह-तरह के वाहन और पैदल चलते लोग खचाखच भरे हुए थे। वे उसमें से गुजरने की जल्दबाजी में तो थे परन्तु कोई भी बहुत तेजी से चलने का साहस नहीं कर पा रहा था। चाबुकों की फटकारों, चिल्लपों, गाली-गलौज, भोंपुओं की आवाज़ों, घण्टियों की टनटनाहट और लोगों की हँसी के मिल जाने से दरवाज़े के बोगदे में इतना शोर मचा था मानो वह बोगदा एक लाउडस्पीकर हो जिसमें हर व्यक्ति अपना कोलाहल भर रहा हो। श्याङचि भीड़ में से बढ़ता चला गया, अपने बड़े-बड़े पाँवों को कभी यहाँ, कभी वहाँ धरता हुआ लम्बोतरी, पतली मछली की तरह उछलती हुई लहरों के साथ-साथ बहता हुआ

* सोयाबीन को पीसकर तैयार किया गया एक खाद्यपदार्थ।

** स्वाद में हरे प्याज और लहसुन से मिलती-जुलती गेहूँ के छोटे पौधे के पत्तों के आकार की वनस्पति।

आगे बढ़ा, और अन्त में भीड़ को चीरता हुआ नगर में प्रवेश कर गया। उसके सामने शिनच्येखओ का चौड़ा, सीधा मुख्य पथ फैला हुआ था। उसे देखकर उसकी आँखें ऐसे चमक उठीं जैसे पूर्वी छतों पर परावर्तित आलोक चमक रहा था। उसने खुद-ब-खुद कुछ सोचकर स्वीकृति में सिर हिलाया।

उसका बिस्तर शीआनमन मार्ग पर मिलाप अहाते में अब भी पड़ा हुआ था, इसलिये वह स्वभावतः वहीं चला गया। वह उनसे रिक्शा तो कभीकभार ही किराये पर लेकर चलाता, लेकिन अपना घरबार न होने की वजह से रहता हमेशा वहीं रहा था।

इस अहाते का स्वामी चौथा मालिक ल्यू सत्तर का हो चला था मगर उसने छल-कपट नहीं छोड़ा था। जवानी के दिनों में वह सैनिक डिपो की चौकीदारी, जुए के अड्डे चलाने और गुलामों की खरीद-फरोख्त जैसे धन्धे कर चुका था और बहुत ज़्यादा सूद पर कर्ज देता रहा था। इन सब धन्धों के लिये जो योग्यताएँ होनी चाहिए थीं, उसमें थीं—ताकत, चतुराई, सामाजिक रिश्ते और कुछ नेकनामी। छिङ राजवंश* के पतन से पहले उसने सरेआम बलवाई में हिस्सा लिया, भले खानदानों की औरतों का अपहरण किया था और स्वयं यातनाएँ सही थीं। यातनाएँ दी जाने पर उसने न तो कभी तड़प जाहिर की और न ही कभी दया की भीख माँगी और अपनी परीक्षा की घड़ी में डटे रहने की नेकनामी कमायी।

हुआ यह था कि गणराज्य की स्थापना के तुरन्त बाद जब वह कारागार से छूटा तो पुलिस की शक्ति बढ़ रही थी। चौथा मालिक ल्यू समझ गया कि अब कोई भी व्यक्ति स्थानीय नायक के तौर पर जम नहीं पायेगा और अगर ह्वाङ थ्येनपा** भी फिर ज़िन्दा हो जाये तो उसे भी कोई गुंजाइश नज़र नहीं आयेगी। यही सोचकर ल्यू ने रिक्शों का धन्धा शुरू किया। स्थानीय ठग होने के कारण वह ग़रीबों से निपटना जानता था—उसे पता था कि कब उनसे सख़्ती की जाये और कब थोड़ा सा दबाव कम किया जाये। इसके अलावा संगठन करने की उसमें प्रतिभा थी। रिक्शाचालकों में कोई भी उससे चालबाजी करने का साहस नहीं कर सकता था। कभी उन पर हँसते और कभी उन्हें घूरकर देखते हुए उसने उन्हें पूरी तरह किंकर्तव्यविमूढ़ बना रखा था, मानो उनका एक पाँव स्वर्ग में और दूसरा नरक में हो। इसलिये वे ऐसी दुविधा में पड़े उसे अपनी चलाने देने को ही बेहतर समझते थे।

तब तक मालिक ल्यू के पास क़रीब साठ रिक्शे हो गये थे। उनमें से सबसे पुराना भी कम-से-कम सत्तर प्रतिशत नया था। वह टूटे-फूटे रिक्शे किराये पर नहीं उठाता था। वह दूसरे रिक्शा मालिकों से अधिक किराया लेता था, लेकिन तीन वार्षिक उत्सवों*** पर उनके मुकाबले दो दिन ज़्यादा रिक्शा बिना किराये दे दिया करता

* चीन गणराज्य की स्थापना से पहले का चीन का अन्तिम राजवंश (1644-1911)।

** लोकप्रिय किस्सों में एक पात्र।

*** 1. वसन्तोत्सव पहले यह नववर्ष दिवस कहलाता था। इस शताब्दी के आरम्भ में चीन

था। उसके मिलाप अहाते में कोठरियाँ थीं जहाँ छड़े चालक मुफ़्त रह सकते थे, मगर शर्त यह थी कि वे रिक्शा का किराया दें। किराया न दे पाने और किसी भी तरह वहाँ रहने की कोशिश करने वालों के बिस्तर वह जब्त कर लेता था और उन लोगों को टूटी हुई चायदानी की तरह बाहर फिंकवा दिया करता था। फिर भी यदि कोई बड़ी मुसीबत में हुआ या अकस्मात बीमार पड़ गया तो उसके बुजुर्ग को जाकर बता देने पर वह उसकी मदद करने में कुछ भी करने से संकोच न करता था। उसकी प्रतिष्ठा का यह भी एक कारण था।

मालिक ल्यू मानो एक बाघ था। सत्तर के क़रीब होने पर भी उसकी कमर सीधी थी और दस-बीस ली पैदल चलना उसके लिये मुश्किल न था। उसकी बड़ी-बड़ी और गोल-गोल आँखें, बड़ी नाक, चौकोर जबड़े और बाहर निकले हुए दाँतों से लगता था कि उसने मुँह खोला नहीं कि बाघ जैसा दिखने लगेगा। वह कद में श्याङचि के बराबर था और उसका सिर घुटा होने से चमकता तथा दाढ़ी-मूँछ सफाचट रहती। अपने को बाघ जैसा मानना उसे पसन्द था, और उसे सिर्फ यही खेद था कि उसके कोई बेटा न होकर बस एक "बाघ" बेटी थी। वह सैंतीस या अड़तीस बरस की रही होगी। मालिक ल्यू को जानने वाला प्रत्येक व्यक्ति उसकी बेटी बाघिन को अवश्य ही जानता था। बात यह थी कि वह वाकई बाघिन जैसी दीखती थी और लोग उससे डरकर दूर भागते थे। अपने बाप की अच्छी सहायक होने के बावजूद किसी ने भी उसके साथ विवाह की पेशकेश करने का साहस नहीं किया था। कुल मिलाकर वह पुरुष से मिलती-जुलती थी। गाली भी वह पुरुषों जैसे खरेपन के साथ देती और कभी-कभी उसमें अपनी ओर से चटपटापन भी जोड़ देती। मालिक ल्यू के बाहर के कामकाज सम्भालने और बाघिन के अन्दरूनी बन्दोबस्त से मिलाप अहाता बड़ी सुधराई से चलता था। उसकी प्रतिष्ठा रिक्शा क्षेत्रों में इतनी ऊँची थी कि रिक्शाचालक और मालिक दोनों ही ल्यू परिवार के तरीकों को अक्सर ऐसे उद्धृत करते हैं जैसे विद्वान लोग अपने मत के पक्ष में शास्त्रों को उद्धृत किया करते हैं।

में पश्चिमी कैलेण्डर का इस्तेमाल करना शुरू करने से पहले तक चीनी चाँद्र पंचांग के अनुसार वसन्तोत्सव का दिन ठीक नये साल के पहले दिन पड़ता था। आज भी चीनी जनता इसे परम्परागत तरीके से बेहद उत्साह के साथ मनाती है। 2. ड्रैगन-नौका त्योहार यह चीनी चाँद्र पंचांग के पाँचवें महीने के पाँचवें दिन प्राचीनकालीन महान देशभक्त कवि छूवी य्वान (सम्भवतः ईसापूर्व 340-278) की स्मृति में मनाया जाता है। छू राज्य में उन्होंने व्याप्त राजनीतिक भ्रष्टाचार को खत्म करने के लिये राजा के सामने व्यवस्था में सुधार के अनेक प्रस्ताव रखे थे परन्तु राजा ने उन्हें निर्वासन का आदेश दिया। बाद में उन्होंने पाँचवें महीने की पाँचवीं तारीख को नदी में कूद कर आत्महत्या कर ली। 3. मध्य शरदोत्सव यह चीनी चाँद्र पंचांग के आठवें महीने के पन्द्रहवें दिन मनाया जाता है। इस अवसर पर लोग बढ़िया मून-केक बनाकर चन्द्रमा देवी की पूजा करते हैं। पहले चन्द्रमा को साष्टाँग प्रणाम करने और हवन करने की रस्म प्रचलित थी। यह त्योहार खुशगवार मिलन का प्रतीक है।

अपना निजी रिक्शा खरीदने के पहले श्याङचि ने मिलाप अहाते से एक रिक्शा किराये पर लिया था। उसने अपनी जमा की हुई रकम मालिक ल्यू के पास रख दी थी और काफ़ी जमा हो जाने पर अपना रिक्शा खरीदने के लिये वह रकम वापस ले ली थी।

"चौथे मालिक, मेरा रिक्शा देखिए! श्याङचि ने अपनी नई गाड़ी उसके अहाते में लाकर कहा था।

बुजुर्ग ने रिक्शे को एक नज़र देखा और सिर हिलाकर कहा, "बुरा नहीं!"

"मासिक वेतन पर काम मिलने तक मैं यहीं रहूँगा। और फिर जहाँ नौकरी मिलेगी, वहीं रहने चला जाऊँगा," श्याङचि ने गर्व से कहा।

"ठीक है।" बुजुर्ग ने फिर सिर हिलाया।

इस तरह श्याङचि को मासिक वेतन पर नौकरी मिली तो वह नये मालिक के घर रहने चला गया। और जब वह नौकरी छूट गयी और वह फुटकर सवारियाँ उठाने लगा तो वह फिर मिलाप अहाते में रहने लगा।

दूसरे रिक्शावालों ने मिलाप अहाते का रिक्शा किराये पर लिये बगैर किसी के वहाँ रहने की बात बहुत कम ही सुनी थी। इसलिये कुछ अटकल लगाते थे कि श्याङचि बुजुर्ग ल्यू का कोई सम्बन्धी था, अन्य कुछ सोचते थे कि बूढ़ा उसे पसन्द करता है और बाघिन की उससे शादी करना चाहता है, ताकि एक विनम्र व्यक्ति उसका घर जमाई बन जाये। इस अटकल के पीछे कुछ स्पर्धा भी थी, लेकिन यदि संयोगवश यह सत्य हो गया तो मिलाप अहाता बूढ़े की मृत्यु के बाद श्याङचि का हो जायेगा। इसलिये वे स्वयं श्याङचि के विरुद्ध कुछ बोलते नहीं थे, बस अण्टसण्ट अनुमान किया करते थे।

वास्तव में श्याङचि के प्रति तरजीही सलूक एक और कारण से था। वह ऐसा व्यक्ति था जो नई परिस्थिति में भी अपने पुराने तौर-तरीके नहीं छोड़ता। यदि वह सेना में भर्ती भी हो गया होता तो वर्दी पहनते ही उसने लोगों पर धौंस जमाने का स्वांग करने की बेवकूफी कभी न की होती। रिक्शा अहाते में वह कभी निठल्ला नहीं बैठता था। मेहनत के बाद पसीना सूखते ही वह कोई न कोई काम खोज लेता—रिक्शे साफ़ करना, टायरों में हवा भरना, टपों को धूप दिखाना, रिक्शों के पुर्जों में तेल देना। उसे कुछ कहने की ज़रूरत नहीं पड़ती। अपनी इच्छा से, वह भी प्रसन्नता से, वह यह काम ऐसे करता जैसे उसे वाकई मजा आता हो। अहाते में सामान्यतया कोई बीस रिक्शाचालक रहा करते थे। वे काम बन्द करने के बाद बैठे गप्प मारते रहते या बिस्तर पर जाकर सो जाते। श्याङचि ही अकेला था जो कुछ न कुछ करता रहता। पहले तो लोगों ने सोचा कि वह मालिक ल्यू को खुश करने के लिये इतनी मेहनत करता था पर कुछ दिन के अन्दर ही वे समझ गये कि उसका कृपापात्र बनने का इरादा नहीं था। वह स्वयं स्वभाव से ही ईमानदार था। इसके बाद उसके बारे में किसी

के पास कहने के लिये कुछ नहीं रहा।

बुजुर्ग ल्यू ने श्याङचि की कभी तारीफ नहीं की, कभी उसको एक बार विशेष स्नेह से नहीं देखा, परन्तु अपने हृदय में उसने सब कुछ समझ लिया था। श्याङचि को कुशल परिश्रमी व्यक्ति मानते हुए उसके रिक्शा किराये पर न लेने पर भी वह उसे वहाँ रहने देने का इच्छुक था। और किसी बात का ज़िक्र न भी करें, श्याङचि के वहाँ रहने से अहाता और प्रवेशद्वार हमेशा साफ़ बुहारे हुए दिखायी दिया करते थे।

जहाँ तक बाघिन का प्रश्न है, वह इस उजड्ड लम्बू को और भी अधिक चाहती थी। उसकी हर बात वह ध्यान से सुनता और उस पर कभी जवाब नहीं देता था। दूसरे रिक्शावाले अपने-अपने मन के कष्टों से दुखी होकर हमेशा बाघिन को बुरी-भली सुनाते रहते थे। पर वह उनसे भले ही डरती नहीं थी, फिर भी उनकी ओर बहुत अधिक ध्यान भी नहीं देती थी। उसे जो भी कहना होता वह श्याङचि से ही कहती। श्याङचि को जब कभी मासिक नौकरी मिल जाती तो पिता-पुत्री दोनों को लगता कि उनका मित्र उनसे बिछुड़ गया है। नौकरी छूट जाने पर वह लौटकर आता तो बूढ़े की गालियाँ भी कम कठोर लगती।

हाथों में माचिसों के दो पैकेट लिये श्याङचि मिलाप अहाते में आया। अभी अँधेरा नहीं हुआ था और बुजुर्ग ल्यू तथा उसकी बेटी शाम का खाना खा रहे थे। बाघिन ने उसे आते देखा तो अपनी चॉपस्टिकें नीचे रख दीं।

"क्यों, श्याङचि!" वह चिल्लाई। "क्या तुम्हें भेड़िया उठा ले गया था या तुम सोना निकालने अफ्रीका चले गये थे?"

"हूँ!" श्याङचि ने कोई जानकारी नहीं दी।

मालिक ल्यू ने उसे सर से पाँव तक देखा, परन्तु चुप ही रहा।

अभी तक अपना नया टोप पहने हुए श्याङचि उनके सामने बैठ गया।

"अगर तुमने खाया न हो तो हमारे साथ भी खा सकते हो।" बाघिन ने किसी अच्छे दोस्त का स्वागत करने की तरह कहा था।

श्याङचि चुपचाप बैठा था, उसका हृदय सहसा अकथ स्नेह से भर गया। उसने मिलाप अहाते को हमेशा अपना घर माना था। मासिक वेतन पर रिक्शा चलाते हुए उसने अकसर कई मालिक बदले थे और फुटकर सवारियाँ भी उठायीं तो वे कभी एक जैसी नहीं रहीं। मिलाप अहाते में ही उसे हमेशा रहने की इजाजत दी गयी और हमेशा कोई उससे बात करने वाला मिला था। वह अभी अभी प्राण बचाकर अपने परिचित लोगों के बीच लौटा था और वे लोग अपने साथ खिलाने के लिये आमंत्रित भी कर रहे थे। इससे उसे लगभग सन्देह हुआ कि वे उसे धोखा देने वाले थे, पर साथ ही साथ वह इतना विभोर भी था कि उसके आँसू बहने-बहने को हो आये।

"मैंने अभी अभी दो कटोरे लाओतओफू खाया है," उसने नम्रतापूर्वक कहा।

"तुम थे कहाँ?" मालिक ल्यू की बड़ी-बड़ी गोल आँखें उसी को देख रही थीं।

"तुम्हारा रिक्शा कहाँ है?"

"रिक्शा?" श्याङचि ने मारे गुस्से के थूक दिया।

"आओ, एक कटोरा भात खा लो। उससे तुम्हें जहर नहीं चढ़ जायेगा। दो कटोरे लाओतओफू, भला वह भी क्या खाना हुआ?" बाघिन ने किसी बड़ी भाभी की तरह स्नेह से उसे पकड़कर खींचा।

कटोरा उठाने के पहले श्याङचि ने अपना धन निकाला। "मालिक, पहले आप मेरे ये तीस युवान सम्भालकर रख लीजिए।" उसने बाकी छुट्टे सिक्के दोबारा अपने जेब में सरका दिये।

मालिक ल्यू की चढ़ी हुई भौंहें लफ्जों से भी ज़्यादा साफ़-साफ़ पूछ रही थीं, "यह धन आया कहाँ से है?"

श्याङचि ने खाते-खाते उन्हें सैनिकों द्वारा बन्दी बनाए जाने की अपनी कहानी सुना दी।

"हूँ, बेवकूफ़ नौजवान!" मालिक ल्यू ने उसकी पूरी कहानी सुनकर खोपड़ी हिलाकर कहाँ "अगर तुम उन ऊँटों को नगर में लाकर कसाइयों को भी बेच देते तो हरेक के बारह युवान से ऊपर तो मिल ही जाते। जाड़ों में दोबारा रोएँ निकलने पर तीन ऊँटों के साठ युवान तक भी मिल सकते थे!"

श्याङचि को पहले ही पछतावा हो रहा था और यह सुनकर उसे और भी बदतर महसूस हुआ। परन्तु फिर सोचने पर उसने तय किया कि तीन तगड़े ऊँटों को कसाइयों के हाथों बेच देना गलत होता। वह और ऊँट साथ-साथ बच निकले थे, इसलिये उन्हें भी जीने का समान अधिकार था। उसने कहा तो कुछ नहीं, पर उसका मन हल्का हो गया।

बाघिन खाने की मेज साफ़ कर रही थी तो मालिक ल्यू सिर पीछे की ओर झुकाकर कुछ सोचने लगा। सहसा वह मुस्कराया, और उसके दो तीखे, बड़े दाँत दिखायी दिये, जो बुढ़ापे के साथ साथ और भी मजबूत हो गये लगते थे। "तो तुम हाएत्येन में बीमार पड़ गये थे, एह? तब तुम ह्वाङछुन सड़क से सीधे क्यों नहीं लौट आये, बेवकूफ़?"

"मुझे भय था कि कहीं सड़क पर पकड़ न लिया जाऊँ, इसलिये मैंने पश्चिमी पहाड़ियों की ओर से लम्बा रास्ता पकड़ा। कहीं गाँव वाले मुझे सेना का भगोड़ा समझ बैठते तो मेरा क्या होता!"

मालिक दबी हँसी हँसा और खुद-ब-खुद आँख मारी। उसे शक हुआ था कि श्याङचि झूठ बोल रहा है, और ये तीस युवान लूट के हैं। उस हालत में वह उन्हें पास नहीं रखना चाहता था। अपनी जवानी के दिनों में उसने दुनिया के हर कानून का उल्लंघन किया था मगर अब वह सुधर चुका होने का दावा करता था तो उसे चौकसी से काम लेना पड़ा। सावधान कैसे रहना चाहिए, वह यह भलीभाँति जानता भी था। श्याङचि की कहानी में उसे यही खोट मिल सकता था परन्तु श्याङचि के बिना हिचके हुए

सत्य बता देने पर बुजुर्ग आश्वस्त हो गया।

"तो इस धन का तुम क्या करना चाहते हो?" उसने धन की ओर इशारा करते हुए पूछा।

"जो भी आप कहें!"

"दूसरा रिक्शा खरीदोगे?" बुजुर्ग ने फिर अपने तीखे दाँत निपोरे मानो कहना चाहता हो, "सोचते हो कि तुम अपना रिक्शा खरीदने पर भी यहाँ मुफ़्त में ही रहते रहोगे?!"

"इतना काफ़ी नहीं है। यदि मैं रिक्शा खरीदूँगा तो वह नया रिक्शा होगा।" श्याङचि अपने विचारों में इतना डूबा हुआ था कि उन तीखे दाँतों की ओर उसका ध्यान ही नहीं गया।

"उधार लेना चाहते हो? दस प्रतिशत ब्याज लगेगा। औरों से पच्चीस प्रतिशत लेता हूँ।"

श्याङचि ने इंकार करते हुए सिर हिलाया।

"दुकानदार को किस्तों में अदायगी करने के बजाय मुझे दस प्रतिशत देना बेहतर होगा।"

"मैं किस्तों में भी नहीं दूँगा।" श्याङचि ने मानो अपनी भावसमाधि में से ही कहाँ "मैं थोड़ा-थोड़ा करके धन बचाऊँगा। जब मेरे पास काफ़ी जमा हो जायेगा तो नकद दाम चुका दूँगा।"

वृद्ध ने उसे घूरकर देखा जैसे वह कोई विचित्र मूर्ख हो जिससे चिढ़ हो सकती है परन्तु उस पर क्रोध नहीं आता। तभी धन उसने उठा लिया। "तीस युवान? अपने पास कुछ नहीं रख रहे?"

"नहीं, यह भूल नहीं करूँगा!" श्याङचि उठकर खड़ा हो गया। "अब मैं जाता हूँ। यह लीजिये आपके वास्ते माचिसों का एक पैकेट है।" उसने पैकेट मेज पर रख दिया। फिर भौंचक्का सा खड़ा रहा। "किसी से ऊँटों के बारे में न बताएँ," उसने कहा।

पाँचवाँ अध्याय

मालिक ल्यू ने श्याङचि के अनुभवों के बारे में कभी भले ही एक भी शब्द नहीं कहा फिर भी ऊँटों की बात बहुत जल्दी हाएत्येन से लेकर शहर तक में फैल गयी। पहले लोग श्याङचि में कोई दोष नहीं निकाल सकते थे, सिर्फ उसके जिद्दी स्वभाव से उन्हें लगता था कि वह कुछ भिन्न, बल्कि विचित्र भी था। श्याङचि के गम्भीर

खामोशी कायम रखने और ज़्यादा दोस्तीबाजी न करने पर भी उसका उपनाम "ऊँट" प्रचलित हो जाने पर लोगों का रवैया बदल गया। आम राय यह थी कि उसने बेईमानी करके मोटी रकम बना ली है। यह उसने कैसा किया, इसके अनेक किस्से बन गये। कुछ कहते थे कि उसे सोने की एक घड़ी पड़ी मिल गयी थी। अन्य कहते कि उसने बिना कुछ किये तीन सौ युवान बना लिये थे और कुछ पूरी तरह जानने के लहजे में सिर हिलाते हुए बताते कि वह पश्चिमी पहाड़ियों से तीस ऊँट ले आया था।

कोई आदमी अपने साथियों के बीच कितना भी अप्रिय क्यों न हो, यदि उसके पास तुरन्त कहीं से धन आ जाता है तो लोग उससे सम्मानपूर्वक व्यवहार ज़रूर करने लगते हैं। अपनी मेहनत बेचकर रोज़ी कमाना आसान नहीं है, इसलिये हर आदमी आशा करता है कि कहीं से बैठे-बिठाए धन आ जायेगा। ऐसा आम तौर पर न होने के कारण सौभाग्य से किसी को कुछ मिल जाये तो वह साधारण लोगों से भिन्न और भाग्य का चहेता माना जाता है। इसलिये श्याङचि का मौन और हरेक से अलग-थलग रहने का स्वभाव सहसा ऐसा दिखने लगा मानो वह किसी बड़े आदमी की खामोशी हो और दूसरों का ही उसके पास जाकर बात करना उचित है।

"अरे बताओ श्याङचि, हमें बताओ कि तुम धनी कैसे बने!"

श्याङचि ऐसी बातें प्रतिदिन सुनता, परन्तु शान्त रहता। लेकिन बहुत जोर दिये जाने पर उसके गाल पर बना निशान लाल हो उठता और वह क्रोध से बरस पड़ता, "अमीर? मैं? मेरा रिक्शा तक कहाँ है?"

सही बात थी, कहाँ था उसका रिक्शा? इस पर सब सोचने के लिये मजबूर हो जाते। परन्तु किसी के लिये चिन्ता करने से हुलसना हमेशा बेहतर लगता है, इसलिये सब उसके रिक्शे को भूल गये और उसके सौभाग्य की ही सोचते। कुछ समय बाद जब उन्होंने देखा कि वह फिर रिक्शा ही चलाता है, धन्धा बदला नहीं, अपने लिये भूमि और मकान भी नहीं खरीदे, तो उसके प्रति उनका रुख फिर स्वाभाविक हो गया। और उसके नाम का ज़िक्र आने पर उन्होंने पूछना ही छोड़ दिया कि उसे तमाम जानवरों में से "ऊँट" ही क्यों पुकारा जाता है, लेकिन वे उसे उपयुक्त ही समझते लगते थे।

फिर भी श्याङचि यह काण्ड आसानी से ही न भूल सका। वह तुरन्त एक नया रिक्शा खरीदने के लिये तड़प रहा था, और वह इसके लिये जितना ज़्यादा उत्सुक होता, उसे अपने पुराने रिक्शे की याद भी उतनी ही ज़्यादा आती। वह बिना शिकवा-शिकायत लगातार मेहनत करता गया, परन्तु उसके अतीत के अनुभव उसे बहुत ज़्यादा घुटन महसूस होने तक उसके मन को क्षीण करते रहे। आख़िर वह सोचने लगा—इतनी ज़्यादा मेहनत करने से क्या लाभ? दिन-रात एक कर देने पर भी दुनिया ने बेहतर, न्यायपूर्ण सलूक नहीं किया। उन्होंने किस हक से बिना कुछ दिये उसका रिक्शा छीन लिया था? अब अगर वह दूसरा रिक्शा ले भी ले तो कौन

जानता था कि वैसी ही घटना दुबारा नहीं होगी?

अतीत उसके लिये एक ऐसे दुःस्वप्न की तरह था, जिससे वह भविष्य में आस्था खोने लगा। उसे दूसरों के शराब, सिगरेट पीने और रण्डीबाजी करने से लगभग डाह होने लगा। यदि परिश्रम करना व्यर्थ था तो वर्तमान का आनन्द ही क्यों न उठाया जाये? वे सही थे। वह खुद अगर औरतों से दूर ही रहे, तो एक या दो गिलास शराब पीकर आराम क्यों न करें? शराब और तम्बाकू का उसे खास आकर्षण लग रहा था। वह समझता था कि कम खर्चीले होने पर भी निश्चय ही राहत पहुँचाते, संघर्ष करते रहने की शक्ति देते थे और वह अपने दुखियारे अतीत को भी भुला सकता था।

फिर भी उसमें उन्हें छूने तक का साहस न था। उसे हर मुमकिन थुङछ्येन बचाना चाहिए, तभी तो वह अपना रिक्शा खरीद पाएगा। अगर कल गँवाने के लिये वह आज रिक्शा खरीद सके, तो उसे खरीदना ही चाहिए। यह उसकी आकांक्षा, उसकी आशा थी, लगभग उसका धर्म था। यदि वह खुद अपना रिक्शा चला पाने में सफल न हुआ, तो उसका जीवन ही बेकार होगा। अफसर बनने, अमीर हो जाने या जमीन-जायदाद खरीदने की उसकी ख्वाहिश न थी। वह तो सिर्फ रिक्शा चलाने में सक्षम था, इसलिये उसकी सबसे बड़ी चाहत अपना निजी रिक्शा खरीदने की ही थी। अगर न खरीद पाया तो वह अपनी ही नज़रों में भी गिर जायेगा। सबेरे से शाम तक वह इसी समस्या के बारे में सोचता और अपने धन का हिसाब लगाता रहता। इसे भुलाने का मतलब खुद अपने को ही भुला देना और सिर्फ सड़कों पर दौड़ सकने लायक जानवर बन जाना होता। ऐसा जानवर जिसका कोई भविष्य नहीं और जिसके जीने का कोई उद्देश्य नहीं।

किराये का रिक्शा कितना ही सुन्दर होने पर भी वह उसे चलाने में मन नहीं लगा सकता था—वह अपनी पीठ पर चट्टान ढोने जैसा था। परन्तु किराये के रिक्शे के बारे में भी वह लापरवाही नहीं बरतता था, उसे हमेशा साफ़ और चमकीला रखता था और पूरा ध्यान रखता था कि उसमें और गड्ढे न पड़ें और किसी भी तरह नुकसान न पहुँचे। पर यह तो केवल दुनियादारी की समझ के कारण करता था इसमें कोई मजा उसे न आता।

हाँ, अपने निजी रिक्शे की सफाई करना अपना निजी धन गिनने के समान वाकई आनन्द देता था। इसलिये उसने खुद को तम्बाकू और शराब से दूर रखा और अच्छे दर्जे की चाय पीने से भी उसने गुरेज किया। उस जैसा आबरूदार रिक्शाचालक लम्बी तेज दौड़ लगाने के बाद किसी चायघर में जाकर तरोताजा होने के लिये दस थुङछ्येन की एक पैकेट मिलने वाली चाय में सफ़ेद चीनी के दो पैकेट डालकर पीना पसन्द करते थे। इससे उनके फेफड़ों में दम आता और कुछ चैन मिलता। श्याङचि कनपटियों से पसीना टपकने और सीने के आग का गोला लगने की हद तक दौड़ने के बाद यही करना चाहता था, इसलिये नहीं कि उसे ऐसी चाय की आदत थी या इसमें वह

शान समझता था बल्कि उसे सचमुच अच्छी चाय की ज़रूरत महसूस होती थी। इसके बावजूद वह इसके बारे में केवल सोचने तक ही जाता और एक थुङछूयेन में एक पैकेट की चाय की झाड़न पीकर ही सन्तोष कर लेता। कभी-कभी अपने आपको इस तरह खपाने पर उसे क्रोध आता; परन्तु रिक्शाचालक यदि हर महीने कुछ न कुछ बचाना चाहे तो वह सिवा इसके कर ही क्या सकता था? उसने दृढ़निश्चय से दाँत भींचे। बस अपना रिक्शा खरीद लेने तक इन्तज़ार करो! अपना रिक्शा हो जाने पर सब कमियाँ दूर हो जायेंगी।

श्याङचि खर्च करने में तो कंजूस था ही, पर उसे कमाने का एक भी मौका हाथ से जाने नहीं देता था। मासिक वेतन पर काम न होने पर वह लम्बे समय तक रिक्शा चलाता रहता–तड़के ही निकल जाता और रात में बहुत देर से लौटता। उसने संकल्प जो कर रखा था कि प्रतिदिन एक निश्चित रकम ज़रूर कमायेगा, घड़ी में कितने बजे या उसकी टाँगे कितनी थकी हों, इसकी परवाह नहीं। कभी-कभी तो वह लगातार पूरा दिन और पूरी रात रिक्शा चलाता रहता।

इसके पहले वह कभी दूसरे रिक्शाचालकों, खास तौर पर बहुत बूढ़े और कमजोर रिक्शाचालकों, से सवारियाँ अपनी ओर खींचने की होड़ नहीं लगाता था। अगर वह उनसे मुकाबला करता तो उसकी शक्ति और बढ़िया रिक्शे के सामने वे टिक ही न पाते। अब उसने ऐसी नैतिकता तज दी थी। वह सिर्फ धन के बारे में ही सोचने लगा था, जितना ज़्यादा हो उतना ही अच्छा, काम कैसा भी हो या वह किसी से भी छीना गया हो। सवारी के सामने और कुछ भी अहम न था–वह शिकार की तलाश करते जानवर की तरह बन गया था। सवारी मिलते ही वह दौड़ पड़ता, तब उसे कुछ मानसिक सन्तोष मिलता और वह महसूस करता कि दौड़ते रहने से ही नया रिक्शा खरीदने की ख्वाहिश पूरी हो सकेगी।

किसी न किसी तरह अब श्याङचि की नेकनामी "ऊँट" उपनाम मिलने से पहले से बहुत कम हो गयी थी। वह अक्सर किसी की भी सवारी लेकर भाग पड़ता, पीछे से उसको गालियाँ पड़ती रहती। पलटकर चिल्लाने के बजाये वह सिर झुकाये यह सोचता हुआ दौड़ता जाता कि "यदि मुझे रिक्शा न खरीदना होता तो मैं इतना बेशर्म कभी न बनता!" यह एक तरह से बिना बोले हर किसी से उसका माफी माँगना था।

रिक्शा अड्डों पर या चायघरों मे वह हर किसी को अपनी ओर घूरते पाता तो उसका मन होता कि सफाई दे। परन्तु उनके रूखेपन को देखकर और यह सोचकर कि सामान्यतया उसने कभी शराब पीने, जुआ या शतरंज खेलने और गप्प मारने में उनका साथ नहीं दिया था, वह जबान पर आये शब्दों को पी और अपने मन में बन्द ही रख सकता था। धीरे-धीरे उसकी यह निराशा क्रोध में बदल गयी और वह अन्दर ही अन्दर सुलगता रहने लगा। उसके बाद वे उसे देख उससे नाक-भौंह चढ़ाते तो

वह उलटे उन्हें घूरने लगता। यह सोचकर उसे और भी पीड़ा होती कि जब वह पहाड़ों से भागकर आया था तो वे उसका कितना आदर करते थे, परन्तु अब तिरस्कार करने लगे थे। चायघर में अकेले चायदानी लिये हुए बैठे अथवा रिक्शा अड्डे पर खड़े-खड़े किसी सवारी से मिले पैसे गिनते हुए वह गुस्से को वश में रखने की पूरी कोशिश करता। वह लड़ने-भिड़ने से डरता नहीं था परन्तु लड़ाई उसे पसन्द ही नहीं थी। दूसरे भी लड़ने-भिड़ने से भागते तो नहीं थे परन्तु श्याङचि से उलझने से पहले वे एक बार तो सहमते, उनमें से एक भी उससे टक्कर लेने लायक नहीं था, और यदि सब मिलकर उससे लड़ते तो बड़ी भद होती। श्याङचि क्रोध पर वश किये रहा, दूसरा कोई विकल्प सोच ही नहीं पा रहा था। वह यही मानता था कि अपना निजी रिक्शा हो जाने पर सब ठीक हो जायेगा, तब तक ऐसे ही चलने दे। फिर उसे प्रतिदिन भाड़ा चुकाने की चिन्ता नहीं करनी होगी, इसलिये वह उदारता बरतते हुए दूसरों की सवारियाँ तोड़कर उन्हें नाराज नहीं करेगा। वह ऐसे ही सोचता था और उसकी नज़र हरेक से यही कहती लगती थी, "अभी इन्तज़ार करो और देखो!"

सचमुच उसे अपने ऊपर इतना बोझ नहीं डालना चाहिए था। नगर में लौटने के बाद उसने पूरी तरह स्वस्थ हुए बिना ही कड़ी मेहनत शुरू कर दी थी। वह मानता तो नहीं था परन्तु बहुधा वह बिल्कुल थक जाया करता था, आराम करने की हिम्मत फिर भी जुटा नहीं पाता था और सोचता था कि ज़्यादा दौड़ने और पसीने बहाने से अपनी जड़ता को तोड़ सकेगा। खाने के मामले में वह भूखे रहने और बहुत बढ़िया खाने, दोनों में से किसी को भी चुनने का साहस नहीं कर सकता था। वह स्वयं देख सकता था कि वह पहले से दुर्बल हो गया है किन्तु अपनी लम्बाई और मांसपेशियों में कोई फर्क न देखते हुए वह आश्वस्त हो जाता था। वह उतना ही लम्बा और वे उतनी ही मजबूत लगती थीं। उसकी मान्यता थी कि दूसरों की तुलना में लम्बा और बड़ा होने के कारण वह निश्चय ही अधिक कठिनाइयाँ झेल सकता था। यह उसे कभी न सूझा कि दूसरों से बड़ा और ज़्यादा परिश्रमी होने के कारण उसे पौष्टिक भोजन की आवश्यकता भी औरों से अधिक थी। बाघिन ने कई बार उसे उलाहना दिया, "अरे सुनो, तुम ऐसे ही चलते रहे, और मुँह से खून थूकने लगे तो और किसी को मत कोसना!"

वह जानता था कि बाघिन उसकी भलाई के लिये ही कह रही है परन्तु उसकी इच्छानुसार उसकी प्रगति न हो रही होने और ऊपर से बहुत थक चुका होने से वह चिड़चिड़ा हो गया था। वह बाघिन की ओर देखकर नाक-भौंह चढ़ाता और कहता, "यदि मैं इतना काम न करूँ, तो अपना रिक्शा कब खरीद पाऊँगा?"

किसी और ने बाघिन से ऐसे बोला होता तो वह घण्टों उसे गालियाँ सुनाती परन्तु श्याङचि के प्रति वह वास्तव में अत्यन्त विनम्र और स्नेह से व्याकुल थी। वह थोड़े से होंठ सिकोड़कर उत्तर देती, "तब भी, तुम्हें इतनी हड़बड़ी नहीं करनी चाहिए।

क्या तुम अपने को फौलाद का बना समझते हो? तुम्हें तीन दिन आराम करना चाहिए।" उसे अनिच्छुक देखकर वह फिर कहती, "अच्छी बात है, जो चाहो सो करो। एक दिन टैं बोल गयी तो मेरा नाम मत लगाना!"

मालिक ल्यू भी श्याङचि से प्रसन्न नहीं था। इसका कारण यही था कि वह रिक्शा को ऐसे और इतने ज़्यादा घण्टे दौड़ाता था कि उससे उसके रिक्शा पर भी जोर पड़ता था। यद्यपि दिनभर के लिये किराये पर लिया गया रिक्शा दिन में किसी समय लौटाया जा सकता था, फिर भी यदि सभी उनको श्याङचि की ही तरह धुनने लगते तो वे अपने सामान्य कार्यकाल से छह महीने पहले ही बेकार हो जाते। मजबूत रिक्शा के इस तरह बेशी इस्तेमाल से उसकी भी यही हालत होगी। यही नहीं, श्याङचि सवारियाँ उठाने पर ऐसे तुला हुआ था कि अब उसके पास दूसरे रिक्शे साफ़ करने और अन्य छोटे-मोटे काम करने के लिये वक़्त ही न था। इससे भी उसे नुकसान हुआ। बुजुर्ग को थोड़ा दुख हुआ पर उसने कहा कुछ नहीं। नियम यही था कि रिक्शे दिनभर के लिये किराये पर उठाये जाते थे, उन्हें चलाने के घण्टे निश्चित नहीं थे। मदद करना दोस्ती का मामला ही था, कोई दायित्व नहीं, और उस जैसी प्रतिष्ठा वाला व्यक्ति श्याङचि से इसके बारे में बात करके अपने को झुका नहीं सकता था। वह अपनी नापसन्दगी जाहिर करने के लिये कनखियों से घूरने और होठ ऐंठने के अलावा करता भी क्या।

कभीकभार वह सोचता कि श्याङचि को निकाल बाहर करे, परन्तु अपनी बेटी को देखता तो ऐसा करने का साहस न कर पाता। उसने श्याङचि के बारे में अपने सम्भावित दामाद के रूप में कभी सोचा ही नहीं था किन्तु उसकी बेटी उस मूर्ख लालची पर आसक्त थी, इसलिये वह दखलअन्दाज़ी करना ठीक नहीं समझता था। वह उसकी इकलौती औलाद थी और उसके विवाह की कोई आशा दीखती नहीं थी, वह वाकई उसके मित्र को भगा नहीं सकता था।

यदि सच कहा जाये तो बाघिन उसकी इतनी अच्छी सहायक थी कि वह उसे ब्याहकर घर से बाहर भेजना ही नहीं चाहता था और इस खुदगर्ज़ ख्वाहिश के कारण वह कुछ अपराधी भी महसूस करता और उससे कुछ डरता था। वह जीवनभर लोक-परलोक में किसी से डरा नहीं था, फिर भी अपनी वृद्धावस्था में वह बेटी से भयभीत था! वह आत्मसन्ताप को तर्कसंगत ठहराने के लिये यह सोचता कि उसके किसी से डरने से यही साबित होता है कि वह पूरी तरह अन्तःकरण विहीन नहीं हुआ है। ऐसी हालत में उसके अपराधों के मृत्युशैया तक उससे चिपके न रहने की सम्भावना थी। ठीक है, अगर उसका अपनी बेटी से डरना वाजिब था तो उसे श्याङचि को निकालना नहीं चाहिए। परन्तु इसका यह अर्थ भी नहीं था कि वह बाघिन के हर ऊलजलूल काम को बर्दाश्त करे और उसका विवाह उससे कर दे। वह समझ रहा था कि बाघिन ऐसे विवाह के विरुद्ध नहीं है, परन्तु श्याङचि ने अपनी हैसियत

से इतने ऊँचे के यहाँ विवाह करने की सोची भी नहीं थी।

इसलिये उसे अपना अगला कदम उठाने में सावधानी बरतने की ज़रूरत थी। निश्चय ही अपनी पुत्री को दुखी करना उससे अन्याय होता।

श्याङचि ने बुजुर्ग के मन के भाव की ओर ध्यान नहीं दिया था। उसे ऐसी छोटी-मोटी बातों के लिये फुरसत ही नहीं थी। वह मिलाप अहाता छोड़ना चाहता था तो किसी तरह की कटु भावनाओं के कारण नहीं, बल्कि अपनी मासिक वेतन पर काम की चाहत की वजह से। वह फुटकर सवारियाँ उठाते-उठाते थोड़ा तंग आ चुका था, एक तो ग्राहक तोड़ने के कारण दूसरे उसका तिरस्कार करते थे, और दूसरे वह अपनी दैनिक आमदनी के बारे में निश्चित नहीं हो सकता था। आज उसने अधिक कमा लिया तो कल कम ही मिला, यह हिसाब लगाने का कोई तरीका नहीं था कि वह अपना रिक्शा खरीदने लायक धन कब तक जमा कर पाएगा। यदि वह जान सकता कि वह हर महीने एक निश्चित रकम, चाहे वह कितनी भी कम होती, बचा सकेगा तो वह आशान्वित और आश्वस्त महसूस करता। वह उन लोगों में से था जो हर मामले में निश्चितता पसन्द करते हैं।

उसे एक मासिक काम मिल गया। परन्तु वह सड़कों पर इक्का-दुक्का सवारियाँ उठाने की तरह ही असन्तोषजनक था। इस बार उसे याङ परिवार में काम मिला था। श्री याङ शाङहाए (शांघाई) के थे। उनकी प्रमुख पत्नी थ्येनचिन से और दूसरी पत्नी सूचओ से थी। वे दोनों उत्तरी और दक्षिणी लहजे की घालमेल भाषा बोलती थीं और उन दोनों ने बड़ी संख्या में बच्चे जने थे।

वहाँ पहले दिन के काम ने श्याङचि की लगभग तोबा ही बुलवा दी। अलस्सुबह पत्नी नम्बर एक रिक्शा में बाजार गयी। उसके लौटने पर छोटे बच्चों और बच्चियों को स्कूल भेजना था। कुछ जूनियर मिडल स्कूल में थे, कुछ प्राइमरी स्कूल में, और अन्य कुछ नर्सरी स्कूल में। उनके स्कूल, उनकी उम्र और उनके रंगरूप अलग-अलग थे, परन्तु रिक्शा में बैठने पर वे सभी समान रूप से गुस्सा दिलाने वाले थे। उनमें से सबसे अधिक अनुशासित के भी किसी बन्दर से दो हाथ ज़्यादा ही लगते थे। बच्चों को पहुँचाने के बाद श्री याङ को दफ्तर में छोड़ा। श्याङचि पत्नी नम्बर दो को तुङआन बाजार या मिलने-जुलने वालों के यहाँ ले जाने के लिये फटाफट वापस आया। वहाँ से लौटने पर बच्चों को भोजन के वास्ते घर लाना पड़ा। खाने के बाद वे एक बार फिर स्कूल गये। तभी श्याङचि ने सोचा कि वह भी खाना खा ले। परन्तु थ्येनचिन लहजे में बोलने वाली पत्नी नम्बर एक ने उसे पानी भर लाने का हुक्म दे दिया। घर के लिये पीने का पानी एक भिश्ती लाया करता था, परन्तु कपड़े धोने के लिये खारा पानी लाने का काम रिक्शाचालक को सौंप दिया गया था। यह नौकरी की शर्तों में शामिल न होने पर भी नौकरी बचाए रखने के लिये श्याङचि ने बहस न करके चुपचाप पानी मिट्टी के बने हौज में भर दिया। उसने बाल्टियों वाली बहंगी उतारी

और अपने भोजन का कटोरा उठाने ही लगा था कि पत्नी नम्बर दो ने कुछ सौदा लाने बाहर भेज दिया।

दोनों पत्नियों की आपस में पटती नहीं थी, परन्तु घर-गृहस्थी के मामलों में दोनों में एकदम सहमति हो जाती थी। वे दोनों नौकरों को एक भी क्षण आराम न करने देने के बारे में एकमत थीं और दोनों को नौकरों को खाते हुए देखना नापसन्द था। यह बात जानने के कारण श्याङचि ने सोचा कि उसका पहला दिन संयोगवश अत्यन्त व्यस्त रहा था। इसलिये वह कुछ बोला नहीं और अपने जेब से खरचकर तवे पर बनाई कुछ मोटी रोटियाँ खरीद लाया। यह उसे अपने खून की कमाई खर्च करने जैसा भले ही लगा परन्तु नौकरी बचाए रखने के लिये उसने इसे भी दाँत भींचकर सह लिया।

सौदा खरीदकर लौटने पर पत्नी नम्बर एक ने उसे आँगन में झाड़ू लगाने को कहा। मालिक और दोनों मालकिनें बाहर जाते समय हमेशा सजधजकर निकलते, परन्तु आँगन और मकान कूड़े के बड़े ढेर के माफ़िक रहता था। श्याङचि को इससे इतनी चिढ़ हुई कि वह आँगन बुहारने लगा, और इसमें इतना तल्लीन हो गया कि भूल ही गया कि रिक्शाचालक को इस तरह के छिटपुट काम नहीं दिये जाने चाहिए। आँगन बुहारा गया तो पत्नी नम्बर दो ने उसे लगे हाथों उनके कमरे साफ़ करने को कह दिया। श्याङचि ने इस पर भी विरोध नहीं किया। वह यह देखकर चकित रह गया कि जिन कमरों में ये शानदार, इज्ज़तदार औरतें रहती थीं वे इतने गन्दे थे कि पैर रखने को जी न चाहे।

कमरों की सफाई हो चुकने के बाद पत्नी नम्बर दो ने एक बरस का एक मैला-कुचैला छोकरा श्याङचि की बाँहों में थमा दिया। श्याङचि ने अपने आपको एकदम बेसहारा महसूस किया। मेहनत वाले किसी भी तरह के काम को वह निपटा सकता था परन्तु उसने बच्चा कभी नहीं थामा था। उसने अपने नन्हे मालिक को दोनों हाथों से अच्छी तरह पकड़ा। वह डर रहा था कि कहीं पकड़ ढीली हुई तो वह गिर पड़ेगा और उसे यह भी आशंका थी कि अगर ज़्यादा जकड़ा गया तो वह कुचला जायेगा। मारे घबराहट के उसके पसीने छूट गये। उसने सोचा कि वह यह खजाना चाङ अम्मा को सौंप दे। खुले पाँवों वाली वह औरत* उत्तरी च्याङसू से आयी थी। लेकिन वह उसे मिली तो उसने आव देखा न ताव और श्याङचि पर गालियों की झड़ी लगा दी।

याङ परिवार ने नौकरों को तीन या चार दिन से अधिक शायद ही कभी रखा हो। मालिक और दोनों मालकिनें उनसे दासों की तरह सलूक करते जैसे उन्हें काम में पीसकर ही वे बहुत कम दिये जाने वाले वेतन की पूरी क़ीमत वसूल कर सकते थे। यह चाङ अम्मा एक अपवाद थी। वह इस परिवार में पाँच या छह वर्ष से रह रही थी, महज इसलिये कि उसमें उसे नाराज करने वाले किसी पर भी—मालिक हो या मालकिनें हों—चीख पड़ने की हिम्मत थी। श्री याङ के शाङहाए बोली में व्यंग्यों, पत्नी नम्बर एक की थ्येनचिन लहजे में फटकारों और पत्नी नम्बर दो की सूचओ शैली की धाराप्रवाह गालियों के एक साथ मिलकर मचने वाला उप्पात उनके चाङ अम्मा से टकराने से पहले तक अजेय ही रहा था। यह इसलिये कि चाङ अम्मा ईंट का जवाब पत्थर से दे सकती थी। नायकों का वीरांगना से पाला पड़ने की तरह वे उसकी वक्कत को अच्छी तरह समझते थे, इसलिये वे उसे अपनी निकटतम लेफ्टीनेंट के रूप में रखे हुए थे।

श्याङचि का पालन-पोषण उत्तर के एक गाँव में हुआ था और वहाँ गाली देना निषिद्ध माना जाता था। फिर भी वह चाङ अम्मा को पीटने का साहस न कर पाया। कोई भी भलामानस औरत पर हाथ नहीं उठाएगा। वह उलटकर जवाब भी नहीं देना चाहता था, इसलिये उसने उसे एक बार घूरा। इस पर वह भी किसी खतरे के आभास से खामोश हो गयी।

तभी पत्नी नम्बर एक ने बच्चों को स्कूल से लाने के लिये उसे बुलाया। उसने मैले-कुचैले छोकरे को पत्नी नम्बर दो को लौटा दिया। इसे उसने अपमान समझा और उसे खुलकर फटकारने लगी। पत्नी नम्बर एक तो श्याङचि के पत्नी नम्बर दो के बच्चों को उठाने से चिढ़ी हुई थी परन्तु अब उसे झिड़कियाँ देते सुनकर वह भी श्याङचि पर कर्कश स्वर में बरस पड़ी। श्याङचि सबके तिरस्कार का लक्ष्य बन गया था। वह भागा-भागा अपने रिक्शे के साथ पीछे हटा और क्रोध करने को भी वह भूल गया; ऐसी घटना उसके साथ पहले कभी हुई नहीं थी और वह सचमुच चकराया हुआ महसूस कर रहा था।

एक के बाद एक करके दलों में बच्चे वापस ले आये गये। आँगन में बाजार से भी ज़्यादा शोर मच गया। तीनों औरतों की गालियों और झुण्डभर बच्चों की चीख़-पुकार से ऐसा कोलाहल मचा कि मानो ताशालान के थियेटर में खेल खत्म होने के बाद दर्शकों की भीड़ बाहर निकल रही हो। सौभाग्य से श्याङचि को अभी श्री याङ को भी घर लाना था, इसलिये वह एक बार फिर तेजी से बाहर दौड़ा। लोगों की आवाज़ें और घोड़ों की हिनहिनाहटें घर के आँगन में मचे हुल्लड़ की अपेक्षा अधिक सहनीय ही थीं।

श्याङचि को एक क्षण भी विश्राम किये बिना मेहनत करते-करते आधी रात को ही कमर सीधी करने का मौका मिला। वह न सिर्फ बुरी तरह थक गया था बल्कि उसके कानों में भनभनाहट भी भरी हुई थी; याङ परिवार के सो जाने पर भी मालिक और मालिकिनों की गालियाँ उसे इस तरह सुनायी देती लग रही थीं जैसे तीन अलग अलग ग्रामोफ़ोन पागलों जैसे स्वर में उसे सताने के लिये उसके दिमाग़ में बज रहे

* चीन में पुराने जमाने में औरतों (ग़रीब मेहनतकश इसका अपवाद थीं) के पाँव बाँध दिये जाते थे, समझा जाता था कि छोटे पाँवों वाली खूबसूरत होती हैं, लेकिन असल में यह उनकी गुलामी का प्रतीक था।

हों। उसे सोने के अलावा और कुछ सोच पाने का समय ही नहीं रह गया था। परन्तु अपनी कोठरी में घुसते ही उसका दिल बैठ गया और उसकी नींद उड़ गयी।

उसकी कोठरी ड्योढ़ी में थी। उस ड्योढ़ी के दोनों ओर एक-एक दरवाज़ा और बीच में लकड़ी के तख़्तों से उसे दो हिस्सों में बाँटा गया था। बँटवारे के इधर चाङ अम्मा थी और दूसरी ओर वह। उसमें कोई दिया न था, रोशनी एक दो फुटी खिड़की से आ रही थी। वह भी इसलिये कि वह सड़क पर लैम्प के एकदम नीचे थी, समूची कोठरी अँधेरे और सीलन से भरी हुई थी। फ़र्श पर गर्द की ताँबें के सिक्के जितनी मोटी पर्त जमा थी। कोठरी में दीवार से सटे लकड़ी के एक तख़्ते के अलावा और कोई सामान नहीं था। श्याङचि ने तख़्ते को हाथ से टटोला और देखा कि यदि वह सिर उस पर टिकाये तो उसको पाँव दीवार पर रखने पड़ेंगे और यदि टाँगें फैलाये तो उसको अधबैठे सोना पड़ेगा। वह आठ का अंक बनकर नहीं सो सकता था। कुछ देर सोचकर उसने तख़्ते को दीवार के पास से खींचकर तिरछा कर लिया। इस प्रकार उसने सिर तख़्ते पर रखकर अपनी टाँगे लटकाये हुए रातभर काम चलाने का प्रबन्ध किया।

बाहर से वह अपना बिस्तर उठा लाया और जैसे तैसे उसे बिछाकर लेट गया। परन्तु वह टाँगे लटकाए हुए सोने का आदी नहीं था और उसे नींद नहीं आयी। ज़बरदस्ती आँखें मूँदने की कोशिश करते हुए उसने अपने को समझाया, "सो जाओ, कल तुम्हें जल्दी उठना है। इतना कुछ सह चुकने के बाद इससे क्यों डरते हो? खाना बहुत घटिया है, काम बहुत अधिक है, परन्तु हो सकता है कि वे माच्याङ* पार्टियां अक्सर करते, अतिथियों को बुलाते और दावतें खाने जाते हों। मेरे श्याङचि बेटे, आख़िरकार यहाँ आये किस लिये हो? धन के लिये ही तो? जब तक बटोर सकते हो सब कुछ सहते जाओ।" इन विचारों से उसका मन थोड़ा शान्त हुआ और कोठरी उसे अब कम फफूँदिया ही लगने लगी। वह ऊँघने लगा। उसे खटमलों के काटने जैसा महसूस हुआ परन्तु उन्हें पकड़कर मारने के लिये वह परेशान नहीं होना चाहता था।

दो दिन बाद श्याङचि पूरी तरह हताश हो गया। परन्तु चौथे दिन कुछ मेहमान महिलाएँ आयीं और चाङ अम्मा ने फटाफट माच्याङ की मेज ठीक की। श्याङचि के जमी हुई झील की तरह लगने वाले दिल में सहसा वसन्त की बयार का झोंका आता महसूस हुआ।

दोनों पत्नियाँ माच्याङ खेलना शुरू करतीं तो सारे बच्चे नौकरों के सुपुर्द कर दिया करती। चाङ अम्मा को सिगरेट, चाय और गरम तौलिया देते रहना था, इसलिये छोटे बन्दरों का यह दल श्याङचि के पल्ले पड़ना स्वाभाविक था। वह इन छोटे शैतानों को बर्दाश्त नहीं कर पा रहा था, परन्तु उसने चुपके से भीतर झाँककर देखा तो सभी

* पूर्व एशिया में प्रचलित एक जूआ।

खिलाड़िनों के दाँवों के सामूहिक धन की इंचार्ज पहली श्रीमती याङ अपना काम बड़ी संजीदगी से करती दिखायी दीं। उसने ख़ुद से कहा, "यूँ तो यह बड़ी गुस्सैल है परन्तु हो सकता है कि उसे नौकरों को थोड़ा और पैसा बना लेने देने लायक समझ हो।" इसलिये उसने अपने वानरों से खास तौर पर धैर्य से काम लिया—उसी सामूहिक धन से कुछ मिलने की आशा के कारण ही वह उनसे बड़े साहबों और मेमों की तरह सलूक कर रहा था।

खेल समाप्त होने पर मालकिनों ने श्याङचि को मेहमानों को घर पहुँचाने का आदेश दिया। दोनों मेहमान एक ही साथ जाना चाहती थीं, इसलिये श्याङचि को एक और रिक्शा बुलाना पड़ा। पहली श्रीमती याङ ने मेहमानों का रिक्शा का किराया चुकाने चाहने का नाटक करते हुए अपने जेबों को बहुत टटोला, परन्तु मेहमानों ने विनम्रता से बार-बार इंकार किया।

"क्या कहती है तू बहन?" पहली श्रीमती याङ ने पूरी ताकत से चिल्लाकर कहा, "तुम मेरे घर आओ और रिक्शा का किराया स्वयं देना चाहती हो? चल-चल रिक्शा में बैठ जा!" उसी समय वह किसी तरह एक माओ अपने जेब से निकाल पायी।

वह एक माओ रिक्शावाले को देते समय श्याङचि ने देखा कि उसका हाथ कुछ काँप रहा था।

मेहमानों को घर पहुँचाने के बाद श्याङचि ने चाङ अम्मा की मेज साफ़ और कमरा ठीकठाक करने में सहायता की, और पहली श्रीमती याङ की ओर ताका। उसने चाङ अम्मा से उबलता हुआ पानी लाने को कहा और जब नौकरानी कमरे से बाहर गयी तो उसने एक माओ निकाला।

"यह ले, और मुझे घूर-घूरकर मत देख!"

श्याङचि का चेहरा तमतमा उठा। वह ऐसे तन गया जैसे अपना सिर छत को छुआना चाहता हो, एक माओ का नोट झपटा और उसके गोलमटोल चेहरे पर दे मारा।

"मुझे मेरा चार दिन का वेतन दो!"

"यह क्या है?" उसे एक बार फिर घूरकर, बिना एक भी शब्द बोले उसने उसका वेतन दे दिया।

श्याङचि ने अपना बिस्तर समेटा और दरवाज़े से बाहर निकला ही था कि उस पर आँगन में से गालियों की बौछार शुरू हो गयीं।

छठा अध्याय

शुरुआती शरद की उस शाम को तरंगी बयार में लहराती पत्तियाँ नक्षत्र प्रकाश में अपनी परछाइयाँ डालने लगीं। श्याङचि ने ऊपर बहुत ऊँचे आकाश गंगा को देखा और आह भरी। इतना शीतल स्फूर्तिदायक आकाश और उसका सीना इतना चौड़ा होने पर भी वह घुटन क्यों महसूस कर रहा था। वह बैठना और फूट-फूटकर रोना चाहता था। ऐसा क्यों है कि उसके सशक्त, लगनशील और दृढ़ होने पर भी उससे कुत्ते की तरह सलूक किया गया और वह अपनी नौकरी कायम न रख सका? उसने न सिर्फ समस्त याङ परिवार को दोष दिया बल्कि उसके मन में निराशा की एक अस्पष्ट सी भावना और एक डर उभरा कि उसकी ज़िन्दगी कभी कुछ नहीं बन पाएगी। अपने बिस्तर को लादे हुए वह पहले से भी कहीं ज़्यादा धीरे-धीरे चलने लगा, जैसे वह अब पहले वाला श्याङचि न रहा हो जो लगातार आठ या दस ली दौड़ सकता था।

मुख्य सड़क पहले ही लगभग वीरान हो चुकी थी। सड़क के चमकदार लैम्प उसकी अकेलेपन की भावना को और बढ़ा ही रहे थे। कहाँ जाये? स्वाभाविक था—मिलाप अहाते जाना। परन्तु वह इससे नाखुश था। व्यापारी और शारीरिक श्रम बेचने वाले ग्राहक न मिलने से परेशान नहीं होते। उन्हें परेशानी तब होती है जब ग्राहक आने पर भी वे कोई सौदा कर नहीं पाते, ठीक वैसे ही जैसे किसी रेस्तराँ या नाई की दुकान में घुसने के बाद कोई चारों और एक बार नज़र घुमाकर लौट जाये। श्याङचि जानता था कि नौकरी पाना और छोड़ना कोई बहुत असाधारण बात नहीं थी, यदि एक स्थान पर उसकी ज़रूरत नहीं तो दूसरी जगह होगी। परन्तु रिक्शा खरीदने के वास्ते उसने इतने दब्बूपन से परिश्रम किया और इतना अपमान भी हुआ, सिर्फ साढ़े तीन दिन बाद ही दोबारा नौकरी गँवाने के लिये। वह बार-बार नौकरियाँ बदलने की आदत बना लेने वाले चालाक लोगों से अलग नहीं था, और इसी से उसे कसक महसूस हो रही थी। उसे मिलाप अहाते में वापस जाने और वहाँ सभी लोगों को हँसते-हँसते यह कहते—"अच्छा, अच्छा! तो श्याङचि भी उन साढ़े तीन दिन वाले लड़कों में से है!"—सुनने में शर्म आ रही थी।

परन्तु यदि वह मिलाप अहाते न जाता तो दूसरी किस जगह जा सकता था? इस विषय में चिन्ता करने से बचने के लिये वह पैर घसीटते हुए शीआनमन दरवाज़े की दिशा में चल पड़ा। सड़क की ओर मिलाप अहाते की तीन दुकानें खुलती थीं। बीच वाली दुकान में लेखाकार का दफ्तर था। रिक्शाचालकों को अपना हिसाब निपटाने या अन्य विषयों पर बातचीत करने के लिये ही वहाँ जाने की छूट थी। उसे रास्ते के तौर पर इस्तेमाल करके पिछवाड़े अहाते में जाने की मनाही थी क्योंकि उसके पूर्व और पश्चिम की ओर के दो कमरे मालिक और उसकी पुत्री के शयनकक्ष थे।

पश्चिमी कमरे के एकदम बाद रिक्शों के लिये हरे रंग से पुते दोहरे पल्लों वाला बड़ा प्रवेश द्वार था। इसके ऊपर मोटे तार से लटकता बहुत तेज रोशनी वाला एक बिना शेड का बल्ब था। इस बल्ब के नीचे लोहे की एक पटिया पर सुनहरे रेखाक्षरों से ये शब्द उत्कीर्ण थे—"मिलाप रिक्शा अहाता।" यही दरवाज़ा था जिसे रिक्शावाले प्रयोग करते थे, चाहे वे काम पर हों या न। गहरे हरे रंग का दरवाज़ा और सुनहरे रेखाक्षर बिजली के बल्ब की तेज चटकीली रोशनी में चमकते थे जबकि अन्दर-बाहर आते-जाते रिक्शा भी बहुत खूबसूरत थे—काले हों या भूरे, उन सभी के रोगन में खास चमक थी और उनकी गद्दियों के सफ़ेद गिलाफ शुभ्र हिम की तरह स्वच्छ दिखते थे। उन्हें चलाने वाले भी एक खास तरह से गर्वित महसूस करते, मानो वे रिक्शाचालकों में अभिजात हों।

दरवाज़े के अन्दर आने पर पश्चिमी कमरे के साथ-साथ आगे बढ़ते जाने पर बीचोंबीच उगे बबूल के बड़े वृक्ष वाला एक विशाल आँगन आ जाता था। पूर्व और पश्चिम की ओर की इस आँगन में खुलती इमारतों में रिक्शा खड़े किये जाते थे। दक्षिणी ओर की इमारत और उसके पीछे के छोटे आँगन में छोटे कमरे रिक्शावालों के सोने के लिये थे।

श्याङचि को मिलाप अहाते के बाहर एक ही जलती हुई बत्ती की तेज रोशनी दिखायी दी तो ग्यारह बजे से ऊपर का वक़्त होगा। लेखाकार के दफ्तर और पूर्वी कमरे में अँधेरा था परन्तु पश्चिमी कमरे में अभी तक रोशनी थी। इससे श्याङचि समझ गया कि बाघिन अभी जाग रही थी। उसने दबे पाँव भीतर जाने की सोची, इससे वह उसे देख न पाती। वह नहीं चाहता था कि वह पराजय की उसकी पहली गवाह हो, महज इसलिये कि उसके मन में श्याङचि के लिये बड़ी श्रद्धा थी।

श्याङचि अपना रिक्शा उसकी खिड़की के बराबर तक लाया ही था कि वह बाहर आ गयी।

"क्यों, श्याङचि? क्या?..." उसने उसका उतरा हुआ चेहरा और रिक्शा में रखा बिस्तर देखा तो अपना सवाल पूरा नहीं किया।

श्याङचि को जिसका डर था, अब वही हो जाने पर उसका दिल शर्म और घबराहट से भर गया और वह बुत की तरह जड़ और बुद्धू की तरह अवाक खड़ा बाघिन को ताकता रह गया। अब उसमें कुछ फर्क नज़र आ रहा था। तेज रोशनी या चेहरे पर लगाए हुए पाउडर के कारण वह पहले से कहीं ज़्यादा गोरी दीख रही थी और उसके इस गोरेपन ने उसकी खूँखारता को नकाब की तरह ढँक दिया था। उसने होंठों पर लाली भी लगाई हुई थी, उसने उसे कुछ ज़्यादा आकर्षक भी बना दिया था। उसे यह इतना विचित्र लगा कि वह और भी हक्काबक्का रह गया। उसने उसके बारे में औरत के रूप में कभी सोचा भी न था, अचानक उसके लाल होंठ देखकर उसे किंकर्तव्यविमूढ़ता महसूस हुई। उसने हलके हरे रंग की एक छोटी रेशमी जैकेट और काले क्रेप की

चौड़ी पतलून पहन रखी थी। हरी जैकेट लैम्प की रोशनी में कुछ मनहूसियत के साथ फीकी सी झिलमिला रही थी; फिर वह इतनी छोटी थी कि उसे उसका सफ़ेद कमरबन्द भी नज़र आ रहा था, इससे हरे रंग की कोमलता और भी बढ़ रही थी। उसकी चौड़ी काली पतलून हवा में ऐसे फड़फड़ा रही थी जैसे कोई दुष्ट आत्मा चकाचौंध रोशनी से भागकर अन्धकार में मिल जाने की कोशिश में हो।

लगातार घूरते रहने का साहस न कर पाने के कारण श्याङचि ने अचानक अपना सिर नीचा कर लिया। परन्तु उसके मन में उस छोटी, झिलमिलाती हुई हरी जैकेट की छवि कायम रही। वह जानता था कि बाघिन सामान्य अवसरों पर इस तरह की पोशाक कभी नहीं पहनती थी। ल्यू परिवार इतना सम्पन्न तो था ही कि उसे हररोज़ रेशम और साटन की पोशाकें पहना सकता था परन्तु रिक्शाचालकों के साथ रोज़मर्रा के लेनदेन के समय वह हमेशा सूती पतलून और सूती फतूही ही पहनती थी, जिससे उन पर बने डिजाइन ज़्यादा उभरकर सामने नहीं आते थे। श्याङचि को लगा कि वह कुछ नया और उत्तेजक, फिर भी सुपरिचित सा देख रहा है। उसकी घबराहट और बढ़ गयी।

उसकी नाखुशी और चकाचौंध करने वाली रोशनी में एकदम अजीब आविर्भाव से सामने ने उसकी पहलकदमी ही छीन ली। उसकी वहाँ से हिलने की इच्छा नहीं हो रही थी, परन्तु उसकी ख्वाहिश थी कि बाघिन जल्दी अन्दर चली जाये या उसे कुछ करने के लिये ही कह दे। वह इस तनाव को सह ही नहीं सकता था, यह उसके पहले सहे सभी तनावों से एकदम अलग था और बेहद असहनीय भी।

"अरे!" उसने आगे बढ़कर दबे स्वर में कहा, "वहाँ झेंपू की तरह मत खड़े रहो। जाओ और रिक्शा उधर खड़ा करो और फिर तुरन्त वापस आओ। मुझे तुमसे कुछ कहना है। तुम्हें अन्दर मिलूँगी।"

उसके कामों में सहायता करने की उसे आदत थी, उसने उसका पालन किया। परन्तु आज वह आम दिनों से इतनी अलग दिखती थी कि वह इस बारे में कुछ सोचना चाहता था। परन्तु वहाँ खड़े रहना भी कुछ अटपटा सा था, इसलिये करने के लिये और कुछ बेहतर न सोचकर वह रिक्शा को खींचकर भीतर ले गया। सभी दक्षिणी कमरों में अँधेरा था जिसका अर्थ था कि सारे रिक्शावाले या तो सो गये थे या अभी काम खत्म करके लौटे नहीं। उसने रिक्शा खड़ा किया और वापस उस दरवाज़े पर पहुँचा। सहसा उसका हृदय तेजी से धड़कने लगा।

"अन्दर चले आओ, मुझे तुमसे कुछ कहना है," उसने दरवाज़े के बाहर सिर निकालकर अधहँसी और अधबेचैनी से कहा। वह आहिस्ते-आहिस्ते भीतर चलता गया।

मेज पर कुछ अधपकी लेकिन अभी तक हरी नाशपातियाँ, शराब का एक केतलीनुमा पात्र, सफ़ेद पोर्सेलिन की शराब पीने की प्यालियाँ और एक बड़ी तश्तरी में सोया

सॉस में पकाया गया लबाबदार आधा मुर्ग़ा, धुआँई हुई कलेजी और अन्य ठण्डे गोश्त रखे थे।

"देखो।" बाघिन ने कुर्सी की ओर इशारा किया और बात जारी करने से पहले उसे बैठते हुए देखती रही। "आज रात अपनी तमाम कड़ी मेहनत के बाद मैं आनन्द मना रही हूँ, तुम्हें भी कुछ खाना ही पड़ेगा!" यह कहते हुए उसने उसके लिये प्याली में शराब ढाली। शराब की तीखी गन्ध, धुआँए हुए और लबाबदार मांसों की गन्ध से मिलकर अत्यन्त तीखी और बोझिल लग रही थी। "पी जाओ! थोड़ा मुर्ग़ा खाओ। तकल्लुफ़ मत करो, मैं तो खा चुकी हूँ। अभी-अभी मैंने पासों से अपना भाग्यफल निकाला था, और मैं जानती थी कि तुम वापस आओगे। बहुत अच्छा हुआ, क्यों नहीं?"

"मैं पीता नहीं हूँ।" श्याङचि शराब की प्याली को टकटकी लगाए घूरता गया।

"अगर तुम पीओगे नहीं, तो दफा हो जाओ! तुम्हें हुआ क्या है? क्या तुम जानते नहीं कि कब कौन तुम्हारा भला चाहता है? मूर्ख ऊँट! शराब तुम्हें मार नहीं डालेगी, मैं भी चार औंस पी सकती हूँ विश्वास नहीं करते तो देखो!" उसने शराब की प्याली उठायी, एकदम खाली की, फिर आँखें बन्दकर तेजी से निश्वास छोड़ा और उलटी प्याली आगे बढ़ाकर दिखा दी। "चलो, पी जाओ! नहीं पीते तो मैं तुम्हारा कान पकड़कर इसे तुम्हारे गले में ऊँडेल दूँगी!"

दबे हुए पूरे रोष के साथ उसके इस परिहास से श्याङचि को लगा कि वह घूरकर उसे झेंपा दे। परन्तु बाघिन उसके लिये हमेशा भली रही थी और वह जानता था कि वह हर किसी के साथ मुँहफट थी, इसलिये उसे उसको वाकई उत्तेजित नहीं करना चाहिए। इसके बजाये वह उसे अपनी मुश्किलों के बारे में भी बता सकता था। यद्यपि वह आम तौर पर बहुत कम बोलता था परन्तु आज जैसे उसके अन्दर उसका दम घोंट रहे हज़ारों शब्द बाहर आने को तड़प रहे थे और उसे उनसे मुक्त होना ही होगा। इस दृष्टि से देखें तो बाघिन उसका उपहास नहीं बल्कि ईमानदारी से उसके प्रति अपनी चिन्ता प्रकट कर रही थी। उसने हाथ बढ़ाकर शराब की प्याली उठायी और खाली कर दी। वह उत्तेजक शराब धीरे धीरे, निश्चित रूप से और असर करती हुई वह नीचे उतर गयी। उसने अपनी गर्दन तानी, सीना फुलाया और कई बार कुछ बेहूदा ढंग से डकारें लीं।

बाघिन हँसी। शराब को गले के नीचे उतारने में श्याङचि को कुछ कष्ट हुआ था और उसकी हँसी से वह सहसा पूर्वी कमरे की ओर देखने लगा।

"वहाँ कोई नहीं है।" उसने हँसना बन्द कर दिया परन्तु मुस्कराती रही। "बुढ़ऊ बड़ी चाची का जन्मदिन मनाने गये हैं। चाची के नानयुवान में रहने के कारण वह दो-तीन दिन तक नहीं लौटेंगे।" यह कहते-कहते उसने उसकी प्याली फिर भर दी।

इस पर श्याङचि सोच में पड़ गया और उसे लगा कि दाल में ज़रूर कुछ काला

है। उसका चेहरा अपने चेहरे के इतना नजदीक, उसके कपड़े इतने साफ़ और चमकदार, उसके होंठ इतने लाल थे कि सब मिलकर उसे अनूठे ढंग से उद्दीप्त कर रहे थे। इसलिये वह वहाँ से जाना भी नहीं चाहता था। वह पहले जैसी ही बदसूरत थी पर अपनी नई सजीवता से जैसे वह एकदम नई अलग औरत में बदल गयी थी। वह वही थी परन्तु उसमें उसके अलावा कुछ और भी था।

उसे इस कुछ और पर ध्यान से विचार करने का साहस नहीं हुआ, यद्यपि क्षणभर के लिये वह उस कुछ और को स्वीकार करने से डर रहा था तो भी वह अपने आपको उसे अस्वीकार करने का कायल न कर सका। वह उत्तेजित हो गया और अपने को कुछ साहस प्रदान करने के लिये उसने कुछ और शराब पी।

एक क्षण पहले वह अपने दुख उसे बताना चाहता था, लेकिन अब वह उन्हें भूल चुका था। उसका चेहरा लाल हो गया और वह अपने आपको उसे ताकते रहने से रोक न पाया। वह उसे जितना अधिक ताकता उतना ही हैरान होता जाता, क्योंकि वह कुछ जिसे वह समझ नहीं पा रहा था, से उसकी भासमानता बढ़ती जा रही थी, और बाघिन से इतनी ताकत से जो प्रचण्ड ऊर्जा प्रस्फुटित हो रही थी वह उसे धीरे-धीरे कुछ अमूर्त और अलौकिक में बदल रही थी।

उसने अपने को सावधान रहने के लिये चेताया, परन्तु वह साहसी भी बनना चाहता था। एक के बाद एक उसने तीन प्यालियाँ शराब चढ़ा लीं और भूल गया कि सावधानी क्या बला होती है। खुमार में उसने उसे ताका और उसे हैरानी हो रही थी कि वह इतना उत्साही और साहसी क्यों अनुभव कर रहा है, तथा उसमें इतना हौसला कहाँ से आया है कि वह किसी नये अनुभव, किसी नये आनन्द को तत्काल झपटना चाहे। आम तौर पर वह बाघिन से कुछ डरता था परन्तु अब उसमें डराने वाला कुछ भी नहीं रह गया था। इसके विपरीत अब वह स्वयं इतना प्रभावी और प्रबल हो गया था कि उसे किसी बिलौटिन की तरह उठा सकता था। कमरे में बत्ती बुझ गयी।

अगले दिन श्याङचि बहुत सबेरे उठा और अपना रिक्शा लेकर निकल गया। अपनी पहली पियक्कड़ी के परिणामस्वरूप उसे कुछ हैंगओवर था परन्तु इससे वह परेशान न था। वह एक छोटी गली के सिरे के पास बैठ गया। वह जानता था कि सबेरे की बयार उसके सरदर्द को शीघ्र ही उड़ा ले जायेगी। परन्तु अन्य समस्याएँ उसके मन को मथने लगीं और उनका कोई तात्कालिक हल वह सोच नहीं पाया, रात की घटनाओं से परेशानी, शर्मिन्दगी और नाखुशी महसूस कर रहा था। इसके अतिरिक्त उसे संकट भी सामने दीख रहा था।

वह बाघिन को समझ न पाया। वह अक्षतयोनिनी नहीं थी—कुछ ही घण्टे पहले उसे पता चला था। उसके मन में उसके लिये हमेशा अत्यन्त आदर रहा था और उसने किसी को उसके लम्पट चरित्र के बारे में कभी बात तक करते नहीं सुना था; यद्यपि वह मुँहफट और हरेक से खुलकर सहजता से पेश आती थी, फिर भी उसके पीठपीछे कभी कोई उसके बारे में गपशप नहीं करता था। रिक्शावालों को शिकायतें थीं तो सिर्फ उसकी कठोरता के बारे में, और किसी विषय में नहीं। तब फिर पिछली रात का क्रियाकलाप क्यों?

यह मूर्खतापूर्ण लग सकता है, परन्तु श्याङचि को पिछली रात के विषय में सन्देह होने लगा। बाघिन जानती थी कि वह मासिक काम पर गया हुआ है, इसलिये वह सिर्फ उसके लिये ही प्रतीक्षा कैसे कर रही हो सकती थी? मान लो उसकी जगह किसी और ने भी वही किया होता।... श्याङचि ने सर झुका लिया। वह देहात से आया था और अभी तक उसने विवाह करने का विचार नहीं किया था, तो भी उसकी अपनी योजनाएँ थीं। यदि वह अपना रिक्शा खरीद लेता और उससे जीना कुछ आसान हो जाता और यदि वह ऐसा महसूस करता तो निश्चय ही देहात में जाकर एक तगड़ी लड़की ले आता जो मुश्किलें सह सकती, कपड़े धो सकती और घर का कामकाज सम्भाल सकती।

उसकी उमर के लगभग सभी नौजवान, कोई नज़र रखने वाला होने पर भी, चोरी-छिपे रण्डियों के यहाँ जाते रहते थे। श्याङचि उनका अनुसरण करने का कभी इच्छुक नहीं रहा था। सबसे पहले उसे अपने अच्छा धन कमाने और औरतों पर धन न लुटाने के दृढ़संकल्प पर स्वाभिमान था। दूसरे उसने अपनी आँखों से ऐसे मूर्खों को देखा था जिन्होंने अपनी कमाई ऐसे ही उड़ाई और उनमें से कुछ अठारह या उन्नीस वर्ष के ही होने पर भी पेशाब करने में कठिनाई की वजह से मूत्रालय की दीवार से सर सटाये खड़े रहते थे। उसे अपनी भावी पत्नी को मुँह दिखाने लायक रहने के लिये सद्व्यवहारी रहना ही चाहिए। यदि वह विवाह करेगा तो साफ़ और बेदाग लड़की से ही करेगा और इसलिये उसे स्वयं भी वैसा ही होना चाहिए। परन्तु अब,अब।...

वह बाघिन को मित्र के रूप में देखता तो वह उसे ठीक-ठाक लगती, परन्तु औरत के रूप में वह कुरूप, बूढ़ी, तफ़र्श-जबान और बेशर्म थी। उसका रिक्शा छीनने और एक तरह से उसे मार ही डालने वाले सैनिक भी कम घृणित और ओछे थे। उसने तो उसे "कुलटा" बनाकर देहात से अपने साथ लायी हुई उसकी मर्यादा भी बरबाद कर दी थी!

इसके अलावा यदि यह बात फैल जाती और मालिक ल्यू के कानों में पड़ती तो क्या होता? क्या वह जानता था कि उसकी बेटी कुलटा थी? यदि वह नहीं जानता था, तो क्या सारा दोष श्याङचि पर नहीं मढ़ देगा? यदि वह पहले ही जानता था और फिर भी उसने कन्या को काबू में रखने की कभी कोशिश नहीं की थी, तो वे कैसे लोग थे? और फिर यदि वह उनके साथ मिलजुलकर चला तो खुद वही क्या था? यदि पिता और पुत्री दोनों इच्छुक हों तो भी वह उससे कभी विवाह नहीं करेगा, बूढ़े के पास साठ, छह सौ या छह हज़ार रिक्शा होने पर भी नहीं!

उसे मिलाप अहाता तुरन्त छोड़ देना और इन लोगों से पूरी तरह अलग हो जाना चाहिए। आख़िरकार उसकी अपनी योग्यता थी और उससे वह अपना रिक्शा खरीदना और खुद पत्नी खोजने में सक्षम बन सकता था। यही काम करने का एकमात्र सच्चाई और ईमानदारी वाला तरीका था। यह सोचकर उसने एक बार फिर मर्दानगी की नई जगी भावना से सिर ऊँचा किया। उसके डरने का कोई कारण नहीं था, चिन्ता की कोई बात नहीं थी। उसके सचमुच डटकर मेहनत करने तक सफल होना निश्चित था।

परन्तु दो सवारियाँ खो बैठने पर ही उसकी बेचैनी फिर लौट आयी। वह इस प्रसंग को मन से निकाल देना चाहता था, फिर भी यह उस पर हावी था। इसे दूसरे मामलों की तरह हल मिल जाने पर भी एक तरफ पटका नहीं जा सकता था। उसे लगा जैसे उसकी देह दूषित हो गयी है, मानो उसका हृदय काला पड़ गया था और अब वह उसे धोकर भी दोबारा कभी स्वच्छ नहीं कर पाएगा। वह बाघिन से कितनी ही नफ़रत क्यों न करता हो और वह उसे कितनी ही घिनौनी क्यों न लगती हो, पर उसकी उस पर पकड़ अभी तक कायम थी। वह उसे अपने मन से निकालने का जितना ज़्यादा प्रयत्न करता, वह उतनी ही ज़्यादा बार अपनी समूची बदसूरती और खूबसूरती लिये अपनी नग्नता में अचानक उसके सामने प्रकट हो जाया करती थी।

यह तो ढेर सारा कबाड़ खरीदने पर लोहे-लंगड़ में कुछ छोटे चमकदार दिखावटी गहने दीखने और उनके ललचाने लगने की तरह ही था। इसके पहले किसी से श्याङचि ने इतनी आत्मीयता अनुभव नहीं की थी, और यद्यपि उसे अचानक घेरकर उसका "शीलभंग" कर दिया गया था, फिर भी इस सम्बन्ध को आसानी से भुलाना कठिन था। वह उसे मन से हटाने की कोशिश भी करता तो वह अपने आप लता की भाँति उसके हृदय के चारों ओर लिपट जाता, मानो उसने वहीं जड़ जमा ली हो। यह उसके लिये न केवल एक नया अनुभव था बल्कि उसने उसे इस कदर व्याकुल कर रखा था कि कुछ बताते भी नहीं बनता था और उसे कुछ सूझ ही नहीं रहा था। वह नहीं जान पा रहा था कि बाघिन से, स्वयं से, वर्तमान से ओर भविष्य से कैसे निपटे। वह मकड़ी के जाले में फँसे हुए छोटे कीड़े की तरह था; वह छूटने के लिये संघर्ष भी करना चाहता था, पर बहुत देर हो चुकी थी।

उसने अनमनी सी हालत में कुछ सवारियाँ उठायीं, दौड़ते समय भी वह उस सारे प्रसंग पर सोचता रहा। उसके विचारों का कोई स्पष्ट क्रम नहीं था, बल्कि वे अक्सर किसी कथन के अर्थ, किसी गन्ध या कुछ भावनाओं पर टिक जाया करते थे। वे सब अत्यन्त अस्पष्ट थे, फिर भी बहुत क़रीब और असली अनुभव थे। यह सब इतना असहनीय होता जा रहा था कि वह शराब की तलब से छटपटाने लगा, और अकेले ही पीकर धुत्त हो जाना चाहता था, जिससे उसे कुछ राहत मिल सकती। परन्तु पीने का साहस वह नहीं जुटा पाया। उसे पीना नहीं चाहिए, क्योंकि उसे इस

प्रसंग के कारण अपने को नष्ट नहीं करना था। उसने अपना रिक्शा खरीदने के विषय में सोचने की कोशिश की परन्तु उस पर ध्यान केन्द्रित नहीं कर पाया—कोई न कोई बात बीच में आती रही। रिक्शा की तस्वीर सामने ला पाने के पहले ही यह दूसरी बात चोरी से उसके मन पर ऐसे छा जाती जैसे घना बादल सूर्य को ढँक लेता है।

उस शाम छुट्टी करने का समय होने पर तो हव और भी दुखी हो गया। उसे मिलाप अहाते में लौटना था पर वह वापस जाने में बहुत डर रहा था। यदि वह उसे वहाँ मिल गयी तो क्या होगा? वह अपने खाली रिक्शे को सड़कों पर बार-बार घुमाता रहा और कई बार अहाते के निकट पहुँचा भी, पर फिर वहाँ से दूसरे रास्ते पर चल देता, मानो वह ऐसा छोटा बच्चा हो जिसने पहली बार स्कूल जाने के बजाये फुट्टी मारी हो और घर जाने का हौसला न कर पा रहा हो।

अजीब बात यह थी कि वह उससे जितना ज़्यादा बचना चाहता था, उसकी उससे मिलने की चाहत उतनी ही प्रबल होती जाती थी और अँधेरा बढ़ने के साथ साथ उसकी यह चाहत भी बलवती होती गयी।

आसक्ति से मंत्रमुग्ध श्याङचि एक बार फिर प्रयत्न करने के लिये पर्याप्त साहस महसूस कर रहा था, वैसे वह यह भी जानता था कि यह गलत है। यह बिल्कुल वैसा ही था जैसे लड़कपन में उसने एक बार बाँस लेकर भिड़ों के छत्ते को छेड़ना चाहा तो डरा हुआ था परन्तु उसका दिल ऐसे धड़क रहा था जैसे कोई शैतान उसे यह करने के लिये उकसा रहा हो। उससे अधिक प्रबल कोई शक्ति उसे माँड़ते हुए उसका छोटा गोला बनाकर धधकती आग में डालने पर उतारू लगती थी। वह अपने आप पर संयम नहीं रख पा रहा था।

वह एक बार फिर शीआनमन दरवाज़े की ओर लौटा, पर इस बार उसके मन में देर करने का कोई विचार नहीं था, और सीधे दफ़्तर में जाकर उससे मिलने का उसका इरादा था। अब उसकी कोई अस्मिता नहीं रह गयी थी, वह महज एक औरत थी। उसे अपना शरीर तपता हुआ महसूस हुआ। वह दरवाज़े के पास पहुँचा तो लैम्प की रोशनी में क़रीब चालीस वर्ष का एक व्यक्ति पैदल जाता हुआ दीख पड़ा। श्याङचि ने सोचा कि वह उसका चेहरा और उसकी चाल पहचानता है, परन्तु उसे बुलाने में कुछ झिझक गया। उसके बजाये अनजाने ही उसने पूछ लिया, "रिक्शा?"

वह आदमी रुका, उसने घूरकर देखा और कहा, "श्याङचि?"

"जी।" श्याङचि ने खींसे निकालीं। "श्री छाओ?"

श्री छाओ मुस्कराए और सिर हिलाने लगे। "मैं कहता हूँ, श्याङचि, अगर तुम्हारे पास कोई दूसरा मासिक काम न हो तो मेरे यहाँ क्यों नहीं आ जाते? आजकल मेरे पास जो आदमी है वह बहुत आलसी है, कभी रिक्शा साफ़ नहीं करता। हाँ, दौड़ता ज़रूर तेज है। बोलो आओगे?"

"मैं मना कैसे कर सकता हूँ, साहब?" श्याङचि मुस्कराना भी भूल गया लगता था। वह छोटे तौलिये से अपना चेहरा पोंछता रहा। "फिर मैं कब से शरू करूँ, साहब?"

"सोचता हूँ। " श्री छाओ ने क्षणभर सोचा। "परसों से।"

"जी, साहब।" श्याङचि ने भी एक क्षण सोचा। "क्या अभी मैं आपको घर पहुँचा दूँ?"

"कोई ज़रूरत नहीं। क्या तुम्हें याद है कि मैं कुछ समय के लिये शङ्हाए चला गया था? लौटने पर मैंने मकान बदल लिया। अब मैं पेइछाङ मार्ग पर रहता हूँ और हर शाम टहलने निकलता हूँ। परसों तुमसे मुलाकात होगी।" श्री छाओ ने श्याङचि को अपने घर का नम्बर बताया और फिर कहा, "मेरा अपना रिक्शा ही चलाना बेहतर होगा।"

श्याङचि मारे खुशी के लगभग उछल पड़ा। पिछले कुछ दिनों का सारा दुख सड़क के पत्थरों के भारी वर्षा से धुलकर सफ़ेद और साफ़ हो जाने की तरह क्षणभर में गायब हो गया। श्री छाओ उसके पहले के मालिकों में से थे और एक दूसरे से बहुत कम समय के परिचय के बावजूद दोनों में अच्छी साख बनी रही थी। श्री छाओ स्वयं बड़े मिलनसार थे; इसके अलावा उनका परिवार छोटा था, केवल पत्नी और एक छोटा बेटा।

श्याङचि अपना रिक्शा दौड़ाते हुए सीधा मिलाप अहाते में लौटा। बाघिन के कमरे में बत्ती जल रही थी। यह देखते ही वह अचानक रुक गया।

काफ़ी देर वह वहाँ खड़ा रहा और उसने भीतर जाने, उसे एक और मासिक काम मिल जाने के बारे में बताने, पिछले दो दिन का रिक्शा का किराया चुकाने और उससे अपनी बचत का धन वापस देने के लिये कहने का फैसला किया। इससे बड़ी सफ़ाई से सम्बन्ध खत्म हो जायेगा। बेशक इतना ज़्यादा कहने की ज़रूरत ही नहीं थी, लेकिन वह समझ जायेगी।

उसने पहले रिक्शा शेड में खड़ा किया, फिर लौटा और बड़े साहस से उसका नाम पुकारा।

"अन्दर आ जाओ!" उसने धकेलकर दरवाज़ा खोला। वह अपने रोज़मर्रा के कपड़े पहने नंगे पाँव ही बिस्तर पर पसरी हुई थी। वहाँ पसरी हुई ही उसने पूछा, "अच्छा?! तो तुम्हें चस्का पड़ ही गया लगता है?"

श्याङचि का चेहरा नवजात शिशु के माता-पिता द्वारा बाँटे जाने वाले रंगे हुए अण्डों की तरह किरमिजी हो गया। कुछ देर वहाँ खड़े रहने पर उसने धीमे-धीमे कहा, "मुझे परसों से दूसरी नौकरी मिल गयी है। उनके पास अपना रिक्शा है।..."

बाघिन ने बात काटी, "बेटे, तुम अपना बुरा-भला भी नहीं समझते!" कुछ मुस्कराहट के साथ और कुछ नाराजगी में वह उठ बैठी और ऊँगली से उसकी ओर दिखाकर

इशारा किया। "यहाँ तुम्हारे लिये रोटी और कपड़े दोनों हैं। क्या तुम्हें पसीना बहाते हुए अपनी आँतें बाहर निकालने में ही मजा आता है? बूढ़ा मेरे ऊपर हुकुम नहीं चला सकता और मैं भी ज़िन्दगीभर अविवाहित नहीं बैठी रहूँगी। यदि बूढ़ा कुछ अड़ने की कोशिश करेगा तो भी मेरे पास हम दोनों के लिये इतना धन जमा है कि हम दो या तीन रिक्शे खरीदकर उन्हें भाड़े पर दे सकेंगे। हम रोज़ आठ माओ या एक युवान कमायेंगे, क्या वह तुम्हारे अपनी बदबुआती टाँगों से दौड़ते हुए उन्हें तोड़ते रहने से बेहतर नहीं होगा? मुझमें कमी ही क्या है? मैं तुमसे उमर में कुछ बड़ी हो सकती हूँ पर बहुत बड़ी भी नहीं। और मैं तुम्हारी अच्छी तरह सेवा करते हुए तुम्हें खूब लाड़-प्यार कर सकती हूँ।"

"मैं रिक्शा चलाना चाहता हूँ।" श्याङचि कोई दूसरी दलील न सोच सका।

"तुम वाकई मूर्ख हो! बैठ जाओ, मैं तुम्हें काट नहीं खाऊँगी!" वह हँसी तो उसके बघेले दाँत दीखने लगे।

श्याङचि हचककर बैठ गया, उसकी मांसपेशियों में तनाव सा उभर आया था। "मेरा धन कहाँ है?"

"बुजुर्ग के पास। तुम्हारा धन कहीं नहीं जायेगा, घबराओ मत। बेहतर होगा कि तुम उससे न ही माँगो, तुम तो उसका स्वभाव जानते हो। तुम्हारे पास रिक्शा खरीदने भर का धन हो जायेगा तो तुम उससे माँग लेना और वह एक थुङछ्येन भी कम नहीं देगा। अगर अभी माँगोगे तो तुम्हें इतनी गालियाँ सुनायेगा कि तुम्हारी सिट्टीपिट्टी गुम हो जायेगी! वह तुम्हें चाहता है। तुम्हारे प्रति उसका व्यवहार बुरा नहीं, तुम्हारा कोई नुकसान न होगा। अगर वह तुम्हारा एक थुङछ्येन भी दबा लेगा तो मैं तुम्हें दो दे दूँगी। तुम्हारा देहाती दिमाग़—कहीं मुझे फिर तुम्हारी खिंचाई न करनी पड़े!"

एक बार फिर श्याङचि को कोई जवाब न सूझा। उसने सर झुका लिया, जेब में इधर-उधर हाथ मारने के बाद रिक्शा का भाड़ा निकालकर मेज पर रख दिया। "यह दो दिन का है।" उसने यह कहना भी याद रखा, "मैं आज रिक्शा वापस कर रहा हूँ। कल मैं छुट्टी करूँगा।" वास्तव में उसे आराम करने की तनिक भी इच्छा नहीं थी, परन्तु वह सोचता था कि ऐसा कहने से बात खत्म करने में ज़्यादा आसानी होगी। एक बार रिक्शा वापस कर देने पर मिलाप अहाते में रहने की ज़रूरत ही नहीं होगी।

बाघिन उठकर आयी, उसने धन उठाया और फिर उसी के जेब में ठूँस दिया। "ये दो दिन मैं और रिक्शा दोनों तुम्हारे लिये मुफ़्त रहे! खुशनसीब शैतान, अहसानफरामोशी मत करना!" यह कहते ही वह घूमी और अन्दर से दरवाज़े का ताला बन्द कर लिया।

सातवाँ अध्याय

श्याङचि छाओ परिवार में काम करने चला गया।

वह बाघिन के प्रति कुछ शर्मिन्दगी महसूस करता था। फिर भी समूचे मामले की शुरुआत बाघिन ने ही उसका "शीलभंजन" करके की थी ओर वह उसके धन के फेरे में नहीं था, इसलिये उसे उससे अलग हो जाने में कुछ भी अपमानजनक नहीं लगा। उसे चिन्ता तो इस बात की थी कि उसकी छोटी बचतें मालिक ल्यू के पास पड़ी थीं। अगर वह उन्हें तभी माँग बैठे तो बूढ़े को शायद शक हो जाये। यदि वह पिता और पुत्री दोनों से दूर हट गया तो बाघिन नाराज होकर उसे नीचा दिखाती और वह फिर अपने धन की सूरत भी नहीं देख पाता। यदि वह अपनी कमाई बूढ़े के पास जमा करवाता रहा तो मिलाप अहाते में जाने पर बाघिन से मुलाकात होना लाजिमी था और वह भी बड़े असमंजस में डाल देता। इससे मुक्ति का कोई अच्छा उपाय न सोच पाकर उसकी बेचैनी बढ़ती गयी।

उसने श्री छाओ से परामर्श करने के बारे में सोचा, परन्तु करता कैसे? बाघिन के साथ उस प्रसंग का तो वह किसी से ज़िक्र भी नहीं कर सकता था। पश्चाताप से भरा श्याङचि यह मानना शुरू करने लगा कि इस प्रकार का सम्बन्ध आसानी से तोड़ा नहीं जा सकता था। वह इससे अपने आपको कभी साफ़ नहीं कर पाएगा, यह उसकी चमड़ी पर बने किसी चकत्ते की तरह था। बैठे-बिठाए उसने अपने आपको उलझा लिया था। उसे लगा कि वह किसी काम का नहीं रहा, कितना भी प्रयत्न करे अब वह कभी यहाँ से कहीं नहीं पहुँच पाएगा। इस विषय पर बार-बार सोचने के बाद एक बात उसे स्पष्ट हो गयी—ज़्यादा सम्भावना यही है कि आख़िर उसे आत्माभिमान तजना और बाघिन से विवाह करना पड़ेगा, इसलिये नहीं कि वह चाहता था—अथवा कहीं उसके मन में उन कुछ रिक्शों का मोह तो नहीं था? वह बचाखुचा खाने वाला कुलटा पति होगा। यह विचार असहनीय था परन्तु दरअसल यही हालत हो भी सकती थी। उसे किसी भी तरह काम करते रहना और अपनी तरफ से पूरी कोशिश करते हुए भी बुरे से बुरे के लिये तैयार रहना चाहिए। उसका पहले का आत्मविश्वास जाता रहा। बड़े आकार, शक्ति, दृढ़संकल्प, सबका कोई अर्थ नहीं रह गया था; उसकी ज़िन्दगी भले ही उसकी अपनी हो पर उसने किसी और को उस पर नियंत्रण कर लेने दिया था, और वह भी एक अत्यन्त निर्लज्ज औरत को।

यथार्थ के अनुसार उसे खुश होना चाहिए था—उसने अब तक जितने परिवारों में काम किया था उनमें से छाओ परिवार सबसे अधिक सुखद था। वेतन तो और किसी जगह से ज़्यादा नहीं मिलता था और तीन उत्सवों पर मिलने वाले बोनसों के अलावा और किसी तरह की कमाई भी नहीं थी। परन्तु श्री और श्रीमती छाओ इतने सहृदय थे कि हरेक से बहुत अच्छा व्यवहार करते थे। श्याङचि के अधिक कमाने के लिये उत्सुक रहने के बावजूद उसे अच्छे कमरे में रहना और भरपेट खाना भी बेहद पसन्द था। छाओ परिवार का मकान खुलाडुला और बनाठना था, नौकरों के कमरे भी अच्छे थे। उनका खाना उम्दा था और वे नौकरों को कभी बासी, बचाखुचा नहीं देते थे। अपना बड़ा कमरा, दिन में तीनों बार इतमीनान से खाना और उस पर एक सहृदय मालिक के होने पर श्याङचि भी सिर्फ धन कमाने को ही प्रमुखता न दे सका।

फिर मनपसन्द खाना-पीना और रहने की जगह तथा काम भी काफ़ी हल्का—अपने को तन्दुरुस्त बनाने का यह एक सुनहरा मौका था। यदि उसे अपना खाना स्वयं खरीदना पड़ता तो उसने निश्चित रूप से कभी इतना अच्छा न खाया होता। अब उसे सभी खाने मुहैया हो जाने और उन्हें शान्ति से पचाने का मौका भी मिल जाने से वह क्यों पेट भरकर न खाए? भोजन पर धन खर्च होता है और वह जानता था कि उसकी क़ीमत क्या है। ऐसी नौकरी पाना आसान नहीं था जिसमें वह अच्छी तरह खा सकता, सो पाता, और साफ़-सुथरा तथा सामने आने लायक भी बना रह सकता था।

छाओ परिवार में माच्याङ न खेलने और मेहमान भी बहुत कम बुलाये जाने का मतलब था बख़्शीश न मिलना, पर उसे छोटे-मोटे कामों के लिये एक या दो माओ अलग से ज़रूर मिल जाते थे। मिसाल के तौर पर अगर श्रीमती छाओ छोटे लड़के के लिये उससे दवा की गोलियाँ खरीदवाना चाहतीं तो उनका उसे एक माओ अलग से देना निश्चित था। इसके साथ ही उसके दूसरे किसी से भी तेज दौड़ने की बात जानते हुए भी वह उसे रिक्शा में जाने के लिये कहतीं। दी जाने वाली राशि नगण्य होने पर भी उसके पीछे लिहाज उसके दिल को गरमा जाता था।

श्याङचि बहुत सारे मालिकों के यहाँ काम कर चुका था। दस में से नौ मुमकिन होने पर वेतन देने में देर करते थे। इससे वे यह दिखाना चाहते कि वे अदायगी न करने को ही तरजीह देते और नौकर बुनियादी तौर पर बिल्लियों या कुत्तों से बेहतर नहीं, शायद उनसे भी बदतर थे। छाओ परिवार उनसे अलग तरह का था, इसलिये उसे वहाँ काम करना पसन्द था। वह किसी के कहने का इन्तज़ार किये बगैर ही आँगन बुहारता और फूलों के पौधों को पानी दे देता, और हर बार वे कोई सुखद बात कहते। यही नहीं, वे उसके माचिसें ले पाने के लिये बदले में देने की खातिर पुरानी चीज़ें खोजकर उसे देने का कोई न कोई मौका भी ढूँढ लेते थे। यह अलग बात है कि वे सभी चीज़ें इस्तेमाल करने के लायक होतीं और वह उन्हें अपने लिये ही रख लेता था। ऐसे वक़्तों पर वह उनकी असली हमदर्दी की भावना को और शिद्दत से महसूस करता था।

श्याङचि की नज़र में मालिक ल्यू को ह्वाङथ्येनपा कहा जा सकता था। वह केवल दो बड़ी शख़्सियतों को जानता था, एक था ह्वाङ थ्येनपा और दूसरे सन्त कंफ्यूशियस। सन्त कैसे थे, उसे रत्तीभर जानकारी न थी, परन्तु उसने सुन रखा था कि कंफ्यूशियस

को क़िताबी ज्ञान बहुत ज़्यादा था और वह बड़े विवेकी थे। श्याङचि के मालिकों में से कुछ विद्वान और कुछ सैनिक भी थे। सैनिकों में से मालिक ल्यू की टक्कर का कोई भी न था। उसके विद्वान मालिकों में कुछ विश्वविद्यालयों के लेक्चरर और सरकारी दफ़्तरों में आरामदेह नौकरियाँ कर रहे अफसर भी थे। उन सभी का काफ़ी किताबी ज्ञान होना स्वाभाविक था, पर उसे तब तक उनमें से एक भी विवेकी नहीं मिला था। यदि मालिक थोड़ा बहुत समझदार होता तो मालकिन और लड़कियों को प्रसन्न करना निश्चय ही कठिन साबित होता।

केवल श्री छाओ को किताबी ज्ञान भी था और वह समझदार भी थे। श्रीमती छाओ भी अपने विनम्र व्यवहार से सबके दिल जीत लेती थीं। इसलिये श्याङचि की दृष्टि में श्री छाओ ही सन्त कंफ्यूशियस थे और जब कभी उस महान व्यक्ति की कल्पना करता तो उसे वह श्री छाओ से मिलते-जुलते नज़र आते थे। यह अलग बात है कि सन्त इसे पसन्द करते या नापसन्द।

वास्तव में श्री छाओ बहुत प्रतिभाशाली न थे। वह औसत योग्यता वाले ऐसे व्यक्ति थे जो अध्यापन कार्य करने के अलावा कभी-कभी अन्य काम भी करते थे। वह "स्वयम्भू समाजवादी" थे, किसी हद तक सौन्दर्यवादी भी और विलियम मॉरिस* से काफ़ी प्रभावित हुए थे। राजनीति अथवा कला के बारे में उनके विचार बहुत गम्भीर न थे, परन्तु उनकी बड़ी विशेषता यह थी कि उनमें अपनी गिनीचुनी आस्थाओं को रोज़मर्रा की ज़िन्दगी के घिसेपिटे कामों में लागू करने की क्षमता थी। वह यह समझ चुके लगते थे कि उनमें संसार को चकित कर देने वाले करिश्मे कर दिखाने की प्रतिभा नहीं थी, इसलिये वह अपने काम और परिवार को अपने आदर्शों के अनुरूप संयोजित करते थे। इससे भले ही समाज का कोई भला नहीं होता था, तो भी वह कम से कम ईमानदारी तो थी और वह ढोंगी बनने से बच जाते थे। यही कारण था कि वह जीवन की छोटी-छोटी बातों पर विशेष ध्यान देते, मानो कहना चाहते रहे हों कि उनके परिवार के खुश रहने तक बाकी समाज अपनी इच्छानुसार कुछ भी कर सकता था। इस दृष्टिकोण से वह कभी शर्मिन्दगी महसूस करते और कभी उन्हें बहुत सन्तोष भी मिलता—उन्हें यह स्पष्ट लगता था कि उनके घर का एकमात्र महत्व किसी रेगिस्तान में उस छोटे नखलिस्तान की तरह है जिसमें वहाँ आने वालों को ही भोजन और पानी देने की ही क्षमता है।

सौभाग्य से श्याङचि इस नखलिस्तान में आ गया था और रेगिस्तान में इतने लम्बे अरसे तक भटकते रहने के बाद उसे यह किसी चमत्कार से कम नहीं लगता था। श्री छाओ जैसे किसी व्यक्ति से भेंट न हुई होने या अपनी अनुभवहीनता या फिर दुनिया में ऐसे व्यक्तियों के दुर्लभ होने के कारण उसने उनका सन्त कंफ्यूशियस से तादात्म्य स्थापित किया था। उन्हें रिक्शा में ले जाते समय वह सादा और सुसंस्कृत

* विलियम मॉरिस (1834-1896) बरतानवी कवि और चित्रकार थे।

पहरावे में जीवन्त लेकिन ओजस्वी दिखायी देते तो श्याङचि खुद भी साफ़-सुथरे कपड़ों में अपने लम्बे-चौड़े और तगड़े शरीर पर गर्व करता हुआ दौड़ने में विशेष आनन्द प्राप्त करता, मानो ऐसे मालिक को ढोने लायक केवल वही था।

सर्वत्र सफाई और शान्ति वाले उनके घर में उसे सन्तोष और चैन मिलता था। अपने गाँव में उसने बहुधा वृद्ध पुरुषों को जाड़ों की धूप सेंकते हुए अथवा शरद की चाँदनी में मौन और शान्त बैठे बाँस की चिलम पीते हुए देखा था। उनकी नकल करने लायक उसकी उमर नहीं हुई थी परन्तु उसे उनको देखते रहने में आनन्द आता था। वह सोचता था कि निश्चय ही वे कोई खास रस ले रहे होंगे। अब वह भले ही शहर में था, पर छाओ परिवार का शान्त वातावरण उसे अपने गाँव की याद दिलाता और उसमें स्वयं चिलम पीने और चिन्तन में डूबे रहने की ख्वाहिश जगाता था।

दुर्भाग्यवश वह औरत और उसकी अपनी छोटी-मोटी बचत की चिन्ता उसे खाये जा रही थी। उसका हृदय उस हरी पत्ती के समान था जिसे किसी सूँड़ी ने अपना कोया बनाने के लिये रेशमी धागों के पाश में जकड़ लिया हो। वह अपने में ही इतना ज़्यादा डूबा रहता था कि कोई प्रश्न पूछे जाने पर श्री छाओ तक को भी गलत उत्तर दे बैठता था। इससे उसे बहुत परेशानी महसूस होती। छाओ परिवार जल्दी सो जाता था, उसका काम भी नौ बजे के झट बाद खत्म हो जाता। कमरे में या आँगन में अकेले बैठे-बैठे वह अपनी इन दो समस्याओं को लेकर उधेड़बुन में पड़ा रहता। एक क्षण में तो उसने बाघिन की आशाओं को मटियामेट कर डालने के लिये तुरन्त विवाह कर लेने का लगभग फैसला ही कर लिया। परन्तु रिक्शा चलाकर वह परिवार कैसे चला सकता था? वह जानता था कि उसके साथी चालों की कोठरियों में रहते हुए कैसी दुखभरी ज़िन्दगी बिताते थे। पुरुष रिक्शा चलाते, औरतें पैबन्द-रफू करतीं और बच्चे राख के ढेरों में से जले हुए कोयला जमा करते थे। गर्मियों में वे कूड़े के ढेरों में से उठाए हुए तरबूज़ के छिलके कुतर-कुतरकर खाते और जाड़ों में सारा परिवार लपसी के लिये राहत लंगरों में जाता था। यह श्याङचि के बर्दाश्त के बाहर था। किसी भी हालत में यदि वह विवाह कर लेता तो उसे बुजुर्ग ल्यू के पास जमा अपनी बचतें कभी वापस न मिलतीं। बाघिन निश्चय ही उसे इतनी आसानी से छोड़ने वाली न थी। वह अपनी जान तक को जोखिम में डालकर हासिल किये गये धन को गँवाना बर्दाश्त नहीं कर सकता था।

पिछले शरद के शुरू में उसने अपना रिक्शा खरीदा था। उसके बाद एक वर्ष से ज़्यादा वक़्त बीत चुका था और अब उसके पास तीस से अधिक युवान थे जो उसे वापस नहीं मिल सकते थे और साथ ही एक पेचीदा उलझन! वह उसके विषय में जितना ज़्यादा सोचता उतना ही ज़्यादा निराश महसूस करता।

शरदोत्सव को दस दिन बीत चुके थे और मौसम ठण्डा होने लगा था। उसे दो और कपड़े चाहिए होंगे। फिर वही धन। यदि वह उसे कपड़ों पर खर्च करे तो वह

उसे बचाकर नहीं रख सकता और रिक्शा खरीदने की आस कैसे लगाए रह सकता था? क्या वह अपनी ज़िन्दगी का कभी कुछ बना पाएगा? और यदि वह मासिक वेतन पर भी काम करता रहे सका तो वह भी क्या ज़िन्दगी थी?

एक संध्या में श्री छाओ को पूर्वी नगर से प्रतिदिन की अपेक्षा कुछ देर से वापस लाते हुए श्याङचि सावधानी के तौर पर थ्येनआनमन दरवाज़े के सामने की सड़क पकड़ ली। उस चौड़ी, समतल सड़क पर बहुत लोग थे, ठण्डी बयार बह रही थी और शान्त सड़क पर लैम्प जल रहे थे। वह अपनी लम्बे डगों वाली चाल से दौड़ने लगा। अपनी कदम-ताल और रिक्शा की कमानियों की तनिक चरमराहट सुनकर वह थोड़ी देर के लिये इतने अरसे से मन पर छाए रहे विषाद को भूल गया। उसने फतूही के बटन खोल दिये और सीने पर शीतलता महसूस करने लगा। कितना उत्साही था वह! वह किसी अनजानी मंजिल की ओर दौड़ता ही चला जा सकता था, मरकर ढह और हर चीज़ से मुक्त होने तक।

अब वह इतनी तेजी से दौड़ने लगा कि अपने सामने के हर रिक्शा से आगे निकल गया। पलक मारते ही थ्येनाआनमन दरवाज़ा पीछे छूट गया। उसके पैर कमानियों के माफिक थे, धरती को छुआ नहीं कि फिर उछल पड़ते। रिक्शा के पहिए इतनी तेजी से घूम रहे थे कि उनके अर दीखते नहीं थे और टायर जमीन को छू ही नहीं रहे लगते थे जैसे रिक्शा और उसके चालक दोनों को तेज हवा उड़ाए ले जा रही हो। शीतल बयार के झोंकों की वजह से श्री छाओ शायद ऊँघने लगे थे, नहीं तो वह श्याङचि को इतना तेज दौड़ने से ज़रूर मना करते। श्याङचि अपने पूरे दमखम से दौड़ रहा था, उसके मन में एक अस्पष्ट सी भावना थी कि अगर उसे खूब पसीना आ गया तो वह उस रात भी उधेड़बुन में पड़े जगते रहने के बजाये गहरी नींद सो सकेगा।

पेइछाङ मार्ग ज़्यादा दूर नहीं रह गया था। सड़क का उत्तरी सिरा लाल दीवारों के बाहर बबूलों की घनी छाया में था। श्याङचि धीमा होने ही वाला था कि सड़क पर पड़ी किसी रुकावट से जा टकराया। पहले उससे उसके पाँव टकराये, फिर रिक्शा। वह सिर के बल गिर पड़ा। रिक्शा का एक बम तड़क गया।

"क्या हो गया?" श्री छाओ जमीन पर गिरते ही चिल्लाये।

श्याङचि ने उत्तर नहीं दिया लेकिन उठ खड़े होने की कोशिश करने लगा। श्री छाओ ने भी तेजी से अपने को सम्भाला और दोबारा पूछा, "क्या हुआ?"

उनके सामने ही सड़क मरम्मत करने के लिये वहाँ नये उतारे गये पत्थरों का एक ढेर लगा हुआ था, परन्तु चेतावनी के लिये वहाँ कोई लाल लालटेन नहीं लगायी गयी थी।

"क्या आपको चोट लगी है?" श्याङचि ने पूछा।

"नहीं। मैं पैदल वापस चला जाऊँगा, तुम रिक्शा ले आओ।" श्री छाओ अभी

तक निश्चिन्त और शान्त थे, वह पत्थरों के इर्दगिर्द टटोलने लगे कि उन्होंने कोई चीज़ तो नहीं गिरा दी थी।

श्याङचि ने टूट गये बम को टटोला "सिर्फ आगे का कुछ हिस्सा टूटा है। बैठ जाइए मालिक, मैं ले चलूँगा।" उसने रिक्शा को पत्थरों पर से उतारा। "बैठ जाइये, मालिक!"

श्री छाओ दोबारा बैठना तो नहीं चाहते थे परन्तु मान गये—वह सुन सकते थे कि श्याङचि रोने-रोने को हो आया था।

वे पेइछाङ मार्ग के एक सिरे पर लैम्प के पास पहुँचे तो श्री छाओ ने अपने दाहिने हाथ पर एक खरोंच देखी। "श्याङचि, रुको!"

श्याङचि ने पलटकर देखा। उसके चेहरे पर खून सना हुआ था।

घबराहट में श्री छाओ को और कुछ न सूझा, वह इतना ही कह पाये, "जल्दी, जल्दी!.."

श्याङचि ने इसका यह गलत अर्थ लगाया कि उसे तेज दौड़ना चाहिए। उसने आगे झुककर तेज चाल से कदम बढ़ाये। शीघ्र ही वे घर पहुँच गये।

उसने रिक्शा खड़ा किया तो श्री छाओ के हाथ पर खून देखा और मालिकन से कुछ दवा लेने के लिये आँगन की ओर दौड़ा।

"मेरी चिन्ता मत करो," श्री छाओ यह कहते हुए अन्दर दौड़े। "पहले अपने आपको सम्भालो!"

श्याङचि ने खुद को गौर से देखा और उसे दर्द महसूस होना शुरू हो गया। उसके दोनों घुटनों और दाहिनी कोहनी पर चोट आयी थी। उसने चेहरे पर जिसे पसीना समझा था, वह असल में खून था। वह इतना हक्काबक्का रह गया था कि उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करे, कुछ सोच तक भी नहीं पा रहा था। ऐसी हालत में वह दरवाज़े की पत्थर की सीढ़ियों पर बैठकर सूनी नज़रों से रिक्शों के टूटे हुए बम को ताकने लगा। रिक्शा पर ताजे काले रोगन के पीछे से नंगा सफ़ेद खण्डित बम बहुत अटपटा और भद्दा नज़र आ रहा था जैसे कागज की किसी बढ़िया गुड़िया, जिसकी टाँगें चिपकानी बाकी हों, के नीचे से ज़्वार की उण्डियाँ बाहर निकली हुई हों। वह दोनों सफ़ेद सिरों को घूरता रहा।

"श्याङचि!" छाओ परिवार की नौकरानी काओ अम्मा उसे जोर से बुला रही थी। "श्याङचि तुम कहाँ हो?"

वह निश्चल बैठा रहा, और उसकी आँखें टूटे हुए बम पर गड़ी रहीं, जैसे वह उसके हृदय में भूँक गया हो।

"तुम्हें क्या हुआ है जो चुपके से छिपकर बैठे हो? तुमने तो मुझे बुरी तरह डरा डाला! मालिक तुम्हें बुला रहे हैं!"

काओ अम्मा की यह आदत थी कि वह जो भी कहती उसमें अपनी ओर से

भावना का नमक-मिर्च ज़रूर लगा देती। नतीजा यह निकलता कि एक ओर जहाँ कुछ रंगीनी आती वहीं कुछ उलझाव भी पैदा हो जाता। वह तीस से कुछ ऊपर की विधवा थी, साफ़-सुथरी, सीधी-सादी, फुर्तीली और सतर्क थी। इसके पहले दूसरे परिवारों ने उसे बहुत ज़्यादा बातूनी, दुराग्रही और हमेशा अपने आपको रहस्यमयी बनाकर पेश करने वाली समझा था। परन्तु छाओ परिवार साफ़-सुथरे, सीधे-सच्चे लोगों को पसन्द करता और व्यवहार में छोटी-मोटी विचित्रताओं पर ध्यान नहीं देता था। इसलिये वह दो या तीन साल से उनके यहाँ थी और उन्होंने जब भी मकान बदला तो उसे अपने साथ ही ले गये।

"मालिक तुम्हें बुला रहे हैं!" उसने फिर कहा। श्याङचि खड़ा हुआ तो उसने उसके चेहरे पर खून देखा। "अरे, अरे। यह क्या हुआ, तुमने तो डराकर मुझे मार ही डाला होता! यह तुम्हें क्या हो गया? अगर तुम टेटनस नहीं करवाना चाहते, तो जल्दी चलो और दवा लगवाओ! जल्दी! मालिक के पास दवा है!"

काओ अम्मा उसे डाँटते हुए उसके पीछे चल रही थी। वे दोनों उनके अध्ययन-कक्ष में पहुँचे, वहाँ श्रीमती छाओ अपने पति के हाथ पर पट्टी बाँध रही थी। उन्होंने श्याङचि को भी देखा तो चौंककर चिल्ला पड़ीं।

काओ अम्मा को लगा कि उसकी मालकिन श्याङचि की चोटों को नज़रअन्दाज़ कर सकती थीं, इसलिये बोली, "इस बार तो यह सचमुच बहुत बुरी तरह गिरा है, मादाम!" उसने तुरन्त चिलमची में पानी डाला और भड़भड़ाती हुई इधर-उधर भागी। "मैं पहले ही जानती थी! यह हमेशा अन्धाधुँध दौड़ता है, मैं जानती थी कि आज नहीं तो कल कुछ न कुछ होकर रहेगा। क्या अब मेरी बात सही नहीं निकली? चलो, जल्दी करो और घावों को धोओ और कुछ दवा लगाओ। समझे!"

श्याङचि अपनी दाहिनी कोहनी को पकड़े जड़वत खड़ा रहा। उस साफ़-सुथरे सजे हुए अध्ययन-कक्ष में यह भारी भरकम आदमी खून से सना चेहरा लिये निश्चित रूप से बहुत विचित्र जान पड़ रहा था। हर कोई समझ रहा लगता था कि कुछ गड़बड़ है, यहाँ तक कि काओ अम्मा भी नहीं बोल रही थी।

"मालिक!" सिर झुकाकर दबी आवाज में मगर जोर देते हुए श्याङचि बोला। "बेहतर होगा कि आप किसी दूसरे को ढूँढ लें। इस महीने का वेतन मरम्मत के लिये रखें। एक बम तड़क गया है और बायें लैम्प का शीशा चकनाचूर हो गया है। बाकी सब हिस्से ठीक हैं।"

"पहले अपने घाव धो लो और दवा लगा लो। फिर हम इसके बारे में बात कर सकते हैं।" श्री छाओ ने अपने उस हाथ की ओर देखा जिस पर उनकी पत्नी आहिस्ते से पट्टी बाँध रही थी।

"पहले धो लो।" काओ अम्मा की आवाज लौट आयी। "मालिक ने अभी तक कुछ कहा नहीं है, इसलिये जल्दबाजी मत करो।"

फिर भी श्याङचि हिला तक नहीं। "कोई ज़रूरत नहीं, मैं पलभर में ठीक हो जाऊँगा। मासिक नौकरी पर रखा आदमी अपने मालिक को गिरा दे और रिक्शा को तोड़ डाले तो वह मुँह दिखाने लायक नहीं रहता।..." इसके आगे उसके मुँह से शब्द न निकले, परन्तु उसके मनोभाव से साफ़ ज़ाहिर हो रहा था जैसे वह सिसकियाँ भरते हुए रो पड़ा हो। उसकी नज़रों में अपना काम छोड़ना और वेतन गँवा बैठना एक तरह से आत्महत्या के बराबर था। फिर भी उस क्षण कर्तव्य और आत्मसम्मान उसके लिये जीवन से भी अधिक महत्वपूर्ण थे।

इसका कारण यह था कि जिस व्यक्ति को उसने गिराया था वह कोई और नहीं, श्री छाओ ही थे। यदि वह श्रीमती याङ को गिरा देता तो उसने ठीक ही किया होता। उसके साथ तो वह सड़कों पर दंगयी करने वाले किसी व्यक्ति की तरह उद्दण्डता कर सकता था क्योंकि विनम्र होने की कोई ज़रूरत ही न थी—उसने उसे कभी इंसान समझा ही न था। धन सब कुछ था, और आत्मसम्मान तो बीच में कहीं आता ही न था—यही आम सिद्धान्त था।

मगर श्री छाओ की बात बिल्कुल अलग थी, इसलिये श्याङचि को अपना आत्मसम्मान रखने के लिये धन छोड़ देना चाहिए था। उसे किसी से घृणा न थी, सिर्फ अपने भाग्य से नफरत थी और छाओ परिवार के यहाँ से जाने के बाद रिक्शा चलाना बन्द करने के बारे में गम्भीरता से सोच रहा था। उसकी अपनी ज़िन्दगी की कोई क़ीमत नहीं थी, वह उसका चाहे जो कर सकता था, परन्तु दूसरों की ज़िन्दगी का क्या होगा? यदि वह सचमुच किसी को मार डालता, तो क्या होता? यह बात उसने पहले कभी नहीं सोची थी, परन्तु श्री छाओ के साथ इस दुर्घटना ने उसे इस मसले के बारे में सजग कर दिया था।

तब अच्छी बात है, वह अपना धन छोड़ देगा और कोई ऐसा धन्धा करेगा जिसमें दूसरों की ज़िन्दगी की ज़िम्मेदारी उस पर न हो। उसके लिये रिक्शा चलाना आदर्श धन्धा था और उसे छोड़ देने का मतलब सभी आशाएँ तज देना था। उसकी ज़िन्दगी एकदम बेमतलब और खाली हो जायेगी। अब कुशल रिक्शाचालक बनने के बारे में सोचने तक का भी कोई फायदा न था। वह बेकार ही में इतना लम्बा हो गया था!

सड़क पर सवारियाँ उठाते हुए दूसरे रिक्शावालों ने उनसे उनका धन्धा छीनने पर गालियाँ दी थीं, पर वह अपने इस निर्लज्ज़ व्यवहार को अपने आपको बेहतर बनाना और अपना रिक्शा खरीदना चाहने की बात कहकर जायज ठहरा सकता था। परन्तु इस दुर्घटना के बाद वह खुद को कैसे समझाता? यदि यह बात फैल गयी कि उसने अपने मालिक को गिराया और रिक्शा तोड़ डाला था तो वह मजाक का पात्र बन जाता—यही था वह शख्स जिसने नियमित नौकरी में घपला कर डाला था। कोई रास्ता ही नहीं रह गया था! उसे श्री छाओ के उसे हटाने से पहले ही नौकरी छोड़ देनी चाहिए।

"श्याङचि!" अब श्री छाओ को हाथ पर पट्टी बँध चुकी थी। "अपने घाव धो डालो। नौकरी छोड़ देने की बात शुरू करने की कोई ज़रूरत नहीं है। गलती तुम्हारी नहीं थी, मज़दूरों को उन पत्थरों के पास लाल बत्ती लगानी चाहिए थी। चलो इसे भूल जाओ, धो लो और दवा लगा लो।"

"जी, मालिक।" काओ अम्मा को अपनी बात जोड़ने की बात याद आ गयी। "श्याङचि बुरी तरह घबराया हुआ है और घबराता भी कैसे नहीं, मालिक को इतनी चोट जो लग गयी। मगर जब मालिक कहते हैं कि गलती तुम्हारी नहीं है, तो तुम्हें इतनी परेशानी महसूस नहीं करना चाहिए। जरा देखो उसे, इतना लम्बा, हट्टा-कट्टा आदमी कैसे बच्चे की तरह घबराया हुआ है! मादाम, उसे समझाएँ कि चिन्ता करना बन्द करे!" काओ अम्मा का बात करने का अन्दाज़ ग्रामोफोन रिकार्ड की तरह था, घूमते और घूमते हुए और अनायास ही हर किसी को बीच में लाते जाना।

"जल्दी करो और धो डालो, तुम कितने डरावने लग रहे हो!" श्रीमती छाओ ने बस इतना ही कहा।

श्याङचि का दिमाग़ बड़ी तेजी से घूम रहा था, परन्तु जब उसने समझ लिया कि श्रीमती छाओ खून को देखकर डर रही थी तो उसने महसूस किया कि उन्हें राहत पहुँचाने का यह एक अच्छा मौका है। वह चिलमची को अध्ययन-कक्ष के बाहर ले गया और उसने कई बार अपने घावों को धोया। काओ अम्मा ने दवा की बोतल लिये दरवाज़े पर इन्तज़ार किया।

"तुम्हारी कोहनी और घुटनों का क्या हाल है?" हाथ से उसके पूरे चेहरे पर रोगाणुनाशक दवा लगाते हुए उसने पूछा।

श्याङचि ने सिर हिलाया। "चिन्ता मत करो!"

श्री छाओ और श्रीमती छाओ सोने चली गयी। काओ अम्मा दवा की बोतल लिये अध्ययन-कक्ष से श्याङचि के कमरे तक उसके पीछे-पीछे गयी। बोतल नीचे रखते हुए उसने दरवाज़े से ही कहा, "थोड़ी देर बाद कुछ दवा और लगा लेना। और इस छोटी सी घटना को अपने आपको परेशान मत करने देना। पहले मेरा आदमी जीवित था तो मैं भी नौकरियाँ छोड़ती रहती थी। पहली बात तो यह थी कि जब मैं बाहर मेहनत करती हुई अपने को खपा रही होती तो वह लापरवाही से सब बिगाड़ देता, और यह मुझे गुस्से से पागल कर देता। दूसरे, जवानी में गुस्सा जल्दी आता है, और अगर कोई मुझे डाँट देता तो मैं काम छोड़ देती थी। मैं कहती, "मैं पैसा लेती हूँ तो काम भी करती हूँ, मैं कोई दासी तो नहीं हूँ। तुम बदबूदार अमीर होगी, मगर मिट्टी की मूरत में भी मिट्टी के गुण होते हैं। तुम्हारे जैसी बुढ़िया की कोई सेवा न कर सकता!' परन्तु अब मुझे अकल आ गयी है। मेरे आदमी के मरने के बाद से मुझे कोई चिन्ता भी नहीं रह गयी थी, इसलिये मेरा मिजाज भी सुधर गया।

"इस जगह मुझे रहते हुए तीन बरस होने वाले हैं—हाँ, ठीक ही तो है, मैंने यहाँ

नौवें महीने की नौ तारीख को काम शुरू किया था; यहाँ बख्शीश बहुत नहीं मिलती पर वे आपसे व्यवहार बहुत अच्छा करते हैं। हम धन के बदले मेहनत बेचते हैं और मीठे लफ़्ज़ों से हमारा रत्तीभर भी भला नहीं होता। फिर भी सच तो यह है कि दूरदृष्टि से काम लेना बेहतर रहता है। अगर तुम हर दो या तीन दिन में नौकरी छोड़ते रहोगे तो साल में छह महीने बेकार रहोगे, और इससे तुम्हारा ठोस नुकसान होगा। इससे कहीं अच्छा है कि एक खुशमिजाज मालिक ढूँढ लो और उसके साथ लम्बे अरसे तक निभाओ। हालाँकि बख्शीश तो बहुत नहीं मिलती लेकिन आम तौर पर आगे चलकर कुछ न कुछ धन बचा ही सकते हैं।

"मालिक ने आज के मामले के बारे में कुछ नहीं कहा है, इसलिये उसे भूल ही जाओ। क्यों नहीं? मैं अपनी उमर की शेखी बघारने की कोशिश नहीं कर रही हूँ, मगर तुम अभी जवान हो, इसलिये जल्दी गुस्सा हो जाते हो। दरअसल, इसकी कोई ज़रूरत नहीं। चिड़चिड़े मिजाज से तुम्हारा पेट नहीं भर सकता। तुम भले और मेहनती आदमी हो, क्यों यहीं कुछ समय और चुपचाप काम नहीं कर लेते? दुनियाभर में मारे-मारे फिरने के बजाये यह कहीं अच्छा होगा। मैं उनके बारे में नहीं, तुम्हारे ही बारे में सोचते हुए कह रही हूँ। हमारी तो अच्छी पट ही रही है!"

काओ अम्मा ने रुककर दम लिया, फिर बोली, "ठीक है कल मिलेंगे। और अड़ियल मत बना। मैं मुँहफट हूँ, साफ़ और खरी कह देती हूँ और चबाचबाकर बातें करने की मेरी आदत कभी रही नहीं!"

श्याङचि की दाहिनी कोहनी में जबर्दस्त दर्द होता रहा और आधी रात बीत जाने तक भी उसे नींद नहीं आ सकी। अच्छे और बुरे दोनों पहलुओं के बारे में सोचते हुए उसने तय किया कि काओ अम्मा का कहना ठीक था। सिर्फ धन ही असली चीज़ है, बाकी सब बेकार है। उसे रिक्शा खरीदने के लिये धन बचाना चाहिए, गुस्सा दिखाने से उसका पेट कभी नहीं भरेगा। यह निर्णय कर लेने पर उसका मन शान्त हो गया और धीरे-धीरे नींद ने उसे अपने आगोश में ले लिया।

आठवाँ अध्याय

श्री छाओ ने रिक्शा की मरम्मत करवाई और लागत श्याङचि के वेतन से नहीं काटी। श्रीमती छाओ ने उसे आघात के लिये दो गोलियाँ दीं मगर उसने खायी नहीं। उसने नौकरी छोड़कर जाने के बारे में भी कुछ नहीं कहा। कई दिन तक वह कुछ खिसियाआ-सा रहा, परन्तु अन्त में काओ अम्मा की सलाह उसके मन को भा गयी। जल्दी ही जीवन पहले की तरह पुराने ढर्रे पर चलने लगा, धीरे-धीरे वह दुर्घटना की

बात भूल गया और उसके दिल में आशा के अंकुर फूटने लगे।

वह अपने कमरे में अकेले बैठे-बैठे धन बचाने और रिक्शा खरीदने के तरीके सोचने लगता तो उसकी आँखें चमक उठतीं और वह अपनी सनक में खुद ही कुछ न कुछ बड़बड़ाने लगता। उसके हिसाब लगाने के तरीके बड़े अनगढ़ थे। लेकिन वह अपने आप कभी चुपचाप, तो कभी जोर से बोलकर दोहराता "छह छक्के छत्तीस"। इसका उसके पास धनराशि से कोई सम्बन्ध नहीं था परन्तु इसे बार-बार दोहराते रहने से उसका आत्मविश्वास बढ़ता था, मानो यह सचमुच उसके खाते में जमा हो।

जाड़ों की शुरुआत हो चुकी थी। गलियों में "मीठे भुने हुए चेस्टनट!" और "मुँगफली ले लो!" की आवाजों में "पेशाबदान... हो" की हल्की सी विषादपूर्ण हाँक भी जुड़ गयी थी। फेरी वाले की टोकरियों में तुम्बियों के आकार की चीनी मिट्टी की गोलकें भी थीं, और श्याङचि ने उनमें से एक सबसे बड़ी चुन ली। फेरी वाले ने उसी से बोहनी की थी, इसलिये वह रेजगारी नहीं दे पा रहा था। श्याङचि की नज़र एक थूथनीदार टोंटी वाले चमकीले हरे छोटे से मनोरंजक पेशाबदान पर लगी हुई थी, इसलिये उसने रौ में कह डाला, "रेज़गारी को जाने दो, मैं उनमें से एक ले लूँगा!"

अपनी गोलक कहीं रखकर वह उस छोटे हरे पेशाबदान को मकान के मुख्य कमरों में ले गया। "छोटे मालिक अभी सोये तो नहीं? उनके लिये खिलौना लाया हूँ!"

सभी छाओ दम्पति के छोटे बेटे श्याओ वन को नहलाया जाता देख रहे थे। उन्होंने श्याङचि का तोहफा देखा तो वे हँसी न रोक सके। श्री और श्रीमती छाओ ने कोई टिप्पणी नहीं की। शायद उन्हें लगा कि तोहफा अनगढ़ सा भले ही हो, परन्तु दयालुता की भावना उससे कहीं अहम थी और इसलिये उन्होंने मुस्कराकर शुक्रिया अदा किया। बेशक, काओ अम्मा को कुछ बोलना ही था, "ज़रा देखो तो! श्याङचि, तुम भी क्या आदमी हो! तुम्हारे जैसे भारी-भरकम आदमी को यही सबसे बेहतर लगा? कैसी वाहियात चीज़ ले आये!"

श्याओ वन अपने खिलौने पर बहुत रीझा और तुरन्त उसमें नहाने का कुछ पानी भरने लगा। "इस छोटी चायदानी का मुँह तो बहुत बड़ा है!" वह किलकारते हुए चिल्लाया।

इस पर सभी और भी जोरों से हँस पड़े। श्याङचि आत्मतुष्ट होने पर कुछ न सूझने की हालत में अपने कपड़े दुरुस्त करने लगता था। उसने वही किया। फिर वह आनन्दविभोर होकर कमरे से चला गया। ऐसा पहली बार हुआ था कि हर किसी का हँसमुख चेहरा उसकी ओर मुड़ा था, जैसे वह कोई महत्वपूर्ण व्यक्ति हो। अभी तक मुस्कराते हुए उसने अपने गिनेचुने चाँदी के युवान निकाले और उन्हें बड़ी सावधानी से एक-एक करके चीनी मिट्टी की तुम्बी में डाला। उसने अपने आपसे कहा, "यह अब तक का सबसे विश्वसनीय तरीका है। मेरे पास काफ़ी धन जमा हो जायेगा, तो बस यह तुम्बी दीवार पर पटकने से धप्प होगी, और उसके ठीकरों से अधिक युवान

हो जायेंगे।"

उसने किसी से मदद न माँगने का निर्णय किया। मालिक ल्यू पर भरोसा तो किया जा सकता था, परन्तु वहाँ की व्यवस्था उसे पसन्द न थी। बुजुर्ग ल्यू के पास धन निश्चय ही काफ़ी सुरक्षित था, परन्तु उसे कुछ बेचैनी महसूस हुई। यह धन नाम की चीज़ अँगूठी की तरह थी, उसे हमेशा अपनी उँगली पर पहने रहना ही बेहतर था, इस फैसले पर पहुँचने से उसे कुछ राहत मिली, मानो उसने अपनी कमर पट्टी एक खाँचा और कस ली हो और सीना तानकर पहले से कहीं अधिक सीधे और दृढ़ता से खड़ा हो गया हो।

ठण्ड बढ़ती ही जा रही थी, मगर श्याङचि पर कोई असर ही नहीं हो रहा लगता था। उसके सामने निश्चित लक्ष्य होने से, उसके मन में हर बात स्पष्टतर थी और अब ठण्ड उसका कुछ बिगाड़ नहीं सकती थी। धरती पर बर्फ जम गयी, धूलभरे बगली रास्ते तक भी जमे हुए थे। हर चीज़ खुश्क और सख्त हो गयी थी; काली मिट्टी में पीलेपन का ऐसा पुट आ गया था जैसे उसकी सारी नमी सोख ली गयी हो। विशेष रूप से भोर के समय ठेलों के पहियों से बनी लकीरें पाले से खच जाती थीं और तीखी हवाएँ भोर के कुहासे को बिखराकर ऊपर बहुत ऊँचे आनन्दकर नीले आकाश को प्रकट कर देती थीं। उस समय श्याङचि को रिक्शा निकालना बहुत अच्छा लगता था। बर्फ़ीली हवा उसकी आस्तीनों में से ऊपर चढ़कर उसे ऐसे कँपकँपा देती जैसे वह बर्फ जैसे ठण्डे पानी से नहा रहा हो। कई बार ऐसी तूफ़ानी हवा चलती कि उसका दम फूल जाता, परन्तु वह गर्दन झुकाकर, दाँत भींचकर धारा की विपरीत दिशा में तैरती बड़ी मछली की तरह आगे बढ़ता ही चला जाता। मौत से जूझने की तरह हवा के वेग की प्रबलता उसके प्रतिरोध को भी बढ़ा देती। अचानक जोरदार झकोरा आने पर वह साँस न ले पाता तो कुछ क्षणों तक मुँह बन्द किये रहता, फिर ऐसे डकार लेता जैसे किसी ने गहरे पानी में डुबकी लगायी हो। डकार लेने के बाद वह फिर आगे बढ़ना शुरू कर देता। शरीर के हर पुट्ठे को तानकर वह संघर्ष करता किसी भीमकाय व्यक्ति की तरह बढ़ता, जैसे उसे कोई रोक न सकता हो। वह उस हरे कीड़े की तरह था जिसे चींटियों ने घेर लिया हो और उसका सारा शरीर प्रतिरोध में थरथरा रहा हो।

तब वह कितने पसीने में तर हो जाया करता था। वह रिक्शा के बम नीचे रखकर खड़ा होता तो लम्बी साँस निकालकर मुँह के आसपास की धूल पोंछता और अनुभव करता कि वह सचमुच अजेय था। वह आँधी को धूल और रेत उड़ाती हुई अपने पास से गुजरते देखता तो सिर नवाकर उसे स्वीकार करता। अन्धड़ सड़क के किनारे के वृक्षों को झुका देता, दुकानों पर टँगे कपड़े के नामपटों के चिथड़े चिथड़े कर देता, दीवार पर चिपके पर्चों को नोचकर उखाड़ फेंकता। वह सूरज को ढँक लेता, गाता, चीखता, हुआता, चिल्लाता, गूँजता। कई बार वह किसी विशाल भयातुर आत्मा की

तरह आगे दौड़ते हुए अपनी उन्मत्त उड़ान में आकाश और धरती को फाड़कर अलग-अलग कर देता; फिर सहसा पागल हो गये नरपिशाच की तरह घबराहट में वह चारों दिशाओं में चक्कर खाते हुए मँडराने लगता; तब वृक्षों की डालियाँ तोड़ता, छतों की खपरैलें उड़ाता और बिजली के तार तोड़ता हुआ दोबारा वह तिरछा चलने लगता, मानो सबको अनजाने में अपनी चपेट में लेना चाहता हो। फिर भी श्याङचि उसे खड़ा देखता ही रहता, वह तो अभी उस आँधी में से निकला था जो उसके सामने शक्तिहीन हो गयी थी। जीत तो उसकी थी! कभीकभार आँधी उसका साथ देती तो वह रिक्शा के बमों को सिर्फ कसकर पकड़े रखता और अपने आपको उसके साथ-साथ बहने देता। तब एक अच्छे दोस्त की तरह आँधी ही उसके लिये पहिए घुमाती रहती।

श्याङचि दृष्टिहीन न था, इसलिये स्वाभाविक तौर पर ही वह बूढ़े, दुर्बल रिक्शावालों को ध्यान से देख चुका था। उनके कपड़े ऐसे चिथड़े होते थे कि हलकी सी हवा भी उनके शरीर को कँपा जाती थी और जोरदार झोंका तो उन्हें चिन्दा-चिन्दा कर देता था। उनके पैर ईश्वर ही जाने किस तरह के फटे-पुराने कपड़ों में लिपटे रहते थे। वे रिक्शा अड्डों पर आतुरता से इधर-उधर ताकते, काँपते खड़े रहते और किसी के दिखायी देते ही दौड़कर पूछते, "रिक्शा?!" एक बार सवारी मिल जाने पर उनमें थोड़ी गरमाहट आ जाती और उनके फटे-पुराने कपड़े पसीने से तर हो जाते। उनके रिक्शा रोकते ही वही पसीना उनकी पीठों पर जम जाता। आँधी सामने से आ रही होने पर तो वे पाँव तक न उठा पाते और रिक्शा को जाने किस तरह वह घसीटकर ले जाते। ऊपर से जोरदार झोंका आने पर उन्हें गर्दन झुकाकर उसे झेलना पड़ता, और ऊपर उठते झकोरे तो उन्हें क़रीब-क़रीब उड़ा देने पर उतारू रहते। आँधी को अपने सीने पर झेलते हुए रिक्शा के उलट जाने के डर से वे एक बार भी हाथ ऊपर उठाने का साहस न करते, और उसके पीछे से आने पर तो उनका न रिक्शे पर बस रह पाता न खुद अपने पर। फिर भी वे रिक्शा को उसके ठिकाने तक पहुँचाने के लिये शरीर की एक-एक मांसपेशी पर जोर डालते हुए हर मुमकिन कोशिश करते और चन्द सिक्कों के लिये अपने आपको लगभग मार डालते।

हर बार सवारी उठाने के बाद धूल और पसीने से उनके चेहरे मैले हो जाते थे, केवल तीन जमे हुए लाल दायरे ही नज़र आते—उनकी आँखें और मुँह। सर्दियों के छोटे, बहुत ठण्डे दिनों में बहुत कम लोग बाहर निकलते थे इसलिये हो सकता था कि सारा दिन कड़ी मेहनत के बावजूद वे भरपेट खाने लायक न कमा पायें; फिर भी ज़्यादा उमर वालों को घर पर बीवी और बच्चों को पालना होता, जवानों को माता-पिता, छोटे भाइयों और बहनों का पेट भरना पड़ता था। जाड़े का मौसम उनके लिये नरक की लम्बी यातना के समान था। भूतों जितनी फुरसत तो उन्हें निश्चित रूप से नहीं ही थी—भूत कभी अपने आपको उनकी तरह थकाकर चूर नहीं कर डालते! सड़क पर कुत्ते की तरह मरना उनके लिये शान्ति की एकमात्र आशा थी। ऐसा कहा जाता

था कि ठण्ड से जमकर मरने वाले गरीब शैतान के चेहरे पर हमेशा मुस्कान रहती है।

ऐसा कैसे हो सकता था कि श्याङचि यह सब देख न पाता हो? पर उसके पास दूसरों की चिन्ता करने का समय ही नहीं था। उन सभी की परिस्थिति एक ही थी, परन्तु वह युवा और सशक्त होने के कारण कठिनाइयाँ झेल सकता था और वह न ठण्ड से डरता था और न ही आँधी से। और रात को सोने के लिये साफ़-सुथरा कमरा और दिन में पहनने के लिये धुले कपड़े मिल जाने से वह अपने को औरों से भिन्न श्रेणी में मानता था। वे सभी भले ही एक साथ कष्ट उठा रहे थे पर उनके दरजों में अन्तर था। वह उनमें कम पीड़ित था और वह इसका कायल था कि बुढ़ापे में वह निश्चय ही टूटा-फूटा रिक्शा नहीं चला और जाड़े और भूख से नहीं मर रहा होगा, इसलिये बाद में उसकी नियति उनके जैसी नहीं होगी। उसे विश्वास था कि उसकी आज की श्रेष्ठता भविष्य में उसकी जीत की गारण्टी होगी।

श्याङचि का अपने बूढ़े, दुर्बल साथियों के प्रति व्यवहार शोफरों के रेस्तराँ या निजी कोठियों के बाहर रिक्शाचालकों के मिलने पर उनसे किये जाने वाले व्यवहार जैसा ही था। शोफ़र रिक्शाचालकों से किसी भी तरह के ताल्लुक को अपनी शान के खिलाफ़ समझने की वजह से कभी एक साथ गपशप नहीं करते थे। वे सभी एक ही नरक में पड़े थे मगर अलग-अलग स्तरों पर। उन्हें यह कभी सूझा ही नहीं कि उन सबको एक हो जाना चाहिए, इसलिये हरेक अपनी आशाओं और कोशिशों की धुन में खोया हुआ अपने अलग-अलग रास्ते पर चलता था, हरेक समझता था कि वह खाली हाथ जीवन में अपने स्थान बना लेगा और इसीलिये अँधेरे में टोहता हुआ भटकता रहता था। श्याङचि ने कभी किसी और के बारे में न तो सोचा और न ही परवाह की थी, उसके लिये तो बस केवल अपना धन और भविष्य में अपनी सफलता का ही महत्व था।

नया वर्ष निकट आ रहा होने पर सड़कों पर जश्नी माहौल बनना शुरू हो गया था। धूपीले और बिना आँधी वाले दिनों को हवा लहरीली और ठण्डी होने पर भी सड़कों के दोनों ओर नये वर्ष के पोस्टर-चित्र, लालटेनें, लाल और सफ़ेद मोमबत्तियाँ, बालों में लगाने के रेशमी फूल और तरह-तरह की मिठाइयाँ सजने से रंगबिरंगे नज़र आने लगे। यह दृश्य उत्साहवर्धक तो लगता परन्तु कुछ व्यथा भी होती, नये साल के मौके पर हरेक के हँसी खुशी कुछ दिन मानना चाहने पर भी हरेक की अपनी बड़ी या छोटी चिन्ताएँ भी थीं।

नये वर्ष की सजावट देखकर श्याङचि की आँखें उल्लास से चमक उठीं। वह जानता था कि छाओ परिवार अपने मित्रों को उपहार भेजेगा और हर बार उसे बख्शीश मिलेगी। नये वर्ष पर दो युवान बोनस बहुत ज़्यादा नहीं था, परन्तु नये वर्ष पर मिलने आने वालों को वह उनके घर पहुँचाने जायेगा और इसका मतलब होगा हर बार अलग

से दो या तीन माओ की कमाई। यह सब जुड़ता जायेगा। इस तरह आने वाला धन कम भले ही हो, लेकिन अगर अक्सर आता रहा तो उसके कम होने से ज़्यादा फर्क नहीं पड़ता था। उसकी तुम्बीनुमा गोलक उसका साथ देगी। शाम को खाली होने पर वह मिट्टी की अपनी इस सहेली को एकटक ताकता रहता। वह केवल धन निगलना जानती थी, उगलना नहीं। धीमे स्वर में वह उसे उपदेश देता, "और खाओ भाई, और खाओ! तुम्हारा पेट भरने से मेरा मन भी भरेगा।"

नया साल नजदीक-दर-नजदीक आता गया और बारहवें चाँद्र मास का आठवाँ दिन आते पता भी न चला। किसी ने आनन्द से और किसी ने चिन्ता से तैयारियाँ शुरू कर दीं। अभी तक दिन में चौबीस घण्टे ही होते थे, पर अब वे कुछ अलग तरह के थे और उन्हें व्यर्थ ही नहीं बिताया जा सकता था, बल्कि वे नये वर्ष की तैयारी को ध्यान में रखते हुए बिताने ज़रूरी थे। ऐसे लगता था जैसे सहसा समय की चेतना और भावनाएँ जग गयी हों और वे लोगों को समय के अनुसार सोचने और उसकी इच्छाओं के अनुसार काम करने के लिये मज़बूर कर रही थीं।

श्याङचि प्रसन्न लोगों में से था। सड़कों पर रौनक, चीज़ बेचने वालों की पुकारें, बोनस और बख्शीश की आशा, नये वर्ष की छुट्टी और उम्दा भोजन की कल्पनाओं से वह बच्चे की तरह पुलकित पूर्वानुमान से भर गया। उसने मालिक ल्यू को उपहार देने के लिये आठ माओ से एक युवान तक खर्च करने का निश्चय किया। उपहार छोटा भले ही हो पर उसके प्रति आदर प्रदर्शित करने वाला होगा। उसे मिलने जाने पर उसे कोई ऐसी चीज़ वहाँ ले जानी थी जो एक ओर तो उसे प्रसन्न कर सके कि अभी तक वह व्यस्तता के कारण उससे जल्दी न मिलने आ पाने की क्षमाप्रार्थना हो और दूसरी ओर उसे अपने तीस से अधिक युवान वसूल कर पाने में सक्षम बना सके। तीस से अधिक युवान वसूलने के लिये एक युवान खर्च करने लायक था।

उसने सन्तोष से अपनी गोलक को हल्का सा हिलाया और कल्पना की कि वह उसमें से तीस से ज़्यादा युवान और डाल देगा तो भारी टनटनाहट कितनी प्यारी होगी। वह धन हाथ में आ जाने पर उसे और चिन्ता करने की ज़रूरत न रहेगी।

एक शाम को जब वह अपनी तुम्बीनुमा गोलक को एक बार फिर ठोक-बजाकर देखने वाला था कि तभी काओ अम्मा ने चिल्लाकर उसे कहा, "श्याङचि! एक युवा महिला तुमसे मिलने के लिये आयी और फाटक पर खड़ी हुई है। जब मैं सड़क से आयी तो उसने मुझसे तुम्हारे बारे में पूछा।" श्याङचि बाहर निकला तो उसने दबे स्वर में यह भी कहा, "वह आबनूस के खम्भे की तरह विशाल है, सचमुच बड़ी भयानक है!"

श्याङचि ऐसे तमतमा उठा मानो उसका चेहरा दहक रहा हो। वह जानता था कि मुसीबत सामने खड़ी है।

नौवाँ अध्याय

श्याङचि में फाटक की दहलीज पार करने की ताकत भी नहीं थी। दरवाज़े के भीतर से ही हक्केबक्केपन से उसने बाहर ताका और सड़क के लैम्प की रोशनी में सुश्री ल्यू को देखा। उसने शायद आज फिर चेहरे पर पाउडर लगाया था और लैम्प की रोशनी ने उसे धूसर-हरे रंग का पुट दे दिया था, बल्कि वह पाले से ढँके काले सूखे पत्ते की तरह ज़्यादा लगता था। वह सीधे उनसे आँख मिलाने का साहस न कर सका।

बाघिन के चेहरे पर मिले-जुले भाव थे। उसकी आँखें उसकी उससे मिलने की आतुरता को छिपा नहीं पा रही थीं, फिर भी उसके थोड़े से खुले होठों से झरती ठण्डी हँसी से हल्का सा ताना भी झलकता था और नाक की सिकुड़न से उत्सुकता और तिरस्कार दोनों जाहिर होते थे। मेहराबी भौंहों और भद्दे ढंग से थोपे गये पाउडर वाले चेहरे से वह एक साथ सम्मोहक और धौंसिन लग रही थी।

उसने श्याङचि को बाहर आते देखा तो दो-एक बार मुँह फुलाया और मिश्रित भावनाओं वाले उसके चेहरे को मानो सूझ न रहा था कि अब क्या भाव प्रकट करे। उसने अपनी जटिल भावनाएँ नियंत्रित करने के लिये गले में राल घोंटी। अपने पिता के सामाजिक तौरतरीके की नकल सी करते हुए उसने कुछ छेड़ने और कुछ धमकाने के अन्दाज़ में ऐसे मजाक किया जैसे उसे किसी की कोई परवाह न हो।

"वाह, तुम वाकई खूब इंसान हो! ऐसा कुत्ता, जो हड्डी दी जाने पर और लेने के लिये लौटकर नहीं आता!" उसकी आवाज अहाते में रिक्शाचालकों पर बरसने की तरह ही बहुत ऊँची थी। उसके चेहरे से वह हल्की सी मुस्कान गायब हो गयी थी और सहसा वह कुछ शर्मसार और घटियापन महसूस करने लगी लगती थी। उसने अपना होंठ काटा।

"चिल्लाओ मत!" श्याङचि की पूरी ताकत ये दो शब्द कहने में लग गयी। ये शब्द उसके होंठों से निकले तो बहुत धीमे स्वर में थे, परन्तु बड़ी उग्रता के साथ।

"हुँह, तुम समझते हो मैं डरती हूँ!" वह कमीनों की तरह हँसी, परन्तु न चाहते हुए भी उसने स्वर कुछ दबा लिया। "इसमें हैरानी कि कोई बात नहीं कि तुम मुझे धोखा दे रहे हो, अब तुम्हें यहाँ वह छोटी कुतिया आया जो मिल गयी है। मैं पहले से ही जानती थी कि तुम बदचलन हो। अव्वल दर्जे के बेवकूफ, कलूटे गँवार, अब गूँगे होने का पाखण्ड रच रहे हो!" उसकी आवाज फिर ऊँची होती जा रही थी।

"चिल्लाओ मत!" श्याङचि को डर था कि शायद काओ अम्मा दरवाज़े के पीछे खड़ी सुन रही होगी। "चिल्लाओ मत! इधर आओ!" कहते-कहते उसने सड़क पार करना शुरू कर दिया।

"मैं डरती नहीं हूँ, कहीं भी नहीं। मेरी आवाज ऐसी ऊँची ही है!" विरोध करने

पर भी वह उसके पीछे-पीछे चल दी।

एक बार सड़क पार करने के बाद वे दोनों पार्क की लाल चारदीवारी के किनारे जाती पूर्वी सड़क पर चलने लगे। यहाँ अभी तक अपने देहाती तौर-तरीके न भूला श्याङचि पंजों के बल बैठ गया।

"तुम क्यों आयी हो?" उसने पूछा।

"मैं? हुँह, बहुत से कारण हैं!" उसका बायाँ हाथ कूल्हे पर और पेट बाहर निकला हुआ था। उसने उसे नीचे बैठे हुए ताका और थोड़ी देर सोचती रही जैसे उसके मन में उसके प्रति कुछ दयाभाव जगा हो। "श्याङचि, मैं बहुत अहम वजहों से तुम्हें खोजते हुए मिलने आयी हूँ।"

धीमा, मधुर "श्याङचि" सुनते ही उसका गुस्सा कुछ कम हो गया। उसने सिर उठाकर उसे देखा। अब भी उसमें कुछ भी प्रीतिकर नहीं था। फिर भी, पहले भी कहीं सुना हुआ लगा वह कोमल और जिगरी "श्याङचि" मुनकिर न हो सकने और तोड़े भी न जा सकने वाले उनके अतीत के अनुरागी सम्बन्धों की याद दिलाते हुए दबे पाँव उसके दिल में गुँजता चला गया। धीमी लेकिन मन्द आवाज़ में उसने पूछा, "क्या कारण हैं?"

"श्याङचि!" वह और पास आ गयी। "मैं मुसीबत में हूँ!"

"क्या मुसीबत?" वह चौंक गया।

"यह!" उसने अपने पेट की ओर इशारा किया।"तुम इसका क्या करोगे?"

उसकी घुटी हुई सी चीख निकल गयी, मानो किसी ने उसकी खोपड़ी पर वार किया हो। एक ही झटके में सब कुछ उसके सामने स्पष्ट हो गया। पहले कभी न सूझे हज़ारों विचार अचानक इतनी बड़ी संख्या में, इतनी तेज़ी से और इतने उलझे-पुलझे हुए बाढ़ की तरह उसके दिमाग़ में भर गये कि वह अचानक फिल्म टूट जाने पर परदे की तरह कोरा हो गया।

सड़क पर सन्नाटा था, धूसर बादलों ने चाँद को छिपा रखा था। बयार के झोंके नंगी टहनियों को हिला और सूखी पत्तियों को सरसरा रहे थे। कहीं दूर एक बिल्ली रो रही थी। मगर श्याङचि की उलझन बढ़ते हुए कोरेपन में बदल रही होने की वजह से वह ये आवाजें नहीं सुन पाया। हाथ में ठुड्डी थामे वह जमीन को घूमती हुई दिखायी देने लगने तक एकटक ताकता रहा। वह कुछ भी सोच नहीं पा रहा था, बल्कि सोचना चाहता भी नहीं था। उसे लगा कि जैसे वह सिकुड़ता जा रहा है परन्तु अभी इतना छोटा भी नहीं हुआ था कि धरती में धँसकर गायब हो जाये। उसकी सारी ज़िन्दगी इस एक कष्टदायक क्षण पर ठहर गयी लगती थी, बाकी सभी शून्य था। अब कहीं जाकर उसे ठण्ड महसूस हुई–उसके होंठ तक काँप रहे थे।

"बस ऐसे ही बैठे मत रहो! कुछ बोलो, खड़े हो जाओ!" उसे भी ठण्ड लग रही थी और वह चलना-फिरना चाहती थी।

एक खास तरह की अकड़न महसूस करते हुए श्याङचि खड़ा हुआ और उसके पीछे उत्तर की तरफ चल दिया। वह अभी तक गुमसुम ही था। उसका सारा शरीर सुन्न था मानो अभी बहुत ठण्ड से जग गया हो।

"कोई तरीका सूझा?" उसने उसकी ओर देखा, आँखों की मुद्रा स्नेहक थी। उसके पास कहने के लिये अब भी कुछ नहीं था।

"सत्ताईस तारीख़ को बूढ़े का जन्मदिन है। तुम ज़रूर आना।"

"वह तो वर्ष का अन्तिम समय होगा, बहुत व्यस्त रहूँगा!" अपनी घबराहट के बावजूद श्याङचि अपने काम धन्धे को नहीं भूला था।

"मैं जानती हूँ कि तुम्हारे साथ सख़्ती बरतनी पड़ेगी। तुमसे भलेमानसों की तरह बातचीत का मतलब वक़्त बरबाद करना है!" उसकी आवाज फिर ऊँची होने लगी और उस सुनसान सड़क पर और भी ज़्यादा तीखी सुनायी पड़ने लगी। इसने उसे काफ़ी असमंजस में डाल दिया। "तुम क्या सोचते हो कि मैं किसी से डरती हूँ? करते जाओ, तुम कर भी क्या लोगे? मेरी बात नहीं सुनते, तो मैं भी यहाँ चिल्ला-चिल्लाकर वक़्त खराब करने वाली नहीं! अगर हमारे बीच कोई समझौता नहीं होता, तो मैं तुम्हारे मालिक के फाटक के सामने खड़े होकर तीन दिन और तीन रात तक तुम्हें कोसती रह सकती हूँ! मुझे इस बात की परवाह नहीं कि तुम कौन हो, मैं तुमसे डरती नहीं, तुम कहीं भी चले जाओ मैं तुम्हें खोज सकती हूँ! इसलिये तुम यह मत समझो कि तुम बच भागोगे।"

"क्या तुम चिल्लाना बन्द नहीं कर सकती?" श्याङचि कतराने लगा।

"अगर तुम मेरे शोर मचाने से डरते हो, तो सबसे पहली बात यह है कि तुम्हें मुझे इस एक और जान से लादना नहीं चाहिए था! तुम जो चाहते थे, वह तुम्हें मिला और अब तुम उम्मीद करते हो कि मैं उसका नतीजा अकेली ही भुगतूँ! अबे टट्टे, तू मुझे क्या समझता है?"

"ज़रा धीमे, आराम से बात करो, मैं सुन रहा हूँ!" श्याङचि बर्फ की तरह एकदम ठण्डा रहा था मगर गाली सुनते ही उसकी पूरी देह गरमा गयी, गरमी उसके मुसामों में से फूटने लगी, इस तरह पूरा शरीर खुजलाने लगा, खास तौर पर उसकी खोपड़ी में झुनझुनाहट हो रही थी।

"हाँ, अब ठीक है। अपने लिये मुसीबतें मत बढ़ाओ!" उसके होठ खुले तो उसके बघेले दाँत दिखायी पड़े। "मैं झूठ नहीं बोलती, मेरे दिल में सचमुच तुम्हारे लिये बेहद ममता है, तुम भी कम से कम अपना भला बुरा तो समझो! मुझ पर यक़ीन करो, मुझसे अड़कर तुम्हारा कोई भला नहीं होगा!"

"मत..." श्याङचि कहना चाहता था कि "तीन बार थपथपाने के लिये मुझे चाँटा मत मारो," पर उसे पूरी कहावत याद ही नहीं आयी। वह पेइफिङ के कई मजाकिया जुमले जानता था, पर वह उन्हें दूसरों के बोलने पर समझ लेने के बावजूद

खुद फर्राटे से इस्तेमाल नहीं कर सकता था।

"क्या मत?"

"जो भी कहना है उसे पूरा कह डालो!"

"मुझे एक अच्छा उपाय सूझा है।" बाघिन उसके सामने जमकर खड़ी थी। "देखो, अगर तुम किसी बरेखिए के जरिए बूढ़े से बात चलाते हो तो वह निश्चय ही इंकार कर दोगे। वह रिक्शों का मालिक है और तुम रिक्शा चलाते हो। वह अपने रुतबे से इतने नीचे स्तर के किसी को दामाद बनाने के लिये राजी न होगा। मुझे तो इस सबके बारे में कोई चिन्ता नहीं है। मैं तुम्हें चाहती हूँ, बस यही काफ़ी है, बाकी दुनिया जाये भाड़ में!

"किसी बरेखिए के लिये इस मामले को निपटाना मुमकिन नहीं, इसका ज़िक्र होते ही बूढ़ा सोचेगा कि यह उसके कुछ दर्जन रिक्शों को हथियाने की साजिश है। वह तुमसे भी बेहतर हालत वाले आदमियों को भी इंकार कर देगा। यह काम तो मुझे स्वयं ही करना पड़ेगा। मैंने तुम्हें चुना है और हमने जो भी किया है वह उसकी राय पूछे बिना ही किया है। और वैसे भी, बच्चा ठहर गया है इसलिये हम दोनों में से कोई भी भाग नहीं सकता!

"मगर हम यह भी तो नहीं कर सकते कि अचानक हॉल में जाकर उसे इसके बारे में बता दें। बूढ़ा दिन-ब-दिन सठिया रहा है। अगर उसे कहीं भनक भी मिली तो वह एक नौजवान बीवी लाकर मुझे निकाल बाहर करेगा। मैं तुम्हें बता देती हूँ कि यह बूढ़ा सत्तर का होने जा रहा है, मगर साँड की तरह तगड़ा है। तुम मानो या न मानो, मगर मैं दावे के साथ कहती हूँ कि वह उससे कम से कम दो या तीन बच्चे तो पैदा करवा ही सकेगा।"

"हम चलते रहें।" श्याङचि ने देखा कि गश्त लगा रहा पुलिस वाला दो बार उनके पास से गुजर चुका था, और उसे लगा कि शायद कोई मुसीबत आने वाली थी।

"हम यहीं बातचीत करते रहेंगे। कौन हमें रोक सकता है?" उसकी टकटकी को देखते हुए बाघिन की भी पुलिस वाले पर नज़र पड़ी। "तुम्हारे पास रिक्शा तो है नहीं, फिर तुम क्यों डरते हो? वह बिना तुक या वजह के किसी के टट्टे तो काट नहीं खायेगा? ऐसा हो तो बहुत अजीब बात है उसे अपना काम करने दो, हम अपना करते रहेंगे!"

"देखो, मेरी योजना यह है। सत्ताईस तारीख को बूढ़े के जन्मदिन पर तुम आना और उसे तीन बार कोर्निश करना। फिर नववर्ष के दिन तुम उसे नया साल मुबारक कहने दुबारा आना। इससे उसका मिज़ाज़ अच्छा हो जायेगा और मैं उसके लिये शराब और कुछ चटपटी चीज़ें लाऊँगी और उसे छककर पीने दूँगी। वह लगभग नशे में होगा तो तुम सही मौके पर उससे अपना पोषक-पिता बनने के लिये कहना।

"उसके बाद मैं उसे कभीकभार जताती रहूँगी कि मैं कुछ ठीक महसूस नहीं करती हूँ। वह मुझसे सवाल ज़रूर पूछेगा, पर मैं शुरू में कुछ नहीं बोलूँगी। फिर जब वह सचमुच परेशान हो जायेगा तब मैं बता दूँगी कि उस छाओ अड़ ने यह किया है जो हाल ही में मरा है और हमारे घर के ठीक पूर्व की ओर अन्त्येष्टि का बन्दोबस्त करने वाली दुकान का डिप्टी मैनेजर था। उसका न परिवार था और न ही कोई रिश्तेदार और उसे शीचिमन के बाहर कंगलों के क़ब्रिस्तान में दफ़नाया जा चुका है। फिर बूढ़ा सच्चाई का पता कहाँ से लगा पायेगा। जब उसे कुछ नहीं सूझ रहा होगा तो हम दोनों इशारा कर सकेंगे कि सबसे अच्छा तो यही होगा कि वह मेरा विवाह तुमसे कर दे। आख़िरकार तुम पहले से ही उसके पोष्य-पुत्र बन चुके होगे, उसमें और दामाद में फर्क ही क्या है। इस तरह हम बिना किसी झँझट के एक कलंक से बच जायेंगे। मेरी योजना के बारे में तुम्हारा क्या ख़्याल है?"

श्याङचि मौन था।

सम्भवतः फिलवक़्त काफ़ी कह चुकी होने की बात सोचकर, बाघिन उत्तरी दिशा में चल पड़ी। उसका सिर झुका हुआ था, मानो वह अपने ही भाषाण का रस ले और उसे भी सोचने का अवसर दे रही हो।

तभी धूसर बादलों को हवा ने फाड़ डाला और वे खिली चाँदनी में सड़क के उत्तरी सिरे पर पहुँच गये। वहाँ वर्जित नगर की दीवारों के गिर्द नहर जैसे उन्हें ही थामने के लिये हो। वर्जित नगर में भी पूरी तरह खामोशी छायी हुई थी। उसकी खूबसूरत निगरानी मीनारें, शानदार मेहराबें, सिन्दूरी फाटक और चिङशान पर्वत पर मण्डप मानो दम साधे कोई बात सुनने को आतुर लग रहे थे जो शायद वे फिर कभी न सुन पायें। हल्की हवा किसी विषादपूर्ण आह की तरह मण्डपों और हॉलों के भीतर आ और जा रही थी, मानो पुराने वक़्तों की कहानियाँ सुना रही हो।

बाघिन पश्चिमी दिशा में चलने लगी और श्याङचि उसके पीछे-पीछे पेइहाए पुल के एक सिरे की मेहराब तक गया। पुल वीरान सा पड़ा था तभी ठण्डी और एकाकी, मद्धिम चाँदनी उसके दोनों ओर फैली जमी हुई बर्फ पर चमकती छिटकी हुई थी। दूर काली परछाइयों से अधढँके मण्डप झील पर जमे होने की तरह अचल थे, सिर्फ उनकी पीली खपरैलें धुँधली सी झिलामिला रही थीं। वृक्षों में हलकी-हलकी हरकत हो रही थी, चाँदनी शायद ही कभी इतनी धुँधली नज़र आयी हो। ऊपर बहुत ऊँचा श्वेत पगोड़ा था, और उसकी खड़ियामय सफ़ेदी चारों ओर ऐसी रूखी उदासी बिखेर रही थी कि मानवनिर्मित अलंकरणों के बावजूद तीनों झीलें अपनी समूची उत्तरी विवर्णता उघाड़ रही थीं। उनके पुल पर पहुँचने पर तो जमी हुई झील से आयी बर्फ़ीली हवा ने श्याङचि को बुरी तरह कँपकँपा दिया। वह और आगे नहीं जाना चाहता था।

आम तौर पर, इस पुल के ऊपर से रिक्शा ले जाते हुए वह लुढ़क जाने के डर से अपने कदमों पर ध्यान केन्द्रित रखा करता था, और अपने इर्दगिर्द देखने की उसे

फ़ुरसत ही नहीं थी। अब वह चारों ओर देखने के लिये आज़ाद था, मगर वह दृश्य उसे कुछ भयभीत करने वाला लगा। राख की तरह ठण्डी बर्फ, हलके-हलके सरसराते हुए वृक्ष और मृत्युवत श्वेत पगोड़ा इतने एकाकी थे कि उसे लगा कि कहीं वे डर के मारे चीख न पड़ें या पागलपन में कूद न पड़ें। उसके पैरों के तले सफ़ेद पत्थर का वह पुल बेहद उजाड़ और इतना सफ़ेद था कि सड़क के लैम्प भी बड़ी शोकपूर्ण रोशनी उस पर डाल रहे थे। वह और आगे जाना या इधर-उधर देखना नहीं चाहता था, और बाघिन के साथ जाने का तो उसका बिल्कुल मन ही नहीं था। दरअसल वह पुल से कूदकर बर्फ को तोड़ते हुए झील के तले में डूबकर मरी हुई मछली की तरह जम जाना चाहता था।

"कल मिलेंगे!" वह मुड़ा और वापस जाने लगा।

"श्याङचि, तब हम ऐसा ही करेंगे। तुमसे सत्ताईस को मुलाकात होगी!" उसने जाते हुए श्याङचि की चौड़ी तनी हुई पीठ को देखते हुए कहा। फिर श्वेत पगोडा पर नज़र डालते हुए उसने आह भरी और पश्चिम की ओर चल दी।

शैतान के पीछा कर रहे होने की तरह श्याङचि ने एक बार भी पीछे मुड़कर नहीं देखा। वह थरथराते हुए इतनी जल्दबाजी से जा रहा था कि वह गोलाकार नगर के छोटे से मैदान की चारदीवारी से टकरा ही गया होता। उसके आँसू टपकने ही वाले थे कि उसने अपनी एक बाँह उस पर टिका दी। किसी के पुल से उसे पुकारने तक वह वैसे ही वहाँ निश्चल और हक्काबक्का खड़ा रहा।

"श्याङचि, श्याङचि! यहाँ आओ, श्याङचि! वह बाघिन थी।

बहुत धीरे-धीरे उसने पुल की ओर दो कदम बढ़ाये। बाघिन खुले होठों के साथ थोड़ी पीछे की ओर झुकी उसके पास आने के लिये पुल से उतर रही थी।

"मैं कहती हूँ, श्याङचि, यहाँ आओ, मुझे तुम्हें कुछ देना है!" उसके आगे बढ़ने से पहले ही वह उसके सामने खड़ी थी। "ये रहे तुम्हारे बचाये हुए तीस युवान। कुछ रेज़गारी भी थी, पर मैंने पूरे युवान दिये हैं। यह सिर्फ तुम्हें यह दिखाने के लिये दे रही हूँ कि मैं क्या महसूस करती हूँ। मुझे सचमुच तुम्हारी बहुत याद आती है, तुम्हारा ख़्याल रखती हूँ और दिल से तुम्हारा भला चाहती हूँ। तुम्हारे गोश्तहरामी न करने तक मुझे और किसी बात का परवाह नहीं। लो, ये ले लो! और सम्भालकर रखना! और यदि कहीं खो बैठो तो मुझे दोष मत देना!"

श्याङचि ने नोटों की गड्डी ले ली और मुँह बाये वहाँ खड़ा रहा। उसकी समझ में नहीं आया कि वह क्या कहे।

"अच्छी बात है, सत्ताईस को मिलेंगे! उस दिन आने की बात मत भूलना!" वह मुस्करायी। "तुम्हें इस सौदे में सबसे ज़्यादा फ़ायदा हो रहा है, यह तुम जानते हो, खुद भी हिसाब लगाकर देख सकते हो।" यह कहकर वह पलटी और वापस चली गयी।

उसके पुल की मेहराब के पीछे ओझल हो जाने तक वह गड्डी को अच्छी तरह पकड़े हुए, हक्काबक्का उसे जाते देखता रहा। धूसर बादलों ने चाँद को फिर ढक लिया। सड़क के लैम्पों की रोशनी ज़्यादा चमकने लगी और पुल बेहद सफ़ेद, ठण्डा और खाली लगने लगा। वह पलटा और पूरी रफ़्तार से वापस चल पड़ा, फिर भी छाओ परिवार के मकान के द्वार पर पहुँचने पर भी उसकी दृष्टि में वह ठण्डा, सफ़ेद और सूना पुल बसा हुआ था, मानो वह काल की दृष्टि से एक पलक झपकने भर दूर हो।

अपने कमरे में वापस आकर सबसे पहले उसने नोट गिने। उसने उन्हें दो या तीन बार गिना और उसकी पसीने भरी हथेलियों ने उन्हें चिचिपा बना दिया। हर बार उनकी संख्या अलग-अलग निकली। आख़िर उसने उन्हें अपनी तुम्बीनुमा गोलक में ठूँस दिया और कुछ भी सोचना न चाहते हुए वह चारपाई की पटिया पर बैठकर उस मिट्टी के पात्र को घूरने लगा। पैसा होने पर समस्याओं का कोई न कोई हल निकल ही आता है और उसे बहुत विश्वास था कि उसकी गोलक उसकी सारी समस्याएँ हल कर देगी। अब और सोचने की कोई ज़रूरत ही नहीं थी। नहर, चिङशान पर्वत, श्वेत पगोडा पुल, बाघिन, उसका बढ़ा हुआ पेट... ये सब एक सपना थे; फिर भी उसके जागने पर उसकी गोलक में तीस और युवान जमा थे! यही सच था।

अच्छी तरह जीभर देख लेने के बाद उसने गोलक छिपा दी और अच्छी नींद सोने का फैसला किया। उसकी मुसीबतें कितनी भी विकराल क्यों न हों, वह उनके रहते भी सो और उन्हें कल तक के लिये ताक पर रख सकता था।

वह लेट तो गया पर अपनी आँखें बन्द न कर सका। दिन की घटनाएँ बर्रों के छत्ते की तरह थीं—एक उड़कर गयी नहीं कि दूसरी भिनभिनाती हुई बाहर निकल आती और हरेक की पुच्छल में डँक था।

सोचने से कोई फायदा न होने की वजह से वह सोचना ही नहीं चाहता था। बाघिन ने उसके भागने का हर रास्ता ही बन्द कर डाला था।

सबसे अच्छा तो वहाँ से कहीं चला जाना होता, परन्तु श्याङचि अपने आपको इसका कायल न कर सका। देहात में लौट जाने के बजाये वह पेइहाए में श्वेत पगोडा की रखवाली करने को ज़्यादा पसन्द करता। किसी और शहर में चला जाये, तो कैसा रहेगा? पेइफिङ से अच्छी कोई जगह थी ही नहीं। नहीं, वह नहीं जा सकता था, दिमाग़ी दण्ड पेलने में कोई तुक नहीं था। बाघिन अपनी धमकियों पर अमल कर पाने में सक्षम थी। यदि वह उसके कहने पर न चला तो वह उसे परेशान करती रहेगी। उसके नगर में रहने तक वह उसको ढूँढ ही सकती थी। वास्तव में उसे चकमा देने की कोशिश करना भी बेकार था। एक बार गुस्से में आ गयी तो वह अपने पिता की हिमायत जुटा लेगी और वह श्याङचि को किसी शान्त, वीरान कोने में खत्म कर डालने के लिये एक या दो आदमी भाड़े पर ला सकता था, इसमें ज़्यादा आदमियों

की ज़रूरत ही नहीं थी।

वह उसकी कही बातों पर सोच रहा था तो उसे लगा कि वह किसी जाल में फँस गया है और उसकी सारी देह जकड़ी हुई है—कहीं से बच निकलने का रास्ता नहीं रह गया। उसकी दलीलों में कोई दोष निकाल पाने में असमर्थ वह उसके बख़्तरबन्द में कोई दरार न खोज पाया। उसे लगा कि उसने ऐसा घातक जाल फैलाया है कि उसमें से एक इंच लम्बी छोटी मछली भी छूटकर नहीं निकल सकती थी। इस सारे मामले का ब्यौरेवार विश्लेषण करने में खुद को असमर्थ पाकर उसने उसे समूचे रूप में स्वीकार कर लिया। लेकिन वह उसे हज़ार चिन* के धातु के खण्ड की तरह भारी लग रहा था, और इस कुचल रहे बोझ के नीचे दबा वह इस बात का कायल हो गया कि रिक्शावाले की ज़िन्दगी एक लफ़्ज़ में बयान की जा सकती है—मनहूसियत।

रिक्शावाले, वह भी रिक्शाचालक ही था, को अपना रिक्शा चलाने में लगे रहना चाहिए और औरतों से दूर ही रहना चाहिए। किसी एक से सम्पर्क होने से ही वह किसी बड़ी मुसीबत में पड़ सकता है। मालिक ल्यू ने कुछ दर्जन रिक्शों का मालिक होने और बाघिन ने अपनी गन्धेली योनि की वजह से उसे ठगा और उससे कचरे जैसा सलूक किया था। इसके बारे में और अधिक सोचने की कोई तुक न थी। अगर वह अपनी नियति को स्वीकार करता था तो उसे कोर्निश करने और बुजुर्ग को अपना "पोषक-पिता" बनने के लिये कहने और उस डायन से शादी करने की तैयारी करनी चाहिए। अगर उसने यह नियति स्वीकार न की तो उसका जीवन खतरे में था।

इतना सोचने के बाद उसने बाघिन और उसके सभी कथनों को एक तरफ सरका दिया। मुसीबत बाघिन के कठोर और क्रूर होने से नहीं थी; यह तो रिक्शा चलाने वाले का भाग्य ही था, जैसे कुत्ते का बच्चों के हाथों बिना कारण पिटना और सताया जाना उसकी क़िस्मत में बदा ही होता है। इस तरह की ज़िन्दगी घसीटने से क्या लाभ? ऐसी ज़िन्दगी न भी रहे तो क्या!

उसकी नींद उचट गयी और उसने टाँगों से रजाई को धकियाकर अलग कर दिया और उठ बैठा। उसने कुछ शराब खरीद लाने और पीकर धुत्त हो जाने का फैसला किया। उसे अपनी नौकरी या अच्छे आचरण के तथाकथित नियमों के बारे में चिन्ता करने की क्या ज़रूरत। जमकर पियो और सो जाओ! सत्ताईस? अट्ठाईस को भी वह किसी को कोर्निश नहीं करेगा और क़िसमें हिम्मत थी कि उसे हाथ तक भी लगा सके। उसने अपना मोटा रूईदार कोट कन्धों पर डाला, चाय के लिये इस्तेमाल करने वाला अपना कटोरा उठाया और तेजी से बाहर चला गया।

हवा और तेज हो गयी थी, और धूसर बादल छँट चुके थे। बहुत छोटा चाँद बेहद ठण्डी चाँदनी बिखेर रहा था। सीधे रजाई से निकलकर आया श्याङचि ठण्ड से हाँफने

* एक चिन = पाँच सौ ग्राम।

लगा। कोई राहगीर दिखायी नहीं देता था, सड़क के एक किनारे एकाध रिक्शा थे और चालक उनके पास खड़े हाथों को चुल्लू बनाकर कान ढँके हुए और अपने को गरम रखने के लिये अपने पाँव पटक रहे थे।

श्याङचि एक साँस ही में दौड़ता दक्षिण की ओर छोटी दुकान पर पहुँच गया। दुकान की कुछ गरमाहट बरकरार रखने के लिये उसके शटर बन्द कर दिये गये थे मगर एक छोटी सी खिड़की में से अदायगी और खरीदारी की जा सकती थी। श्याङचि ने चार औंस शराब और तीन थुङछ्येन की मूँगफली खरीदी। कटोरे को सम्भालते हुए और दौड़ने की हिम्मत न करके वह पालकी उठाने वाले की चाल से बढ़ता गया। कमरे में लौटते ही वह अपनी रजाई में घुस गया। दाँत तेजी से किटकिटा रहे थे और दोबारा उठ बैठने में संकोच महसूस हो रहा था। मेज पर रखी शराब में से बहुत तीखी गन्ध उठ रही थी, वह उसे नापसन्द ही थी, मूँगफली में भी उसकी रुचि न जगी। ठण्डे पानी की चिलमची ऊपर डाल दी जाने की तरह बर्फ़ीली हवा ने उसे पूरी तरह जगा दिया था, फिर भी उसे बाँह बढ़ाने में आलस लग रहा था। उसके दिल में अब कोई जलन नहीं हो रही थी।

थोड़ी देर ऐसे ही पड़े रहने के बाद उसने रजाई के किनारे के ऊपर से झाँककर मेज़ पर रखे शराब के कटोरे को देखा। नहीं, ऐसे छोटे से मसले को लेकर वह अपने आपको तबाह नहीं कर सकता था, और कभी शराब न पीने के संकल्प को नहीं तोड़ सकता था। इसमें कोई शक नहीं कि वह बखेड़े में फँस गया था, मगर कहीं न कहीं कोई झिरी तो होगी ही जिसमें से वह बाहर निकल सकेगा। अगर कोई रास्ता न भी हो तो भी उसे खुद ही जानवरों की तरह कीचड़ में लोटना नहीं शुरू कर देना चाहिए। उसे अपनी अकल को ठिकाने रखते हुए दूसरों के उसे नीचा दिखाने की कोशिशों पर नज़र रखनी चाहिए।

उसने बत्ती बुझा दी और सो जाने की उम्मीद में रजाई में घुस गया। पर इससे भी कुछ न हुआ। उसने फिर रजाई से पलटकर चारों तरफ ताका।

आँगन में चाँदनी उसकी खिड़की के कागज पर पड़कर हल्की नीली झलक दे रही थी, मानो पौ फटने को हो। नाक के अगले हिस्से पर ठण्ड महसूस होने से उसे लगा कि कमरा कितना बर्फ़ीला था, शराब की हल्की सी गन्ध जमा देने वाली हवा पर हावी थी। वह एकाएक उठ बैठा, कटोरा उठाया और एक बड़ा-सा घूँट चढ़ा गया।

दसवाँ अध्याय

श्याङचि इतना होशियार नहीं था कि अपनी समस्याएँ एक-एक करके सुलझा लेता, उसमें इतना दम भी नहीं था कि वह सब कुछ छोड़कर अलग हो जाता। असन्तोष

के उसके दिल को लगातार कुतरते रहने से वह पूरी तरह असहाय महसूस करने लगा था। सभी प्राणी मानसिक आघात लगने पर उस बुरी स्थिति में से उबरने की घोर कोशिश करते हैं। अपनी मजबूत टाँगें गँवा बैठा लड़ाकू झींगुर भी छोटी कमजोर टाँगों के सहारे रेंगने की कोशिश करता है। श्याङचि की भी वैसी ही हालत थी। वह अपनी कोई निश्चित योजना न होने की वजह से घटनाक्रम को स्वीकारते हुए दिन काटने की आशा ही कर सकता था। छलाँग लगाने का कोई इरादा न होने की हालत में उसे जहाँ तक हो सके, रेंगते रहकर ही सन्तोष करना था।

सत्ताईसवीं आने में अभी तक़रीबन एक दर्जन दिन बचे थे, उसका समूचा ध्यान उसी दिन पर ही लगा हुआ था। वही उसके विचारों और स्वप्नों में बसा हुआ था और वह कुछ ऐसे "सत्ताईस" बड़बड़ाता रहता जैसे वह दिन गुजर जाने पर उसकी सभी समस्याएँ सुलझ जायेंगी—वह यह भी अच्छी तरह जानता था कि यह महज उसकी इच्छाजनित कल्पना ही थी।

कभी कभी उसके विचार कुछ आगे तक भी चले जाते थे। अगर वह अपने कुछ दर्जन युवान लेकर थ्येनचिन चला जाये, तो कैसा रहे? वहाँ पहुँच जाने पर उसे किस्मत से कोई दूसरी नौकरी भी मिल सकती थी और वह रिक्शा चलाना छोड़ सकता था। क्या बाघिन उसका पीछा करते हुए थ्येनचिन पहुँच सकती थी? उसकी नज़र में, किसी जगह पहुँचने के लिये रेलगाड़ी में बैठने की ज़रूरत पड़ने का मतलब उसका लाजिमी तौर पर बहुत दूर होना था। इसलिये उसका वहाँ तक उसका पीछा न कर पाना निश्चित था! यह बढ़िया विचार लगा, मगर अन्दर बहुत गहरे वह जानता था कि वह तो आख़िरी सहारा था। अगर हो सके तो वह पेइफिङ में ही रहेगा। इसलिये वह फिर सत्ताईस तारीख पर लौट आया। तात्कालिक मसलों पर सोचना बेहतर था। यदि वह उस बाधा को पार कर पाया तो बहुत सम्भव था कि वह समूची स्थिति को बहुत ज़्यादा न बदल पाने पर भी छुटकारा पा सके। और यदि वह पूरी तरह हल न निकाल पाया तो भी हरेक बाधा पार कर लेने का मतलब था एक और रुकावट का कम हो जाना।

परन्तु पहली को ही कैसे पार करे? दो तरीके थे—पहला, सारे मामले को नज़रअन्दाज़ करते हुए जन्मदिन के मौके पर मिलने न जाना; दूसरा, बाघिन की सलाह मान लेना। दोनों सूरतों में नतीजा एक ही होना था। यदि वह न जाये तो बाघिन पूरे मामले को निश्चय ही छोड़ न देती; यदि वह जाता तो भी वह उसे आसानी से न बख़्शती। उसे याद आया कि उसने पहली बार रिक्शा चलाना शुरू करने पर गलियों में से होकर छोटे रास्तों से जाने के दूसरों के तरीके की नकल करने की कोशिश की थी। एक बार गलती से वह ल्वोछ्वेन गली में चला गया, और बहुत बड़ा चक्कर काटकर आख़िर चलना शुरू करने की जगह पर ही पहुँच गया था। अब वह अपने को फिर एक ऐसी ही गली में महसूस कर रहा था, वह जिधर भी मुड़ता नतीजा वही

निकलना था।

अपनी बेचारगी में उसने आशाजनक पहलू को देखने की कोशिश की। आख़िर बाघिन से शादी करने में बुराई भी क्या थी? फिर भी किसी भी तरह उसके बारे में सोचने से ही उसे मिचली होने लगती। बाघिन की सूरत की याद आते ही उसका सिर इंकार में हिल जाता। इसलिये उसकी सूरत को भूलकर, उसके व्यवहार के बारे में सोचे, उफ, अपना भाग्य सुधारने के लिये इतना ज़्यादा उत्सुक कोई भला आदमी ऐसा दागी माल कैसे स्वीकार कर सकता था? फिर तो किसी को भी, मरने के बाद अपने माता-पिता की आत्माओं को भी मुँह दिखाने लायक नहीं रह जायेगा।

और फिर डँके की चोट पर कौन कह सकता था कि वह बच्चा उसी का था या वह उसके लिये कुछ रिक्शे लायेगी? मालिक ल्यू आसानी से फँसने वाला गाहक नहीं था! और अगर यह भी मान लिया जाये कि सब ठीक-ठिकाने हो गया तो भी उससे वह सहन न होगा, क्योंकि वह कभी भी बाघिन के बराबर भी नहीं हो सकता था। दिशाबोध भूलकर सिर चकराने तक उसे दौड़ाते रहने के लिये उसे सिर्फ अपनी चीची उँगली से इशारा करने की ही ज़रूरत थी। वह बाघिन की दहशत से अच्छी तरह वाकिफ था। घर बसाना चाहने पर भी वह उससे कभी शादी नहीं कर सकता था। इसका सवाल ही नहीं उठता था। यदि उसने उससे शादी कर ली तो वह उसका अन्त ही था, और फिर उसे आत्मसम्मान की भी चिन्ता थी! वह वाकई मजबूर था!

उससे निपटने में अपने को असमर्थ पाकर वह अपने आपसे नफरत करने लगा और उसका मन हुआ कि अपने मुँह पर ही कसकर दो-चार झापड़ मारे। फिर भी तथ्य यही था कि उसने असल में कोई गलत काम नहीं किया था। बाघिन ने ही पूरी साजिश रची और उसके जाल में फँसने का इन्तज़ार किया था। ऐसा लगता था कि उसकी मुसीबत उसके कुछ ज़्यादा ही शरीफ होने के कारण थी। शरीफों का हमेशा नुकसान होता है और कसूरवार भी वही ठहराये जाते हैं।

वह सबसे अधिक दुखी तो इससे था कि अपना मन हल्का कर पाने के लिये वह कहीं जा नहीं सकता था। उसके न माता-पिता थे न भाई-बहन, न दोस्त। आम तौर पर उसे इस पर गर्व था कि वह ऐसा हट्टा-कट्टा था जिसके पाँव धरती पर थे, आसमान को थाम सकता था, किसी से कोई सम्बन्ध नहीं होने पर हवा की तरह स्वतंत्र था। लेकिन उसे तभी निराशाभरा अहसास हुआ कि कोई भी एकाकीपन में नहीं जी सकता।

अब वह दूसरे रिक्शावालों के प्रति खास तौर पर स्नेह महसूसने लगा। उसने सोचा कि अगर उसने उनमें से कुछ पहले दोस्ती की होती तो वे उसे सलाह और उसका साथ देते, फिर उस जैसे तगड़े आदमी को एक नहीं, अनेक बाघिनों से भी डरना न पड़ता। परन्तु उसने तो हमेशा अपने आपमें ही जीने को तरजीह दी थी, और दोस्त तत्काल ही नहीं बनाये जा सकते थे! उसे ऐसा भय लगा जिससे पहले

कभी उसकी दूर की पहचान भी नहीं थी। ऐसी ही हालत रहने पर कोई भी उसे धोखा दे और उस पर धौंस जमा सकता था। अकेला इंसान आसमान को थामे नहीं रख सकता था!

इस भय से उसे खुद अपने पर ही सन्देह होने लगा। जाड़ों में जब उसका मालिक दावत पर या थिएटर में जाया करता था तो श्याङचि आदतन कारबाइड लैम्प के नीचे से पानी वाला डिब्बा निकालकर उसे सीने से चिपका लिया करता था, उसे रिक्शा पर ही छोड़ देने से वह जम जाता। वह दौड़ने की वजह से पसीने से तर होता और सीने के मांस से सटा वह बर्फ़ीला छोटा डिब्बा एकाएक उसे कँपाने लगता, और डिब्बे को गरम होने में कुछ वक़्त लग जाता था। परन्तु उसने इसे कभी अपने ऊपर कोई बोझ नहीं समझा और दरअसल वह कई बार श्रेष्ठता की भावना से भी भर जाता था। टूटे-फूटे रिक्शे चलाने वाले तो कारबाइड लैम्प लगा ही नहीं सकते थे। अब उसे लगा कि वह बहुत कम मासिक वेतन पर काम कर रहा था और उसके लिये भी हर तरह की मुसीबतें उठानी और पानी के डिब्बे को जमने से बचाने के लिये सीने से चिपकाए तक भी रखना पड़ता था। जाहिर है कि उसके चौड़े सीने की क़ीमत पानी के छोटे से डिब्बे से कहीं कम थी। पहले रिक्शा चलाने को अपने लिये आदर्श काम और उसी से अपनी ज़िन्दगी को कुछ बना लेने में यकीन करने वाले श्याङचि के मन में सन्देह पैदा होने लगे थे। इसलिये बाघिन भी उसे डरा-धमका लेती थी—आख़िर उसकी हैसियत टीन के डिब्बे के बराबर भी नहीं थी!

बाघिन के उसे ढूँढ निकालने के तीन दिन बाद श्री छाओ और उनके कुछ दोस्त शाम का फिल्म शो देखने गये। श्याङचि पास ही एक छोटे से चायघर में पानी के बर्फ जैसे ठण्डे डिब्बे को सम्भाले इन्तज़ार करता रहा। ठण्ड जमा देने वाली थी और चायघर के दरवाज़े और खिड़कियाँ अच्छी तरह बन्द थे। पूरी जगह कोयलों की भभक, पसीने और सस्ते सिगरेटों के धुएँ से बदबुआ रही थी। फिर भी खिड़कियों के शीशे एकदम धुँधला गये थे।

ज़्यादातर गाहक मासिक तनख़्वाह पर काम करने वाले रिक्शाचालक ही थे। कुछ दीवार से सिर टिकाये कमरे की गरमाहट में बैठे ऊँघ रहे थे। कुछ शराब के कटोरे थामे आसपास वालों को साथ देने के लिये बुलाते हुए धीरे-धीरे हर घूँट के बाद चटकारा लेते हुए और जोरों से पाद रहे थे। अन्य कुछ रुमाली रोटियाँ खा रहे थे और एक बार में ही वे आधी रोटी गटक लेते थे जिससे उनकी गर्दनें फूलकर लाल हो रही थीं।

एक आदमी साथियों को अपना दुखड़ा सुना रहा था कि उस दिन सुबह से ही वह लगातार दौड़ता रहा था और वह यह भी भूल गया था कि कितनी बार पसीने से तर हुआ और फिर सूखा। ज़्यादातर लोग आपस में गपशप कर रहे थे मगर उन आख़िरी लफ़्ज़ों से अचानक खामोशी छा गयी। फिर घोंसले तबाह हो गये पंछियों के

कोहराम मचाने की तरह वे भी अपने-अपने दुखड़े सुनाने लगे। रुमाली रोटियाँ खाते हुए आदमी ने भी अपने मुँह से रोटी ठूँसी होने पर भी जबान चलाने की जगह निकाल ही ली, एक साथ बोलते और खाते हुए उसके सिर की नसें उभर आयी थीं।

"तुम क्या समझते हो कि माँ का लौड़ा महीने पर रिक्शा चलाने वाला मुसीबतें नहीं उठाता? दो बजे से लेकर—अउप!—अब तक मुझे न कुछ खाने को मिला और न ही पीने को एक भी घूँट पानी। तीन मरतबा मैं उस मादरचोद—अउप!—को छ्येनमन से फिङचिमन लाया और ले गया। इस ठण्ड से तो मेरी गाँड़ फटने की हद तक जम गयी है और मैं सिर्फ पाद ही मार सकता हूँ!"

उसने घूमकर चारों तरफ देखा, उनकी ओर सिर हिलाया और रोटी का एक और कौर काट खाया।

इससे बातचीत मौसम के बारे में चल पड़ी और हरेक को ठण्ड के कारण होने वाले कष्ट बताने का अवसर मिला।

श्याङचि पूरा वक़्त मौन रहा था, परन्तु उसने सब सुना बड़े ध्यान से। दूसरों की सुनायी कहानियों की तानें और लहजे अलग-अलग होने पर भी प्रत्येक ने भाग्य को कोसा और उसके अन्याय का गला-शिकवा किया। और श्याङचि दिल में रोष के कारण इन बातों को सूखी धरती के वर्षा को सोख लेने की तरह स्वीकार करता गया। उसे कुछ सूझ नहीं रहा था, वह जानता ही नहीं था कि उन्हें खुद अपनी कहानी शुरू से लेकर आख़िर तक कैसे सुनाये। वह तो उनसे सुनी जीवन की कटुता के कुछ अंश ही ले सकता था। हर आदमी सताया हुआ था और वह भी इसका अपवाद नहीं था। वह अपनी हालत जानता था, इसीलिये सबके साथ सहानुभूति दिखाना चाहता था। उनकी कहानियों में दुखद प्रसंग आने पर उसकी भौंहें तन जातीं, कोई मज़ेदार बात आने पर वह खींसें निपोर देता। उसकी खामोशी और उनसे जान-पहचान न होने के कारण उसकी उनके साथ सहानुभूति, उन सबके एक ही मुसीबत के मारे होने की भावना में कोई कमी नहीं आयी थी। पहले उसने इन बातों को फालतू बकबक समझा होता और सोचता कि अगर वे दिनभर ऐसे ही जारी रहें तो कभी अमीर नहीं बन पायेंगे। अब पहली बार वह समझा कि ये खोखली बातें नहीं थीं, वे उसकी बात भी कह रहे थे और सभी रिक्शाचालकों की साझी वेदना की कहानी कह रहे थे।

पूरे जोरशोर से बातचीत चल रही होने पर एकाएक दरवाज़ा फटाक से खुला और बर्फ़ीली हवा का तेज झोंका अन्दर आया। सभी ने गुस्से में घूमकर देखना चाहा कि यह कौन था जिसे दूसरों का रत्तीभर ख़्याल भी नहीं। वे जितने ज़्यादा अधीर थे, आने वाला उतनी ही धीमी चाल से आ रहा था, मानो वह जानबूझकर देर लगा रहा था। एक बैरा, कुछ मजाक में और कुछ तात्कालिकता से चीखा, "अरे चाचा! जल्दी करो! कहीं सारा गर्म हवा बाहर न निकाल देना!"

वह अपनी बात पूरी भी नहीं कर पाया कि बाहर से आ रहा आदमी भीतर आ

चुका था। वह भी रिक्शाचालक था, पचास से ऊपर का नज़र आता था। उसकी रूईदार जैकेट न लम्बी और न छोटी थी और वह बाँस की टोकरी में सुराखों की तरह छिदी हुई थी। उसके अन्दर भरी हुई रूई के गुच्छे सामने से और कुहनियों पर से निकले जा रहे थे। लगता था कि उसने कई दिन से मुँह नहीं धोया, इससे उसके चेहरे का असली रंग दिखायी नहीं दे रहा था, सिर्फ उसके जमे हुए कान पके हुए फल के टपकने वाला होने की तरह सुर्ख थे। उसके सफ़ेद बाल छोटी फटी हुई टोपी के नीचे से बड़े बेढंगे से निकले हुए थे और उसकी भौंहों और दाढ़ी पर नमी जमी हुई दिखायी दे रही थी। भीतर आते ही उसने एक बेंच टटोलकर उस पर आसन जमा लिया।

"एक केतली चाय!" उसने हाँफते हुए कहा।

इस चायघर में आम तौर पर मासिक नौकरी वाले रिक्शाचालक ही आते थे। आम हालत में बूढ़ा रिक्शाचालक निश्चय ही वहाँ न आया होता।

हरेक ने उसकी ओर देखा और एक क्षण पहले तक की अपनी बातचीत के मुकाबले वे कहीं अधिक द्रवित थे। कोई बोला नहीं। और कोई समय होता तो एक दो छोकरों ने ऐसे गाहक की खिल्ली उड़ाने के लिये कोई मज़ाक किया होता, मगर आज किसी के मुँह से एक भी शब्द न निकला।

अभी चाय तैयार भी न हो पाई थी कि बूढ़े का सिर धीरे धीरे लटकने लगा। आख़िर वह खुद ही लुढ़ककर फ़र्श पर आ गया।

अचानक हर कोई उछलकर उठ बैठा। "क्या हुआ? क्या बात है?" सभी जल्दी-जल्दी आगे बढ़ना चाहते थे।

"कोई हिलो नहीं!" चायघर के अनुभवी मैनेजर ने भीड़ को रोक दिया। फिर अकेले ही बूढ़े के पास जाकर उसका गरेबान ढीला किया, उठाकर उसे कुर्सी के सहारे बिठाया और उसके दोनों कन्धे थाम लिये। "जल्दी से कुछ पानी में थोड़ी शक्कर डालकर लाओ!" फिर उसने बूढ़े के गले पर कान लगाकर सुना और बुदबुदाया, "बलगम नहीं है।"

कोई अपनी जगह से हिला नहीं, मगर वे दोबारा बैठे भी नहीं। वे वहीं पर खड़े धुएँ से भरे कमरे में आँखें झपकाते दरवाज़े के पास बैठे दोनों व्यक्तियों को देखते रहे। सबके मन में एक ही विचार लगता था, "हमारा भी यही हाल होगा! सर के बाल सफ़ेद हो जाने पर एक दिन हम सड़क पर गिरेंगे और मर जायेंगे!"

शक्कर मिले पानी का कटोरा बूढ़े के होंठों से लगाया गया तो उसने कई बार कराह भरी। उसकी आँखें अभी तक बन्द थीं, उसने दाहिना हाथ ऊपर उठाया—वह काला और रोगन किया गया होने की तरह चमक रहा था—और उलट हाथ से अपना मुँह पोंछ लिया।

"यह थोड़ा सा पी लो!" मैनेजर ने उसके कान में कहा।

"क्या?" बूढ़े ने आँखें खोलीं। जब उसने देखा कि वह जमीन पर बैठा हुआ था तो खड़े होने के इरादे से उसने टाँगें समेट लीं।

"पहले पी लो! जल्दबाजी की कोई बात नहीं है!" मैनेजर ने बूढ़े के कन्धों पर से हाथ हटा लिये।

सभी तेज़ी से पास आ गये।

"हाय, हाय!" बूढ़े रिक्शाचालक ने चारों ओर ताका, फिर कटोरे को दोनों हाथों से पकड़कर शक्कर वाला पानी पीने लगा।

उसने धीरे-धीरे पिया और पी चुकने के बाद फिर एक बार सबको देखा।"हाय, आप सबको परेशान करने के लिये माफ़ी चाहता हूँ!" उसकी आवाज इतनी सभ्य और सुखद थी कि यह विश्वास करना मुश्किल था कि यह उसी खिचड़ी दाढ़ी के नीचे छिपे मुँह से निकली है। उसने एक बार फिर खड़े होने की कोशिश की और तीन या चार आदमी उसकी मदद करने के लिये तेजी से आगे आये। उसने हल्की मुस्कराहट और उतनी ही सभ्यता से कहा, "ठीक है, सब ठीक है। मैं अपने आप खड़ा हो सकता हूँ। भूख और ठण्ड से मैं बेहोश हो गया था। कोई बड़ी बात नहीं है।" उसके मैले से सने चेहरे के बावजूद उसकी हल्की सी मुस्कान उसे साफ़ और सदय दिखा रही थी।

वहाँ मौजूद सभी लोग बहुत प्रभावित हुए थे। शराब पी रहे एक अधेड़ आदमी ने अपना कटोरा खत्म कर डाला था। उसकी नशे से लाल आँखों में आँसू भर आये। "सुनो," उसने आवाज दी, "मेरे लिये दो औंस और लाओ!" शराब लायी जाने तक बूढ़ा रिक्शावाला दीवार से सटी कुर्सी पर बैठ चुका था। कुछ नशे में होने पर भी उस आदमी ने बड़ी नम्रता से बूढ़े को शराब पेश की।

"यह मेरी ओर से है, कृपया पीयें!" उसने कहा। "मैं खुद चालीस से ऊपर का हो गया हूँ, और सच्ची कहूँ तो मैं बहुत मुश्किल से ही मासिक नौकरी कर पा रहा हूँ। उम्र बीतती जाने पर मेरी टाँगें मुझे बताती जाती हैं कि अब मैं उतना ताकतवर नहीं रहा। दो या तीन साल में मैं भी आपकी तरह हो जाऊँगा। आप तो लगभग साठ के होंगे!"

"अभी नहीं, पचपन!" बूढ़े ने चुस्की ली। "इस ठण्ड में सवारी नहीं मिलती। और मैं, मेरा पेट खाली है। मेरे पास कुछ थुङछ्येन थे, वे मैंने अपने को गरम करने के लिये शराब पर खर्च कर दिये। यहाँ पहुँचने तक मेरी हालत इतनी खस्ता हो चुकी थी कि मैं कुछ गरमाहट के लिये यहाँ चला आया। कमरा इतना गर्म था, और मैंने कुछ खाया भी नहीं था, इसलिये बेहोश हो गया। दरअसल, इससे ज़्यादा फ़र्क नहीं पड़ता। मुझे आप सबको इतनी तकलीफ़ पहुँचाने का बड़ा अफ़सोस है!"

तब तक बूढ़े के सूखी घास जैसे धौले बालों, उसके मटमैले चेहरे, कोयले के रंग के काले हाथों, फटी पुरानी टोपी और रूईदार जैकेट—सभी एक मद्धिम, विमल प्रकाश

देते दिखायी देने लगे, बल्कि वह किसी गिरते-ढहते मन्दिर में चरमराती हुई मूर्ति के गिर्द अभी तक कायम गरिमामय प्रभामण्डल की तरह था।

सबने उसे ऐसे ताका जैसे वे नहीं चाहते थे कि वह वहाँ से जाये। श्याङचि पूरा वक़्त वहाँ काठ की तरह खड़ा खामोश ही रहा। उसने बूढ़े को अपना पेट खाली होने के बारे में कहते सुना तो दौड़कर बाहर गया और बड़ी फुर्ती से बन्द गोभी का एक बड़ा पत्ता लेकर लौटा। उसमें कीमा भरे दस पाओचि* थे। उसने उन्हें बूढ़े के सामने रखते हुए कहा, "इन्हें खाइए!" फिर वह लौटकर अपनी कुर्सी पर बैठ गया और ऐसे सिर झुका लिया जैसे बहुत थकामाँदा हो।

"अय्या!" बूढ़ा आदमी खुश नज़र आया मगर उसके आँसू भी निकलने वाले थे। उसने हरेक को देखकर नमस्कार करने की मुद्रा में सिर हिलाया। "सच पूछो तो हम साथी हैं, क्या नहीं? हम समूची ताकत लगाकर सवारी को ले जा सकते हैं मगर उससे एक भी थुङछ्येन ज़्यादा वसूल करना कितना मुश्किल होता है! वह खड़ा हो गया और दरवाज़े की तरफ चल दिया।

"खाएँ!" हरेक एक साथ कह रहा लगा।

"मैं पहले अपने पोते बछेड़े को बुला लाऊँ। वह बाहर रिक्शे की रखवाली कर रहा है।"

"मैं जाता हू, आप बैठिए!" अधेड़ रिक्शाचालक ने कहा। "आप यहाँ रिक्शा खो जाने का फिकर मत करें, सड़क के पार ही पुलिस सहायता केन्द्र है।" उसने दरवाज़े को दरारभर खोला और चिल्लाया, "बछेड़े, बछेड़े, तुम्हारे बाबा तुम्हें बुला रहे हैं! रिक्शा इधर ले आओ!"

बूढ़े ने पाओचि को कई बार छुआ मगर एक को भी उठाया नहीं। बछेड़े के अन्दर आते ही उसने एक उठाकर कहा, "बछेड़े यह तुम्हारे लिये है, बेटा!"

बछेड़ा बारह या तेरह वर्ष से अधिक का नहीं था। उसका चेहरा बहुत दुबला था मगर उसके कपड़े भारी-भरकम थे। उसकी नाक ठण्ड से लाल होकर बहने लगी थी। कानों पर उसने फटे-पुराने मफ पहने हुए थे। बूढ़े के सामने खड़े होकर उसने आगे बढ़ाये पाओचि को दाहिने हाथ में लिया और उसका बायाँ हाथ अपने आप एक और लेने के लिये आगे बढ़ गया। उसने बड़ी तेजी से दोनों का एक-एक कौर काट खाया।

"अरे, धीरे-धीरे खाओ!" बूढ़े ने पोते के सिर पर एक हाथ रखा, और दूसरे से आहिस्ता से एक पाओचि उठाकर अपने मुँह में डाल लिया। "बाबा के लिये दो काफ़ी होंगे, बाकी सब तुम्हारे हैं। तुम्हारे खा चुकने पर हम आज की छुट्टी करके घर चले जायेंगे। अगर कल बहुत ज़्यादा ठण्ड न हुई तो हम थोड़ा जल्दी घर से निकलेंगे। तुम्हारा क्या ख़्याल है, बछेड़े?"

लड़के ने पाओचि पर ध्यान टिकाये हुए हामी भरी और रेंट को फिर नाक में

* खमीरे आटे का भरकर भाप पर बनाया गया एक पकवान।

सुड़क लिया। "बाबा आपके तीन, बाकी मेरे हैं। अब मैं आपको बिठाकर घर ले जाऊँगा।"

"कोई ज़रूरत नहीं।" बूढ़े ने गर्वभरी मुस्कान के साथ हरेक को निहारा। "हम पैदल वापस जायेंगे, रिक्शा में बैठकर जाने से बहुत ठण्ड महसूस होगी।"

बूढ़े ने अपना हिस्सा खा लिया, प्याले में बची अपने शराब खत्म की और बछेड़े के अपना हिस्सा खत्म करने का इन्तज़ार करने लगा। उसने एक चिथड़ा निकालकर होंठ पोंछे और सब लोगों की ओर नमस्कार की मुद्रा में सिर हिलाया। "मेरा बेटा सैनिक बनने गया था मगर कभी लौटकर नहीं आया। उसकी पत्नी..."

"इसके बारे में बात मत करें!" बछेड़े ने बीच में ही बात काट दी। उसका मुँह इतना भरा हुआ था कि उसके गाल आड़ू की तरह फूल गये थे।

"कोई बात नहीं, हम लोग अजनबी नहीं हैं!" उसने धीमे स्वर में बात जारी रखते हुए कहा, "यह लड़का हर बात बहुत गम्भीरता से लेता है, इसे पैसा कमाने की बड़ी फ़िक्र रहती है। इसकी माँ भी घर छोड़कर चली गयी है। हम बाबा और पोते के लिये वह रिक्शा ही एकमात्र सहारा है। वह भी बहुत टूटा-फूटा है मगर हमारा अपना है। इसलिये हमें हररोज़ भाड़ा चुकाने की चिन्ता नहीं रहती। हम कम कमायें या अधिक, गुज़ारा मुश्किल से ही होता है। मगर हमारे पास दूसरा कोई उपाय ही क्या है?"

"बाबा!" बछेड़े ने खाते हुए ही बूढ़े की आस्तीन खींची। "हमें एक और सवारी लेनी ही पड़ेगी। हमारे पास कल सबेरे के लिये कोयला खरीदने के लिये कुछ नहीं है। यह आपकी ही गलती है। तभी हम उस आदमी को हओमन दरवाज़े तक ले जाकर बीस थुङछ्येन कमा सकते थे। मैं तो चाहता था, पर आप नहीं माने। कल कोयले के बिना कैसे काम चलायेंगे?"

"हमेशा कोई न कोई तरीका होता है। बाबा पाँच चिन कोयले के गोले उधार ले लेंगे।"

"और उन्हें सुलगाने के लिये रूँगे में कुछ चैले भी ले लें!"

"क्यों नहीं, बेशक! खा-लो, अच्छे बच्चे अब हमें चल देना चाहिए।" बोलते बोलते बूढ़ा खड़ा हो गया और चारों ओर देखकर कहा, "शुक्रिया साथियो, आपको बड़ा कष्ट दिया।" उसने बछेड़े का हाथ पकड़ा और लड़के ने आख़िरी पाओचि अपने मुँह में डाल लिया।

चायघर में कुछ लोग अपनी जगहों पर बैठे रहे, अन्य कुछ दोनों को बाहर तक पहुँचाने आये। इसमें श्याङचि सबसे आगे रहा। वह उस रिक्शा को देखना चाहता था।

रिक्शा बड़ी खराब हालत में था। रोगन उखड़ रहा था, इसलिये बमों की लकड़ी के रेशे साफ़ दिखायी देने लगे थे। टूटा हुआ लैम्प हवा में खड़खड़ाता था और टप के

अर सुतली से बाँधे थे। बछेड़े ने अपने कान में मफ में से एक तीली निकाली और अपने जूते के तले पर घिसकर उसे जलाया, फिर अपने छोटे-छोटे काले हाथों की ओक से लौ को बचाते हुए लैम्प जलाया। बूढ़े ने अपनी हथेली पर थूका, गहरा निश्वास निकाला, बमों को पकड़ा और कहा, "कल मिलेंगे, दोस्तो!"

श्याङचि दरवाज़े पर चुपचाप बुत बना खड़ा बूढ़े और बच्चे को अपना टूटा फूटा रिक्शा ले जाते हुए देखता रहा। उनके चलते वक़्त बूढ़ा कुछ बोल रहा था और उसके स्वर में चढ़ाव-उतार था। सड़क की बत्तियाँ और उनके नीचे पड़ने वाली परछाइयाँ काँप रही थी। श्याङचि ने यह सब सुनते और देखते हुए दिल में एक अज़ीब दर्द महसूस किया। बछेड़े उसे अपना अतीत और बूढ़े में अपना भविष्य दिखायी देता लगा। ऐसे ही एक भी थुङछ्येन न खर्च करने वाला श्याङचि भी बहुत खुश था कि उसने उनके लिये दस पाओचि खरीदे थे। चायघर में लौटने से पहले वह उनके ओझल हो जाने तक उन्हें ताकता रहा। वहाँ सभी एक बार फिर गपशप करने और हँसने में मशगूल थे। वह इस कदर उधेड़बुन में था कि उसने अपनी चाय के पैसे दिये और चल पड़ा। वह रिक्शा लेकर सिनेमाघर के बाहर ही श्री छाओ का इन्तज़ार करने लगा।

बेहद ठण्ड थी। हवा में रेत के महीन कण थे और लगता था कि ऊपर बहुत जोरों से आँधी उठ रही थी। बड़े सितारों में से कुछेक ही काँपते, टिमटिमाते दिखते थे। धरती पर हवा नहीं थी फिर भी जबर्दस्त ठण्ड हर जगह मार कर रही थी। गाड़ियों के पहियों की लीकों में कुछ दरारें पड़ गयीं और जमीन राख के रंग जैसी सफ़ेद, ठण्डी और कड़ी बर्फ की तरह थी।

सिनेमाघर के बाहर थोड़ी देर खड़े रहने पर श्याङचि को ठण्ड लगने लगी पर वह लौटकर चायघर में नहीं जाना चाहता था। उसने वहीं खड़े रहकर चुपचाप अकेले सोचते रहने को तरजीह दी। उस बूढ़े और उसके पोते से मुलाकात ने श्याङचि की मधुरतम आशा को नष्ट कर दिया था, क्योंकि वह बूढ़ा भी तो अपने रिक्शा का खुद मालिक था! श्याङचि ने रिक्शा चलाना शुरू करने के पहले दिन ही अपना रिक्शा खरीदने का संकल्प किया था और आज भी वह उसी को पूरा करने के लिये जी-जान से जुटा हुआ था। उसने समझा था कि एक बार अपना रिक्शा होने पर उसे सब कुछ मिल जायेगा। मगर देखो, उस बूढ़े आदमी को क्या मिला!

क्या यही वजह नहीं थी कि वह बाघिन से विवाह नहीं करना चाहता था? उसने सोचा था कि अपना रिक्शा होने पर वह धन बचाकर साफ़ अन्तरात्मा से विवाह करेगा। मगर बछेड़े को देखो! अगर उसके बेटा होता तो शायद उसका भी वैसा ही हश्र होता!

ऐसे देखने पर उसे बाघिन की धमकियों का प्रतिरोध करने का कोई कारण नहीं दिखा। वह इस कुचक्र में फँस ही चुका था तो इस बात से कोई फ़र्क नहीं पड़ता था

कि वह कैसी औरत से विवाह करे। इसके अलावा यह भी सम्भव था कि वह अपने साथ कुछ रिक्शे भी लाती, इसलिये उसी के खर्च पर यह प्रयोग क्यों न करके देखा जाये! एक बार आदमी के खुद को समझ लेने पर दूसरों से घृणा करने की ज़रूरत नहीं रह जाती। बाघिन बाघिन ही थी और बस।

फिल्म शो खत्म हो गया था। उसने बड़ी फुर्ती से पानी का डिब्बा लैम्प से लगाया और उसे जला दिया। उसने अपनी भीतरी रूईदार जैकेट भी उतार दी और सिर्फ़ एक क़मीज़ में खड़ा हो गया। वह हर बात को भुला डालने के लिये पूरी रफ़्तार से दौड़ना चाहता था। उसके गिरकर अपने को मार डालने से भी क्या फ़र्क पड़ता था?

ग्यारवाँ अध्याय

श्याङचि को उस बूढ़े और बछेड़े का ख़्याल आया तो उसने आशा छोड़ दी और तय किया कि मुमकिन रहने तक जीवन का आनन्द लेना चाहिए। पूरा दिन दाँत भींचकर अपने को जोते रहने से क्या लाभ? उसे लगा कि ग़रीबों का भाग्य बेर की गुठली की तरह था, दोनों सिरों पर नोकीली और बीचोंबीच मोटी—अगर अच्छी क़िस्मत की बदौलत बचपन में ही भूख से नहीं मर गये तो बुढ़ापे में भूख से मरने से बचना मुश्किल था। ग़रीब केवल बीच के काल में ही जवान और तगड़ा होने पर ही भूख और मेहनत बर्दाश्त कर सकता और इंसान की तरह जीने लायक होता है। अगर कोई इस वक़्त का पूरा फायदा न उठाकर ऐश नहीं करता तो वह वाकई बेवकूफ़ होगा। यह समय ज़िन्दगी के सफ़र में आख़िरी गाँव में मुफ़्त ठहर सकने वाली आख़िरी सराय था। इसके बाद फिर ऐसा मौका नहीं मिल सकता! इस तरह देखने से बाघिन और उसके मामलों में चिन्ता करने लायक कुछ भी नहीं था।

फिर भी उसने अपनी चीनी मिट्टी की गोलक देखी तो उसका मन बदल गया। नहीं वह मन के पीछे नहीं भाग सकता, सिर्फ कुछ दर्जन युवान और हो जाने पर उसके पास रिक्शा खरीदने के लिये धन हो जायेगा। उसे अपनी पहले की कोशिशें बेकार नहीं होने देनी चाहिए थीं, खून-पसीने से की बचतें लापरवाही से फेंक नहीं देनी थीं। उसे बेशक अपने सीधे और तंग रास्ते पर चलते रहना चाहिए। लेकिन बाघिन? वह घिनौनी सत्ताईस तारीख अभी तक उसको खाये जा रही थी।

वह बिल्कुल असहाय हो जाने पर तो अपनी गोलक को सीने से लगाकर बुदबुदाने लगता, "कुछ भी क्यों न हो, हर हालत में यह धन मेरा है। कोई इसे मुझसे छीन नहीं सकता! धन पास होने से मैं किसी चीज़ से नहीं डरता। अगर मुझ पर बहुत ज़्यादा दबाव डालोगे तो मैं बोरी बिस्तर उठाकर चल दूँगा। धन होने पर काम चला सकते हैं।"

सड़कों पर दिन-ब-दिन रौनक बढ़ती जा रही थी, अग्नि देवता की पूजा के लिये तरबूज की शक्ल की मिठाइयाँ जगह-जगह सजायी जा और "तरबूज-मिठाई!" की आवाजें हर तरफ से गूँज रही थीं। श्याङचि नये वर्ष की प्रतीक्षा कर रहा था, परन्तु अब उसमे बहुत अधिक उत्साह नहीं रह गया था। सड़कों पर भीड़ बढ़ने के साथ-साथ उसका तनाव भी बढ़ता गया। वह संहारक सत्ताईस तारीख नजदीक ही थी! उसकी आँखें धँस गयीं और उसके चेहरे पर दागं भी अधिक काला हो गया।

उसे रिक्शा चलाते वक़्त भीड़भाड़ वाली रपटनदार सड़कों पर बहुत देखभाल कर चलना पड़ता था। साथ-ही-साथ वह अपनी समस्या से भी इतना घिरा रहता था कि वह उन दोनों का एक साथ सामना कर पाने में खुद को असमर्थ महसूस करता था। एक का ध्यान आने पर दूसरे को भूल जाता, फिर गर्मियों में किसी बच्चे के पित्ती निकली होने पर अचानक चौंककर झुनझुना जाता।

अग्नि देवता की पूजा के दिन दोपहर बाद पूरब की ओर से तेज़ हवा के साथ आकाश में काले बादल छा गये और सहसा मौसम गरमा गया। दिया बाती जलाने का समय नजदीक आने पर हवा थम गयी और हल्की बर्फ गिरने लगी। तरबूजाकार मिठाई बेचने वाले बहुत परेशान हो गये, गर्मी और बर्फ दोनों से उनकी मिठाइयाँ चिपचिपी हो जातीं। उन्होंने अफ़रातफ़री में उनके ऊपर सफ़ेद पाउडर छिड़का। बर्फ के बहुत अधिक फाहे तो नहीं गिरे लेकिन जल्दी ही बर्फ-कण गिरने लगे और जमीन पर सफ़ेदी छा जाने तक सरसराते हुए हल्के-हल्के गिरते रहे।

सात बजे के बाद लोगों ने दुकानदारों और घरों में अग्नि देवता की पूजा शुरू कर दी। अगरबत्तियों की फैलती सुगन्ध और रुक-रुककर पटाखों की आवाजों के बीच झरती रही बर्फ ने समारोही वातावरण को गम्भीरता का पुट दे दिया।

सड़क पर चल रहे या वाहनों पर सवार लोग परेशान नज़र आ रहे थे। उनको अपने अपने घर पहुँचकर पूजा करनी थी, लेकिन जल्दबाज़ी में होने पर भी रपटन की वजह से वे तेज़ी से जाने में डरते थे। मिठाई वाले अपना माल उत्सव समाप्त होने से पहले ही बेचने के फेर में थे, इसलिये वे गाहक जुटाने के लिये जोरों से चिल्ला-चिल्लाकर दम लेने की भी परवाह न करते हुए आवाजें लगा रहे थे। सारे वातावरण में बहुत मायूसी थी।

नौ बजे के क़रीब श्याङचि श्री छाओ को पश्चिमी नगर से वापस ला रहा था। शीतान तोराण द्वार के आसपास के भीड़ भरे इलाके से गुजरकर जब वे लोग छाङआन मार्ग पर पूर्व की ओर मुड़े तो रास्ते पर भीड़भाड़ कम होती गयी। चौड़ी, सपाट, तारकोल से बनी सतह पर बर्फ की एक पतली तह जम गयी थी और सब सड़क के लैम्पों की रोशनी में झिलमिला रही थी। जब तब कोई कार गुजरती तो उसकी बड़ी बत्तियाँ बहुत दूर तक रोशनी फेंकती और उसमें बर्फ के कण सुनहरे बालू की हल्की बरसात की तरह पीले दिखायी देने लगते। शिनह्वामन दरवाज़े के पास बर्फ की झीनी तह से

ढँकी चौड़ी सड़क अनन्त तक फैल गयी लगी और चारों ओर हर चीज़ पर पहले से कहीं ज़्यादा भव्यता उढ़ गयी। छाङआन तोरण द्वार, शिनह्वामन दरवाज़े के ऊपरी भाग और नानहाए की लाल दीवारों की ओलतियाँ, सबने सफ़ेद टोपियाँ पहनी हुई थीं, और वे उनके गहरे लाल रंग के खम्भों और लाल दीवारों के कारण स्पष्टतः उभरकर नज़र आती थीं। सड़क के लैम्पों की रोशनी में शान्त और स्थिर वे प्राचीन राजधानी के समूचे ठाठबाट को प्रदर्शित कर रहे थे। उस समय और स्थान से ऐसा लगता था कि पेइफिङ में कोई रहता नहीं है और उसमें केवल बड़े-बड़े भवन और महल ही हैं, और बहुत पुराने जमाने के चीड़ के कुछ वृक्ष चुपचाप गिरती बर्फ को थामे जा रहे थे।

श्याङचि को इस सुन्दर दृश्य को देखने की फुरसत नहीं थी, वह तो राजमार्ग पर नीचे देखते हुए जितनी जल्दी हो सके उतनी जल्दी घर पहुँचने की ही सोच सकता था। अपने मन की आँख से वह सीधी, सफ़ेद और शान्त सड़क के दूसरे सिरे पर छाओ के घर का फाटक देख सकता था। लेकिन बर्फ गहरी न होने के बावजूद उसके जूतों से चिपकने और जल्दी ही उनके तलों पर गहरी परत जमा देने से वह तेज रफ़्तार से नहीं जा पा रहा था। उसने पैर पटककर उसे छुड़ाया मगर जल्दी ही वह फिर जमा हो गयी। बर्फ के छोटे-छोटे कण भी उसकी आँखों पर टकराने से उसे देखने में मुश्किल पेश आ रही थी और तेज़ दौड़ना सम्भव नहीं था। बर्फ की परतें जमती जाने से उसके कन्धे सफ़ेद हो गये थे और यह कोई बड़ी बात नहीं थी मगर नमी से उसको चिढ़ हो रही थी। इस इलाके मे कोई दुकान भले ही नहीं थी फिर भी दूर कहीं पटाखे छोड़े जा रहे थे, और जब-तब दोहरा-विस्फोट रॉकेट या "ईश्वरीय दण्ड का प्रतिरोध करते पाँच राक्षस" कहे जाते जबर्दस्त पटाखे से अँधेरे में रोशनी चमक उठती थी। चिनगारियों के बुझ जाने पर आसमान पटाखों से ज़्यादा डरावना और काला दिखायी देने लगता। श्याङचि ने पटाखों की आवाजें सुनीं, उनकी चिनगारियों और अँधेरे को देखा और इससे उसके मन में तुरन्त घर पहुंचने की उत्कण्ठा जागी। परन्तु वह और लम्बे डग नहीं भर सका और रफ़्तार तेज नहीं कर पाया। इससे उसे बहुत उलझन महसूस होने लगी।

उसे सबसे ज़्यादा गुस्सा तो इस बात पर आ रहा था कि पश्चिमी नगर से ही एक साइकिल वाला उसके पीछे-पीछे चला आ रहा था। कुछ ज़्यादा शान्त पश्चिमी छाङछ्आन मार्ग पर तो उसे साइकिल के टायरों के बर्फ पर चरमराने की आवाज भी सुनाई पड़ने लगी। सभी रिक्शाचालकों की तरह श्याङचि को साइकिलों से नफरत थी। कारें तो खराब चीज़ होती ही थीं, मगर वे इतना शोर करती थीं कि दूर से ही सुनकर रास्ता छोड़कर हटा जा सकता था। मगर साइकिलें तो कभी दायें, कभी बायें चलती हुई भीड़ में से इस तरह रास्ता निकालती रहती हैं कि देखकर ही दिमाग़ चकरा जाये। और साइकिल से न टकराना ही बेहतर था। कुछ भी होने पर ग़लती

रिक्शाचालक की ही मानी जाती और पुलिस रिक्शाचालकों को साइकिल वालों के मुकाबले आसानी से धकियाये जा सकने वाले समझकर उन्हें दोष देती।

उस रात श्याङचि ने कई बार सोचा कि एकाएक ठहर जाये और पीछा करने वाले को गिरा दे, मगर वह ऐसा करने का साहस नहीं कर पाया। रिक्शाचालकों को सभी तरह के व्यवहारों का सामना करना पड़ता था। इसलिये हर बार वह पैरों से बर्फ झाड़ने के लिये रुका तो रुकने के पहले वह चिल्लाया, "रुक रहा हूँ!" नानहाए के दक्षिणी दरवाज़े के सामने की सड़क बहुत चौड़ी थी फिर भी साइकिल वाला उसके पीछे ही लगा रहा। बढ़ते हुए क्रोध में श्याङचि ने जानबूझकर अपना रिक्शा रोक दिया, ताकि कन्धों से बर्फ झाड़ सके। वह वहीं खड़ा था कि साइकिल रिक्शा के बगल से गुजर गयी और सवार ने पलटकर उन्हें देखा भी। श्याङचि ने जानबूझकर कुछ देर लगायी, साइकिल वाले के काफ़ी आगे निकल जाने का इन्तज़ार करने के बाद ही उसने अपने रिक्शा के बमों को फिर उठाया।

"साले, तुम्हारी तो ऐसी की तैसी!" उसने गाली दी।

श्री छाओ अपने "मानवतावाद" की वजह से अपने रिक्शा की गद्दी के ऊपर रूईदार टप और हवारोधक नहीं लगाना चाहते थे। बहुत बारिश होने पर कैनवस का टप ही चढ़ाने देते थे। उनका ख़्याल था कि इससे चालक को कुछ कम जोर लगाना पड़ेगा। इस मामूली हिम फुहार में उन्होंने टप खोलने की कोई ज़रूरत न समझी। इसके अलावा वह रात में गिरती बर्फ का दृश्य भी निहारना चाहते थे। उन्होंने भी उस साइकिल की ओर ध्यान दिया था और श्याङचि के साइकिल वाले को गाली देने के बाद उन्होंने धीमी आवाज में कहा, "अगर यह आदमी हमारा पीछा करता रहा तो घर पर रुकने की बजाये ह्वाङह्मन दरवाज़े के पास श्री च्वो के घर चले चलना। घबराओ नहीं!"

श्याङचि वास्तव में कुछ घबरा गया था। वह साइकिल वालों से हमेशा नफरत करता रहा था मगर उसने डरने की कभी कोई ज़रूरत नहीं समझी थी। यदि श्री छाओ घर जाने का साहस नहीं कर रहे तो वह ज़रूर किसी गिरोह का सरगना ही होगा। वह कुछ दर्जन कदम ही दौड़ा होगा कि वह उनके इन्तज़ार में ही खड़े साइकिल वाले के पास पहुँच गया। श्याङचि उसके बगल से गुजरा तो पहली नज़र में ही भाँप गया कि वह खुफ़िया पुलिस का आदमी था। वह अक्सर उनसे चायघर में टकराया करता था और भले ही उसने खुफ़िया पुलिस के किसी आदमी से कभी बात नहीं की थी, मगर वह उन्हें उनके कपड़ों और चाल-ढाल से पहचान जाता था। इस आदमी का पहरावा भी जाना-पहचाना था : काले रंग का रूईदार चोगा और फैल्ट हैट और उसकी बाढ़ खींचकर काफ़ी नीचे तक की हुई थी।

वे नानछाङ मार्ग के चौराहे पर पहुँचे और मोड़ काटा तो श्याङचि ने फुर्ती से पलटकर पीछे देखा। वह आदमी अब भी पीछा कर रहा था। श्याङचि ने सड़क पर

पड़ी बर्फ की चिन्ता छोड़कर लम्बे-लम्बे डग भरने शुरू किये। लम्बी, सीधी और सफ़ेद सड़क उसके सामने यहाँ-वहाँ सड़क के ठण्डे लैम्पों से चमकती फैली हुई थी और उसके पीछे एक जासूस लगा हुआ था! उसे पहले कभी ऐसा तर्जुबा नहीं हुआ था और उसके पसीने छूटने लगे। पार्क के पिछले फाटक पर उसने फिर इधर-उधर देखा, वह अब भी था!

घर आ जाने पर वह रुकना चाहते हुए भी श्री छाओ के चुप रहने की वजह से रुक न पाया। इसलिये उसे उत्तर की ओर दौड़ते रहना पड़ा। एक साँस में ही वह सड़क के उत्तरी सिरे पर पहुँच गया, पर साइकिल वाला फिर भी पीछा कर रहा था! वह एक गली में घुसा, वह वहाँ भी चला आया! गली से बाहर निकला तो वह वहाँ भी मौजूद! वह गली के उत्तरी सिरे पर पहुँचा तब उसने जाना कि वह तो ह्वाङह्मन दरवाज़े का रास्ता नहीं था, और उसने स्वीकार किया कि उसका दिमाग़ कुछ गड़बड़ा गया है। इससे उसका गुस्सा और बढ़ गया।

उसके चिङशान पर्वत के पीछे पहुँचने पर साइकिल वाला उत्तर में हओमन दरवाज़े की तरफ मुड़ गया। श्याङचि ने माथा पोंछा। अब बर्फ पहले से कम सघनता से गिर रही थी, बर्फ के कणों के साथ ही कुछ फाहे भी थे। उसे हवा में मजे से फड़फड़ाते फाहे अच्छे लगते थे, मगर बर्फ के कणों से उसको परेशानी होती थी। उसने पीछे देखा और पूछा, "मालिक, कहाँ चलूँ?"

"च्वो के मकान पर ही चलना है। अगर कोई तुम्हें मेरे बारे में पूछे तो कहना कि तुम मुझे नहीं जानते।"

"जी, मालिक।" श्याङचि का दिल जोरों से धड़कने लगा, मगर उसने और कोई सवाल नहीं पूछा।

च्वो का मकान आ जाने पर श्री छाओ ने श्याङचि से रिक्शा को आँगन में लाने और फौरन फाटक को बन्द करने के लिये कहा। वह काफ़ी शान्त थे मगर उनका चेहरा फक था। ये हिदायतें देने के बाद वह तेजी से मकान में घुस गये। श्याङचि ने रिक्शा छतदार प्रवेश मार्ग में खड़ा किया ही था कि श्री छाओ अपने अच्छे पारिवारिक मित्र श्री च्वो के साथ बाहर आ गये।

"श्याङचि," श्री छाओ के होंठ बड़ी जल्दी-जल्दी हिल रहे थे। "तुम्हें टैक्सी से घर जाना है। मालकिन को बताना कि मैं यहाँ हूँ, और वे लोग भी टैक्सी से यहीं चले आयें। मगर कोई दूसरी टैक्सी बुलवाना। अपनी टैक्सी उनके लिये मत रोके रखना। समझे? अच्छा, मालकिन से कहना कि उन्हें जो सामान चाहिए लेती आयें और मेरे पढ़ने-लिखने के कमरे से वे खर्रा पेण्टिंग्स भी। अच्छी तरह सब समझ गये? मैं अभी उन्हें फोन कर रहा हूँ, मगर तुम्हें भी बता रहा हूँ। इसलिये कि वह उत्तेजना में कुछ भूल न जायें। वह भूलें तो तुम उन्हें याद दिला सकते हो।"

"अगर मैं चला जाऊँ तो कैसा रहेगा?" श्री च्वो ने पूछा।

"कोई जरूरत नहीं। यह पक्का भी नहीं है कि वह आदमी जासूस ही था, मगर अपने मन में दूसरी बात की वजह से मुझे एहतियात से काम लेना है। क्या तुम टैक्सी के लिये फोन करोगे?"

श्री च्वो फोन करने के लिये अन्दर गये और श्री छाओ श्याङचि को फिर हिदायतें देने लगे। "टैक्सी आने पर ड्राइवर को पैसे मैं दूँगा। मालकिन से कहना कि जल्दी सामान बाँधे। बाकी चीज़ों की कोई बात नहीं, लेकिन बच्चे की चीज़ें और मेरे कमरे की पेण्टिंग्स, वही खर्रा पेण्टिंग्स, लाना न भूलें। उनके तैयार होते ही काओ अम्मा को फोन करके टैक्सी बुलाने और सीधे यहाँ चली आने के लिये कहना। सारी बातें तुम्हारी समझ में आ गयीं? उनके घर से निकलते ही तुम मुख्य फाटक को ताला लगाकर टेलीफोन वाले कमरे में चले जाना। क्या तुम टेलीफोन इस्तेमाल कर सकते हो?"

"मिलाना तो नहीं जानता, पर सुन सकता हूँ।" वास्तव में श्याङचि को फोन सुनने से भी नफ़रत थी, मगर वह श्री छाओ की परेशानियाँ नहीं बढ़ाना चाहता था।

"यह तो अच्छी बात है!" श्री छाओ बहुत तेजी से बोले जा रहे थे। "किसी भी हालत में फाटक मत खोलना। हम सबके घर से चले गये होने पर अकेले तुम्हीं वहाँ होगे तो वे निश्चय ही तुम पर नज़र रखेंगे! अगर कुछ गड़बड़ी लगे, बत्ती बुझा देना और पीछे की दीवार फाँदकर वाङ परिवार के आँगन में चले जाना। तुम वाङ परिवार को जानते हो, है न? ठीक! जाने से पहले वहाँ थोड़ी देर छिपे रहना। मेरी या अपनी चीज़ों की चिन्ता न करना, बस उनके हाथों में पड़ने से पहले ही दीवार फाँदकर निकल जाना। तुम्हारी कोई भी चीज़ गुम होने से मैं उसका भुगतान बाद में कर दूँगा। ये पाँच युवान तो अभी ले लो! ठीक, मैं अब मालकिन को फोन करता हूँ, और तुम वहाँ पहुँचकर मेरी कही बातें दोहरा देना, लेकिन पकड़े जाने की बात मत कहना। वह आदमी जासूस हो भी सकता है और नहीं भी। इसलिये होशोहवास मत खो बैठना।"

श्याङचि के दिमाग़ में उथलपुथल मची हुई थी, बहुत से सवाल वह पूछना चाहता था मगर श्री छाओ की हिदायतें याद रखने की उत्सुकता में उसने पूछे नहीं।

टैक्सी आयी और किंकर्तव्यविमूढ़ सा श्याङचि उसमें बैठ गया। बर्फ अभी गिर रही थी, न भारी थी न हल्की, और टैक्सी के बाहर हर चीज़ एकदम साफ़ दिखायी नहीं दे रही थी। वह अकड़कर सीधा बैठा था, उसका सिर टैक्सी की छत को लगभग छू रहा था। वह सोचना चाहता था मगर उसकी नज़र डैशबोर्ड पर चमकीले और आकर्षक लाल तीर की ओर खिंच गयी। उसे ड्राइवर के सामने के शीशे के वाइपर भी दायें-बायें अपने आप घूमते उसकी नमी पोंछते हुए बड़े विचित्र लग रहे थे। उन्हें देखते-देखते वह ऊबने ही लगा था कि टैक्सी श्री छाओ के फाटक पर रुक गयी। वह अनमना सा उतरा।

वह घण्टी बजाने ही वाला था कि अचानक कहीं से एक आदमी आ टपका, ऐसे लगा जैसे वह दीवार से निकल आया हो, और उसने श्याङचि की कलाई पकड़ ली। उसने सहजे ही ऐंठते हुए हाथ छुड़ाने के बारे में सोचा लेकिन उस आदमी को पहचान चुका होने की वजह से वह हिला तक नहीं। वह साइकिल वाला वही जासूस था।

"श्याङचि, क्या तुम मुझे नहीं पहचानते?" खींसें निपोरते हुए उस आदमी ने उसे छोड़ दिया।

श्याङचि ने कहने के लिये कुछ न सूझने पर थूक निगला।

"क्या तुम भूल गये हो कि हम तुम्हें कैसे पश्चिमी पहाड़ियों पर ले गये थे? मैं लेफ़्टीनेण्ट सुन हूँ, याद आया?"

"आह, लेफ़्टीनेण्ट सुन!" श्याङचि को वह याद नहीं था। सैनिकों के उसे खींचकर पहाड़ियों पर ले जाते समय उसने इस पर ध्यान नहीं दिया कि कौन लेफ़्टीनेण्ट था और कौन कप्तान।

"मैं तुम्हें याद नहीं रहा पर तुम मुझे याद हो। तुम्हारे चेहरे पर दाग पहचान की पक्की निशानी है। अभी मैं उस पूरे रास्तेभर तुम्हारा पीछा कर रहा था तो पहले मैं निश्चित रूप से जान नहीं पाया, पर चारों ओर से देखने से इस दाग ने कोई ग़लतफ़हमी नहीं रहने दी।"

"क्या मुझसे कोई काम है?" श्याङचि ने घण्टी बजाने के लिये फिर हाथ बढ़ाया।

"बेशक काम है और वह भी बहुत ज़रूरी! हम अन्दर चलकर ही क्यों न बातचीत करें?" अब खुफ़िया विभाग में काम कर रहे लेफ़्टीनेण्ट सुन ने हाथ उठाया और घण्टी बजा दी।

"मैं व्यस्त हूँ!" श्याङचि के माथे पर पसीना आ गया था। अन्दर-ही-अन्दर वह क्रोध से जल रहा था। "क्या यही काफ़ी नहीं है कि मैं इससे बच नहीं सकता, अब क्या मुझे इसे अन्दर भी बुलाना पड़ेगा?"

"परेशानी की कोई बात नहीं। मैं तुम्हारे भले के लिये ही आया हूँ!" उसके चेहरे पर चालाकी भरी हल्की सी मुस्कान थी। काओ अम्मा ने दरवाज़ा खोला तो वह "माफ़ कीजिए!" कहते हुए तेजी से उसके बगल से होता हुआ अन्दर घुस गया। और श्याङचि को उससे कुछ भी कहने का मौका दिये बिना ही उसने उसे भी खींचा और उसके कमरे की ओर इशारा किया। "तुम इसी में रहते हो न?" वह भीतर गया और चारों तरफ देखा। "काफ़ी साफ़-सुथरी और आरामदेह जगह है! तुम्हारी नौकरी बुरी नहीं है!"

"तुम्हें काम क्या है? मैं जल्दी में हूँ!" श्याङचि इस बकबक को बर्दाश्त नहीं कर सकता था।

"क्या मैंने तुम्हें बताया नहीं कि यह ज़रूरी है?" जासूस सुन अब भी मुस्करा रहा था लेकिन उसकी आवाज कठोर हो गयी थी। "मैं तुम्हें साफ़-साफ़ बताता हूँ।

यह छाओ विद्रोही पार्टी का सदस्य है। वह पकड़ा जाने पर गोली से उड़ा दिया जायेगा, और वह बच नहीं सकता। अब समझो, हम लोगों की पहले से ही जान-पहचान है, बैरकों में तुम मेरी टहल कर चुके हो। इससे भी बढ़कर तो यह है कि हम दोनों सड़कों पर भटकते हैं, इसलिये मैं भारी सज़ा का खतरा उठाकर भी तुम्हें खुफ़िया खबर बताने आया हूँ। अगर तुमने जरा भी सुस्ती दिखायी तो तुम पकड़े जाओगे, कोई भी बचकर भाग नहीं पायेगा। रोज़ी के लिये शारीरिक श्रम बेचने वाले हम जैसे लोग ऐसे झमेलों में क्यों फँसे? तुम्हारा क्या ख़्याल है, मैं अक्लमन्दी की बात नहीं कह रहा हूँ?"

"मैं फिर कभी उन्हें मुँह दिखाने लायक नहीं रह जाऊँगा!" उसे श्री छाओ की हिदायतें याद आयीं।

"किसे मुँह न दिखा पाओगे?" जासूस सुन का मुँह मुस्कराने से गोलाकार बन गया, मगर उसकी आँखें सिकुड़ गयीं। "यह तो उनकी अपनी करनी का फल है। तुमने उन्हें धोखा नहीं दिया है। उन्होंने खुद अपने लिये ऐसे हालात पैदा किये हैं और अब उनका नतीजा उन्हें भुगतना पड़ेगा। यह कतई न्यायसंगत नहीं होगा कि हमें भी इसमें घसीटा जाये! और बातें छोड़ भी दें, तुम इस दुनिया में आज़ाद पंछी की तरह जीने के आदी हो, क्या तीन महीने तक हवालात की अँधेरी कोठरी में रहना बर्दाश्त कर सकोगे?"

"एक बात और भी है, अगर वे जेल गये तो उनके पास रिश्वतों के लिये धन निकल आयेगा, और उन्हें वहाँ ज़्यादा तकलीफ़ नहीं होगी। मगर तुम, मेरे साथी, तुम्हारे पास थुङ्छ्येन भी नहीं है, इसलिये यह तय है कि वे तुम्हें पेशाबदान से कसकर ज़रूर बाँधेंगे। और सिर्फ यही नहीं, यह भी तथ्य है कि अगर उनके पास धन हुआ और कुछ पहुँच हुई तो वे झनझनाहट में कुछ सालों में छूट जायेंगे और जब अफ़सर मामला रफ़ादफ़ा नहीं कर पायेंगे तो बलि का बकरा तुम्हीं बनोगे। मैं और तुम न किसी को नुकसान और न ही किसी को तकलीफ़ पहुचाते हैं, तब यह कितनी बेइंसाफ़ी होगी कि हम थ्येनछ्याओ कत्लगाह में सीने पर सीसे के बेर झेलते हुए मरें! देखों तुम चतुर हो और चतुर आदमी ऐसा कुछ नहीं करता जिसके बारे में वह जानता है कि उससे कष्ट उठाना पड़ सकता है। उन्हें मुँह दिखाकर भी क्या करोगे! मैं तुम्हें बता देता हूँ, साथी, कि उन्होंने हमारे जैसे दलित लोगों के लिये कभी ऐसा कुछ नहीं किया है जिसकी बदौलत वे हमसे आँख मिलाकर देखने के अधिकारी हो जायें!"

श्याङचि भयभीत था। उन सैनिकों के पल्ले पड़ने पर भुगते हुए को याद करके वह अच्छी तरह समझ सकता था कि जेलख़ाना कैसा होगा। "तब मुझे भाग जाना चाहिए और उनकी चिन्ता नहीं करनी चाहिए?"

"तुम उनकी चिन्ता करोगे, मगर तुम्हारा ध्यान रखने वाला कौन है?"

श्याङचि को कोई जवाब न सूझा। वह अपनी अन्तरात्मा में भी बेकसूर महसूस करने तक निश्चल रहा। "ठीक है, मैं जाऊँगा।"

"ऐसे ही?" जासूस सुन बड़े कटु ढंग से हँसा।

श्याङचि एक बार फिर भ्रम में पड़ गया।

"श्याङचि, मेरे पुराने साथी, तुम इतने बेवकूफ कैसे हो सकते हो! मैं जासूस हूँ, क्या तुम समझते हो कि मैं तुम्हें जाने दूँगा?"

"तब..." श्याङचि इतना उत्तेजित था कि उसे कहने के लिये कुछ सूझा ही नहीं।

"गूँगे मत बनो!" जासूस सुन की आँखें उसे बहुत गहरे भेद गयीं। "शायद तुम्हारे पास कुछ धन जमा होगा, उसे ले आओ और बच निकलने का रास्ता बना लो! मैं हर महीने तुम्हारे जितना नहीं कमाता हूँ और मुझे खाना और पहनना और अपने परिवार को पालना पड़ता है, इसके लिये मुझे बाकायदा के अलावा ऊपर की छिटपुट कमाई का सहारा लेना पड़ता है। मैं तुमसे साफ़-साफ़ बात कर रहा हूँ। क्या तुम्हें मेरे चंगुल से मुफ़्त में छूट जाने की वाकई उम्मीद है? दोस्ती दोस्ती है और अगर तुम्हारा दोस्त न होता तो मैं आता ही नहीं। लेकिन धन्धा तो आख़िर धन्धा ही ठहरा। तुम आशा करते हो कि मैं यहाँ से खाली हाथ चला जाऊँ और अपने परिवार को उत्तरपश्चिमी हवा खाने दूँ? हम दोनों दुनियादार आदमी हैं और हमें फिजूल लफ़्फ़ाजी की ज़रूरत नहीं है। अब बताओ क्या कहते हो?"

"कितना लोगे?" श्याङचि अपने बिस्तर पर बैठ गया।

"तुम्हारे पास जितना भी हो, कोई बँधी हुई क़ीमत नहीं है।"

"इससे तो मेरा जेल जाना ही बेहतर होगा!"

"अब तुम्हीं ने यह कहा है, बाद में इस पर पछताना मत!" जासूस सुन ने अपने रूईदार चोगे में हाथ डाला। "इसे देखो, श्याङचि! मैं तुम्हें इसी वक़्त गिरफ़्तार कर सकता हूँ, और अगर तुम प्रतिरोध करते हो, तो गोली चला दूँगा! अगर मैं तुम्हें अभी पकड़ लूँ तो जेल पहुँचने पर धन की तो बात ही छोड़ो, तुम्हारे कपड़े तक भी उतरवा लिये जायेंगे। तुम होशियार आदमी हो, अपने आप समझ सकते हो।"

"अगर तुम्हें मुझसे धन ऐंठने की फ़ुरसत है तो तुम श्री छाओ को ही क्यों नहीं चाँपते?" श्याङचि ने बड़ी मुश्किल से शब्द खोजकर कहा।

"वह तो मुख्य अपराधी है। यदि मैं उसे पकड़ता हूँ तो मुझे छोटा सा इनाम मिलेगा, नहीं पकड़ता तो यह मेरी ग़लती होगी। पर जहाँ तक तुम्हारा सवाल है, मेरे बेवकूफ़ दोस्त, तुम्हें जाने देना पादने की तरह और तुम्हें गोली मारना खटमल मारने की तरह होगा। धन निकालकर मेरे हवाले करो और अपना रास्ता पकड़ो; नहीं तो कत्लगाह में मुलाकात होगी! छोड़ो, थरथराना बन्द करके अक्ल से काम लो—तुम काफ़ी सयाने हो! इसके अलावा, यह थोड़ा सा धन सिर्फ मेरा ही नहीं होगा, मेरे सभी साथियों को भी अपना थोड़ा-सा हिस्सा मिलेगा, और मैं नहीं जानता कि मेरे पल्ले

कितने थुड़छ्येन पड़ेंगे। इतने सस्ते में अपनी ज़िन्दगी बचाने का मौका है और तुम उसे स्वीकार नहीं कर रहे! तुम भी हद हो! कितना धन है तुम्हारे पास?"

श्याङचि खड़ा हो गया, उसका भेजा फट रहा था, उसकी मुट्ठियाँ भिंच गयीं।

"मैं तुम्हें चेतावनी दे रहा हूँ, हाथ उठाते ही तुम्हारी मौत आ जायेगी। मेरा पूरा गिरोह बाहर मौजूद है। चलो, जो भी माल है, निकालो! मैं तुम्हारा लिहाज कर रहा हूँ, तुम्हें अपना भला-बुरा खुद समझना चाहिए!" जासूस सुन की आँखों मे एक घिनौनी चमक थी।

"मैंने कभी किसी का कुछ भी तो नहीं बिगाड़ा!" श्याङचि की आवाज रुआँसी थी। इसके साथ ही वह अपनी खाट की पटिया पर बैठ गया।

"तुमने किसी का कुछ नहीं बिगाड़ा, हुआ बस यह है कि तुम्हीं हाथ लगे हो! इंसान की क़िस्मत तो माँ की कोख़ में ही तय हो जाती है। हम सबसे दलित लोग हैं और बस यही सत्य है।" जासूस सुन ने दिल में गहरी हमदर्दी होने को जताने के अन्दाज़ में सिर हिलाया। "ठीक है, यही समझ लो कि मैं तुम्हारा बुरा कर रहा हूँ, मगर हिचकिचाना बन्द करो।"

श्याङचि थोड़ी देर सोचता रहा, मगर उसे कोई रास्ता न सूझा। उसने काँपते हाथ से अपनी रजाई के अन्दर से अपनी चीनी मिट्टी की तुम्बी निकाली।

"लाओ, देखूँ!" जासूस सुन ने दाँत फाड़े और तुम्बी झपटते हुए उसे दीवार पर मारकर तोड़ डाला।

श्याङचि ने फ़र्श पर सिक्के बिखरते देखे और उसे लगा कि उसका दिल फटा जा रहा था।

"क्या यही सब हैं?"

श्याङचि ने कुछ नहीं कहा। वह काँपने के अलावा कुछ न कर पाया।

"अच्छी बात है! मैं किसी आदमी को बहुत ज़्यादा कसना नहीं चाहता, दोस्त आख़िर दोस्त है! और किसी ग़लतफ़हमी में मत रहना, तुम वाकई सस्ते में छूट गये हो, इतने थोड़े से धन में अपनी ज़िन्दगी बचा रहे हो!"

श्याङचि ने फिर भी कुछ नहीं कहाँ काँपते हुए उसने अपना बिस्तर गोल करना शुरू किया।

"उसे हाथ मत लगाओ!"

"इतनी ज़्यादा ठण्ड है..." श्याङचि ने जलती हुई आँखों से उसे घूरा।

"मैंने कह दिया है न, उसे हाथ मत लगाओ, इसलिये एक तरफ हो जाओ! और अब दफ़ा हो जाओ!"

श्याङचि थूक निगलता हुआ लगा, उसने अपने होंठ काटे, फिर दरवाज़ा खोला और बाहर चला गया।

जमीन पर एक इंच से भी अधिक बर्फ जम चुकी थी। श्याङचि सिर झुकाये

चलता गया। हर चीज़ साफ़ और सफ़ेद थी, बस उसके पैरों के बड़े-बड़े काले निशान ही साफ़ और सफ़ेद नहीं थे।

बारहवाँ अध्याय

श्याङचि बैठने और ठीक से सोच पाने के लिये जगह खोजना चाहता था। अगर आख़िर में हव रो भी दिया तो कम-से-कम इसकी वजह तो जान सकेगा। घटनाएँ इतनी तेजी से घटी थीं कि उसका दिमाग़ उतनी तेज चाल से चल नहीं पाया था। मगर बैठने की कहीं कोई जगह ही नहीं थी, हर जगह बर्फ ही बर्फ थी। दस बज चुके और सभी छोटे-छोटे चायघर बन्द हो चुके थे, और अगर कोई खुला होता तो वह भी जानता था कि उसकी आँसुओं से लबालब भरी आँखों से वे किसी भी क्षण बहने लगेंगे।

बैठने की कोई जगह न होने पर उसका धीरे-धीरे चलते रहना ही बेहतर था लेकिन उसे कहाँ जाना चाहिए? इस इतने बड़े रजत संसार में उसके लिये न कहीं बैठने की जगह थी, न ही कहीं जाने की जगह। सफ़ेदी के इस विस्तार में केवल भूख से छटपटाते छोटे परिन्दे ही थे और था निराशा के चरमान्त पर पहुँचकर आहें भरता एक आदमी।

जाये तो कहाँ जाये? सबसे पहले इसी समस्या पर ध्यान देना था। किसी छोटी सराय में? वह ठीक नहीं होगा। उसका पहरावा देखने से ही कोई रात को उसे लूट भी सकता था और वैसे भी वहाँ की जुँओं का ध्यान आते ही वह कतरा गया। तब भी कोई बड़ी सराय? उसके पास इतना धन न था। इस दुनिया में उसके पास सिर्फ पाँच युवान ही तो बचे थे। किसी सार्वजनिक स्नानघर में? वे आधी रात को बन्द हो जाते हैं, वहाँ रात नहीं गुजारी जा सकती। जाने की कोई जगह ही नहीं थी।

इस तथ्य ने उसे समझा दिया कि वह कैसे जलडमरूमध्य मे फँसा हुआ है। नगर में इतने बरस रहने के बाद भी उसकी पीठ पर कपड़े और जेब में सिर्फ पाँच युवान ही थे। उसका बिस्तर भी उससे छिन गया था! इससे उसके विचार कल की ओर पलटे—वह क्या करेगा? रिक्शा ही चलाता रहे? हुँह, उससे तो उसकी थोड़ी सी बचत छिन जाने से वह फिर बेघर हो जायेगा।

अगर वह फेरी लगाने लगे? उसे बहँगी भी खरीदनी होगी और अपनी कुल पाँच युवान की पूँजी से वह गुजारा चलाने लायक कमाने के बारे में भी कैसे निश्चित हो सकता था? रिक्शावाला बिना किसी पूँजी के शुरू करके भी दिन में तीन या चार माओ कमा ही सकता था; मगर फेरी वाले को पूँजी की ज़रूरत थी और फिर भी कोई गारण्टी नहीं थी कि दिन में तीन बार खाने का पैसा कमा ही पायेगा। अगर उसने अपनी पूँजी इसी में डुबो दी और फिर रिक्शा ही चलाना पड़ा तो यह तो पादने के

लिये पतलून उतारने की तरह होगा—पाँच युवान की सरासर फिजूलखर्ची। यही उसकी अन्तिम आशा थे, वह उन पाँच युवान में से एक-एक माओ एक-एक फन भी आसानी से हाथ से नहीं जाने दे सकता था।

कहीं नौकर बन जाये? यह तो उसने कभी किया नहीं था। दूसरों की टहल? यह भी वह नहीं कर सकता था। कपड़े धोना और खाना पकाना? ये दोनों काम उसे नहीं आते थे। उसे किसी काम की सिखलाई नहीं थी, कोई हुनर भी नहीं जानता था। वह तो महज बड़ा, फूहड़, बेकार गँवार था!

बिल्कुल अनजाने ही वह चुङहाए झील के ऊपर बने पुल पर पहुँच गया था। वह पुल के दोनों ओर बहुत दूर तक फैली हुई थी और उस वक़्त उस पर बर्फ के फाहों की हलचल के अलावा कुछ नहीं था। तभी उसने जाना कि बर्फ तब भी गिर रही थी, और अपने सिर को छूकर देखा तो उसकी ऊनी टोपी भीगी हुई थी। पुल सुनसान था, ड्यूटी पर तैनात पुलिस वाला भी कहीं गायब हो गया था। बर्फ गिरने से सड़क के थोड़े बहुत लैम्प भी टिमटिमाते जान पड़ रहे थे। श्याङचि ने चारों ओर देखा, उसका दिमाग़ भी खाली था।

वह काफ़ी देर तक वहाँ खड़ा रहा, और दुनिया पर मुर्दनी छायी हुई लग रही थी। कोई आवाज नहीं थी, कहीं कोई हरकत भी नहीं। ऐसा लग रहा था कि धूसर-सफ़ेद बर्फ हल्की लेकिन गिरती हुई सारी दुनिया को चोरी-चोरी दफ़नाने के इस मौके का फायदा उठा रही थी।

उस खामोशी में श्याङचि ने अपनी अन्तरात्मा की फुसफुसाहट सुनी। "अपनी चिन्ता छोड़ो, पहले छाओ परिवार की हालत देखने वापस जाओ।" पूरे मकान में किसी मर्द की नामौजूदगी में श्रीमती छाओ और काओ अम्मा अकेली थी। क्या ये आख़िरी पाँच युवान उसे श्री छाओ ने ही नहीं दिये थे? इस पर वह खुद से बहस करने का साहस न जुटाकर तेजी से बड़े कदमों से वापस जाने लगा।

फाटक के बाहर पैरों के निशान थे और सड़क पर कार के टायरों की लकीरों की ताजा पटरी थी। क्या श्रीमती छाओ जा चुकी थीं? उस सुन ने उनको गिरफ़्तार क्यों नहीं किया?

पकड़े जाने के खौफ से वह दरवाज़ा खोलने में डर रहा था। मगर आसपास कोई नहीं था। तेजी से धड़कते दिल से उसने अन्दर जाकर देखने का फैसला किया। वैसे भी कहीं जाने का ठिकाना तो था नहीं; अगर वे उसे गिरफ़्तार कर लेते तो कोई ज़्यादा फर्क नहीं पड़ता। आहिस्ते से उसने दरवाज़े को धक्का दिया, और वह अनायास ही खुल गया। दीवार से चिपके-चिपके वह कुछ कदम चला और उसने अपने कमरे में रोशनी देखी। उसका अपना कमरा! उसका गला रुँध आया। झुके झुके वह आगे बढ़ा और खिड़की के बाहर से सुनने की कोशिश की। भीतर से किसी के खाँसने की आवाज आयी—वह काओ अम्मा जैसी लग रही थी! उसने खींचकर दरवाज़ा खोला।

"कौन है? हे भगवान, यह तो तुम हो! मैं तो मारे डर के मर ही गयी होती!" काओ अम्मा ने हाथों से अपना दिल थाम लिया और फिर थोड़ी सम्भलने के बाद खाट पर बैठ गयी। "श्याङचि, तुम्हें हुआ क्या था?"

श्याङचि जवाब न दे सका। उसे लगा कि सालों पहले उसकी काओ अम्मा से पिछली बार मुलाकात हुई थी और आग का एक गोला उसके सीने में रुका हुआ था।

"क्या हुआ?" काओ अम्मा की आवाज रुआँसी थी।

"तुम्हारे लौटने से पहले मालिक ने फोन पर हमसे कहा था कि हम च्वो के मकान में चले जायें। उन्होंने यह भी कहा कि तुम सीधे वापस पहुँच रहे थे। तुम वापस तो ठीक-ठाक ही आये, क्या मैंने तुम्हारे लिये दरवाज़ा नहीं खोला था? मैंने तुम्हारे साथ अजनबी को देखा तो मैं कुछ बोली नहीं, पर सामान बाँधने में मदद करने के लिये झटपट चली गयी। तुम एक बार भी अन्दर नहीं आये।

"बस मालिकिन और मैं ही थीं, अँधेरे में टोहती-टटोलतीं। छोटे मालिक गहरी नींद में थे और उन्हें गरम बिस्तर से निकालना पड़ा। बैग तैयार हो गये, पढ़ने लिखने के कमरे से खर्रा पेण्टिंग्स उतार ली गयीं, और फिर भी तुम्हारा कुछ पता नहीं था। तुम कहाँ थे? हम अपनी तरफ से अच्छी तरह सामान बाँध चुके तो मैं तुम्हें देखने बाहर आयी, और तुम थे कि एकदम लापता! मालकिन इतनी नाराज थीं और घबरायी हुई कि डर के मारे काँपती रहीं। इसलिये मैंने टैक्सी बुलायी। मगर हम भी तो नहीं जा सकते थे, घर में भी किसी को निगरानी के लिये रहना ही था। इसलिये मैंने मालकिन से ठहरने का वादा किया और उन्हें पहले चली जाने के लिये कहा। मैंने कहा कि तुम्हारे लौटते ही मैं भी उन्हें च्वो के मकान में जा मिलूँगी। ठीक है, अगर तुम न आते तो यह मेरी बदक़िस्मती थी। मगर तुम्हें अपने बारे में क्या कहना है? तुम्हें क्या हुआ था? बोलो!"

श्याङचि के पास कहने को कुछ न था।

"कुछ तो बोलो! तुम खड़े-खड़े घूर रहे हो? सच-सच बताओ, तुम्हें हुआ क्या था?"

"तुम्हारा जाना ही बेहतर होगा!" श्याङचि आख़िर बोल ही पाया। "जाओ!"

"क्या तुम मकान की निगरानी करने के लिये यहाँ रहोगे?" काओ अम्मा कुछ शान्त हो गयी थी।

"मालिक से मिलने पर उन्हें बताना कि जासूस ने मुझे धर दबोचा था, मगर फिर... मगर फिर आख़िर उसने मुझे पकड़ा नहीं!"

"इसका क्या मतलब है?" काओ अम्मा अपनी उत्तेजना में लगभग हँस ही दी।

"सुनो!" श्याङचि खुद भी उत्तेजित हो रहा था। "तुम मालिक से कह देना जितनी जल्दी हो सके, निकल भागें। जासूस ने कहा है कि वह उन्हें भी गिरफ़्तार करेगा

हो। च्वो का मकान भी सुरक्षित नहीं है। जितनी जल्दी हो सके, निकल भागें! तुम्हारे जाने के बाद मैं दीवार फाँदकर वाङ परिवार के आँगन में चला जाऊँगा और रात वहीं बिताऊँगा। यहाँ सदर फाटक में मैं ताला डाल दूँगा। कल मैं कहीं जाकर कोई दूसरी नौकरी खोजूँगा। मैंने मालिक के साथ दगा किया है।"

"तुम जितना ज़्यादा कहते हो मैं उतना ही घालमेल करती जाती हूँ!" काओ अम्मा ने आह भरकर कहा। "ठीक है, मैं जा रही हूँ। छोटे मालिक को कहीं सर्दी न लग गयी हो; मुझे जाकर उन्हें देखना चाहिए। मालिक से मिलने पर बता दूँगी कि श्याङचि कहता है कि उन्हें जितनी जल्दी हो सके बच भागना चाहिए। आज रात को श्याङचि सदर फाटक में ताला लगाकर वाङ परिवार के आँगन में फाँद जायेगा और रात वहीं बितायेगा। कल वह कोई दूसरी नौकरी खोजेगा। क्या मैं सही समझी हूँ?"

बेहद शर्मिन्दगी में श्याङचि ने हामी भरी।

काओ अम्मा के चली जाने पर उसने सदर फाटक पर ताला लगा दिया और अपने कमरे में वापस आ गया। चीनी मिट्टी की टूटी हुई तुम्बी फ़र्श पर बिखरी पड़ी थी। उसने उसके कुछ ठीकरे उठाये और उन्हें एक बार देखकर फिर नीचे फेंक दिया। उसकी खाट पर उसका बिछौना जैसे का तैसा पड़ा हुआ था। अजब बात थी, आख़िर इसका मतलब क्या था? क्या जासूस सुन जाली तो नहीं था? असम्भव! अगर श्री छाओ को खतरा न लगा होता तो क्या वह अपना घर छोड़कर इस तरह भागते? वह यह गोरखधन्ध जरा भी समझ नहीं पाया।

कुछ भी समझ में न आ रहा होने पर वह अपनी खाट पर बैठ गया, मगर तख़्तों को छूते ही वह फिर उछलकर खड़ा हो गया। उसे देर तक यहाँ नहीं ठहरना चाहिए था! अगर कहीं वह सुन लौट आया, तो क्या होगा! उसके मन में विचारों की उथलपुथल जारी थी। उसने श्री छाओ को धोखा दिया था, खैर इतना बुरा नहीं हुआ। अब काओ अम्मा उन्हें यह सन्देश देने ही जा रही थी कि जितनी जल्दी हो सके वह निकल जायें। उसकी अन्तरात्मा शुद्ध थी। उसने जानबूझकर कभी किसी का बुरा नहीं किया, पर उसके साथ बुरा ही हुआ था। उसका अपना धन चला गया होने पर अब श्री छाओ के बारे में चिन्ता नहीं कर सकता था। यह सब अपने आपसे कहते हुए उसने अपना बिस्तर बाँध लिया।

बिस्तर को कन्धों पर लादकर उसने बत्ती बुझायी और तेजी से पिछवाड़े पहुँचा। वहाँ उसने बिस्तर को रखा और दीवार के उस पार झाँकने के लिये पंजों के बल उचका।

"लाओ* छङ!" उसने आहिस्ते से पुकारा। "लाओ छङ!" लाओ छङ वाङ परिवार का रिक्शावाला था।

* चीन में आदरसूचक शब्द।

कोई उत्तर नहीं मिला तो उसने दीवार फाँदकर उधर जाने और खुद देखने का फ़ैसला किया। उसने अपना बिस्तर दीवार के पार फेंक दिया और वह बिना किसी आवाज के बर्फ पर जा गिरा। उसने तेजी से धड़धड़ करते दिल के साथ जल्दी से दीवार फाँदी और दूसरी ओर कूद गया। अपना बिस्तर उठाकर वह दबे पाँव लाओ छङ के कमरे की ओर बढ़ा। वह उसके कमरे की स्थिति जानता था। सभी सो चुके लगते थे, आँगन में भी किसी तरह की कोई आवाज नहीं सुनायी दे रही थी। सहसा उसे सूझा कि चोर बनना कितना आसान था। उसने हौसला जुटाया और जमी बर्फ को पार करता हुआ आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ा। बर्फ उसके पैरों के नीचे चुरमुरा रही थी। लाओ छङ के कमरे के बाहर खड़े होकर वह खाँसा। लगता था कि लाओ छङ तभी सोने के लिये लेटे ही थे।

"कौन है?" उन्होंने पूछा।

"मैं हूँ, श्याङचि। दरवाज़ा खोलिये!"

श्याङचि बड़े ही स्वाभाविक और सौहार्द्रपूर्ण ढंग से बोला था, क्योंकि उसे लाओ छङ की आवाज से अपने किसी प्रियजन जैसा आश्वासन मिला लगता था।

लाओ छङ ने बत्ती जलायी, फर वाला एक फटा पुराना कोट कन्धों पर डाला और दरवाज़ा खोल दिया। "इतनी रात गये तुम यहाँ कैसे आये हो, श्याङचि?"

श्याङचि अन्दर गया, अपना बिस्तर फ़र्श पर रखा और धड़ाम से उस पर बैठ गया। इस दौरान वह लगातार खामोश रहा था।

लाओ छङ तीस से ऊपर के हो चुके थे, और उनका बदन इतना गठीला था कि सारे शरीर पर, यहाँ तक कि चेहरे पर भी गाँठें उभरी दिखायी देती थीं। आम तौर पर श्याङचि को उनसे कोई काम नहीं पड़ता था, मगर मुलाकात होने पर दुआ सलाम और थोड़ी बहुत बातचीत भी हो जाती थी। कभीकभार श्रीमती वाङ और श्रीमती छाओ एक साथ खरीददारी करने जाती थीं, तो इन दोनों को साथ बैठकर चाय पीने और सुस्ताने का मौका मिल जाता था।

श्याङचि कभी लाओ छङ का खास प्रशंसक नहीं रहा था। वह दौड़ते तो ज़रूर तेज थे मगर बमों पर हाथ जमाकर रखने के बजाये रिक्शा को बहुत हचकोले लगाया करते थे। वह आदमी तो बहुत अच्छे थे, मगर उनके इस दोष की वजह से श्याङचि के कभी सच्चे दिल से उनकी इज्ज़त करने का सवाल ही न था।

मगर आज रात लाओ छङ श्याङचि को बहुत उत्कृष्ट लगे। वह वहाँ खामोश भले ही बैठा था, फिर भी उसका दिल स्नेह और कृतज्ञता से भरपूर था। कुछ देर पहले वह चुङहाए के पुल पर खड़ा था, अब वह यहाँ अपने साथी के कमरे में था। इस तबदीली की तेजी से वह अवाक रह गया और उसे कुछ हरारत भी महसूस हुई।

लाओ छङ अपनी रजाई के अन्दर सरक गये, अपने फटे पुराने फर वाले कोट की ओर इशारा किया और कहा, "सिगरेट पी लो, श्याङचि। जेब में कुछ रखे हैं।"

श्याङचि सिगरेट नहीं पीता था, मगर इस बार उसने महसूस किया कि वह इंकार नहीं कर सकता था। उसने सिगरेट लिया और कश खींचने लगा।

"क्या हुआ है?" लाओ छङ ने पूछा। "नौकरी छोड़ दी?"

"नहीं।" श्याङचि अभी तक अपने बिस्तर पर ही बैठा था। "कुछ गड़बड़ी चल रही है। सारा छाओ परिवार भाग गया है और मुझे अकेले घर की चौकीदारी करते हुए डर लगता है।"

"क्या गड़बड़ी?" लाओ छङ उठ बैठे।

"ठीक-ठीक नहीं कह सकता, लेकिन हालत काफ़ी खराब लगती है। काओ अम्मा भी चली गयी है!"

"सारे दरवाज़े खुले पड़े हैं और घर में कोई जिम्मेदार नहीं?"

"मैंने सदर फाटक में ताला लगा दिया है।"

"हुँह!" लाओ छङ ने थोड़ी देर सोचा। "तुम कहो तो मैं श्री वाङ को बताऊँ?" वह ऐसे उठे मानो कपड़े पहनने जा रहे हों।

"कल तक इन्तज़ार करें—अभी तो मैं कुछ बताने की हालत में नहीं हूँ!" श्याङचि को चिन्ता थी कि श्री वाङ उससे पूछताछ करेंगे।

श्याङचि के पास यह समझाने का कोई तरीका नहीं था—श्री छाओ एक खास विश्वविद्यालय में हर सप्ताह कुछ भाषण दिया करते थे। उन्होंने शैक्षणिक अधिकारियों को किसी बात से नाराज़ कर दिया था और उन्होंने उन्हें सबक सिखाने के लिये उनके ऊपर उग्रवादी होने का आरोप लगा दिया था।

श्री छाओ को इसकी भनक तो पड़ गयी थी मगर उन्होंने इसे बेहूदा माना। वह जानते थे कि वह पक्के प्रगतिशील नहीं थे और अपने शौक पारम्परिक पेण्टिंग्स संग्रह करना—के कारण वह कोई उग्र कार्रवाई कर भी नहीं सकते थे। कितना वाहियात था, उन पर क्रान्तिकारी दल का सदस्य होने का आरोप लगाना! उन्होंने अपने छात्रों और सहकर्मियों के उन्हें सावधानी बरतने की चेतावनी देने के बावजूद पूरे मामले को संजीदगी से नहीं लिया था। फिर भी गड़बड़ी वाले वक़्तों में शान्त रहना सुरक्षा की गारण्टी नहीं होता।

जाड़ों की छुट्टियाँ अधिकारियों को विश्वविद्यालय से अनचाहे लोगों को निकालने का अच्छा मौका बनीं। जासूसों ने जाँच-पड़ताल और गिरफ़्तारियाँ शुरू कर दीं। अनेक बार श्री छाओ ने भाँपा कि उनका पीछा किया जा रहा था और उनके पीछे इस साये ने उनके मनोरंजन को डर में बदल दिया। वह श्री च्वो से मिलने गये।

श्री च्वो ने सुझाया, "अगर ज़रूरत पड़े तो तुम मेरे यहाँ रहने के लिये आ जाना। वे अभी मेरे घर की तलाशी लेने की हद तक नहीं जायेंगे!" श्री च्वो के महत्वपूर्ण लोगों से सम्बन्ध थे और वे सम्बन्ध कानून के हाथों के मुकाबले में कहीं मजबूत थे। "तुम कुछ दिन के लिये यहाँ आकर उनसे डरे हुए चुपचाप बैठे होने का दिखावा

करते रहना। तब हम मामले को सुलटाना शुरू करेंगे। तुम्हें शायद कुछ लोगों की हथेलियाँ भी गरम करनी पड़ें। उनके प्रति पर्याप्त सम्मान प्रदर्शित करो और धन देकर उनके मुँह बन्द कर दो। इसके बाद घर चले जाना और फिर वे तुम्हारे चैन में खलल नहीं डालेंगे।"

जासूस सुन जानता था कि श्री छाओ अक्सर श्री च्वो से मिलने जाते थे और उसने तय कर लिया था कि बहुत मुसीबत पड़ी तो वह वहाँ भी ज़रूर जायेगा। खुफिया पुलिस में श्री च्वो से छेड़छाड़ करने की हिम्मत नहीं थी, वे तो केवल श्री छाओ को डराना चाहते थे। उन्हें च्वो के मकान में भगा देने पर ही वे उन्हें दोहने और अपनी हया बचाने की उम्मीद कर सकते थे। श्याङचि को मूँड़ने की उनकी कोई योजना नहीं थी, लेकिन उसके हत्थे चढ़ जाने पर और इसमें कोई अतिरिक्त परेशानी भी नहीं थी, तो क्यों न पहले उसे ही धमकाकर उसी से आठ या दस युवान झटक लेते?

यही थी ज़िन्दगी, श्याङचि के अलावा हरेक के सामने कोई न कोई रास्ता था और हरेक कहीं न कहीं कोई झिरी ढूँढ सकता था—वह रिक्शाचालक था, इसलिये बचकर भाग नहीं सका था। रिक्शाचालक भूसा निगलकर अपनी ज़िन्दगी का खून थूकता है, वह ज़रा-ज़रा से मेहनताने के लिये खून-पसीना एक करता है। वह समाज की सबसे नीचे की सीढ़ी पर होता है, सारे लोग, सारे क़ानून और सभी मुसीबतें उसी से टकराती हैं।

श्याङचि सिगरेट खत्म करने तक भी कुछ समझ नहीं पाया था। वह बावर्ची के हाथों में दबी गर्दन वाले मुर्ग़े की तरह कुछ भी सोचने में असमर्थ था, बस ज़िन्दगी के हर अतिरिक्त क्षण के लिये शुक्रगुज़ार ही हो सकता था। वह चाहता था कि लाओ छङ से सारी बातें कर ले, मगर अपने मन की भावनाएँ अभिव्यक्त करने के लिये शब्द नाकाफ़ी होने से उसके पास कहने के लिये कुछ भी न था। इसलिये अपने सारे कटु अनुभवों के बावजूद वह गूँगा बना रहा। उसने रिक्शा खरीदा था और गँवा दिया था; धन बचाया था और उसे भी गँवा दिया; उसकी सभी कोशिशों का अन्त उस पर धौंस जमाने और उसका तिरस्कार करने में हुआ था। वह किसी को नाराज करने का साहस नहीं कर सकता था, वहशी कुत्तों तक के लिये भी उसे रास्ता छोड़ना पड़ता था। और फिर भी वह इस कदर सताया गया था कि उस वक़्त साँस लेना भी दूभर हो गया था।

अतीत के बारे में सोचने में कोई तुक नहीं थी, कल क्या होगा? वह छाओ परिवार के मकान में वापस नहीं जा सकता था, इसलिये कहाँ जाये? "क्या मैं रात यहीं बिता सकता हूँ?" उसने पूछा, लगभग उस आवारा कुत्ते की तरह जिसे अचानक कोई कोना मिल गया हो और फिलहाल वहीं पड़े रहकर गुजारा कर लेना चाहता हो। परन्तु इस छोटी सी मेहरबानी के लिये भी उसे इस बात का ध्यान रखना था कि वह

किसी के रास्ते में न पड़े।

"ज़रूर, यहीं ठहरो, और इस बर्फबारी में जाओगे भी कहाँ? क्या फ़र्श पर तुम अच्छी तरह सो पाओगे? चाहो तो हम लोग खाट पर किसी तरह सिकुड़कर भी सो सकते हैं।"

श्याङचि उन्हें ज़्यादा तकलीफ़ नहीं देना चाहता था। उसने कहा कि वह फ़र्श पर भी ठीक रहेगा।

लाओ छङ सो गये, मगर श्याङचि जगा हुआ करवटें बदलता रहा। फ़र्श पर आती बर्फ़ीली हवा के झोंकों ने कुछ ही मिनटों में उसके बिस्तर को लोहे की चादर की तरह जमा डाला, और उसे समेटी हुई टाँगों की पिंडलियों की ऐंठन ऊपर की ओर चढ़ती महसूस हुई। दरवाज़े की दरारों से आती हुई बर्फ़ीली हवा उसके सिर को असंख्य सूइयों की तरह भेदने लगी। हताश होकर उसने आँखें मूँद लीं और सिर को ढँक लिया, फिर भी वह सो नहीं पाया। लाओ छङ के खर्राटों से उसे और भी चिढ़ हो रही थी और उसे लगा कि अपनी भावनाओं से राहत पाने का एक ही रास्ता ऊपर उछलकर उन्हें मुकियाना ही है। ठण्ड बढ़ती जाने पर उसके गले में खराश होने लगी, फिर भी वह खाँसकर लाओ छङ को जगा देने से त्रस्त था।

नींद न आ रही होने पर उसके मन में विचार आया कि चुपके से उठे और छाओ के मकान में जाकर एक बार चारों तरफ नज़र डाल आये। उसकी नौकरी तो जा चुकी थी, मकान खाली था; तब क्यों न जाकर कुछ चीज़ें उठा लाये? उन्हीं के कारण तो उसकी गाढ़ी कमाई की बचत उससे छिन गयी थी; यह वाकई सही था कि वे उसे उसका मुआवज़ा दें? यह सोचकर उसकी आँखों में चमक आ गयी, वह ठण्ड को भूल गया, उसे उठकर जाने की तैयारी करनी चाहिए। अपनी गाढ़ी कमाई को फिर से हासिल करने का कितना आसान तरीका था, उसे क्या रोके जा रहा था?

वह उठकर बैठ ही चुका था, लेकिन फिर बड़ी फुर्ती से लेट गया जैसे लाओ छङ ने उसे देख लिया हो, उसका दिल तेजी से धड़कने लगा। नहीं, वह चोर कैसे बन सकता था? यह सम्भव नहीं! पहले तो श्री छाओ की हिदायतों पर न चलकर और उनके सारे मामलों से अपना पिण्ड छुड़ाकर ही बहुत बुरा किया था, फिर अपने मालिक के यहाँ ही चोरी कैसे कर सकता था? नहीं, नहीं, वह भूखों मर जायेगा मगर चोरी नहीं करेगा।

परन्तु वह इस बारे में कैसे निश्चिततः कह सकता था कि और कोई वहाँ चोरी नहीं करेगा? अगर उस सुन ने कोई चीज़ चुरायी होगी तो कौन जान सकता था? वह फिर उठ बैठा। कहीं दूर कोई कुत्ता कई बार भौंका। वह एक बार फिर लेट गया। नहीं, वह अभी भी नहीं जा सकता था। दूसरे चुरायें तो उन्हें चुराने दो, उसकी अन्तरात्मा तो साफ़ थी। वह गरीब तो था, मगर चोरी करके उसे अपने हाथ काले नहीं करने चाहिए।

इसके अलावा काओ अम्मा भी जानती थी कि वह वाङ परिवार के मकान में गया था। अगर रात में कोई चीज़ चोरी हुई तो चुराई भले ही किसी ने भी होती, दोष उसी पर लगता। अब वह न सिर्फ स्वयं चोरी करने का अनिच्छुक था बल्कि उसे यह चिन्ता भी थी कि कोई चोर घर में न घुस जाता। अगर कोई चीज़ गुम हो गयी तो वह अपने आपको बेकसूर साबित करने में कभी कामयाब नहीं हो सकता था, ह्वाङहो नदी में कूद जाने पर भी नहीं!

अब उसे ठण्ड नहीं लग रही थी, बल्कि उसकी हथेलियों से कुछ पसीना भी छूटने लगा था। उसे क्या करना चाहिए? दीवार फाँदकर जाये और देखकर आये? उसमें साहस नहीं था। वह जान बचाने के लिये अपना धन दे चुका था, वह दुबारा किसी जाल में खुद को फँसा नहीं सकता था। लेकिन अगर कुछ गुम हुआ तो क्या होगा?

असमंजस में वह फिर उठ बैठा। उसकी टाँगें सिमटी हुई थीं और चेहरा उसके घुटनों को लगभग छू रहा था। उसका सिर नींद में हिलता रहा और आँखें बन्द होती जा रही थीं, परन्तु अब वह सोने का साहस भी नहीं कर सकता था। रात तो लम्बी थी ही, मगर उसे आराम कर पाने की फ़ुरसत नहीं थी।

न जाने कितनी देर वह एक के बाद एक योजना बनाता और रद्द करता बैठा रहा। सहसा उसके दिमाग़ मे कोई लहर आयी और वह लाओ छङ को झकझोरकर जगाने के लिये लपका। "लाओ छङ! लाओ छङ! जागो, जल्दी उठो!"

"क्यों, क्या बात है?" लाओ छङ का जागने का मन नहीं था। "पेशाब करना चाहते हो? पेशाबदान खाट के नीचे रखा है।"

"उठो, बत्ती जलाओ!"

"चोर?" लाओ छङ हड़बड़ाकर उठ बैठे।

"आप जाग गये हैं?"

"हूँ!"

"लाओ छङ देखें! अच्छी तरह देख लें, यह रहा मेरा बिस्तर और ये रहे मेरे कपड़े और ये रहे पाँच युवान जो श्री छाओ ने मुझे दिये थे। और कुछ नहीं है?"

"नहीं। मगर यह हो क्या रहा है?" लाओ छङ ने जम्हाई ली।

"आप अच्छी तरह जागकर देख रहे हैं न? मेरे पास बस यही है। मैंने छाओ परिवार से एक सुई तक नहीं ली है!"

"बेशक तुमने नहीं ली है। हमेशा भले परिवारों के लिये मासिक वेतन पर मज़दूरी करते रहे हम उनके यहाँ उठाईगीरी कैसे कर सकते हैं? अगर हम काम कर सकते हैं, तो हम काम करते हैं; अगर नहीं, तो छोड़ देते हैं। हम उनकी चीज़ें कैसे चुरा सकते हैं? यही कहना चाहते हो न?"

"क्या आपने अच्छी तरह देख लिया है?"

लाओ छङ मुस्कराये। "कोई गलती नहीं हुई मेरे देखने में! अरे मैं कहता हूँ, क्या

तुम्हें ठण्ड नहीं लग रही है?"

"मैं ठीक-ठाक हूँ।"

तेरहवाँ अध्याय

चमचमाती बर्फ के कारण आकाश में आम दिनों की तुलना में जल्दी ही आलोक छा गया लगता था। बहुत से परिवारों ने नये वर्ष के लिये मुर्गे-मुर्गियाँ खरीद रखी थीं, इसलिये आम दिनों से कहीं ज़्यादा मुर्गे बाँग दे रहे थे। हर जगह उनके कुड़कुड़ाने और नयी बर्फबारी से आने वाला वर्ष खुशहाली लाने वाला लगा।

मगर श्याङचि पूरी रात बिल्कुल सो नहीं सका था। अलस्सुबह उसे कुछ ऊँघाई आ गयी, मगर वह अधनींद बड़ी तकलीफ़देह थी। उसे लगता रहा था कि वह कुछ लहरों पर उठता-उतरता तैर रहा था। ठण्ड बढ़ती ही गयी, और सवेरे मुर्गों के बाँग देना शुरू कर देने तक तो वह उसके बर्दाश्त से बाहर हो गयी थी। लाओ छङ को वह जगाना नहीं चाहता था, इसलिये अपने खाँसने की आवाज को दबाने के लिये उसने टाँगें समेटकर मुँह को रजाई से ढँक लिया, फिर भी उठ पड़ने की हिम्मत नहीं हुई। वह बड़ी बेसब्री से किसी तरह उसे सहन करता रहा। आखिर पौ फटी और सड़कों से ठलों का शोर और उनके चालकों के हाँकने की आवाजें सुनायी देने लगीं। वह उठ बैठा।

उसे अभी तक ठण्ड लग रही थी, वह उठ पड़ा, अपनी जैकेट के बटन बन्द किये और बाहर झाँकने के लिये दरवाज़े को दरारभर खोला। बर्फ की तह बहुत मोटी नहीं थी—शायद आधी रात को उसका गिरना बन्द हो गया था। मौसम साफ़ हो गया लगता था मगर आकाश अब भी धूसर और अस्पष्ट था, बर्फ के ऊपर मद्धिम सी मटमैली छाया भी दिखायी दे रही थी। उसकी नज़र कल रात को उसी के पैरों से बने बड़े-बड़े निशानों पर पड़ी। वे बर्फ से ढक गये थे, फिर भी उनके गड्ढे साफ़ दिखायी दे रहे थे।

करने के लिये कोई काम खोजने और अपने पदचिह्नों को मिटा देने के लिये उसने कमरे के कोने से छोटा झाड़ू उठाया और बर्फ बुहारने बाहर चला गया। वह भारी थी और उसे बुहारना आसान न था। उसे मालूम नहीं था कि बाँस से बँधा बड़ा झाड़ू कहाँ रखा था, और इसलिये उसे बहुत ज़्यादा झुककर बहुत जोर लगाना पड़ रहा था। उसने ऊपरी सतह तो साफ़ कर दी मगर जमीन पर चिपकी हुई लगी कुछ बर्फ बाकी रह गयी। पूरा बाहरी आँगन बुहारते हुए वह कमर सीधी करने के लिये दो बार खड़ा हुआ और आख़िरकार सरो के दो छोटे पेड़ों के नीचे बर्फ के ढ़ेर बना दिये। अब तक उसे पसीना आने लगा था, उसका बदन गर्म हो गया था और उसमें

कुछ स्फूर्ति आ गयी थी। उसने पाँव पटके और एक लम्बी, सफ़ेद भापदार साँस बाहर निकाली।

भीतर लौटकर उसने झाड़ू रखा और अपना बिस्तर बाँधने का फैसला किया। लाओ छङ जाग पड़े और जम्हाइयाँ ले रहे थे। मुँह बाये हुए ही वह बुदबुदाया, "क्या बहुत देर हो गयी?" फिर उन्होंने आँखें मलकर उनमें से नींद भगायी और अपने फर वाले कोट के जेब से सिगरेट निकाला। एक या दो कशों के बाद ही वे पूरी तरह जग गये थे। "अभी मत जाओ, श्याङचि! मेरे कुछ उबलता हुआ पानी लाने तक रुको और हम बढ़िया चाय की एक केतली तैयार करके पियेंगे। वह भी कैसी अजब रात थी!"

"मैं पानी लेने जाता हूँ," श्याङचि ने दोस्ताना पेशकश की। मगर उसने ये शब्द कहे ही थे कि पिछली रात के आतंक ने उसे फिर दबोच लिया और उसका दिल डर के मारे सिकुड़ गया।

"नहीं, मैं जाऊँगा, आख़िर तुम मेरे मेहमान हो।" यह बोलते हुए लाओ छङ ने बटन बन्द किये बिना ही फटा पुराना कोट ओढ़कर, कमर पर एक पट्टी से कसा और बाहर निकल गये, सिगरेट उनके होंठों में ही था। "अरे, तुमने आँगन बुहार डाला! अच्छा किया! अब तो तुम चाय पीकर ही जाना!"

श्याङचि को यह सुनकर कुछ चैन महसूस हुआ।

थोड़ी देर बाद लाओ छङ दो बड़े कटोरे मीठा दलिया और बहुत सारी रोटियाँ और कुरकुरे पुए लेकर आये। "मैंने अभी चाय नहीं बनायी है। आओ पहले कुछ नाश्ता कर लें। आओ, खाओ! अगर यह काफ़ी न हुआ तो मैं और खरीद लाऊँगा, या उधार ले आऊँगा। भारी काम करने वालों को दिल खोलकर खाना चाहिए। चलो, खाओ।"

इस समय तक काफ़ी रोशनी हो गयी थी और कमरे में स्पष्ट दिखायी पड़ने लगा था। अपने कटोरे दोनों हाथों से थामे दोनों ने दलिया को सपड़-सपड़ खाते हुए ओठों से चटकारे भरे। कोई एक शब्द भी न बोला और जरा ही देर में सारी रोटियाँ और पुए खत्म हो गये।

"मुझे जाना चाहिए।" श्याङचि ने फ़र्श पर पड़े अपने बिस्तर की ओर देखा।

"अच्छा, यह तो बताओ कि मामला क्या है। सच तो यह है कि अभी तक मुझे कुछ समझ नहीं आया।" लाओ छङ ने श्याङचि को एक सिगरेट पेश किया, पर उसने सिर हिलाकर इंकार कर दिया।

दोबारा सोचने पर श्याङचि को लाओ छङ से कुछ भी छिपाने पर कुछ शर्मिन्दगी महसूस हुई। इसलिये उसने हकलाते-हकलाते पिछली रात की पूरी कहानी उन्हें बता डाली। इसमें उसे बड़ा परिश्रम करना पड़ा, मगर उसने वास्तव में शायद ही कोई बात छोड़ी हो।

कुछ देर तक लाओ छङ उसकी कहानी पर विचारते हुए होंठ सिकोड़े बैठे रहे।

"मैं समझता हूँ, अभी भी तुम्हें श्री छाओ को खोज निकालना चाहिए। तुम्हें इस मामले को यहीं नहीं छोड़ देना चाहिए, और तुम अपना धन भी ऐसे ही नहीं गँवा सकते हो। क्या तुम्हीं ने नहीं कहा कि श्री छाओ की हिदायतों के मुताबिक कुछ गड़बड़ी लगने की हालत में तुम्हें सम्बन्ध तोड़कर भागना चाहिए? देखो, यह तुम्हारा कसूर नहीं कि जासूस ने तुम्हें ठीक उसी समय पकड़ लिया जब तुम टैक्सी से उतरे थे। ऐसा तो नहीं है कि तुम बिक गये थे, बल्कि वही शैतान इतनी तेजी से तुम पर झपटा कि तुम्हें सबसे पहले अपनी जान की फिकर करनी ही पड़ी। मैं नहीं समझता कि तुमने श्री छाओ के साथ किसी भी तरह धोखा किया है। जाओ और श्री छाओ को खोजो और उन्हें इसके बारे में शुरू से आख़िर तक बता दो। मुझे नहीं लगता कि वह तुम्हें दोष दे सकते हैं, और अगर किस्मत अच्छी हुई तो वह तुम्हें तुम्हारा लुट गया धन भी वापस कर सकते हैं। जाओ, अपना बिस्तर यहीं छोड़ दो और सुबह सबेरे उनसे मिलो। दिन बहुत छोटे हैं, सूरज आठ बजे निकलता है, जल्दी करो और आगे बढ़ो!"

श्याङचि के मन में उथलपुथल मची हुई थी। वह अब भी यही मानता था कि उसने श्री छाओ को दगा दिया है पर जो बात लाओ छङ ने कही थी वह भी सही थी–जब जासूस ने उसे पिस्तौल दिखाकर जान से मार डालने की धमकी दी तो वह श्री छाओ की समस्याओं का क्या कर सकता था?

"बस चले जाओ," लाओ छङ ने उससे फिर अनुरोध किया। "पिछली रात मैंने देखा कि तुम थोड़ा परेशान थे। कौन कह सकता है कि वह मुसीबत पड़ने पर भी दिमाग़ सही रह सकेगा। मुझे यकीन है कि मेरे तरीके से निश्चित रूप से कामयाबी मिलेगी; आख़िर मैं उम्र में तुमसे बड़ा हूँ और मुझे ज़िन्दगी का तजुर्बा भी ज़्यादा है। जल्दी जाओ, देखो सूरज निकल आया है!"

बर्फ पर पड़कर प्रतिबिम्बित हो रही सबेरे की धूप ने सारे नगर को रोशनी से नहला दिया। ऊपर स्वच्छ नीले आकाश और नीचे चमचमाती हुई सफ़ेद बर्फ के बीच हर चीज़ सुनहरी झिलमिला रही थी और वह इतनी चौंधियाने वाली थी कि आँखें खोलना भी मुश्किल था। श्याङचि जाने ही वाला था कि किसी ने दरवाज़ा खटखटाया।

लाओ छङ बाहर देखने गये कि कौन आया था और दरवाज़े से ही पुकारा, "श्याङचि, कोई तुमसे मिलने आया है।"

वह च्वो परिवार का नौकर वाङ अड़ था। वह जूतों को पटककर बर्फ झाड़ रहा था और सर्दी से लाल उसकी नाक बहने लगी थी। श्याङचि के बाहर आने पर लाओ छङ ने दोनों से अनुरोध किया, "हम सभी अन्दर चलें और जरा देर बैठें।" तीनों उनके कमरे में चले गये।

"देखो, ऐसा है," वाङ अड़ ने अपने दोनों हाथ रगड़े। "मैं मकान की देखभाल

के लिये आया हूँ। फाटक पर ताला पड़ा है। अन्दर कैसे जाऊँ? ओहो, बर्फ गिरने के बाद वाकई बड़ी जबरदस्त ठण्ड पड़ने लगी है! हाँ, श्री और श्रीमती छाओ आज सुबह ही थ्येनचिन या शायद शङहाए चले गये हैं, कुछ भी पक्की तरह कह नहीं सकता। श्री च्वो ने मुझे मकान की देखभाल करने के लिये भेजा है। ओहो, कितनी भयानक ठण्ड है!"

एकाएक श्याङचि का फूटफूटकर रोने का मन हुआ। वह लाओ छङ की सलाह मानकर जाने ही वाला था कि श्री छाओ चले गये। पहले तो वह अवाक रह गया, फिर उसने पूछा, "क्या श्री छाओ मेरे बारे में कुछ नहीं कह गये?"

"ओह, नहीं। पौ फटने से पहले ही वे लोग जगे और इतनी जल्दबाजी में थे कि कुछ कह ही नहीं पाये। रेलगाड़ी, हाँ वह सात बजकर चालीस मिनट पर छूटी। ओह, अब मैं बगल के अहाते में जाऊँ तो कैसे जाऊँ?" वाङ अड़ बहुत उतावली में था।

"दीवार फाँदकर चले जाओ!" श्याङचि ने लाओ छङ की ओर एक बार ऐसे देखा जैसे वह वाङ अड़ को उनके हवाले कर रहा हो। उसने अपना बिस्तर उठाया।

"तुम कहाँ जा रहे हो?" लाओ ने पूछा।

"मिलाप अहाते में, मैं और जा ही कहाँ सकता हूँ!" श्याङचि की सारी कड़ुवाहट, शर्मिन्दगी और बेचारगी इसी एक वाक्य में सिमट गयी थी। कोई दूसरा चारा नहीं रहा था–उसे हार माननी पड़ी थी। उसके लिये सारे रास्ते बन्द थे, वह सिर्फ सफ़ेद बर्फ में से होता हुआ आबनूस के उस खम्भे–बाघिन–की ओर ही बढ़ सकता था। उसका आत्मसम्मान और आत्मोन्नति की इच्छा, उसकी वफादारी और उसकी एकनिष्ठा–सभी बेकार थे। अब उसकी किस्मत में कुत्ते की तरह जीना लिखा हुआ था।

लाओ छङ ने कहा, "तुम अपने रास्ते जाओ। यहाँ वाङ अड़ गवाही दे सकता है कि तुमने छाओ परिवार की किसी भी चीज़ को छुआ तक नहीं। तब जाओ, जब कभी इधर से गुजरो तो बातचीत करने यहाँ आ जाना। हो सकता है कि मैंने किसी ऐसी अच्छी नौकरी की खबर सुनी हो जिसके लिये मैं तुम्हारी सिफारिश कर सकता होऊँ। तुम्हारे जाने के बाद मैं वाङ अड़ को पड़ोस के मकान में जाने में मदद करूँगा। क्या वहाँ कोयला है?"

"कोयला और चैले दोनों पीछे के आँगन में शेड के नीचे रखे हैं।" श्याङचि ने अपना बिस्तर कन्धे पर लाद लिया।

सड़कों पर बर्फ अब उतनी सफ़ेद नहीं रह गयी थी। पक्की सड़कों पर कारों के पहियों से कूटी जाने से वह जमायी गयी बर्फ जैसी दिखती थी। कच्ची सड़कों पर तो घोड़ों के सूमों से सफ़ेद के ऊपर काले निशान धब्बों में बदल गये थे। श्याङचि बिल्कुल खाली दिमाग़ से अपना बिस्तर लादे हुए पाँव घसीटता चलता गया। वह दम लेने के लिये भी न रुककर सीधा मिलाप अहाते पहुँच गया। वहाँ पहुँचकर दरवाज़े

पर रुकने का साहस उसमें नहीं था, वह जानता था कि अगर रुका तो फिर अन्दर जाने की हिम्मत नहीं जुटा पायेगा। इसलिये वह सीधे तेजी से अन्दर चला गया, पर उसका चेहरा तमतमा रहा था।

उसने पहले ही सोच लिया था कि वह बाघिन से कहेगा, "लो मैं आ गया। तुम जैसा ठीक समझो वैसा करो, मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता—मैं आउट हो गया हूँ!" उसने मन में तो यह बात कई बार दोहरायी, लेकिन बाघिन से मिलने पर वह इसे कहने के लिये खुद को तैयार न कर पाया।

बाघिन अभी सोकर उठी ही थी, उसके बाल उलझे-पुलझे और उसकी पलकें कुछ सूजी हुई सी थीं। उसके काले चेहरे पर इस तरह दाने उभरे हुए थे कि उसकी शक्ल अच्छी तरह साफ़ किये जमे हुए चूजे जैसी दिख रही थी।

"अहा! तुम वापस आ गये!" प्यार से यह चिल्लाते हुए उसकी आँखों में चमक आ गयी थी।

"मुझे रिक्शा किराये पर दे दो!" श्याङचि ने अपना सिर झुकाये रखा, उसकी नज़रें अपने जूतों की नोकों की अभी तक न पिघली बर्फ पर टिकी रहीं।

"बूढ़े से बात करो," बाघिन ने दबी आवाज में कहा और मुँह फुलाकर पूर्वी कमरे की ओर इशारा किया।

मालिक ल्यू अपने कमरे में चाय पी रहा था। उसके सामने रखी एक बड़ी सफ़ेद अँगीठी में से छह-छह इंच ऊँची लपटें उठ रही थीं। उसने श्याङचि को अन्दर आते देखा तो कुछ नाखुशी और कुछ मजाक में कहा, "अरे, तुम अभी तक ज़िन्दा और तन्दुरुस्त हो?! मेरा ख़्याल है, मुझे भूल ही गये थे! जरा देखें पिछली बार तुम्हें यहाँ आये हुए कितने दिन बीत गये? तुम्हारी नौकरी कैसी चल रही है? रिक्शा खरीद लिया क्या?"

श्याङचि ने इंकार में सिर हिलाया। उसके दिल में एक टीस उठी। "मुझे अभी रिक्शा चाहिए, मालिक।"

"हूँह, फिर नौकरी जाती रही? अच्छा, जाओ खुद ही पसन्द कर लो।" फिर उसने एक कटोरे में चाय ढाली। "चलो, पहले यह पी लो।"

श्याङचि ने कटोरा उठाया और एक झटके में पी गया। वह अँगीठी के सामने खड़ा था और उसकी तीखी गर्मी और खौलती चाय ने मिलकर उसे निंदासा बना दिया। उसने कटोरा रख दिया और बाहर जा ही रहा था कि बूढ़े ने उसे वापस बुला लिया।

"जरा ठहरो, जल्दी क्या है? तुम एकदम ठीक वक़्त पर आये हो। सत्ताईस को मेरा जन्मदिन है, उस दिन मैं शामियाना लगवाकर एक बड़ी दावत देना चाहता हूँ। तुम कुछ दिन के लिये मदद भी कर सकते हो, इसलिये अभी रिक्शा चलाना शुरू मत करो।"

"ये लोग," मालिक ल्यू ने अहाते की ओर इशारा करते हुए कहा, "इनमें से किसी पर भी भरोसा नहीं किया जा सकता है। मैं नहीं चाहता हूँ कि वे यह काम बिगाड़ें, इसलिये तुम मदद करो। बताने का इन्तज़ार न करो, जो भी ज़रूरी लगे करते जाओ। पहले तो जाकर बर्फ को बुहार डालो। दोपहर को मैं तुम्हें बढ़िया खाना खिलाऊँगा।"

"अभी गया, मालिक!" श्याङचि ने और कुछ सोचा ही नहीं। यहाँ लौटने के बाद ये सब पिता और पुत्री पर निर्भर करता था। वे उसके साथ जैसा चाहे करें, उसने तो खुद को तकदीर के हवाले कर दिया था।

"क्या मैंने आपको बताया नहीं था?" बाघिन उसे सही क्षण समझकर कमरे में आ गयी। "मैंने कहा था कि श्याङचि सबसे अच्छा है और दूसरे यह नहीं कर सकते।"

मालिक ल्यू मुस्कराया और श्याङचि ने अपना सिर और भी झुका लिया।

"इधर आओ, श्याङचि!" बाघिन उसे कमरे से बाहर ले गयी। "सबसे पहले तो झाड़ू खरीदने के लिये धन। बाँस के झाड़ू लाना, उनसे बर्फ बुहारने में आसानी रहती है। तुम्हें फुर्ती दिखानी होगी, शामियाना लगाने वाले आज ही आ रहे हैं।" वह उसे अपने कमरे में ले गयी और वहाँ कुछ धन गिनने के साथ ही फुसफुसाकर कहा, "चलो, फुर्ती दिखाओ! कोशिश करो और बूढ़े को मक्खन लगाओ! तब कहीं हमारा काम बनने की उम्मीद है।"

श्याङचि ने कुछ नहीं कहा, वह नाराज भी नहीं हुआ। वह समूची दुनिया के प्रति खुद को अचेत महसूस करता था और उसका दिमाग़ अब काम नहीं करता था। वह किसी भी तरह एक-एक करके दिन काटना चाहता था। अगर खाने और पीने को मिलता तो वह खा और पी लेता, अगर काम होता तो वह कर लेता। अगर वह अपने को व्यस्त रखे तो दिन गुजरते पता भी न चलेगा। उसे तो चक्की घुमाने में जुते, चक्कर काटते हुए बाकी दुनिया से अनजान रहने वाले गधे से सीखना चाहिए। उसने समझ लिया था कि चाहे कुछ भी हो, अब वह कभी वास्तव में प्रसन्न नहीं रह सकता था। उसने सोचने, बोलने या नाराज होने से भले ही इंकार कर दिया था, पर उसके दिल पर हमेशा बोझ बना रहता था। काम में लगे रहने पर वह इसे थोड़ी देर के लिये भूल जाता था, मगर क्षणभर भी फुरसत होने पर इस कुछ के बारे में सजग हो जाता—अपने दिल पर एक मुलायम मगर बहुत भारी स्पंज की तरह बेस्वाद मगर दम घोंटने वाली एक चीज़। इससे उसका दम घुटने के कारण वह थकावट से अच्छी नींद आने की आशा में खुद को थका डालने के लिये जबरन काम में जुता रहता। उसने उल्लू के पट्ठे की तरह अपनी रातें सपनों और दिन काम के सुपुर्द कर दिये। वह बर्फ बुहारता, बाजार से सौदा लाता, मिट्टी के तेल के लैम्प मँगाता, रिक्शा साफ़ करता, मेज-कुर्सियाँ उठाता और रखता और मालिक ल्यू का दिया भोजन खाकर सो रहता और यह सब करते हुए वह नहीं जानता था कि वह क्या कर रहा है। वह एक

शब्द भी न बोलता, दिमाग़ में एक भी बात न विचारता, पर उस स्पंज के दबाव के बारे में हमेशा कुछ सजग सा रहता।

जमीन पर की बर्फ बुहार दी गयी थी, छतों की धीरे-धीरे पिघल चुकी थी। "ऊपर उठाओ!" की चिल्लपों मचाते हुए शामियाना लगाने वाला शामियाना का ढाँचा खड़ा करने के लिये छत पर चढ़ गया। उन्हें पूरे आँगन के आकार का शामियाना बनाने ओर उसे गर्म कर पाने के लिये उस पर तीन तरफ ओलतियाँ, जँगले और शीशे की खिड़कियाँ लगाने के लिये कहा गया था। भीतर शीशे के विभाजक और चित्रों वाले परदे लटके होंगे, खम्भों पर लाल कपड़ा चढ़ा होगा। मुख्य द्वार और बगली द्वारों पर रंगीन बत्तियों की लड़ियाँ लगायी जानी थीं। रसोई पिछवाड़े के आँगन में बनायी जायेगी। मालिक ल्यू अपने इस उनहत्तरवें जन्मदिन को जोरदार समारोह बनाना चाहता था। बेशक, सबसे पहले तो बहुत सुन्दर शामियाना ताना जाना था। जाड़े के दिन छोटे होने से, मज़दूरों को सिर्फ ढाँचा खड़ा करने, छज्जे और कनातें लगाने का समय ही मिल पाया था। मगर अन्दर की सजावट और द्वारों पर रंगीन बत्तियों की लड़िया लगाने का काम अगली सुबह तक के लिये छोड़ दिया गया था। इससे मालिक ल्यू गुस्से में पागल-सा होकर मज़दूरों पर इतना चिल्लाया कि उसका चेहरा तमतमा आया और उसने श्याङचि को मिट्टी के तेल लैम्पों और बावर्चियों का समय पर पहुँचना सुनिश्चित बनाने के लिये भेजा। वास्तव में कोई काम बिगड़ने की आशंका थी ही नहीं, मगर बूढ़ा खामखाह परेशान हो रहा था।

श्याङचि उस काम से फारिग होकर लौटा ही था कि मालिक ल्यू ने उसे माच्याङ के तीन-चार सेट कहीं से उधार ले आने का हुक्म दिया, उत्सव के दिन सब लोग जमकर जुआ खेलने वाले थे। फिर उसने श्याङचि को कहीं से एक ग्रामोफोन माँगकर लाने को कहा, जन्मदिन की दावत में खूब गाना-बजाना भी होना ही चाहिए था। श्याङचि रात के ग्यारह बजे तक दौड़धूप में लगा रहा। वह रिक्शा चलाने का आदी तो था, पर खाली हाथ दौड़ते रहना उसे और भी ज़्यादा थकाने वाला लगा। सौंपा हुआ आखिरी काम करके लौटते हुए वह इतना थका हुआ था कि उसके पाँव उठ ही नहीं रहे थे।

"तुम वाकई मर्द हो! वाकई! अगर मेरे तुम्हारे जैसा लड़का होता तो मैं कुछ बरस कम जीने के लिये भी तैयार रहता। अब जाओ आराम करो। कल फिर बहुत व्यस्त रहना पड़ेगा।"

पास ही खड़ी बाघिन ने श्याङचि को देखकर आँख मारी।

अगली सुबह मज़दूर काम पूरा करने आये, चित्रित परदे लटकाये गये। उन पर ल्वी पू के खिलाफ तीन लड़ाइयाँ, छाङपान ढलान, संयुक्त सेना का शिविर जलाना और "तीन राज्यों की वीर गाथा"* के अन्य चित्र बने हुए थे। सभी आकृतियाँ रंगमंचीय सज्जा जैसी दिखतीं और तलवारें और भाले लिये हुए घोड़ों पर सवार दिखायी गयी थीं। बुजुर्ग ल्यू ने गर्दन ऊँची करके उन्हें कई बार निहारा और बहुत ही सन्तुष्ट हुआ।

थोड़ी ही देर बाद सजावट करने वाले पहुँच गये और उन्होंने आठ मेजें और कुर्सियाँ और तिपाइयाँ शामियाने में रख दी। कुर्सियों के गिलाफ़ और तिपाइयों की गद्दियों पर चटख लाल फूल कढ़े हुए थे। हाल में दीर्घजीवन देवता की वेदी भी सजायी गयी, उसपर मीनारकारी वाले धूपदान और दीपदान लगे थे। उसके सामने चार लाल कालीन बिछाये गये थे। तब बुजुर्ग ल्यू ने श्याङचि को सेब लाने भेजा और बाघिन ने भी उसे चुपके से दो युवान देकर आटे के बने दीर्घजीवन आड़ू तथा दीर्घजीवन नूडल्स खरीदने के लिये कहाँ उसने उसे बताया कि हर आड़ू पर आठ अमर देवताओं में से एक का चित्र होना चाहिए। ये सब खुद उसकी ओर से दिया जाने वाला तोहफा थे।

श्याङचि सेब खरीद लाया और उन्हें भी वेदी पर सजा दिया। फिर दीर्घजीवन आड़ू और नूडल्स को भी सेबों के पीछे रख दिया। आड़ू नोकों पर लाल रंगे हुए थे और प्रत्येक पर आठ में से एक अमर देवता का चित्र चिपका हुआ था और वे अलग से ही नज़र आते थे।

"ये श्याङचि की ओर से हैं—देखिये, आपका कितना ध्यान रखता है!" बाघिन ने उसकी प्रशंसा करते हुए अपने पिता से कहा और बुजुर्ग ल्यू श्याङचि को देखकर मुस्कराया।

पीछे की दीवार के बीचोंबीच लटकाया जाने वाला "दीर्घजीवन" बड़ा रेखाक्षर अभी तक वहाँ नहीं था। रीति के अनुसार वह मित्रों द्वारा भेंट किया जाना चाहिए, मेजबान उसे नहीं देता। अभी तक किसी के यह भेंट न भेजने से तुनकमिजाज मालिक ल्यू फिर भड़कने के लिये तैयार था। "मैं दूसरों की दावतों और दाह संस्कारों में हमेशा सबसे पहले योगदान करता हूँ," वह फुफकार कर बोला। "अब मेरी बारी है तो वे मुझे ऐसे ही झटकाना चाहते हैं, मादरचोद!"

"कल छब्बीस है और मेहमान कल तो नहीं आ रहे, तो इतनी जल्दी क्यों मचा रहे हैं?" बाघिन पिता को शान्त करने के लिये बोली।

"मैं एक ही बार पूरी तैयारी कर लेना चाहता हूँ। इस तरह किस्तों में काम पूरा करना मुझे बहुत परेशान कर देता है! अरे श्याङचि, मिट्टी के तेल के लैम्प आज ही ठीक जगहों पर रख देने चाहिए। अगर उन्होंने वे चार बजे तक न भेजे तो मैं उनके ज़िन्दा रहते ही उनकी खाल खींच डालूँगा!"

"श्याङचि, तुम जाओ और उन्हें जरा जल्दी लाने को कहो!" बाघिन श्याङचि पर अपनी निर्भरता दिखाने और अपने पिता के सामने होने पर उसे बार-बार कोई न

---

* ल्वो क्वानचुङ (चौदहवीं शताब्दी का उत्तरार्ध और पंद्रहवीं शताब्दी का पूर्वार्ध) द्वारा लिखित मशूहर चीनी ऐतिहासिक उपन्यास।

कोई काम सौंपने की ओर खास ध्यान दे रही थी। श्याङचि कुछ बोला नहीं, बस उसका हुक्म बजाने चल पड़ा।

"पापा, शायद मुझे यह कहना नहीं चाहिए," अपने होंठ सिकोड़ते हुए बाचिन ने जड़ा। "अगर आपके लड़का होता तो वह या तो मेरी तरह होता या श्याङचि की तरह। यह तो बुरा ही हुआ कि मैं लड़का नहीं बन पायी, मगर अब उसका तो कुछ किया नहीं जा सकता है। वास्तव में, आप श्याङचि को अपने बेटे के तौर पर अपना लें तो बढ़िया होगा। जरा उसे देखिये, वह पूरा दिन कुछ भी नहीं बोलता, लेकिन हर काम हो जाता है!"

मालिक ल्यू ने कोई जवाब नहीं दिया—वह सोच रहा था। "ग्रामोफोन कहाँ है?" उसने तुरन्त पूछा। "गाना होना चाहिए!"

न जाने कहाँ से माँगे हुए उस टूटे फूटे ग्रामोफोन से निकलता हर स्वर बिल्ली की दुम पर पैर रखने से उसके हुआने की तरह कान फाड़ने वाला था। लेकिन मालिक ल्यू को कोई फर्क नहीं पड़ रहा था—वह तो कुछ शोर सुनना चाहता था।

तीसरे पहर तक सब तैयारी हो गयी और वे अगले दिन आने वाले बावर्ची की ही प्रतीक्षा कर रहे थे। मालिक ल्यू ने चारों तरफ घूमकर मुआयना किया और उसने चारों तरफ के चटक लाल और कई तरह के हरे रंगों पर सन्तोष में सिर हिलाया था।

उसी शाम को उसने थ्येनशुन कोयला टाल के लेखाकार को हिसाब-किताब रखने के लिये बुलवाया। शानशी के रहने वाले फङ नामक भलेमानस हिसाब-किताब रखने में बड़े होशियार थे। श्री फङ तुरन्त जायजा लेने आये, और श्याङचि से दो लाल बहियाँ और कुछ लाल कागज खरीद लाने को कहा। क़ागज़ों को काटकर उन्होंने उनकी पट्टियाँ बनायीं और उन पर "दीर्घजीवन" रेखाक्षर लिखकर उन्हें जहाँ-तहाँ चिपका दिया। मालिक ल्यू उनके तफसील पर इतना ध्यान देने से बहुत प्रभावित हुआ और उसने तुरन्त माच्याङ खेलने के लिये दो और लोगों को बुलाने की पेशकश की। परन्तु बूढ़े के तगड़ा धोखेबाज जुआरी होने के बारे में जानने के कारण श्री फङ कुछ बोले नहीं।

अपना माच्याङ का खेल टलता देखकर चिढ़ गये मालिक ल्यू ने कुछ रिक्शावालों को पुकारा। "अरे, क्या तुममें एक दौर जुआ खेलने का दम है?" उसने पूछा।

वे सभी जुआ खेलना तो पसन्द करते, पर कोई भी मालिक ल्यू के मुकाबले बैठने का साहस इसलिये न कर सका कि वे जानते थे कि वह एक समय पर जुए का अड्डा चलाता रहा था।

"अरे लीचड़ो, तुम ज़िन्दा कैसे रहते हो?" वह फुफकारा। "तुम्हारी उमर में मैं जेब में एक थुङछ्येन न होने पर भी जुआ खेलने से पीछे नहीं हटता और हार जाने तक हारने की कोई चिन्ता भी नहीं करता था। चलो, खेलें!"

"क्या हम थुङछ्येन से खेल सकते हैं?" एक रिक्शावाले ने कुछ संकोच से पूछा।

"अपने थुङछ्येन अपने पास ही रखो, मालिक ल्यू बच्चों के साथ वक़्त बरबाद नहीं करता।" बूढ़े ने अपनी चाय एक ही घूँट में खत्म कर डाली और अपनी गंजी खोपड़ी रगड़ी। "भूल जाओ, तुम्हारे बुलाने पर भी नहीं खेलूँगा। जाओ और सभी से कह दो कि कल तीसरे पहर मेहमान आयेंगे, इसलिये सारे रिक्शे चार बजे तक लौट आने चाहिए। मैं नहीं चाहता हूँ कि तुम्हारा उसके बाद भी आना-जाना जारी रहे। कल रिक्शों का कोई किराया नहीं मगर सब रिक्शे चार बजे तक यहाँ आ जायें। तुम्हें एक दिन मुफ़्त रिक्शा चलाने दे रहा हूँ, इसलिये कोशिश करके जरा भलेमानस बनो और मेरे अच्छे भाग्य के लिये शुभकामनाएँ देना, समझ गये?"

"परसों मेरे जन्मदिन को कोई रिक्शा बाहर नहीं ले जायेगा। सबेरे साढ़े आठ बजे तुम लोगों को खाना मिलेगा। हर मेज पर छह बड़े डोंगे, दो सात-इंची कठौतियाँ, चार छोटी तश्तरियाँ और शोरबा मिलेगा। कोई नहीं कह सकता कि मैं तुम्हारे साथ ठीक सलूक नहीं करता। तुम सभी को लम्बे चोगे पहनकर आना होगा, ऊँची जैकेट पहने दिखायी देने वाले को निकाल दिया जायेगा। तुम खाते ही फौरन दफा हो जाना, ताकि मैं अपने रिश्तेदारों और दोस्तों को खिला-पिला सकूँ। उन्हें हर मेज पर तीन बहुत बड़े डोंगे, ठण्डे गोश्तों की छह तश्तरियाँ, छह प्लेटें पकवान, चार बड़े डोंगे और शोरबा दिया जायेगा। मैं तुम्हें यह बातें आज ही बता रहा हूँ, ताकि तुम लार टपकाते हुए देखते न रहो।

"दोस्त और रिश्तेदार दोस्त और रिश्तेदार ही हैं, मैं तुमसे कुछ माँग नहीं रहा हूँ। दिलदार चाहें तो मुझे दस थुङछ्येन भेंट के तौर पर दे सकते हैं, मैं उसे कम नहीं मानूँगा। अगर तुममें से कुछ सिर्फ तीन बार कोर्निश करें और एक थुङछ्येन भी न दें तो मुझे वह भी मंजूर है। मगर तुम लोगों को तहजीब से पेश आना होगा, समझ गये? शाम को यहाँ खाना चाहने छह बजे के बाद आयें। बचाखुचा सब तुम्हारा होगा। मगर ऐसा न हो कि पहले ही पहुँच जाओ, अच्छी तरह समझ गये न?"

"कल हममें से कुछ रात की पाली में रिक्शा चलायेंगे, मालिक," एक अधेड़ रिक्शावाले ने कहा। "वे चार बजे तक रिक्शे कैसे वापस ला सकेंगे?"

"रात की पाली वाले ग्यारह बजे के बाद आ सकते हैं, असल बात यह है कि मेरे मेहमानों के शामियाने में होने पर किसी तरह की आवाजाही नहीं होनी चाहिए। तुम लोग रिक्शाचालक हो, और मालिक ल्यू अलग है, यह भी समझ गये न?"

किसी को कुछ कहना नहीं था, पर वे इसके बाद भी बाइज्जत लौटने का कोई तरीका सोच पाने में असमर्थ हक्के-बक्के से वहाँ खड़े रहे। मालिक ल्यू का वह लम्बा-चौड़ा भाषण हरेक दिल में कसक रहा था। एक दिन किराया न देने से उनके कुछ राहत ज़रूर मिल रही थी पर हर किसी को तोहफे के लिये कम से कम चालीस थुङछ्येन खर्च करने पड़ने पर खाना मुफ़्त नहीं कहा जा सकता था। इससे भी बढ़कर

तो यह था कि बूढ़े ने इतनी बदतमीजी से बात की थी मानो उसके जन्मदिन पर सभी को चूहों की तरह छिप जाना चाहिए था।

इसके अलावा उसने उन्हें सत्ताईस को रिक्शा चलाने से मना कर दिया था, नये वर्ष के पहले उन्हीं दिनों तो ज़्यादा सवारियाँ होती थीं। मालिक ल्यू अपनी एक दिन की आमदनी की कुरबानी देने के लिये तैयार हो सकता था, मगर वे खाली बैठे ल्यू के साथ सीझते नहीं रहना चाहते थे—यह तो बहुत ज़्यादा जुल्म था! वे अपने दिलों के गुस्से को जाहिर करने का हौसला न करके, और निश्चित रूप से मालिक ल्यू को सौभाग्य की शुभकामनाएँ न देते हुए ही वहाँ खड़े थे।

बाघिन ने झटके से उसे खींचा और वह उसके पीछे-पीछे बाहर चला गया।

इस पर सब लोगों के गुस्से को बाहर निकलने का एक रास्ता मिल गया लगा और उन्होंने पीछे हटते हुए श्याङचि को घूरकर देखा। इन पिछले दो दिनों से वे महसूस कर रहे थे कि श्याङचि ल्यू परिवार का पालतू कुत्ता बन गया है, वह उनके गुर्गे के तौर पर काम करते हुए उनकी जी-जान से जी-हुजूरी कर रहा था।

श्याङचि को इसका कोई आभास भी न था। ल्यू परिवार की मदद करने से उसकी निराशा की भावना कुछ कम होती थी। शामों को वह कुछ न कहता क्योंकि कहने को कुछ था ही नहीं। परन्तु उसके दुर्भाग्य का रत्तीभर भी भान न होने पर दूसरे सोचते थे कि वह मालिक ल्यू की खुशामद करके अपना काम निकालने को ध्यान में रखते हुए उनसे बात नहीं करता था।

उन्हें सबसे अधिक डाह तो बाघिन के श्याङचि का बहुत ध्यान रखने पर महसूस होती थी। बूढ़ा उन्हें अपने जन्मदिन की दावत के लिये शामियाने के अन्दर कदम तक नहीं रखने देगा, मगर श्याङचि सारा दिन मजे करता रहेगा। वे सब रिक्शाचालक थे, तब ऊँचे और नीचे के बीच यह विभाजन क्यों? देखो! सुश्री ल्यू ने श्याङचि को फिर बाहर बुलाया था। सबकी आँखें उसे देखती रहीं और वहाँ से जाने की उत्सुकता में वे सब एक-एक करके खिसक गये। सुश्री ल्यू मिट्टी के तेल के लैम्प के नीचे खड़ी श्याङचि से बातें कर रही थी। उन सभी ने एक दूसरे को देखकर खोपड़ी हिलायी।

चौदहवाँ अध्याय

ल्यू परिवार का समारोह बड़ा जानदार रहा था। मालिक ल्यू को उसे कोर्निश करने और बधाई देने आये लोगों की बड़ी संख्या से बड़ा सन्तोष मिला और उसके अनेक पुराने दोस्तों के उसे जन्मदिन मुबारक कहने आने से उसका घमण्ड और बढ़ गया था। उसके आने से वह न सिर्फ समारोह के सफल रहने बल्कि अपना रुतबा भी "ऊँचा" हो जाने का कायल हो गया। उसके मेहमानों के कपड़े घटिया थे और खुद

उसने फर के अस्तर वाला चोगा और वासकट पहनी हुई थी—दोनों ही नये-नकोर थे। उसके इन दोस्तों में से कई किसी समय उसके मुकाबले अधिक अच्छी हालत में रहे थे, मगर बीस या तीस वर्षों के दौरान वे लगातार धँसते चले गये थे, यहाँ तक कि उनमें से कुछ को भरपेट खाना मिलना भी मोहाल हो गया था। उसने उनकी ओर देखा और फिर अपने जन्मदिन के उत्सव के लिये लगाये गये शामियाने, दीर्घजीवन वेदी, छाङ्पान ढलान के चित्र वाले लटकते परदे और दावत के तीन बहुत बड़े डोंगों को, और महसूस किया कि वह सचमुच अपने पुराने मित्रों से एक खाँचा ऊपर था और संसार में उसकी प्रतिष्ठा बढ़ी थी। जुए के खेल के लिये भी उसने माच्याङ के जो सेट मँगवाये थे वे साधारण जुए के खेलों से कहीं अधिक बढ़िया थे।

फिर भी इस तमाम खुशी के बीचोंबीच वह कुछ अकेला अकेला अनुभव करने लगा। छड़ों जैसी ज़िन्दगी बिताने का वह आदी हो चुका था, इसलिये उसने सोचा था कि उसके मेहमान भी आसपास की दुकानों के मैनेजर और मालिक या फिर पुरानी जान-पहचान वाले दोस्तों से कुछ छड़ों तक ही सीमित होंगे। उसे किसी औरत के आने की प्रत्याशा नहीं थी। और यद्यपि बाघिन अपने पिता की ओर से उनकी आवभगत कर रही थी, फिर भी अपनी पत्नी न होने और मर्दों जैसी दिखने वाली बेटी होने पर वह अचानक बहुत अकेला महसूस करने लगा। उसने सोचा अगर बाघिन पुत्री न होकर पुत्र होता तो आज उसके पोते-पोतियाँ होते, तब फिर बूढ़ा रंडुआ होने पर भी उसको इतना अकेलापन महसूस न होता। हाँ, उसके जीवन में बस यही कमी थी कि उसके कोई पुत्र नहीं था। और आयु बढ़ती जा रही होने पर उसके लिये पुत्र पैदा होने की सम्भावना भी कम होती गयी थी। जन्मदिन आनन्दमयी अवसर होना चाहिए, परन्तु अब लगता था कि उसे रोना पड़ेगा; संसार में उसकी प्रतिष्ठा कितनी भी क्यों न बढ़ गयी हो पर उसके धन्धे को चलाने वाला उसका अपना कोई बेटा न था तो ऐसी प्रतिष्ठा भी किस काम की थी?

उस दिन दोपहर तक वह बहुत खुशी से कोई बहुत बड़ा कमाल कर दिखाने वाले नायक की तरह बड़ी शान से जन्मदिन पर हर किसी से बधाई ले रहा था। मगर तीसरा पहर होते-होते वह बहुत उदास हो गया था। महिला मेहमानों के साथ आये बच्चों को देखकर वह अनुरागात्मक ईर्ष्या से भर गया। उसका मन हुआ कि वह उन बच्चों के साथ खेले मगर वह साहस न कर सका, इसके कारण वह और भी परेशान हुआ; परन्तु इतने सारे मित्रों और सम्बन्धियों के सामने वह अपना गुस्सा जाहिर करना चाहता था। वह दुनियादार था और खुद को दूसरों की नज़रों में इस तरह गिरा नहीं सकता था। इसलिये वह कामना करने लगा कि उसकी बेचैनी खत्म करने के लिये जश्न जल्दी खत्म हो जाये।

उसे यह बात भी बहुत चुभ रही थी कि उसी सुबह रिक्शाचालकों की दावत चल रही होने पर श्याङचि की दूसरों से मारपीट होते-होते बची थी।

दावत आठ बजे के कुछ बाद ही आरम्भ हो गयी थी और सभी रिक्शावाले नाराज हो रहे थे। बीते दिनों भले ही उनसे किराया नहीं लिया गया था, फिर भी आज उनमें से कोई भी खाली हाथ नहीं आया था। कुछ केवल एक माओ लाये तो अन्य चालीस थुङ्छ्येन भी, मगर उन्होंने कम दिया हो या ज़्यादा, दिया ज़रूर था। आम दिनों में वे बेचारे गरीब मेहनतकश थे और मालिक ल्यू मालिक ही था। आज वे मेहमान थे, फिर भी उनके साथ ऐसा बरताव क्यों किया गया? यही नहीं, भोजन के तुरन्त बाद उनको बाहर निकल जाने का आदेश था, मगर साल खत्म हो रहा होने पर अच्छे धन्धे के दिनों में वे अपने रिक्शे भी नहीं चला सकते थे।

श्याङचि जानता था कि भोजन समाप्त होने पर उसे जाने के लिये नहीं कहा जायेगा, मगर उसने दूसरों के साथ ही भोजन करने को तरजीह दी। इस तरह वह जल्दी रुखसत होकर और कामों में जुट सकेगा, इसके अलावा उससे ज़्यादा भाईचारा भी झलकता। परन्तु वह बैठा ही था कि औरों ने मालिक ल्यू के प्रति अपनी नाराजगी उस पर उतारना शुरू कर दिया। किसी ने कहा, "अरे, तुम तो माननीय अतिथि हो, यहाँ हम लोगों के बीच में क्यों बैठ गये?"

श्याङचि उसका गूढ़ अर्थ न समझकर योंही खींसें निपोरने लगा। पिछले कई दिनों से किसी से बातचीत न की होने से शायद उसका दिमाग़ जरा सुस्त हो गया था।

मालिक ल्यू को छेड़ने की हिम्मत तो किसी में थी नहीं, इसलिये उसका कुछ ज़्यादा खा-पी लेना ही एकमात्र काम था। खाना तो निश्चित मात्रा में था मगर जन्मदिन मनाने के लिये शराब की कोई हद न थी। वे अपना असन्तोष दूर करने के लिये मौन सहमति से शराब पीने में जुट गये। कुछ लोग खामोश उदासी में पीते रहे, कुछ ज़्यादा शराब पिलाने की होड़ में शोर मचाने वाला खेल "छाएछ्वान" खेलने लगे। बुजुर्ग ल्यू उन्हें इससे कैसे रोक सकता था। श्याङचि ने सबको पीते देखा और पीछे न रह जाने के लिये उसने भी दो प्याले पी लिये। शराब से उनकी आँखें जलने लगीं और जुबानें खुल गयीं।

एक बोला, "अरे श्याङचि, ऊँट, तुम्हें आरामदेह नौकरी मिल गयी! बुढ़ऊ और जवान औरत का हुक्म बजाना और दिनभर डटकर खाना। इसके बाद तुम्हे रिक्शा नहीं चलाना पड़ेगा। उन्हीं के इशारों पर नाचना बेहतर है!" श्याङचि को लगा कि कुछ गड़बड़ है, फिर भी उसने बुरा नहीं माना। मिलाप अहाते में लौटने के बाद से उसने अपने को ईश्वर की इच्छा पर और हर चीज़ को भाग्य पर छोड़ देने का फैसला कर लिया था। वे कुछ भी कहते रहे, वह शान्त रहा।

दूसरा बोला, "श्याङचि हम लोगों की तरह थोड़े है। हम तो रोज़ी के लिये पसीना बहाते हैं, वह तो अन्दर का आदमी है!"

इस पर सभी जोर से हँस पड़े। श्याङचि जानता था कि वे उसक.. खिल्ली उड़ा

रहे हैं, मगर इतना सब सह चुकने के बाद वह इसी के बारे में उत्तेजित क्यों हो? वह इस पर भी शान्त रहा।

अगली मेज के किसी ने श्याङचि का मजाक उड़ाना तय करके वहीं से कहा, "श्याङचि भाई अहाते का मालिक बन जाने पर अपने पुराने साथियों को भूल न जाना।"

इस पर भी श्याङचि चुप रहा।

उसी की मेज के किसी ने उसे चुनौती दी, "अरे ऊँट, कुछ बोल तो सही!"

श्याङचि का मुँह तमतमा उठा और उसने रूखेपन से दबी आवाज में कहा, "मैं मालिक कैसे बन सकता हूँ?"

"अरे, क्यों नहीं? जल्दी ही झाँझ-मजीरे बजेंगे और ढोल पिटेंगे!"

श्याङचि झाँझ-मजीरों और ढोलों का ज़िक्र का मतलब नहीं समझा था परन्तु उसने अन्दाज़ा लगाया कि यह ज़रूर उसके और बाघिन के सम्बन्धों से जुड़ा है। उसक चेहरा फक हो गया। उसका दबा हुआ रोष उसका दम घोंटने लगा। अब वह बाँधे हुए पानी के जरा सा भी रास्ता मिलने पर फूटने के इन्तज़ार में रहने की तरह यह बर्दाश्त नहीं कर पा रहा था।

तभी एक और रिक्शावाले ने उसकी ओर इशारा करके कहा, "श्याङचि, तुम तो च्योओचि खा रहे गूँगे की तरह हो, जानते हो कितना खा चुके हो। अब तुम गूँगे हो न, श्याङचि? अरे, बोलो! अरे श्याङचि!"

श्याङचि का चेहरा एकदम पीला पड़ गया, और उसने उछलते हुए खड़े होकर फबती कसने वाले को ललकारा, "एक बार बाहर आकर वही कहो तो!"

सभी हक्के-बक्के रह गये। वे तो मजा लेने के लिये उससे छेड़छाड़ कर रहे थे, लेकिन कोई भी लड़ना नहीं चाहता था।

एकाएक छा गया मौन जंगल में चहचहाती चिड़ियों के बाज को देखकर चुप हो जाने की तरह था। श्याङचि वहाँ अकेला खड़ा था, बाकी सभी उसके सामने बौने दीखे रहे थे। उसने अपने अलगाव को महसूस किया, मगर उसे बहुत गुस्सा चढ़ चुका था और वह उन सभी से निपटने के बारे में आश्वस्त लग रहा था।

उसने फिर ललकारा, "है किसी में हिम्मत?"

फिर एकाएक होश सम्भालकर उन्होंने एक साथ कहा, "अरे छोड़ो भी श्याङचि, हम तो ऐसे ही मजाक कर रहे थे!"

मालिक ल्यू यह सारा काण्ड देख चुका था और उसने कहा," श्याङचि, बैठ जाओ!" फिर दूसरों को सुनाया, "किसी सीधे-सादे आदमी को सताना ठीक नहीं, ऐसा मत करो! अगर तुमने गड़बड़ की तो सभी को बाहर कर दूँगा! खाकर चलते-फिरते नज़र आओ!"

श्याङचि मेज पर से उठ गया। बाकी सब मालिक ल्यू की ओर देखने लगे और

अपने-अपने कटोरे उठा लिये। जरा ही देर में जंगल में खतरा टल जाने पर पंछियों के चहचहाने की तरह सभी फिर चपरचपर करने लगे।

श्याङचि बड़ी देर तक दरवाज़े के बाहर बैठा उनका इन्तज़ार करता रहा। अगर फिर कोई बदतमीजी करता तो वह उसे पीट डालता। सब कुछ तो वह खो चुका था अब परवाह काहे की थी?

परन्तु छोटे समूहों में वे लोग बाहर आये, तो उन्होंने उसे नज़रअन्दाज़ किया। लड़ाई तो नहीं हुई थी, लेकिन श्याङचि को कम से कम अपनी भड़ास निकालने का मौका तो मिला। पर थोड़ा और सोचने पर उसने अनुभव किया कि उसने अनेक लोगों की नाराजगी मोल ले ली थी। ऐसे ही उसका कोई घनिष्ठ दोस्त नहीं था जो उसकी पीड़ा सुनता; फिर उसके लोगों को नाराज करते जाने से कैसे चल सकता था? वह अपने किये पर पछताने लगा। थोड़ा बहुत जो उसने खाया था वह भी उसके पेट में मानो गड़ने लगा। वह खड़ा हो गया। अरे जाने दो, कौन डरता है? रोज़ ही झगड़ा फसाद करते और कर्ज से लदे रहने पर भी वे लोग ज़िन्दगी का कुछ मजा तो लेते ही रहे थे। क्या भलमनसाहत बहुत अच्छी बात है?

सहसा उसे सूझा कि वह अपने पहले के रास्ते से हटकर एक बिल्कुल नया रास्ता अपना सकता था। वह बहुत मिलनसार हो जायेगा, हरेक का फायदा उठायेगा, दूसरों की चाय पियेगा, उनके सिगरेट फूँकेगा, धन उधार लेकर लौटायेगा नहीं, कारों को कभी रास्ता नहीं देगा, जहाँ मन चाहेगा मूतेगा, पुलिस वालों से झगड़ता रहेगा और कुछ दिनों के लिये जेल जाने की कतई परवाह नहीं करेगा। निश्चय ही ऐसा रिक्शाचालक अनुजीवित रहता है और जीवन का इतना आनन्द उठाता है जितना श्याङचि ने कभी नहीं उठाया था।

तब ठीक है, अगर भलमनसाहत और आकांक्षा से उसका कुछ बन नहीं पाया, वह भी उन बेशर्म बदमाशों जैसा ही क्यों न बन जाये? उसने फैसला किया कि यह न सिर्फ सही होगा बल्कि लोक और परलोक किसी से न डरना, कभी किसी के सामने सर न झुकाना या चुपचाप दुख बर्दाश्त न करना एक तरह की वीरता ही होगी। यही ठीक है, वह भी यही करेगा। अच्छा आदमी बुरा भी बन सकता था।

असल में वह पछताने लगा कि वह उस मारपीट में उलझा क्यों नहीं। सौभाग्य से अभी बहुत समय था, वह उसी दिन से किसी आदमी के सामने झुकेगा नहीं।

मालिक ल्यू की आँखों में भी कोई धूल नहीं झोंक सकता था। उसने देखे और सुने को एक साथ रखा तो वह बखूबी समझ गया कि आख़िर हो क्या रहा था। पिछले कुछ दिनों से उसकी पुत्री विशेष रूप से आज्ञाकारिणी हो गयी थी। तो यह श्याङचि के लौट आने की वजह से था! उसकी आँखों को तो देखो, हमेशा उसे ही ताका करती है! यही सोच-सोचकर ल्यू अपने को और ज़्यादा अकेला और उदास महसूस करने लगा। जरा सोचो, बेटा न होने पर वह भड़ककर फलते-फूलते परिवार

को बना नहीं सकता था और उसकी बेटी चली जाने पर तो उसकी मेहनत से बनायी ज़िन्दगी ही बेकार हो जायेगी! श्याङचि बुरा नहीं था, परन्तु बेटे या दामाद के रूप में सोचने पर वह उस लायक बिल्कुल नहीं था—गन्दा, गन्धाता रिक्शाचालक! क्या यह मुमकिन था कि उसने जीवनभर इसीलिये संघर्ष किया, गिरोहों में लड़ाइयाँ कीं और यातनाएँ भुगती थीं कि उसके मरने से पहले उसकी बेटी और दौलत को एक देहाती बेवकूफ छीन ले जाये? नहीं, ऐसा नहीं हो सकता! मालिक ल्यू का कोई बेजा फायदा नहीं उठा सकता था! मालिक ल्यू जो बचपन से ही पादने पर भी जमीन को फाड़कर गड्ढा बना देता रहा था!

तीसरे पहर तीन या चार बजे कुछ और अतिथि बधाई देने आये, मगर बुढऊ उकता चुका था। उसके मेहमान उसके स्वास्थ्य और सौभाग्य पर जितनी ज़्यादा बधाई देते, वह उतनी ही निरर्थक मालूम लगने लगी।

दिये बाती के समय तक कुछ पड़ोसियों या उसके घनिष्ठ दोस्तों के अलावा अधिकांश अतिथि चले गये थे। उन्होंने माच्याङ खेलना शुरू किया। मिट्टी के तेल के लैम्प की रोशनी में हरे नज़र आते खाली शामियाने, सजावट के लिये लगे कपड़े हटाये जा चुकी मेजों को देखते हुए बूढ़े के मन में निराशा और उदासी भर गयी। उसने सोचा कि उसके मरने पर भी ऐसा ही होगा—जश्नी शामियाना मातमी शामियाने में बदल जायेगा; मगर शोक मनाने के वस्त्र पहनकर उसके ताबूत के सामने चौकसी करने वाले बेटे या पोते नहीं होंगे, रात में चौकसी करते हुए उसकी आम जान-पहचान के कुछ लोग बैठे माच्याङ खेल रहे होंगे। उसका मन वाकई चाह रहा था कि बाकी बचे मेहमानों को भी भेज दे। दम बाकी होने तक उसे दिखा देना चाहिए कि वह किस मिट्टी का बना था! लेकिन अपने दोस्तों पर गुस्सा उतारना बेहद बेतहजीबी होती। इसलिये उसका गुस्सा उसकी नज़रों में घिनौनी और घिनौनी होती जा रही अपनी बेटी की ओर पलटा। श्याङचि शामियाने मे बैठा था। लैम्प की रोशनी में चेहरे पर जेड जैसे हरे दिखते दाग वाला वह कैसा भद्दा शैतान था! कितनी घृणास्पद जोड़ी थी!

बाघिन हमेशा अपने मन की करने वाली और बेकाबू रही थी। फिर भी आज सिर से पाँवों तक बेहतरीन तरीके से सजी हुई वह मेजबान के रूप में इतरा रही थी, यह न सिर्फ मेहमानों बल्कि श्याङचि पर भी असर डालना था। सबेरे तो वह अपने में मगन थी, मगर तीसरा पहर होते-होते थकावट से उसे झुंझलाहट और चिड़चिड़ाहट होने लगी। शाम होन तक तो उसमें जरा भी धीरज न रहा और उसकी भौहें बहुत चढ़ गयीं थीं।

सात बजे के जरा बाद मालिक ल्यू उनींदा महसूस कर रहा था पर वह न तो यह कह और न ही सोने जा रहा था। खिलाड़ियों ने उसे कुछ हाथ खेलने के लिये बुलाया, पर ताकत न होने के बारे में कहने के बजाये उसने कहा कि माच्याङ तो बेकार का खेल है और उसे दूसरे जुए ज़्यादा पसन्द हैं। किसी के भी आधी बाजी बीच में

छोड़कर कोई दूसरा खेल शुरू न करना चाहने के कारण उसे किनारे बैठकर देखते ही रहना पड़ा। अपनी थकान मिटाने के लिये उसने शराब के कई और प्याले चढ़ा डाले और इस बीच उसने भरपेट न खाया होने और बावर्ची के उसका धन खा जाने और खाना कम पकाने की रट लगाये रखी। इसके बाद वह उन सब चीज़ों में दोष निकालता रहा जिनसे सुबह तक वह सन्तुष्ट थाः शामियाना, मेज-कुर्सियाँ और बर्तन, बावर्ची, हर चीज़ में साफ़ बेईमानी हुई थी। उससे ठगी की गयी थी!

उस समय तक लेखाकर श्री फङ उपहारों की सूची बना चुके थे : जन्मदिवस के पच्चीस चाङचि*, दीर्घजीवन के प्रतीक तीन "आड़ू" केक और नूडल्स, दीर्घजीवन शराब का एक जार, दो जोड़ी दीर्घजीवन मोमबत्तियाँ और नगद बीस युवान। भेंट देने वालों की सूची काफ़ी लम्बी थी, परन्तु अधिकांश ने केवल चालीस थुङछ्येन या चाँदी का एक माओ ही दिया था।

यह सुनकर मालिक ल्यू का खून खौलने लगा। अगर उसे पहले से ही मालूम होता तो उसने सिर्फ सब्जियों वाली भुनी हुई नूडल्स ही बनवायी होती। मजे तो लोगे तीन बड़े बड़े डोंगों वाली दावत के और दोगे सिर्फ एक माओ? यानी वे सब उसे लूटना चाहते थे, क्यों? अच्छा, आज के बाद कोई समोराह नहीं, कभी भी अपना धन किसी को लूटने न देगा! जाहिर है कि सभी सारे परिवार और दोस्तों को लेकर इसलिये आये थे कि उसके खर्चे पर मुफ़्त का खाना उड़ायें। उनहत्तर वर्ष का एक आदमी इस तरह बेवकूफ बनाया गया, और वह भी उसे जो ज़िन्दगी में इतना चालू रहा था! हरामियों और बन्दरों का गिरोह उसे चराने चला! वह जितना कुढ़ता उसका गुस्सा भी उतना बढ़ता जाता। थोड़ी देर पहले तक उसे सन्तोष दे रही हर बात उसे निरी मूर्खता जान पड़ने लगी, उसकी भावनाएँ पुरानी पड़ चुकी गन्दी-गन्दी गालियों के जरिए व्यक्त होने लगीं।

अभी कुछ मित्र मौजूद होने और बाघिन के उनके सामने नाटक कायम रखना चाहने की वजह से उसने अपने पिता को काबू में रखने की सोची। खिलाड़ियों का पूरा ध्यान माच्याङ पर केन्द्रित होने और उनके बूढ़े की बड़बड़ाहट न सुन रहे लगने पर बाघिन ने भी बवाल खड़ा करने के बजाये चुप रहना ही ठीक समझा। उन सबके बहरे बने बैठे रहने से बात आयी गयी हो जायेगी।

परन्तु अचानक वह बाघिन पर बरसने लगा। अब यह तो उसके बर्दाश्त के बाहर हो गया था! उसके जन्मदिन की तैयारियों में वह कई दिनों से दौड़धूप कर रही थी और उसे उसका यही पुरस्कार मिलना था! यह तो असहनीय था! उनहत्तर?

* पुराने चीन में जन्मदिन, शादी और मौत के मौकों पर बधाई देने या मृतक की स्मृति में भेंट के रूप में रेशमी कपड़े के लम्बे टुकड़े देने का रिवाज था। इन टुकड़ों पर मौके के अनुसार कविता, छोटा लेख या रेखाक्षर लिखे या कागज पर लिखकर चिपकाये जाते थे। खुशी के मौके पर लाल और गम के मौके पर पीले या सफ़ेद कागज पर लिखा जाता था।

उन्यासी का हो जाने पर भी उसे समझदारी बरतनी चाहिए थी!

"तुम पैसा खर्च करना चाहते थे, इसका मुझसे क्या ताल्लुक?" उसने तड़ाक से जवाब दिया।

यह सुनकर बूढ़ा चौंककर पूरी तरह होश में आ गया। "तुमसे क्या ताल्लुक? और किससे है! तुम समझती हो, मैं अन्धा हूँ और मुझे दिखता नहीं?"

"क्या दिखा है तुम्हें? मैं यों ही थककर चूर हो रही हूँ, ऊपर से तुम अपनी झुँझलाहट मुझ पर निकाल रहे हो! बोलते जाओ, क्या देखा है तुमने?" बाघिन भी जान बटोरकर जोर-जोर से बोल रही थी।

"मेरी दावत पर तुम्हें जलकर राख होने की कोई ज़रूरत नहीं। देखा? मैं तो बहुत पहले ही सारा खेल जान गया था!"

"मैं क्यों जलूँगी?" बाघिन बोलते हुए मूँड़ हिलाती जा रही थी। "बोलो, बताओ, क्या देखा है तुमने?"

"वह!" मालिक ल्यू ने शामियाने की ओर इशारा किया—वहाँ श्याङचि फ़र्श पर साफ़ करते हुए झुका हुआ था।

"वह?" बाघिन का दिल धक से रह गया। किसने सोचा था कि बूढ़े की नज़र इतनी तेज होगी? "अच्छा, तो उसके बारे में क्या कहते हो?"

"सब कुछ जानने पर भी मक्कर मत करो!" बूढ़ा उठकर खड़ा हो गया। "या तो वह या मैं, खुद चुन लो, बस। मैं तुम्हारा बाप हूँ, मेरा हक बनता है!"

बाघिन ने यह नहीं सोचा था कि उसकी योजना आधी भी पूरी न होने पर ही इतनी जल्दी मामला खुल जायेगा। अब क्या होगा? हरी-हरी रोशनी में उसका चेहरा गहरा लाल हो गया और उस पर पाउडर की रेखाएँ दिखने लगीं जैसे सुअर की कलेजी को किसी न इतना ज़्यादा उबाल दिया हो कि वह अजीब और घिनौनी दिखने लगे। थकावट और उत्तेजना से उसका पारा बहुत चढ़ गया था, पर उलझन में समझ नहीं पा रही थी कि आखिर करे क्या। अब पीछे हटने का कोई सवाल ही नहीं रह गया था। वह कितनी ही घबरायी हुई क्यों न हो, उसे जल्दी कोई तरीका सोचना होगा। कोई भी विचार न होने से तो खराब विचार ही अच्छा था और फिर वह कभी किसी के सामने झुकी भी नहीं थी। अच्छी बात है, तो आमना-सामना होने में भी बुराई नहीं। अब तो बुरा हो या भला, जो होना है वही होगा।

"अच्छा, तो हम आज ही फैसला कर लें। मान लो तुम्हारी बात सही है, तो क्या हुआ? मुझे सिर्फ इतना ही बताओ। यह तो तुम्हारा ही किया है, मुझे तुम्हें परेशान करने का दोषी मत ठहराओ!"

माच्याङ खिलाड़ियों ने बाप-बेटी को झगड़ते हुए सुना पर वे अपने ध्यान भंग नहीं होने देना चाहते थे; इसलिये उनकी आवाजें को दबाने के लिये वे अपने मोहरे धाड़ धाड़ पटकते और साथ ही चिल्लाते "लाल," "मारो।..."

श्याङचि न वह सब सुना, मगर वह सिर झुकाये हुए सफाई करता रहा। उसने मन में तय कर लिया था, अगर सामना हो ही गया तो वह भिड़ जायेगा!

"मुझे पागल बनाने की कोशिश कर रही हो, क्या?" बूढ़ा गुस्से में घूर रहा था। "तुम समझती हो कि गुस्से से मेरा दिल धड़कना बन्द हो जायेगा, तब तुम अपने लिये एक मर्द ख़रीद लोगी, क्यों? इस गलतफ़हमी में न रहना, मेरी अभी कुछ और साल जीने की योजना है!"

"बात मत बदलो! तो तुम क्या कर लोगे?" बाघिन का दिल जोरों से धड़क रहा था। मगर उसकी आवाज़ में वैसी ही खनक थी।

क्या मैंने कहा नहीं, या तो वह या मैं? मैं किसी गन्दे-सन्दे रिक्शावाले को अपनी नहीं चलाने दूँगा!"

श्याङचि ने अपना झाडू एक तरफ फेंक दिया, सीधे खड़ा हो गया और मालिक ल्यू को घूरकर बोला, "किसकी बात कर रहे हैं, आप?"

मालिक ल्यू वहशी हँसी हँसा। "हा, हा, बगावत करने की सोच रहे हो? किसकी बात कर रहा हूँ? तुम्हारी ही कर रहा हूँ और किसकी! धत्! मैंने सोचा था कि तुम शरीफ आदमी हो, इसीलिये तुमसे अच्छा बरताव कर रहा था, मगर तुम भूल जाते हो कि मैं कौन हूँ! अब तुम्हें जानने के लिये रुकने की भी ज़रूरत नहीं। मैं कहता हूँ, भाग जाओ! मैं तुम्हारो चेहरा भी नहीं देखना चाहता, और यह मत समझो कि तुम, माँ के लौड़े, मेरा फायदा उठा लोगे।"

बूढ़े की आवाज़ बहुत ऊँची हो गयी थी और कई रिक्शावाले देखने के लिये बाहर आ गये कि यह सब माजरा क्या था। माच्याङ के खिलाड़ी खेलते रहे, न रुके न सिर ही ऊपर उठाया। उन्होंने सोचा कि मालिक ल्यू फिर किसी रिक्शावाले से झगड़ रहा होगा।

श्याङचि के मुँह से फौरन कुछ नहीं निकला। वह कहना तो बहुत कुछ चाहता था, पर एक शब्द भी नहीं कह पाया। वह गूँगे की तरह खड़ा गर्दन आगे बढ़ाकर गले में भरी राल ज़ोर-ज़ोर से घोटता रहा।

"निकल जाओ, और फुर्ती दिखाओ। यहाँ कुछ सस्ते में पान की उम्मीद लगाये हुए थे? मैं तुम्हारे पैदा होने से भी पहले से सभी चालें समझता हूँ!" इस समय बूढ़ा सिर्फ कलपने के लिये कलप रहा था, उसे असल में श्याङचि पर उतना क्रोध नहीं आ रहा था जितना अपनी पुत्री पर। वह बहुत गुस्से में होने पर भी यह अच्छी तरह जानता था कि श्याङचि ईमानदार और शरीफ आदमी है।

"ठीक है, मैं जाता हूँ!" श्याङचि इससे अधिक कुछ नहीं बोल सका। उसने सोचा जितनी जल्दी वहाँ से निकल जाये उतना ही अच्छा, वह जानता था कि वह बहस-मुबाहिसे में उनसे पार नहीं पा सकेगा।

बाकी रिक्शावाले तमाशा देखने के लिये वहाँ जमा थे। उन्हें सुबह की घटना

याद आयी तो वे मालिक ल्यू को श्याङचि को गालियाँ देते देखकर बहुत खुश हुए। मगर बूढ़े के श्याङचि को भगा रहे होने के बारे में जानकर उनकी हमदर्दी फिर श्याङचि से हो गयी। पिछले कुछ दिनों से वह बूढ़े के लिये काम करते-करते अधमरा हो गया था, मगर अब वही मालिक ल्यू इतना अहसानफ़रामोश होकर उसे फटकार रहा था। हरेक ने इस अन्याय को महसूस किया। कुछ दौड़े हुए आये और पूछने लगे, "क्या हो रहा है, श्याङचि?" उसने सिर्फ अपना सिर हिला दिया।

"रुको, श्याङचि! अभी मत जाओ!" पलक मारते ही बाघिन ने अपना रास्ता तय कर लिया। उसकी पुरानी योजना बेकार हो चुकी थी। उसे श्याङचि को अपने बस में रखने के लिये तुरन्त कुछ न कुछ करना चाहिए, नहीं तो मुर्ग़ी हाथ से निकल जायेगी और अण्डा भी फूट जायेगा। "हम दोनों एक ही धागे से बँधे दो टिड्डों की तरह हैं—दोनों में से कोई भी भाग नहीं सकता! ठहरो, अभी मैं सारी बात साफ़ किये लेती हूँ!" वह अपने बाप की ओर मुड़ी और तड़ाक से बोली, "हमेशा के लिये किस्सा खत्म कर ही लें! मेरे बच्चा होने वाला है और वह श्याङचि से है! वह जहाँ जायेगा, मैं भी वहीं जाऊँगी! तुम मेरी शादी उससे करोगे या हम दोनों को बाहर निकालोगे? सोच लो, यह तुम्हें ही तय करना है!"

उसने उम्मीद भी नहीं की थी कि पूरा मामला इतनी जल्दी इस नाज़ुक मोड़ पर आ जायेगा, और उसे मज़बूर होकर अपनी तुरप चाल इतनी जल्दी चलनी पड़ेगी। मालिक ल्यू और भी ज़्यादा हकबकाया हुआ था। मगर इतना सब हो जाने पर भी वह दबने वाला नहीं था, तमाम लोगों की हाजिरी में तो और भी नहीं।

"तुम्हें यह कहते हुए शर्म नहीं आयी, मुझे इस पर शर्मिन्दगी महसूस हो रही है।" उसने अपने गाल पर चाँटा मारा। "छी, छी! छिनाल कहीं की!"

माच्याङ खेल रहे लोग कुछ गड़बड़ का आभास होने पर सन्न से रह गये। परन्तु कुछ न स्पष्ट होने के कारण वे कुछ कह न सके। एक खड़ा हो गया और बाकी हक्केबक्के से माच्याङ के अपने मोहरों को ताकते रह गये।

अब खुलकर बात कर चुकी होने पर बाघिन कुछ जोश में आ गयी थी। "मैं बेशर्म? तुम यह कहने वाले कौन होते हो? क्या तुम यह पसन्द करोगे कि मैं तुम्हारी सारी गन्दगी कुड़कुड़ा दूँ? कतई नहीं। यह मेरी पहली भूल है और इसके लिये दोषी तुम ही हो! एक भरे-पूरे मर्द को पत्नी की ज़रूरत होती है और एक भरी-पूरी औरत खाविन्द चाहती है—यह स्वाभाविक है। मगर तुम उनहत्तर साल के हो गये और यह भी नहीं जानते। हाँ, मैं यह बात इन सबको सुनाने के लिये नहीं कह रही हूँ।" उसने सभी तमाशबीनों की ओर इशारा किया। "यह तो मैं इसलिये कह रही हूँ कि पूरा मामला साफ़ हो जाये और हम यह जान लें कि हमारी स्थिति क्या है। तुम मेरा मामला निपटाने के लिये इस जन्मदिन के लिये लगाये गये शामियाने का इस्तेमाल भी कर सकते हो।"

"मैं?" बूढ़े का चेहरा लाल से सफ़ेद हो गया। अब उसमें अपने पुराने छड़ेपन के दिनों जैसी दिलेरी आ गयी थी। "पहले तो मैं इसे ही जला डालता हूँ!"

"जो चाहो करो!" बाघिन के होंठ काँप रहे थे और उसकी आवाज़ भद्दी थी। "मैं अपना सामान बाँधकर जा रही हूँ। मुझे कितना धन दे रहे हो?"

"धन मेरा है और जिसे मेरी मर्जी होगी उसे ही दूँगा!" वास्तव में बूढ़े को बहुत दुख हो रहा था कि उसकी बेटी उसे छोड़कर जाना चाहती थी पर अब वह अपने वचन से पीछे नहीं हट सकता था। उसने अपना दिल कड़ा किया।

"तुम्हारा धन? इतने सालों तक मेरे तुम्हारी मदद करते रहने के बाद भी तुम यही सोचते हो! याद रखो, अगर मैं न होती तो तुमने सारा धन रण्डियों पर खर्च कर दिया होता। आख़िरकार, हमें कुछ तो ईमानदारी से काम लेना चाहिए।" बाघिन ने श्याङचि को देखा। "कुछ बोलो!"

श्याङचि सुम्बे की तरह सीधा खड़ा रहा। हमेशा की तरह वह सोच ही न पाया कि उसे क्या बोलना चाहिए।

पन्द्रहवाँ अध्याय

किसी बूढ़े या छोकरी को चोट पहुँचाना श्याङचि के लिये असम्भव था, इसलिये उसके अपनी ताकत आजमा पाने के लिये कोई लक्ष्य नहीं था। ढिठाई से काम ले? वह ऐसा आदमी ही नहीं था। वह बड़ी आसानी से बाघिन को धोखा देकर भाग सकता था, मगर उसने उसका साथ देने के लिये ही अपने बाप से झगड़ा किया था और किसी को भी अन्दरूनी कहानी की जानकारी न होने से सतही तौर पर ऐसा ही लगता था कि वह उसके लिये ही अपने को बलि की बकरी बना रही है। इसलिये उन सबके सामने उसे बहादूर दिखना पड़ा। अपने आपको मर्द साबित करने के लिये वह कम से कम वहाँ खड़ा तो रहा था। वैसे उसके पास कहने को कुछ था नहीं और उसे स्थिति के अपने आप साफ़ हो जाने का इन्तज़ार ही करना था।

बाप बेटी एक दूसरे को घूरते रहने के अलावा कुछ न कर पाये। श्याङचि चुप था। बाकी रिक्शावाले किसी के भी पक्ष में क्यों न होते, मगर उनके लिये बीच में पड़ना मुश्किल ही था। खामोशी की वजह से असमंजस में पड़े हुए माच्याङ खिलाड़ियों को लगा कि उन्हें किसी तरह उसे तोड़ना चाहिए। फिर भी वे घिसीपिटी बातें ही कह सकते थे और उन्होंने दोनों पक्षों से कहा कि कोई भी समस्या ऐसी नहीं जो सुलझायी नहीं जा सकती हो, और उनसे अनुरोध किया कि शान्ति से बैठकर बातचीत कर लें। बेचारे इससे ज़्यादा कहते भी क्या? इससे कुछ हल नहीं होना था और वे यह जानते थे। दोनों में से किसी पक्ष के भी झुकने को तैयार न होने की बात स्पष्ट

हो जाने पर वे मौका देखकर खिसक लिये। कहावत भी तो है, "खरा अफसर घरेलू झगड़ों में कभी दखलअन्दाज़ी नहीं करता।"

सभी के जाने से पहले ही बाघिन ने थ्येनशुन कोयला टाल के श्री फङ को जबरदस्ती रोक लिया था। "श्री फङ, आपके टाल में तो जगह है न? श्याङचि को कुछ दिन वहाँ रहने दीजिए। हम जल्दी ही अपना बन्दोबस्त कर लेंगे, इसलिये वह आपके सर पर ज़्यादा समय बोझ नहीं बना रहेगा। श्याङचि, तुम श्री फङ के साथ जाओ, हम कल मिलकर अपने मसलों पर बातचीत कर लेंगे। अगर मैं इस घर से दुल्हन की पालकी में न गयी, तो नहीं जाऊँगी। श्री फङ आप ज़रा श्याङचि पर नज़र रखें, कल मैं आकर उसे ले जाऊँगी!"

श्री फङ यह जिम्मेदारी नहीं लेना चाहते थे, इसलिये डर के मारे वह जोरों से साँस ले रहे थे।

जाने की जल्दी में श्याङचि झटपट बोला, "मैं भागूँगा नहीं!"

बाघिन ने अपने बाप को घूरा, अपने कमरे में गयी और चीख-चीखकर रोने लगी। उसने अन्दर से अपने दरवाज़े का ताला बन्द कर लिया।

श्री फङ ओर अन्य लोगों ने मालिक ल्यू को भी अपने कमरे में जाने के लिये समझाने की कोशिश की, मगर दुनियादारों की तरह उसने उनके रुकने का और कुछ और शराब पीने पर ज़ोर दिया। "सज्जनो, आप इत्मीनान रखें कि अब से उसका रास्ता अलग है और मेरा अलग, हम और झगड़ा नहीं करेंगे। उसके एक बार चली जाने पर सब मेरे कोई बेटी न होने की तरह ही होगा। मैंने इतने सालों में दुनिया में अपनी जगह बनायी, पर उसने मेरी सारी इज्ज़त धूल में मिला डाली। बीस साल पहले मैंने उनकी बोटी-बोटी काट डाली होती। मगर ख़ैर अब वह जो करती है, उसे करने दो। वह क्या सोचती है कि उसे मुझसे एक भी थुङछ्येन मिल सकेगा? हरगिज नहीं! एक थुङछ्येन नहीं दूँगा, एक भी नहीं! देखते हैं वह कैसे ज़िन्दा रहती है। उसे कोशिश करने दें, तब उसकी समझ में आयेगा कि कौन बेहतर है, उसका बाप या कोई सरकारी साँड़! ओ सभी मत जायें, कुछ और शराब लें!"

मेहमानों ने बहाना बनाकर जाने की इजाजत ली और उनके झगड़े में उलझने से बचने के लिये तेजी से चले गये।

श्याङचि थ्येनशुन कोयला टाल पर चला गया। निस्सन्देह सब झटपट तय हो गया। बाघिन ने माओच्यावान इलाके की एक बड़ी चाल में दक्षिण की ओर खुलते दो छोटे कमरे किराये पर ले लिये। उसने एक कागज सटाने वाले को बुलाकर उनकी दीवारों पर फ़र्श से लेकर छत तक सफ़ेद कागज चिपकवाया, फिर श्री फङ को कुछ "प्रसन्नता" रेखाक्षर लिख देने के लिये कहा और उन्हें दीवारों पर चिपका दिया। इसके बाद वह चाँदी के सितारों से सजी पालकी किराये पर लेने ओर सोलह बाजे वालों का बन्दोबस्त करने गयी, मगर उसने सुनहरी लालटेनें या अनुरक्षक नहीं माँगे।

इसके बाद उसने लाल साटन का अपना शादी का जोड़ा बनाया और नववर्ष के पहले ही उसे तैयार कर लिया। रीति-रिवाज़ के अनुसार नववर्ष के पहले और पाँचवे दिन के बीच कोई सिलाई नहीं की जाती थी। महान दिन छठी तारीख को था, वह अच्छा मुहूर्त था और उस दिन घर से प्रस्थान भी निषिद्ध नहीं था। यह सब प्रबन्ध हो जाने पर उसने श्याङचि को अपने लिये नये कपड़े बनवाने को कहा, "जीवन में शादी एक ही बार होती है!"

श्याङचि के जेब में सिर्फ पाँच युवान ही थे।

बाघिन ने आँखें तरेरकर उसे देखा। "क्या? वे तीस युवान जो मैंने तुम्हें दिये थे?"

श्याङचि को सच बताना पड़ा और छाओ के मकान पर हुई घटना की पूरी कहानी सामने आ गयी। उसने कुछ विश्वास और कुछ सन्देह दोनों में आँखें मिचकायीं।

"ठीक है, मेरे पास तुमसे बहस का वक़्त नहीं है। हम दोनों को अपनी अन्तरात्मा के अनुसार काम करना चाहिए! ये रहे पन्द्रह युवान। अगर उस दिन तुम दूल्हे की तरह सजधजकर नहीं आये तो देखना मैं क्या करती हूँ!"

नववर्ष के छठे दिन बाघिन दुल्हन की पालकी में चढ़ी। वह बाप से एक भी शब्द बोले बिना, भाइयों के किसी अनुरक्षण के बिना, मित्रों या सम्बन्धियों की शुभकामनाओं के बगैर ही, बस उन झाँझों और ढोलों के साथ विदा हुई जिनकी जश्नी गूँज ने नववर्ष के बाद अभी तक सजी हुई सड़कों को और गुलज़ार कर दिया था। बारात शीआनमन दरवाज़े और शीसि तोरणद्वार से होकर आहिस्ता-आहिस्ता आगे बढ़ी तो नववर्ष के कारण नये-नये कपड़े पहने हुए दर्शकों, विशेष रूप से दुकानों में काम करने वालों, को ईर्ष्या भी हुई और उनमें एक भावनात्मक हलचल सी भी मची।

श्याङचि थ्येनछ्याओ क्षेत्र से खरीदे नये कपड़े पहने हुए था। उसके चेहरे पर चमक थी और वह तीन माओ वाली साटन की टोपी पहने हुए था। वह भले ही अपने इर्दगिर्द हर चीज़ को अहमकाना तरीके से घूर और हर हलचल को सुन रहा था, फिर भी लगता था कि वह यह भूल गया था कि वह कौन है। उसे कोयले के टाल से उठाकर एकदम नये कागज चिपकायी हुई दीवारों वाले हिम जैसे सफ़ेद वैवाहिक कक्ष में डाल दिया गया था, और वह एकदम हक्का-बक्का रह गया था। उसका अतीत कोयले के टाल में लगे कोयले के ढेरों की तरह अन्धकारमय था। अब सहसा वह एक जगमगाते हुए सफ़ेद कमरे में खड़ा था और उसकी दीवारों पर सुर्ख़ "प्रसन्नता" रेखाक्षर चिपके हुए थे। उसने महसूस किया कि यह एक सफ़ेद, कोहरेदार, अवसादक मज़ाक था।

कमरों में बाघिन की पुरानी कुर्सियाँ, मेज और पलँग सजाये गये थे। अंगीठी और कटायी-तख़्ता एकदम नये थे, और एक कोने में रंगीन परों का बना एक झाड़न खड़ा था। पुराने फर्नीचर को तो वह पहचान गया, और इस नये और पुराने के मेल

से उसे अपना अतीत याद आया और वह भविष्य के बारे में आशंका से भर गया। हर मामले में चालाकी से चलाया गया वह खुद भी किसी पुराने मगर फिर भी नये जेवर, एक अजीब पहचानी न जा सकने वाली चीज़ से मिलता-जुलता था। वह न तो रो सकता था, न ही हँस सकता था और उन आरामदेह छोटे कमरों में ऐसी फूहड़ता से उठ-बैठ रहा था जैसे काठ के छोटे पिंजरों में बन्द बड़ा खरगोश तेज चल पाने पर भी बच निकलने में असमर्थ होने पर तरसती निगाहों से बाहर झाँक रहा हो।

लाल जैकेट पहने, चेहरे पर पाउडर और लाली लगाये हुए बाघिन अपनी निगाहों से उसका पीछा करती थी। वह उससे आँखें मिलाने का साहस नहीं कर पा रहा था। वह भी कोई विचित्र वस्तु लग रही थी, पुरानी लेकिन नयी भी, लड़की लेकिन औरत भी, नारी लेकिन नर भी, मानव लेकिन जानवर की तरह भी। लाल जैकेट पहने इस जानवर ने उसे पहले ही पकड़ रखा था और अब उसे बड़ी सफाई से खत्म करने की तैयारी कर रहा था। यों तो कोई भी उसे कुछ ही क्षणों में खत्म कर सकता था, मगर यह जानवर खास तौर पर बदजात था और कभी उसे घूरते, कभी उस पर हँसते हुए हर क्षण उस पर निगरानी रख रहा था, और वह उसे कसकर पकड़ने तथा उसकी पूरी ताकत निचोड़ लेने में सक्षम था। अब किसी तरह भी बच नहीं सकता था। उसने अपनी साटन की छोटी टोपी उतारी और उसके ऊपर के लाल फुँदने को बहुत देर तक ताकता रहा और उसकी नज़र इस कदर धुँधला गयी कि उसने परे दीवार को देखा तो वह उसे कूदते, चक्कर काटते लाल बिन्दुओं से ढकी दिखायी दी। उन सबके बीचोंबीच सबसे बड़ा बिन्दु था–चेहरे पर घिनौनी मुस्कान लिये हुए बाघिन।

सुहागरात को ही आख़िर श्याङचि असल बात जान पाया–बाघिन वास्तव में गर्भवती नहीं थी। किसी जादूगर के अपनी हाथ की सफ़ाई का रहस्य समझाते हुए उसने उसे बताया, "अगर मैंने तुम्हें इस तरह धोखा न दिया होता तो तुम कभी हार न मानकर शादी करने को राजी न हुए होते। मैंने अपने पायजामे के नेफ़े पर तकिया टिकाया हुआ था। हा, हा, हा!" वह आँखों में आँसू आने तक हँसती ही रही। "अरे मूर्ख गुलगुले! इसे भूल जाओ! मैंने तुम्हारा अपमान नहीं किया है! तुम कौन हो और मैं कौन हूँ? मैं सिर्फ तुम्हारी वजह से अपने बाप से झगड़ा करके आयी हूँ। तुम्हें तो लोक-परलोक दोनों में मेरा अहसान मानना चाहिए!"

अगले दिन, श्याङचि अलस्सुबह ही बाहर निकल गया। अधिकांश दुकानें फिर खुल गयी थीं, फिर भी कुछ अभी तक बन्द ही थीं। दरवाज़ों पर नववर्ष के शुभ रेखाक्षर लाल चमक रहे थे, मगर पीले कागज से काटकर बनाये गये नववर्ष के चित्रों और रेखाक्षरों को कहीं-कहीं हवा ने फाड़ दिया था। सड़कें काफ़ी शान्त होने पर भी कुछ रिक्शा दिखायी दे रहे थे। उनके चालक आम दिनों से कुछ अधिक निखरे, फुर्तीले नज़र आते थे, लगभग सभी ने नये जूते पहने हुए थे; और कुछ रिक्शों के पीछे लाल कागज का टुकड़ा चिपका हुआ था।

श्याङचि को उनसे बेहद ईर्ष्या होने लगी। उसे लगा कि वे तो सजे-धजे हुए थे जबकि वह इन पिछले कुछ दिनों से एक तुम्बी में बन्द रहा था। वे बड़े सन्तोष से अपने काम में व्यस्त थे और वह सड़कों पर बेकार ही भटकते हुए वक़्त बरबाद कर रहा था। आवारगर्दी कर रहे होने पर उसे बड़ी ऊब महसूस हुई, मगर भविष्य की किसी भी परियोजना पर उसे अपनी पत्नी का मुँह जोहना पड़ता था—और पत्नी भी कैसी! श्याङचि को लगा कि उसका लम्बा कद और ताकत बेकार थी। उसका पहला काम उस लाल जैकेट पहने बघेले दाँतों वाली पत्नी नामक जानवर की सेवा करना था। अब वह मानव नहीं रह गया था, मांस का एक पिण्ड बन चुका था। अब उसका कोई अस्तित्व ही नहीं था, वह बिल्ली द्वारा पकड़े हुए चूहे की तरह उसके जबड़ों में फँसा संघर्ष कर रहा था। उसका मन नहीं चाहता था कि वह बाघिन से किसी भी विषय पर बात करे, उसे बच भागना था और कार्रवाई की योजना बनते ही वह बिना कुछ कहे खिसक लेता। इसमें कुछ भी शर्मनाक न था, आख़िर वह भी तो ऐसी चुड़ैल थी जिसने उसे धोखा देने के लिये तकिया इस्तेमाल किया था। उसने अपने आपको बहुत दयनीय महसूस किया। उसका मन हुआ कि वह अपने नये कपड़े फाड़कर चिथड़े-चिथड़े कर डाले, अपने शरीर के अन्दर और बाहर दोनों को पानी में सराबोर करके अपने शरीर पर चिपकी मतली लाने वाली गन्दगी की परत को धो डाले। उसे बाघिन का मुँह तक देखने की कतई कोई इच्छा नहीं रह गयी थी।

कहाँ जाना चाहिए? उसे नहीं पता था। आम तौर उसकी टाँगें दूसरों की हिदायतों पर चलती थीं, आज वे आज़ाद थीं लेकिन उसका दिमाग़ खाली था। शीसि तोरणद्वार से दक्षिण की ओर जाते हुए उसने अपने सामने श्वेनऊमन दरवाज़े से गुजरती दूर तक फैली हुई सड़क देखी तो वह और भी भ्रम में पड़ गया। दरवाज़े को पीछे छोड़ने पर उसे एक सार्वजनिक स्नानघर दिखायी दिया। उसने उसमें जाने का फैसला किया।

वह कपड़े उतारकर नंगा हुआ, अपना शरीर देखने पर उसे बहुत शर्म आयी। हौज में पानी इतना गर्म था कि उसने उसे सुन्न कर दिया। उसने आँखें बन्द कर लीं और सारी जमा गन्दगी उसके थुलथुले बदन से रिस-रिसकर बाहर आती लगी। अपने आपको रगड़ने का साहस न करके वह वहाँ सुन्न पड़ा रहा और उसके माथे से पसीने की बड़ी बूँदें बहती रहीं। उसकी साँसे तेजी से चलनी शुरू हुईं तो वह रेंगकर बड़ी सुस्ती से बाहर निकला और उसकी देह चारों ओर से नवजात शिशु की तरह चमकीली लाल नज़र आ रही थी। वह उस तरह इधर-उधर घूमने में डर रहा था, एक बड़ा तौलिया लपेटे होने पर भी वह अपने को कुरूप ही महसूस कर रहा था। बदन से ताबड़तोड़ पसीना छूट रहा था फिर भी गन्दगी का वह अहसास कायम था, मानो उसके दिल का वह काला दाग कभी न धुल पायेगा। मालिक ल्यू और अपने सभी परिचितों की निगाहों में वह हमेशा के लिये "कुलटा" बनकर रह गया था।

पसीना बहना बन्द होने से पहले ही उसने जल्दी से कपड़े पहने और तेजी से

बाहर चला गया। वह दूसरों के उसका नंगा बदन देख लेने से भयभीत था। बाहर ठण्डी हवा ने उसमें हल्केपन की संवेदना जगायी। अब सड़कों पर पहले से ज़्यादा चहलपहल थी और स्वच्छ आकाश ने हरेक के चेहरे की दमक बढ़ा दी थी। वह अभी तक तय नहीं कर पाया था कि कहाँ जाये। दक्षिण, पूर्व और फिर दक्षिण की ओर बढ़ते हुए वह थ्येनछ्याओ क्षेत्र की ओर गया। नववर्ष के बाद नौ बजे के आसपास नाश्ते कर चुकने पर दुकानों के एप्रेण्टिस वहाँ जमा हुआ करते थे, हर तरह के फेरी वाले और तमाशे दिखाने वाले भी बहुत सबेरे ही वहाँ जम जाया करते थे। श्याङचि के पहुँचने तक झाँझ-मजीरों और ढोलों की आवाजों से यहाँ वहाँ बड़ी भीड़ जमा हो चुकी थी। वह अभी तक इन मनोरंजनों का मजा लेने के रौ में नहीं था, वह तो हँसना भी भूल चुका था।

आम तौर पर हास्य वार्तालाप, करतबी भालू, जादू, नटों के खेल, गाथागीत, ढोलों के साथ सुनाये गये लोकगीत और किस्से उसको सचमुच खुश कर सकते और मुस्कराहट में उसका बड़ा-सा मुँह खोल सकते थे। उसके पेइफिङ छोड़ना सह न पाने की एक बड़ी वजह यह थ्येनछ्याओ क्षेत्र ही था। वहाँ चटाइयों से बने शेडों और लोगों की भीड़ के नजारे उसे यहाँ की अनेक मजेदार और पसन्दीदा चीज़ों की याद दिला देते थे। परन्तु आज भीड़ों को ठेलकर आगे जाने का उसका मन नहीं था और वह उनकी हँसी में साथ भी न दे सका। वह जानता था कि उसे किसी शान्त जगह पर चले जाना चाहिए, मगर अपने आपको वहाँ से हटाने की इच्छा नहीं हो रही थी। नहीं, इस चहल-पहल भरी जगह को छोड़ना, थ्येनछ्याओ को छोड़ना, पेइफिङ को छोड़ना असम्भव था। कहीं चला जाये? जाने की कोई जगह नहीं थी। उसे अभी उससे—उस औरत से—सलाह करनी थी! वह बचकर भाग नहीं सकता था और खाली भी बैठा नहीं रह सकता था। उसे सोचने के लिये रुकना ही चाहिए, हर इंसान अपनी पहुँच की सीमा पर पहुँच चुका महसूस करने पर यही करता है। इतने सारे अन्यायों को बर्दाश्त कर चुके होने पर उसे, इसी को इतनी अधिक गम्भीरता से क्यों लेना चाहिए? अतीत को बदला नहीं जा सकता था, केवल आगे ही बढ़ते जाना था।

वह आवाजों, कोलाहल, झाँझो और ढोलों के शोर को सुनते, लोगों और वाहनों की धारा को देखते हुए खड़ा रहा। सहसा उसने उन दो छोटे कमरों के बारे में सोचा। कोलाहल उसके कानों से हट गया, भीड़ उसकी नज़र से ओझल हो गयी, बस उसे लाल "प्रसन्नता" रेखाक्षरों वाले वे दो सफ़ेद, आरामदेह कमरे ही अपना बाकायदा सामना करते हुए नज़र आ रहे थे। वहाँ उसने सिर्फ एक रात ही बितायी थी, फिर भी वे इतने जाने-पहचाने और जिगरी लग रहे थे। तभी ऐसा लगा कि लाल जैकेट वाली वह औरत भी इतनी आसानी से छोड़ी नहीं जा सकती थी। यहाँ थ्येनछ्याओ में उसके पास अपना कुछ नहीं था, वह खुद भी कुछ भी तो नहीं था। उन दो कमरों में उसके पास सब था। उसे लौटना ही पड़ा, यही एक रास्ता रह गया था। उसका समूचा

भविष्य वहीं था। लज्जा, भीरुता, विषाद सब बेकार थे। अगर वह जीना चाहता था तो उसे वहीं जाना होगा जहाँ आशा हो।

वह एक ही साँस में पैदल लौटने लगा और क़रीबन ग्यारह बजे पहुँचा। बाघिन पहले ही खाना पका चुकी थी। भाप पर गर्म किये पहले के पके मानथओ,* गोश्त के कोफ़्तों वाली उबाली हुई पत्तागोभी, जेलीदार सुअर की खाल और सोयाबीन की एक प्लेट और सोया सॉस में मूली। पत्तागोभी के अलावा सभी पकवान मेज पर सजे हुए थे, उसे अभी तक अँगीठी की धीमी आँच पर पकाया जा रहा था और उसमें से बढ़िया सुगन्ध आ रही थी। वह अपनी लाल जैकेट उतारकर रूई भरा साधारण पायजामा और फतूही पहने हुए थी, मगर उसके बालों में सुन्दर लाल मखमली फूल और उस पर चिपका सुनहरी कागज का एक छोटा युवानपाओ वैसे ही लगे हुए थे।

श्याङचि ने उसे एक नज़र देखा। वह दुल्हन जैसी नहीं दीखती थी। वह इतनी फुर्तीली, कुशल और आत्मसन्तुष्ट थी कि उसकी हर हरकत से जाहिर हो रहा लगता था कि वह सालों से शादीशुदा थी। फिर भी उसकी हर बात–उसके खाना पकाने, उसके कमरों को सजाने के तरीके, हवा में हल्की खुशबू और गरमहाट–में कुछ ताजगी थी, और इनका उसने पहले कभी अनुभव नहीं किया था। बाघिन कुछ भी हो, श्याङचि ने महसूस किया कि यहाँ उसका एक घर था और घर हमेशा प्रिय होता है। उसे मालूम नहीं था कि वह क्या करे।

"तुम कहाँ गये थे?" उसने गोभी परोसते हुए पूछा।

"नहाने गया था।" उसने अपना लम्बा लबादा उतार दिया।

"ओह! ठीक है, अगली बार तुम कहीं बाहर जाओ तो कहकर जाना। बिना कुछ बताए यूँ ही मत खिसकना!"

वह कुछ न बोला।

"क्या तुम एक भी शब्द मुँह से नहीं फूट सकते? अगर तुम नहीं बोल सकते, तो मैं तुम्हें सिखा दूँगी!"

उसने घुरघुराहट-सी की, और वह कर ही क्या सकता था? वह जानता था कि उसने एक ऐसी राक्षसी से शादी की है जो खाना पका और बर्तन माँज सकती, उसको गाली दे और उसकी मदद भी कर सकती थी। और इस सबने उसे बहुत बेचैन कर दिया। उसने मानथओ खाना शुरू किया। यह खाना उस खाने से वाकई ज़्यादा स्वाद था जो वह आम तौर पर खाया करता था। यह खूब गर्म होने पर भी उतना अच्छा न लगा और उसे चबाते हुए उसे पहले की तरह भुक्खड़ों जैसा मजा नहीं आया।

खाने के बाद वह खाङ** पर लेट गया और अपनी बाँहों का तकिया बना लिया,

* खमीरे आटे से भाप से पकाई गयी मोटी रोटी।

** उत्तर चीन के बेहद सर्द इलाकों में कच्ची या पक्की ईंटों से बनाया गया सोने और बैठने के लिये चबूतरा। उसके निचले हिस्से में आग जलाकर उसे गर्म रखा जाता है।

उसकी आँखें छत की ओर लगी हुई थीं।

"अरे, जरा आओ बर्तन माँजने में मदद करो, मैं किसी की दासी नहीं हूँ!" उसने बाहर वाले कमरे से आवाज दी।

आलस के साथ वह उठा, उसकी ओर ताका और हाथ बँटाने चला गया। आम तौर पर वह बेहद इच्छुक रहता था, लेकिन अब वह रोष की भावना से काम कर रहा था। रिक्शा अहाते में वह अक्सर उसकी सहायता किया करता था, अब वह उसे जितना ज़्यादा देखता तो उसे उससे उतनी ही ज़्यादा नफरत होती जाती। वह इसके बारे में कुछ भी नहीं कह सकता था लेकिन उसने किसी को भी आज तक इतना नापसन्द नहीं किया था। परन्तु भावनाएँ व्यक्त न कर पाने के कारण वे उसके अन्दर घुटती जा रही थीं। वह उससे अलग नहीं हो सकता था, इसलिये बेकार झगड़ा करने में कोई तुक नहीं था। छोटे कमरों में बार-बार चहलकदमी करते रहने पर जीवन एक बड़ी विडम्बना लगने लगा था।

वह चौका-बर्तन कर चुकी तो उसने चारों तरफ देखकर लम्बी आह भरी। फिर वह मुस्कराई। "क्यों, कैसा रहा?"

"क्या?" श्याङचि अँगीठी के पास बैठा हाथ सेंक रहा था। हाथ वास्तव में ठण्डे नहीं थे, परन्तु उन हाथों को इस्तेमाल करने की कोई दूसरी जगह न थी। कमरे वाकई घर जैसे दीख रहे थे, मगर वह समझ नहीं पा रहा था कि खुद अपने हाथ-पैर कहाँ रखे।

"मुझे घुमाने ले चलो, चलोगे? शुभ्रमेघ बिहार चलें? नहीं, वहाँ जाने के लिये तो कुछ देर हो गयी है! अच्छा, तो यूँ ही सड़कों पर टहलें?" वह विवाहित होने का अधिक से अधिक आनन्द उठाना चाहती थी। विवाह तो बहुत मामूली तरीके से हुआ था, पर यह नयी आज़ादी बहुत बढ़िया थी और पति के साथ मौज करने के यही कुछ दिन थे। पिता के घर में उसे भोजन, कपड़े और जेबखर्च की तो कोई कमी नहीं थी, सिर्फ नजदीकी सम्बन्ध कायम कर पाने वाला मर्द नहीं था। अब वह इस कमी को पूरा करने जा रही थी और श्याङचि के साथ सड़कों पर और बाजारों में इठलाना चाहती थी।

श्याङचि बाहर नहीं जाना चाहता था। पहली बात तो यह थी कि वह पत्नी के साथ खुले घूमने को शर्मनाक मानता था। दूसरे उसे लगता था कि इस प्रकार मिली पत्नी को घर में छिपा कर रखना ही ठीक था। उसमें गर्व करने लायक कुछ भी नहीं था, इसलिये जितने कम लोग उसे देखें, उतना ही अच्छा था। इसके अलावा बाहर जाने पर वाकिफ़कारों का मिलना भी निश्चित था। पश्चिमी नगर के सारे रिक्शावाले श्याङचि और बाघिन के बारे में जानते थे। वह नहीं चाहता था कि उसकी पीठ पीछे वे उसका मजाक उड़ायें।

"क्यों न हम कुछ बातें तय कर लें?" वह वैसे ही बैठा रहा।

"बातचीत करके तय करने का मुद्दा ही क्या है?" वह अँगीठी के निकट आकर खड़ी हो गयी।

उसने हाथ सेंकने बन्द करके उन्हें घुटनों पर रख लिया और लपटों को एकटक देखने लगा। थोड़ी देर बाद उसके मुँह से निकला, "मैं इस तरह निठल्ला नहीं बैठा रह सकता!"

"बदकिस्मत आदमी!" वह हँसी। "मेरा ख़्याल है रिक्शा न चलाने से तुम्हें खुजली हो रही है! उस बूढ़े को देखो। उसने जीवनभर मौज-मस्ती की और बुढ़ापे में एक रिक्शा अहाता खोल लिया। वह रिक्शा नहीं चलाता और अपना शारीरिक श्रम नहीं बेचता बल्कि अपनी अक्ल की कमाई खाता है। तुम भी उससे कुछ सीखो। हर वक़्त रिक्शा चलाते रहने में ही क्या अच्छाई है? पहले हम कुछ दिन मजे करें, हमें अभी कुछ भी तय नहीं करना, जल्दी भी क्या है? मैं अब तुमसे झगड़ा नहीं करूँगी, इसलिये तुम भी कोई बखेड़ा खड़ा करने की कोशिश न करो!"

"पहले कुछ मसले तय करो!" श्याङचि हार मानने वाला नहीं था। वह उससे पार नहीं पा सकता था, इसलिये उसे काम करना ज़रूरी लगा। और इसमें सबसे पहले दृढ़ रवैया अपनाने की ज़रूरत थी, हिचकिचाने से काम नहीं चल सकता था।

"ठीक है, बोलो!" उसने एक स्टूल सरकाया और अँगीठी के पास ही बैठ गयी।

"तुम्हारे पास कितना धन है?" उसने पूछा।

"अब असली बात पर आ गये हो! मैं अच्छी तरह जानती थी कि तुम यही पूछोगे! तुमने मुझसे मेरे धन की वजह से शादी की है, क्या नहीं?"

श्याङचि को लगा कि हवा के झोंके ने उसका गला घोंट दिया है, उसने कई बार राल निगली। मालिक ल्यू और अहाते के सभी रिक्शाचालकों ने सोचा था कि वह बाघिन के धन की खातिर ही उससे शादी कर रहा था, और अब वही आरोप उस पर वह भी लगा रही थी! अकारण ही उसका अपना रिक्शा और धन दोनों चले गये थे। पत्नी के कुछ युवान उसे नाच नचा रहे थे—खाने के लिये भी उसे बाघिन की खुशामद करनी पड़ती। काश वह अपने हाथ उसके गले के इर्दगिर्द रखकर उसे घोंट सकता! उसकी आँखों की पुतलियाँ बाहर निकल आने तक घोंटे रहता! उसका गला घोंटकर अपना गला भी काट लेता। वे मनुष्य नहीं थे, उनका मरना ही बेहतर था। वे दोनों जीने लायक नहीं थे!

वह फिर बाहर जाने के लिये खड़ा हो गया, उसने सोचा कि उसे पहले ही वापस नहीं आना चाहिए था।

बाघिन समझ गयी कुछ गड़बड़ी है। वह कुछ ज़्यादा मिलनसारता से बोली, "अच्छा, अभी बताती हूँ। शुरू में मेरे पास लगभग पाँच सौ युवान थे। पालकी, तीन महीने का किराया, दीवारों पर कागज चिपकाई, कपड़े, छिटपुट खर्चे और तुम्हें जो धन दिया, वे सब मिलाकर सौ युवान बचे है। मेरी बात सुनो, चिन्ता की कोई बात नहीं। जब

तक मौज मना सकते हैं, मना लें। तुम इन तमाम सालों में रिक्शा ही चलाते रहे हो और अपना पसीना बहाते हुए जान देते रहे हो, अब वक़्त आ गया है तुम उम्दा कपड़े पहनकर आनन्द से जीवन बिताओ। मैं भी इतने सारे साल अनब्याही रही हूँ और मुझे भी कुछ आनन्द उठाना चाहिए। हमारा धन खत्म होने वाला होने पर हम जाकर बूढ़े से मदद करने के लिये कहेंगे। अगर उस दिन मेरा दिमाग़ ठीक रहा होता तो मैंने घर कभी न छोड़ा होता। अब मैं शान्त हो गयी हूँ और पिता आख़िरकार पिता ही होता है। मैं उसकी इकलौती बेटी हूँ और तुम्हें उसने हमेशा पसन्द किया है, इसलिये यदि हम झुक जायें और क्षमा माँग लें तो शायद वह बीती बातों को बिसार दे। सवाल इसे कायदे से करने का है! उसके पास धन है और वह हमारी विरासत है, यह सब खरा और खुल्लमखुल्ला और पूरी तरह जायज है। वह तुम्हारे लद्दू जानवर की तरह दूसरों की गुलामी करते रहने से कहीं बेहतर है। कुछ दिनों में तुम जाओ और पहले उसे मिलो। वह तुम्हें मिलने से इंकार करे तो तुम दोबारा जा सकते हो। अगर हम उसे इतनी प्रतिष्ठा दें तो उसका मन बदलना तय है। फिर मैं जाकर उसे मक्खन लगाऊँगी! यह भी मुमकिन है कि हम फिर उसी घर में रहने चले जायें। तब हम फिर वाकई सिर ऊँचा कर पायेंगे और किसी की हिम्मत न पड़ेगी कि वह हमारा तिरस्कार करे। परन्तु यदि हम इसी जगह रहते हुए यह सब बर्दाश्त करते रहे तो हमेशा हमारे नाम पर धब्बा लगा रहेगा—क्या तुम ऐसा नहीं समझते?"

यह सब श्याङचि को नहीं सूझा था। बाघिन के छाओ परिवार में आकर उससे मिलने के बाद से वह यही सोचता रहा था कि उससे शादी करके वह उसके धन से रिक्शा खरीदकर खुद उसे चलायेगा। पत्नी का धन लेना कोई बहुत सम्मानजनक बात नहीं थी, परन्तु दोनों का सम्बन्ध कुछ कुत्सित होने की वजह से फर्क ही क्या पड़ता था? पर उसे यह कभी सूझा ही न था कि बाघिन अपनी यह तुरप चाल छिपाये हुए होगी। किसी बेशर्म के लिये यह वाकई बढ़िया तरीका होता। परन्तु श्याङचि वैसा आदमी नहीं था।

सब बातों पर सोचते-सोचते वह समझ गया कि अगर आपके पास कुछ धन हा और कोई उसे छीन ले तो न्याय माँगने के लिये कोई जगह न थी। कोई आपको धन दे, आपको उसे मजबूरी में स्वीकार करना पड़े और फिर उसके बाद से आप अपने मालिक नहीं रह जाते। शारीरिक शक्ति और महत्वकांक्षा बेकार हो जाती है और आप दूसरों के नौकर, अपनी पत्नी के खिलौने और ससुर के गुलाम बन जाते हैं। लोग पंछियों की तरह हैं: अगर खुद दाना चुगने की कोशिश करें तो जाल में फँस जाते हैं; अगर दूसरों का अनाज खायें तो बड़े सन्तोष से अपने पिंजरे में पड़े उन्हें गाना सुनाते हुए किसी भी समय बेचे जाने की उम्मीद में रहना पड़ता है।

वह मालिक ल्यू से मिलने नहीं जाना चाहता था। बाघिन से उसका सम्बन्ध

अत्यन्त निकट का था, परन्तु बूढ़े से उसके ऐसे ताल्लुकात न थे। उसने उसे धोखा दिया था, अब वह उसके बाप से माफी कैसे माँग सकता था?

"मेरे पास करने के लिये कुछ तो होना ही चाहिए!" कह सका। वह फिजूल बोलकर अपने को थकाना नहीं चाहता था और झगड़ना भी नहीं।

"तुम्हारी किस्मत में गुलामी ही बदी है!" उसने उसे चिढ़ाते हुए कहा। "कुछ करना ही चाहते हो तो व्यापार करो!"

"व्यापार करना मुझे नहीं आता! मैं कभी पैसा नहीं बना पाया! रिक्शा चला सकता हूँ, मुझे रिक्शा चलाना पसन्द है!" उसके माथे की नसें उभर आयीं।

"देखो, मैं तुम्हें बताए दे रही हूँ, तुम वही नहीं करोगे! मैं तुम्हें पसीने से बदबु आते हुए अपने बिस्तर पर लेटा नहीं देख सकती। तुम्हारे अपने विचार हैं और मेरे अपने ख़्यालात हैं, देखते हैं कौन जीतता है। तुमने मुझसे विवाह किया, परन्तु उसका पूरा खर्चा मैंने उठाया, तुमने एक थुङच्येन भी नहीं दिया। जरा सोचो, हम दोनों में से किसकी चलनी चाहिए?"

एक बार फिर श्याङचि को कोई जवाब न सूझा।

सोलहवाँ अध्याय

श्याङचि पहले चाँद्रमास के पन्द्रहवें दिन तक बेकार रहा, उसी दिन फानूस मेला था। तब तक वह इसे बर्दाश्त करने की हालत में नहीं रह गया था।

बाघिन अत्यन्त प्रसन्न थी। वह उत्सव के मौके पर युवानश्याओ* उबालती और च्याओचि बनाती दौड़धूप करती रही, दिन में मन्दिर के मेले में गयी और रात को सड़कों पर लटके रंगबिरंगे फानूस देख-देखकर इठलाती रही। उसने श्याङचि को कुछ भी कहने-करने नहीं दिया, बस घर में बने और बाजार से ख़रीदे हुए तरह-तरह के पकवान चखने में व्यस्त रखा।

उनकी चाल में सात या आठ परिवार रहते थे, उनमें से ज़्यादातर के एक एक कमरे मे सात-आठ जन ठूँसे हुए थे। उनमें रिक्शाचालक, फेरी वाले, पुलिस वाले और नौकर शामिल थे। वे सभी अपने कामकाज में ही लगे रहते, उन्हें क्षणभर भी फुरसत न मिलती। बच्चे भी हर सुबह लपसी लेने और तीसरे पहर केरी जमा करने के लिये छोटी टोकरियाँ लेकर जाते थे। केवल बहुत छोटी उम्र के बच्चे ही हाथापाई करते और खेलते आँगन में घूमते रहते थे। छोटे चूतड़ काटदार पायजामों में ठण्ड से जमकर लाल-सुर्ख से नज़र आते थे। राख, धूल और कूड़ा-करकट सब आँगन में

* इस त्योहार के मौके पर लसदार चावल और चीनी से बनाया जाने वाला गोलाकार पकवान। यह मिलन का प्रतीक समझा जाता है।

जमा होते थे, किसी का उन्हें बुहारने की फुरसत न थी। आँगन के बीचोंबीच बर्फ की एक चादर थी, कुछ बड़े बच्चे केरी जमा करके लौटने के बाद उसे स्केटिंग-रिंक के तौर पर इस्तेमाल करते थे। वे इधर-उधर फिसलते-घिसटते खूब चिल्लाते थे। सबसे बुरी हालत तो बूढ़ों और औरतों की थी। बूढ़े भूखे और फटे-पुराने कपड़े पहने बर्फ की तरह ठण्डे खाटों पर लेटे शारीरिक तौर पर समर्थ लोगों के उनके लिये लपसी का एक कटोरा बना देने की दयालुता दिखाने का उत्सुकता से इन्तज़ार करते रहते थे। युवतर लोग कभी कुछ धन कमा लाते तो कभी खाली हाथ लौटते; और फिर वे गुस्साते और लड़ने का कोई न कोई बहाना निकाल लेते। भूख से अधमरे बूढ़े सिर्फ आँसू पीकर ही रह जाते थे। औरतों को तो अपने कमाऊ मर्दों के अलावा बूढ़ों और बच्चों की देखभाल भी करनी पड़ती थी। गर्भवती होने पर भी वे हमेशा की तरह काम करतीं, लेकिन ख़ाने में उन्हें केवल मक्के के आटे की रोटी और शकरकन्द का दलिया ही मिल पाता। इसके अतिरिक्त उन्हें निर्धनों के लिये बने राहत केन्द्रों से लपसी लानी पड़ती तथा और भी तरह-तरह के धन्धे करने पड़ते। बूढ़ों और बच्चों को खिलाने और उनके सो जाने के बाद उन्हें बर्तन माँजने पड़ते और परिवार की आमदनी बढ़ा पाने के लिये तेल के लिए की धुँधली लौ में कपड़ों की मरम्मत और सिलाई करनी पड़ती। दीवारों की दरारों में से सीटी बजाते हुए घुसती हुई बर्फानी हवा उनके कमरे की बचीखुची गर्माहट को ले जाते हुए उसे बर्फ की तरह ठण्डा बना डालती। वे चिथड़े पहने, पेट में एक या आधा कटोरा लपसी ही डाले, कभीकभार कोख में छह-सात महीने का बच्चा लिये हुए परिश्रम करती रहतीं, फिर भी उन्हें पहले बूढ़ों और बच्चों को भरपेट खाना देना पड़ता। रोगों से लदी वे, तीस वर्ष की उमर तक पहुँचते-पहुँचते उनकी चाँद निकल आती लेकिन उन्हें आराम कभी नसीब न होता। बीमारी के उन्हें खा लेने पर उनके परिवारजनों को उनके ताबूत के लिये भी "मानवप्रेमियों" के सामने हाथ फैलाने पड़ते। सोलह और सत्रह वर्ष की लड़कियों के पास पायजामे तक न होते और वे चिथड़े में लिपटीं अपने कमरे—स्वाभाविक कैदखाने—में ही अपनी माँओं का हाथ बँटाती रहतीं। पाखाने मे जाने के लिये कमरे से बाहर खिसकने से पहले उन्हें निश्चित होना पड़ता कि आँगन में कोई नहीं है। पूरा जाड़ा वे कभी सूरज या नीला आकाश न देख पाती। इनमें से भद्दी बाद में अपनी माँ की जगह लेतीं; कुछ अच्छी दिखने वाली अच्छी तरह जानती थीं कि वे देर-सबेर "भविष्य में सुख उठाने के लिये" अपने माँ-बाप द्वारा बेच दी जायेंगी।

ऐसी चाल में रहते हुए बाघिन बहुत आत्मतुष्ट महसूस करती थी। उन सबमें अकेली वही थी जिसे रोटी-कपड़े की चिन्ता नहीं करनी पड़ती थी और जिसके पास घूमने-फिरने और मनोरंजन के लिये फुरसत ही फुरसत रहती थी। वह सिर ऊँचा करके, अपनी श्रेष्ठता के बारे में सजग और अपने गरीब पड़ोसियों से संदूषित हो जाने से भयभीत उन्हें नज़रअन्दाज़ करते हुए चलती। वहाँ अक्सर आते फेरी वाले

सस्ती से सस्ती चीज़ें ही बेचा करते थे—हड्डियों से मांस की छीलन, ठण्ड से जमी हुई पत्तागोभरी, सोया का बेउबला दूध, खच्चर और घोड़े का माँस। बाघिन के वहाँ आने के बाद से भेड़ की सिरी, धुआँई हुई मछली, बन्द और मसालेदार चटनी में तला हुआ तओफू जैसी महंगी चीज़ें बेचने वाले भी फाटक पर आने लगे। वह उनसे कुछ न कुछ सामान लेकर नाक ऊँची किये हुए अपने कमरे में लौटती तो छोटे-छोटे बच्चे अपनी दुबली-पतली, गन्दली उँगलियाँ मुँह में खोंसे उसे ऐसे ताकते रहते जैसे वह कोई राजकुमारी हो। वह मौज मारने पर तुली हुई थी और दूसरों के दुख न तो वह देख सकती थी और न ही देखती थी।

श्याङचि उसके आचरण को नापसन्द करता था। वह जीवनभर गरीब रहा था, वह जानता था कि कंगाली क्या थी और वह वे तमाम तरह के नाश्ते नहीं करना चाहता था—यह उसे धन की बरबादी जान पड़ती थी। इससे भी बढ़कर तो यह था कि वह इस दुखद निष्कर्ष पर पहुँच गया था कि वह उसे कभी रिक्शा नहीं चलाने देगी, और दुधारू गाय को और ज़्यादा दोहने के लिये मोटा करने की तरह उसे बढ़िया खाने खिलाने की कोशिश ही कर रही थी। वह महज उसका खिलौना बनकर रह गया था। ऐसे जीवन से उसे घृणा हो गयी थी और वह स्वंय अपने बारे में भी चिंतित था। वह जानता था कि शारीरिक श्रम बेचने वाले को अपने शरीर का ध्यान रखना चाहिए और स्वास्थ्य ही उसका सब कुछ होता है। उसी तरह चलते रहने से तो वह एक दिन महज ढाँचा बनकर रह जायेगा। यह विचार आते ही वह काँप उठा। यदि वह जीना चाहता था तो उसे तत्काल काम शुरू कर देना चाहिए। सारा दिन दौड़ने के बाद वह रात को गहरी नींद सो सकता और उसके लाये हुए पकवानों को खाने के लिये मौजूद नहीं होगा। इस तरह वह उसके हाथों में खिलौना भी नहीं रहेगा। वह अपने इस निश्चय पर दृढ़ था। अगर वह रिक्शे के लिये धन देने की इच्छुक थी तो बेहतर था; अगर नहीं तो वह किराये पर एक रिक्शा ले लेगा। और उसने बेधड़क होकर ऐसा ही किया।

महीने की सत्रहवीं तिथि को उसने दिन-रात रिक्शा चलाना शुरू कर दिया। लम्बे फासले की दो सवारियाँ उठाने के बाद उसे एक नयी तरह का अनुभव हुआ—उसकी पिण्डलियों में कमजोरी और कूल्हों में दर्द महसूस हुआ। वह कारण जानता था, परन्तु खुद को तसल्ली देने के लिये उसने इसे जंग लग चुका होने के कारण समझा। आख़िरकार उसने बीस दिन से रिक्शा नहीं चलाया था और एक बार रिक्शा दौड़ाकर पहले जैसा फुर्तीला बन जाने पर सब ठीक हो जायेगा।

उसे एक और सवारी मिली, इस बार वह एक साथ भाड़े पर लिये गये चार रिक्शों मे से एक चालक था। उन्होंने साझे तौर पर तय किया कि वे लम्बे चालीस-वर्षीय रिक्शावाले को सबसे आगे दौड़ने देंगे। वह रिक्शावाला अच्छी तरह जानता था कि वे तीनों उससे तेज थे लेकिन उसने मुस्कराते हुए आगे बढ़ना शुरू किया। फिर भी वह

उमर को धीमे चलने का बहाना नहीं बनाना चाहता था, इसलिये उसने पूरा दम दौड़ने में लगा दिया।

एक ली के बाद एक युवा रिक्शावाले ने उसकी प्रशंसा की, "तबीयत कैसी है? थक तो नहीं गये? तुम तो बहुत अच्छा दौड़ते हो!"

हाँफते-हाँफते उसने उत्तर दिया, "तुम लोगों के साथ दौड़ाने पर मैं आलस कैसे कर सकता हूँ?"

और दरअसल वह धीमा बिल्कुल नहीं था, श्याङचि को भी उसका साथ दे पाने के लिये अपनी ताकत का सातवाँ या आठवाँ हिस्सा लगाना पड़ा। अधेड़ आदमी का ठवन कुछ भद्दा था। वह कमर से झुक नहीं पाता था, मानो उसकी पूरी पीठ लकड़ी के तख़्ते की तरह हो, इसलिये उसे रिक्शा चलाते हुए पीछे फैली हुई बाँहों के साथ सारे शरीर को आगे झुकाना पड़ता था। इसका मतलब था कि उसे अपने कूल्हे बहुत सख़्ती से हिलाने पड़ते और उसके पैर जमीन को थोड़ा-सा छूकर ऐंठते हुए तेजी से आगे बढ़ते जाते। वह तेज तो दौड़ता था, परन्तु स्पष्ट था कि इसमें उसे बहुत मेहनत करनी पड़ती थी। मोड़ वह इतनी तेजी से काटता था कि बाकी रिक्शावाले सहम जाते। वह इस बात की परवाह ही नहीं करता लगता था कि रिक्शा इतनी तेजी में साथ दे पायेगा या नहीं।

वे अपनी मंजिल पर पहुँचे तो उसकी नाक और कानों की लोलकियों से पसीना टपक रहा था। उसने बम नीचे धर दिये, जल्दी से कमर सीधी की और अजीब सा मुँह बनाया, उसके हाथ इतनी बुरी तरह काँप रहे थे कि वह अपना भाड़ा भी बड़ी मुश्किल से ही थाम पा रहा था।

संग-संग एक ही जगह तक रिक्शे चलाने ने उन्हें गहरे दोस्त बना दिया और चारों ने अपने रिक्शे एक ही जगह खड़े किये। श्याङचि और दूसरे दो नौजवानों ने अपना पसीना पोंछकर आममर्रा की तरह हँसी-मजाक करना शुरू कर दिया। अधेड़ रिक्शावाला काफ़ी देर तक अपने आप टहलता रहा फिर उसे खाँसी का दौरा पड़ गया। बहुत सारा सफ़ेद बलगम थूकने के बाद ही वह उनकी बातचीत में शामिल हो पाने लायक हुआ।

"मेरी तो तौबा हो गयी! दिल, पीठ और टाँगें सभी बेहद कमज़ोर हैं! मैं सीधा खड़ा होने की कितनी भी कोशिश क्यों न करूँ, मैं अपनी टाँगें उठा ही नहीं सकता। इससे सचमुच मुझे बहुत गुस्सा आता है!"

"अभी तो तुमने अच्छा रिक्शा चलाया, क्या तुम समझते हो कि वह चाल धीमी थी?" बीस वर्ष के एक नाटे रिक्शावाले ने कहा। "मैं ऐसे ही हाँक नहीं रहा हूँ। हम तीनों काफ़ी तगड़े हैं और तीनों में से किसका पसीना नहीं छूटा?"

वह लम्बा आदमी प्रसन्न तो था पर कुछ खिसिया भी गया। उसने एक आह भरी।

"तुम्हारी तरह दौड़ने वाले के सामने मामूली लोगों का टिकना मुमकिन नहीं। क्या तुम्हें यकीन नहीं आता?" दूसरे ने कहा।

"तुम्हारी उमर में इतना तेज दौड़ना कोई खेल नहीं है," एक और ने जोड़ा।

लम्बा आदमी मुस्कराया और उसने अपना सिर हिलाया। "साथियो, यह सिर्फ उमर की बात नहीं है। मैं तुम्हें बताता हूँ कि जिसे हमारे धन्धे में रहना है उसे घर नहीं बसाना चाहिए, और सच्ची बात तो यही है!" दूसरे काफ़ी पास आकर बड़े ध्यान से सुनने लगे, तो उसने धीमे स्वर में कहना जारी रखा, "एक बार परिवार हो जाने पर दिन हो या रात, चैन का एक पल भी नहीं मिलता, तुम्हें हर समय जुटे रहना पड़ता है। मेरी कमर को देखो, पटरे की तरह कड़ी है, इसमें जरा भी लोच नहीं रह गयी! अगर आप तेज दौड़ने के लिये जोर डालते है तो खाँसने लगते हैं और सीने में तेज जलन महसूस होने लगती है। अगर आप यह धन्धा अपनाते हैं तो छड़े रहना ही एकमात्र रास्ता है! माँ की लौड़ी, चिड़ियों के भी यार होते हैं, लेकिन हमें हमेशा छड़े रहना चाहिए! इससे भी बढ़कर तो यह है कि एक बार ब्याह कर लेने पर हर साल एक बच्चा पैदा होने लगता है। मेरे अब पाँच है! और सभी खिलाये जाने का इन्तज़ार करते हैं! रिक्शे का किराया ऊँचा है, अनाज महंगा है, धन्धा खराब है, आप कर ही क्या सकते हैं? इसीलिये बेहतर है कि जीवनभर छड़े रहो और परेशानी महसूस होने पर रण्डियों के यहाँ चले जाओ। यौन रोगों की परवाह न करो! अरे, मरना एक ही बार तो है! यह परिवार बसाने का लफड़ा, बूढ़े और बच्चे, इतने सारे खाने वाले मुँह, उनकी चिन्ता में तुम चैन से मर भी नहीं सकते! तुम्हारा क्या ख्याल है?" उसने श्याङचि से पूछा।

श्याङचि ने हाँ में सिर हिला दिया मगर कहा कुछ नहीं।

ठीक उसी समय एक सवारी आ गयी और जवान नाटे रिक्शावाले ने उससे किराया तय कर लिया। मगर उसने लम्बे बूढ़े से कहा, "आओ साथी, इसे तुम ले जाओ। तुम्हारे परिवार में पाँच बच्चे तुम्हारे आसरे बैठे हैं!"

वह रिक्शावाला मुस्कराया। "अच्छी बात है, मैं एक बार और सवारी ले जाता हूँ, वैसे ऐसा करना ठीक नहीं है! इसकी बदौलत मैं दो रोटियाँ अधिक घर ले जा सकूँगा। फिर मिलेंगे, साथियों!"

उसे जाते देखकर नाटा रिक्शावाला बुदबुदाया, "कैसी बेहूदा जिन्दगी है : हम अपनी पूरी ताकत पसीने के जरिये बहा लेते हैं और एक पत्नी के साथ भी सो नहीं सकते। फिर भी बड़े मकानों में रहने वाले वे मादरचोद एक साथ चार या पाँच औरतें रखते हैं!"

"वे जो करते हैं, करें," दूसरा नौजवान बोला। "वह सही था, इस धन्धे में सावधानी बरतनी पड़ती है। शादी करके क्या मिलता है? क्या औरत कोई देखते रहने वाला खिलौना है? नहीं! वही परेशानी की जड़ है! हररोज़ मक्के की रोटी चबाते हुए अपनी

शक्ति को बेहद खर्च करने से तो मजबूत से मजबूत आदमी की भी बधिया बैठ जायेगी!"

इस पर श्याङचि ने अपने रिक्शा के बम उठा लिये और यों ही कहा, "मैं दक्षिण की ओर चलता हूँ, यहाँ कोई सवारी तो है नहीं।"

"फिर मिलेंगे," बाकी दोनों ने उत्तर दिया।

ऐसा लगता था कि श्याङचि ने सुना ही नहीं। वह बड़े आराम से कदम बढ़ाता चलता ही गया, उसके कूल्हे सचमुच दुख रहे थे। उसने घर जाने के बारे मे सोचा था, पर अब उसकी हिम्मत नहीं पड़ रही थी। वहाँ उसकी पत्नी नहीं, खून चूसने वाली भूतनी उसका इन्तज़ार कर रही थी।

दिन लम्बे होने लगे थे। वह थोड़ी देर चलता रहा और तब पाँच ही बजे थें उसने रिक्शा वापस कर दिया और कुछ समय एक चायघर में बिताया। चाय की दो केतलियाँ पीने के बाद उसे भूख लग आयी और उसने घर लौटने से पहले बाहर ही भरपेट खा लेने की सोची। उसने बारह औंस कीमा भरे पराठे तथा मोठ और कोदों का कटोराभर दलिया खाया। फिर वह जोरों से डकार मारते हुए धीरे-धीरे घर को चला, वह जानता था कि घर में तूफ़ान उसके इन्तज़ार में था। मगर वह एकदम शान्त महसूस कर रहा था। वह लड़ने-झगड़ने को तैयार नहीं था, और सीधे जाकर बिस्तर पर सो जाना चाहता था। बाघिन चाहे या न चाहे, वह कल रिक्शा ज़रूर चलायेगा।

उसने बाघिन को बाहरी कमरे में बैठे दखा। उसने उसकी ओर देखा और उसका मुँह खिंच गया। श्याङचि ने चाहा कि सब बातों पर पर्दा डालकर उससे हमेशा की तरह बात कर ले, मगर उसे लगा दरअसल वह ऐसा कर नहीं सकता था। वह सिर झुकाये हुए अन्दर वाले कमरे मे चला गया। बाघिन चुप थी और घर के छोटे-छोटे कमरे पहाड़ों में गहरी गुफा की तरह शान्त थे। पड़ोसियों के खाँसने और बतियाने और बच्चों के रोने की आवाजें स्पष्ट सुनायी दे रही थीं परन्तु ऐसा लगता था जैसे पहाड़ की चोटी पर बैठे दूर से सुनायर दे रहे हों।

दोनों मौन रहे, बड़े और गूँगे कछुओं के जोड़े की तरह एक के बाद एक सोने को चले गये। एक झपकी लेकर बाघिन ने कुछ चिढ़कर, कुछ हँसकर पूछा, "सारा दिन तुम कहाँ रहे?"

"रिक्शा चला रहा था!" वह अधनींद में ही बुदबुदाया। उसके मुँह से आवाज ऐसे निकली मानो गले मे कुछ फँसा हुआ हो।

"मैं जानती थी! तुम पसीना न बहाओ तो तुम्हें खुजली होने लगती है, कमीने भिखमँगे कहीं के! तुम घर पर मेरा पकाया खाना तो खाते नहीं और पूरे शहर में ठूँसते फिरते हो? मुझे बहुत ज़्यादा उत्तेजित मत करो। मेरे बाप ने आततायी से शुरुआत की थी, मैं कुछ भी कर सकती हूँ। कल अगर तुम रिक्शा चलाने निकले

तो मैं खुद को फाँसी लगाकर दिखा दूँगी! मैं ठीक कह रही हूँ!"

"मैं निकम्मा नहीं बैठा रह सकता!"

"क्या तुम जाकर बूढ़े से मिल नहीं सकते?"

"नहीं!"

"घमण्डी तुम्हारी ऐसी की तैसी।"

श्याङचि को अब सचमुच गुस्सा आ गया था, उसे लगा कि जो मन में है उसे कह देना चाहिए, नहीं तो सिर फट जायेगा। "मैं रिक्शा चलाऊँगा और अपना निजी रिक्शा खरीदने के लिये बचत करूँगा। इस काम में कोई आड़े आयेगा तो मैं चला जाऊँगा और कभी वापस नहीं आऊँगा!"

"हुँ-ह!..." यह फुफकार उसके नाक से गुँजती हुई निकली। इसमें उसका अभिमान और उसके प्रति उसका तिरस्कार व्यक्त हुआ था, मगर साथ ही वह कुछ सोच भी रही थी। वह जानती थी कि ईमानदार और सीधा-सादा होने के बावजूद श्याङचि दृढ़संकल्प है। ऐसे लोग जो कहते हैं उसे कर दिखाते हैं। वह आसानी से हाथ में नहीं आया था, इसलिये अब वह उसे यूँ ही उँगलियों में से फिसल नहीं जाने देना चाहती थी। आख़िरकार वह एक आदर्श पति भी था—ईमानदार, मेहनती और तगड़ा। उसकी उमर में और उस जैसे रूपरंग को देखते हुए ऐसा और खजाना मिलना आसन नहीं था। उसे लगा कि उस समय सख्ती पर नरमी का मुलम्मा चढ़ाना ज़रूरी था। उसने उसे मक्खन लगाने की कोशिश की।

"मैं जानती हूँ कि तुम महत्वकांक्षी हो, पर मैं सचमुच तुम पर जान देती हूँ। अगर तुम बूढ़े से मिलने नहीं जाना चाहते, तो मैं जाऊँगी। मैं तो उसकी बेटी हूँ, अगर मुझे शर्मिन्दा भी होना पड़ा तो कोई फर्क नहीं पड़ेगा।"

"अगर बूढ़ा हम दोनों को फिर स्वीकार भी कर ले तब भी मैं रिक्शा चलाता रहूँगा!" श्याङचि सभी बातें साफ़ कर देना चाहता था।

बाघिन खामोश थी। उसने उसे इतना होशियार नहीं समझा था। इन शब्दों ने पूरी तहर स्पष्ट कर दिया था कि वह उसकी बातों में नहीं आने वाला और बेवकूफ़ नहीं था। उसे उत्तेजित हो जाने पर काँधी मारने वाले इस बड़े जीव को काबू में रखने के लिये ज़्यादा होशियारी से काम लेना पड़ेगा। उसे दबोचना आसान साबित नहीं हुआ था, इसलिये उसे उसको बहुत ज़्यादा परेशान नहीं करना चाहिए। उसकी लगाम कसते और ढीली छोड़ते रहना ही उसे रखने का तरीका रह गया था।

"अच्छा, अगर तुम रिक्शा चलाना ही चाहते हो तो मैं तुम्हें रोक नहीं सकती। लेकिन तुम्हें मासिक नौकरी न करने और हर शाम घर आने का वादा करना होगा। तुमसे एक दिन भी अलग रहने से मैं बेचैन हो जाती हूँ! मेरे साथ वादा करो कि तुम हर शाम जल्दी घर लौट आया करोगे!"

श्याङचि को उस लम्बे रिक्शावाले की सलाह याद आयी। अँधेरे में घूरते हुए उसे

अकड़ी हुई पीठों वाले और पाँव घसीटते हुए रिक्शाचालक, फेरी वाले, कुली दिखायी देने लगे। एक दिन उसकी हालत भी वैसी ही हो जायेगी। लेकिन अब उसका खण्डन करने की कोई ज़रूरत न थी, उसकी सहमति भी अपने आपमें काफ़ी बड़ी जीत थी। इसलिये उसने कहा, "मैं छिटपुट सवारियाँ ही उठाऊँगा!"

फिर भी बाघिन अपने बाप से मिलने के लिये बहुत ज़्यादा उत्सुक नहीं थी। वे पहले भी कई बार झगड़े थे, लेकिन अब उसके ल्यू परिवार के बाहर शादी कर लेने से स्थिति अलग हो गयी थी और यह समस्या सुलझाना कठिनतर था। विवाहित बेटी अपने माँ-बाप के पहले जितना नजदीक नहीं रह जाती, इसलिये धड़धड़ाते हुए बाप के पास जाने की उसकी हिम्मत न पड़ी। अगर उसने वाकई अस्वीकारा और एक भी थुङछ्येन देने से इंकार कर दिया तो वह कितना बड़ा बखेड़ा खड़ा करके भी कुछ न कर पायेगी। अगर दोनों के बीच गतिरोध पैदा हो जाता तो बिचौलिया भी उसका अपना घर होने की वजह से उसे अपने घर चली जाने का अनुरोध कर सकता था।

श्याङचि पहले की तरह रिक्शा चलाता रहा और वह कमरों में अकेली हो जाने पर चहलकदमी करती रही। कई बार उसने जाने और बूढ़े से मिलने के लिये कपड़े बदलने के बारे में सोचा लेकिन उसके हाथ हरकत करने से मुनकिर हो जाते। वह सचमुच पशोपेश में पड़ी हुई थी। खुद अपने आराम और आनन्द के लिये उसे जाना था, लेकिन अगर वह जाती तो उसका आत्मसम्मान न रहता। अगर बूढ़ा शान्त हो गया हो और वह श्याङचि को घसीटकर मिलाप अहाते में वापस ला सकती तो उसे वहाँ कोई न कोई काम आसानी से मिल जाता। उसे रिक्शा चलाने की ज़रूरत न रहती और अन्त में उनका पूरे कारोबार को सम्भाल पाना निश्चित हो जाता। यह सोचकर वह खुश हुई।

मगर बाप के टस से मस होने से इंकार कर देने पर क्या होगा? उसे न सिर्फ शर्मिन्दा होना पड़ेगा बल्कि वह जीवनभर रिक्शावाले की बीवी ही बनी रहने को मज़बूर हो जायेगी। क्यों, वह, बाघिन उस चाल की दूसरी औरतों से किसी भी तरह अलग नहीं रह जायेगी। यह विचार मन में आते ही उसे गहरी निराशा हुई। उसे श्याङचि से विवाह करने पर खेद भी होने लगा। उसके बाप के उसकी मदद न करने पर वह आगे बढ़ने की तमाम कोशिशों के बावजूद जीवनभर रिक्शावाला ही रहेगा। इस पर उसने श्याङचि से सम्बन्ध तोड़कर अकेली ही अपने मायके लौट जाने के बारे में भी सोचा। वह उसकी वजह से ही अपना सब कुछ नहीं गँवा सकती थी। लेकिन तभी उसे उसके साथ से मिले अवर्णननीय आनन्द की याद आयी। वह खाङ के किनारे बैठी थी, उसके विचार विचरण कर रहे थे, उसने दाम्पत्यिक आनन्द का रस लेते हुए धूप में खिलते बड़े लाल फूल की तरह महसूस किया। नहीं, वह श्याङचि को नहीं छोड़ सकती थी। वह रिक्शा चलाये या भिखारी बन जाये, वह हमेशा उसके साथ ही

रहेगी। इस चाल में रहने वाली औरतें सब सह सकती हैं तो वह भी सह सकती थी। बस बात खत्म हुई, वह बाप से मिलने न जायेगी।

श्याङचि तो मिलाप अहाता छोड़ने के बाद से शीआनमन दरवाज़े वाली सड़क पर गया ही न था। दो दिन पहले रिक्शा चलाना शुरू करने के बाद से वह पश्चिम नगर मे अपने पुराने साथियों के टकराने से होने वाले असमंजस से बचने के लिये पूर्व नगर की ओर ही निकल जाता था। आज वह रिक्शा लौटाने के बाद जानबूझकर सिर्फ देखने के लिये ही मिलाप अहाते के पास से गुजरा। बाघिन के शब्द अभी तक उसके कानों में गूँज रहे थे, और वह देखना चाहता था कि उसके बूढ़े से सम्बन्ध वाकई ठीक कर लेने की हालत में क्या वह वहाँ लौटने का साहस कर पायेगा। सबसे बढ़िया परीक्षा उस रास्ते से एक बार गुजरने की थी।

टोपी की बाढ़ को काफ़ी नीचे करके वह दूर से ही कनखियों से मिलाप अहाते को ताकता रहा, उसे डर था कि कहीं कोई जानपहचान का आदमी न मिल जाये। उसने बहुत दूर से फाटक के ऊपर लगी बत्ती देखी तो उसे अजीब सी नाखुशी हुई। उसे पहली बार यहाँ आने, बाघिन के उसका "शीलभंग" करने और जन्मदिवस समारोह की रात के दृश्यों की याद आयी।

इन स्पष्ट मानसिक चित्रों के बीचों बीच समान रूप से ही स्पष्ट, लेकिन अपेक्षाकृत छोटे चित्र भी उभर रहे थे—पश्चिमी पहाड़, ऊँट, छाओं का मकान, जासूस... ये सब मिलकर एक समूची डरावनी तस्वीर बना रहे थे, इतनी स्पष्ट कि वह बेहद अभिभूत था, मानो वह उनमें अपनी भूमिका के बारे में भूल गया था। और जो देख रहा था वे केवल तस्वीरें ही थीं। उसे अपने शामिल होने की याद आने पर तो वह उलझन में पड़ गया। हक्काबक्का सा वह एक बार फिर सोचने लगा कि उसके साथ इतनी बेइंसाफ़ी क्यों की और इतनी यातनाएँ क्यों दी गयीं। ये दृश्य एक साथ इतने लम्बे काल में फैले हुए थे और इतना कम समय ले रहे थे कि उसे अपनी उमर का भी ध्यान न रहा। उसे सिर्फ यही लगा कि वह पहली बार मिलाप अहाते में आने के बाद से बहुत बुढ़ा चुका था। तब उसका दिल आशाओं से भरपूर था, पर अब उसका पेट चिन्ता से भर चुका था। वह अच्छी तरह समझ न पाया कि हुआ क्या था मगर वे चित्र तो सच्चे ही थे।

मिलाप अहाते तक पहुँचकर वह सड़क के दूसरे किनारे पर रुक गया और फाटक के ऊपर लगी तेज बत्ती को निहारने लगा; सहसा उसके ध्यान में कुछ आया। सुनहरे रेखाक्षरों में लिखा मिलाप अहाते का नाम बदल चुका था! वह निरक्षर था, परन्तु उसे अच्छी तरह याद था कि पहला रेखाक्षर कैसा था—दो डण्डियाँ ऐसे जोड़ दी गयी थीं, जो न तो काटा बनाती थीं और न ही त्रिकोण, बल्कि यह रेखाक्षर अज़ीबोग़रीब होने पर भी सीधा सादा था—इस रेखाक्षर के स्वर रन का अर्थ मनुष्य था। अब उसकी जगह एक और विचित्र रेखाक्षर था। ऐसा क्यों? दोनों ओर से उन कमरों, जिन्हें वह

कभी भुला न पायेगा, में अँधेरा था।

वहाँ खड़ा-खड़ा वह अधीर हो गया तो सिर झुकाये हुए ख़्यालों में खोया चलता हुआ घर लौटने लगा, कहीं मिलाप अहाता किसी को बेच तो नहीं दिया गया था? उसे पता लगाना चाहिए, मगर अभी पत्नी को कुछ बताने की ज़रूरत नहीं थी। उसके लौटने पर बाघिन वक़्त काटने के लिये तरबूज के बीज छील रही थी।

"फिर देर कर दी!" वह नाराज दीख रही थी। "मैं तुम्हें बता रही हूँ कि ऐसे ही चलते रहना मैं बर्दाश्त नहीं कर सकती। तुम सारा दिन बाहर रहते हो और मैं कुछ चोरी हो जाने के डर से कंगलों से भरी इस चाल से निकलने का साहस नहीं करती। पूरा दिन कोई बात करने वाला नहीं मिलता! ऐसे नहीं चलेगा, मैं काठ की गुड़िया नहीं हूँ। कोई तरीका सोचो, यह बर्दाश्त नहीं होगा!"

श्याङचि कुछ नहीं बोला।

"बोलो! क्या तुम जानबूझकर मुझे पागल बना रहे हो? तुम्हारे मुँह में जबान नहीं है क्या?" उसके शब्द तेजी, बहुत तेजी से पटाखों की लड़ी छूटने की तरह फूट रहे थे।

श्याङचि ने फिर भी कुछ न कहा।

"यह कैसा रहेगा?" वह सचमुच परेशान थी, मगर लगता था कि वह समझ नहीं पा रही थी कि उससे कैसे सुलटे। उसके चेहरे पर ऐसी परेशानी और छटपटाहट दिखायी दे रही थी, जिसमें न तो खुशी थी और न ही उदासी। "हम लोग दो रिक्शे खरीद लें और उन्हें किराये पर चढ़ा दें और तुम घर में रहना और किराये से हम लोग गुजर-बसर करें। क्या यह ठीक रहेगा?"

"दो रिक्शों से दिनभर में तीन माओ मिलेंगे, जीने के लिये काफ़ी नहीं होंगे। हम एक रिक्शा किराये पर चढ़ा देंगे और दूसरा मैं चलाऊँगा। तब काम चल जाना चाहिए!" श्याङचि बहुत धीरे-धीरे परन्तु बड़े स्वाभाविक ढंग से बोला। रिक्शे खरीदने की बात सुनते ही वह बाकी सब कुछ भूल गया था।

"पर यह तो वही बात है! तुम फिर भी सारा दिन बाहर रहोगे!"

"फिर इसके बारे में क्या ख़्याल है?" रिक्शों की बात शुरू होने से ही श्याङचि नये विचारों से भरापूरा लग रहा था। "एक रिक्शा दिनभर के लिये किराये पर देंगे। दूसरा मैं आधे दिन खुद चलाऊँगा और आधे दिन के लिये किराये पर देंगे। अगर मैं सुबह की पारी पर निकला तो जल्दी जाऊँगा और तीसरे पहर तीन बजे तक लौट आऊँगा। शाम की पारी के लिये तीन बजे जाऊँगा और रात में लौटूँगा। यह तो ठीक होना चाहिए!"

बाघिन ने सिर हिलाया, बोला, "मुझे सोचने दो। अगर हम कोई और उपाय न निकाल पाये तो यही करेंगे।"

श्याङचि बहुत खुश था। यदि ऐसा सम्भव हुआ तो वह एक बार फिर अपना

निजी रिक्शा चलाने लगेगा। भले ही उसकी बीवी ने खरीदकर दिया हो, मगर वह धीरे-धीरे पैसा बचाकर स्वयं एक और खरीद लेगा। अब ही उसे लगा कि बाघिन में भी कुछ अच्छाई है और वह उसकी ओर देखकर मुस्कराया। यह मुस्कान सच्ची दिली मुस्कराहट थी, मानो पहले की सभी कटुताएँ भुला दी गयी थीं, और पलभर में संसार बदल गया था, नये कपड़े बदल लेने जैसी ही असानी से।

सत्रहवाँ अध्याय

धीरे-धीरे श्याङचि ने पता लगा लिया कि मिलाप अहाते का क्या हुआ था। मालिक ल्यू ने अपने कुछ रिक्शे बेच दिये थे और बाकी पश्चिमी नगर में रहने वाले एक और प्रसिद्ध रिक्शा मालिक को सौंप दिये थे। श्याङचि ने अनुमान लगाया कि अपनी बेटी की मदद के बिना कारोबार चला पाना बुजुर्ग ल्यू को अकेले बहुत भारी पड़ रहा होगा, इसलिये उसने बेचने का फैसला किया। उससे मिले धन को लेकर उससे वह कहीं मौज मनाने चला गया था, मगर कहाँ, यह श्याङचि नहीं जान पाया।

वह समझ नहीं पा रहा था कि इस समाचार पर वह खुश हो या न। बाघिन के पिता के उसे छोड़ देने से उसकी सभी योजनाएँ तो ढह गयी थीं। इसलिये अब वह किसी दूसरे पर निर्भर रहे बिना और आत्मसम्मान से ईमानदारी की रोज़ी कमा सकता था। दूसरी ओर यह बहुत दुख की बात थी कि मालिक ल्यू की सम्पत्ति का यह हश्र हुआ था। श्याङचि और बाघिन ने तो उसका एक थुङछ्येन भी नहीं लिया था, इसलिये कोई जानता न था कि वह धन से क्या कर रहा था।

फिर भी स्थिति यही थी और उसने इसके बारे में ज़्यादा नहीं सोचा और न ही इससे खुद को परेशान होने दिा। उसने महसूस किया कि उसकी बाँहें तो उसकी अपनी थीं और उसके काम करने को तैयार होने से रोटी कोई समस्या नहीं थी। उसने यह खबर शान्त और सहज भाव से बाघिन को बतायी।

मगर बाघिन यह खबर सुनते ही समझ गयी कि इसका क्या अर्थ था—वह तो तबाह हो गयी थी! इसलिये वह बेहद परेशान हो उठी। जिन्दगीभर वह रिक्शावाले की बीवी ही रहेगी। इस चाल से कभी छुटकारा नहीं पा सकेगी! उसने यह तो सोचा था कि उसका बाप दूसरी शादी कर सकता था, पर ऐसा कभी सपने में भी नहीं देखा था कि वह उसे इस तरह फेंककर चला जायेगा। उसने दूसरी शादी की होती तो वह उसकी सम्पत्ति में अपने हिस्से के लिये लड़ लेती और हो सकता था कि अपनी सौतेली माँ ने नफे का कोई सौदा भी कर लेती।

....बूढ़े के रिक्शा अहाते को अपने पास रखने तक तो वह कोई-न-कोई रास्ता निकाल ही लेती। अपनी सम्पत्ति को बेचकर नकद में बदलने और फिर लापता हो

जाने का ऐसा अटल और द्वेषपूर्ण निर्णय उसने किया था, यह एकदम अविश्वसनीय था। उसने बाप से यही सोचते हुए झगड़ा किया था कि उसके बिना अहाते का काम न चल पाने के कारण जल्दी ही समझौता हो सकता था। मगर यह कौन सोच सकता था कि बूढ़ा सारा कारोबार ही बन्द कर देगा?

वसन्त आ रहा था, पेड़ों पर कलियाँ गुलाबी हो गयी थीं। मगर चाल में न तो कोई पेड़ था और न ही कोई फूल। पहले तो वसन्ती हवा ने आँगन में जमी बर्फ को छेदा और वह धरती की गन्दगी से तरह-तरह की दुर्गन्धें उड़ाती और कूड़ा-करकट और फटे-पुराने कागज दीवारों से टकराती हुई चकराती रही। यहाँ रहने वाले लोगों के लिये हर मौसम अपनी-अपनी चिन्ताएँ लेकर आता था। इसी मौसम में बूढ़े धूप तापने के लिये बाहर निकलने का साहस करते थे; इसी मौसम में जवान लड़कियाँ अपनी नाकों से कालिख साफ़ करतीं, पुराने कुन्दन जैसी उनकी चमड़ी नज़र आती थी; इसी मौसम में औरत बच्चों को फटे कागजों से पतंगों की तरह खेलने के लिये आँगन में झुण्डों में जमा कर सकती थीं, क्योंकि अब उनके मैले हाथ ठण्ड से फटते नहीं थे। परन्तु लपसी केन्द्र बन्द हो गया, राहत के लिये अनाज नहीं दिया जा रहा था और मानव प्रेमियों ने दान देना भी बन्द कर दिया था। ऐसा लगता था कि सभी ने गरीबों को वसन्त की हवा और धूप के हवाले कर दिया था।

गेहूँ के पौधे घास की तरह हरे हो गये थे, अनाज की सप्लाई अभी कम थी और हर बार की तरह दाम बढ़ गये थे। दिन लम्बे होते जाने के साथ-साथ बूढ़े लोग भी अपने भूखे पेटों को सपनों से धोखा देने की कोशिश करने के लिये जल्दी नहीं लौट पाते थे। वसन्त की वापसी ने चाल की मुसीबतों को बढ़ाया ही था। जाड़ों में बची रह गयी जुएँ—वे सबसे बदमिजाज जुएँ—भी वसन्त की धूप का मजा लेने के लिये कई बार बच्चों और बूढ़ों के रूईदार कपड़ों में से रेंगती हुई बाहर आ जाती थीं।

बाघिन ने आँगन में पिघलती हुई बर्फ को गौर से देखा, चिथड़े देखे, तरह तरह की दुर्गन्धों के मिश्रण को सूँघा, बूढ़ों की आहों और बच्चों की चीखों को सुना, और उसका दिल बैठने लगा। जाड़ों में सभी अन्दर रहते थे, तो गन्दगी जमी हुई रहती थी; अब लोग बाहर निकले, तो चीज़ों की असली शक्ल दिखायी देने लगी। टूटी हुई ईंटों की दीवारों पर से मिट्टी का पलस्तर ऐसे उखड़ रहा था जैसे पहली वर्षा होते ही वे ढह जायेंगी। गन्दगी से भरी हुई चाल, जिसमें गरीबी के फूल भरे हुए थे, जाड़ों की अपेक्षा कहीं अधिक घिनौनी हो गयी थी। उफ! अब जाकर वह समझी कि शेष जीवन उसे यहीं पर बिताना होगा। उसका थोड़ा सा धन जल्दी ही खर्च हो जायेगा और श्याङचि रिक्शावाले से ज़्यादा कुछ भी नहीं था।

उसने अपने पिता के बारे में और खबर पता करने के लिये नानय्वान में अपनी चाची से मिलने जाते वक़्त उसे कहा कि वह घर का ध्यान रखे। चाची ने उसे बताया कि बूढ़ा उससे मिलने तो आया था पर यह पहले महीने के बारहवें दिन की बात

थी। वह उसे धन्यवाद देने और थ्येनचिन या शाङहाए में मौज मनाने जाने के बारे में बताने आया था। उसने कहा था कि अगर वह इस जीवन में कभी राजधानी से बाहर नहीं गया तो वह अपने मर्द होने पर गर्व नहीं कर सकता था। उसमें दम रहने तक उसे इधर-उधर घूम-फिरकर मौज ज़रूर मनानी चाहिए। और वैसे भी वह अपनी बेटी के उसकी इज्ज़त धूल में मिला देने के बाद नगर में रहने पर भी शर्मिन्दा था। चाची के पास बताने के लिये बसे इतना ही था; उसका निष्कर्ष तो और भी सादा था—हो सकता था कि वह सचमुच नगर छोड़कर चला गया हो या केवल धोखा देने के लिये ही यह कहा हो और कहीं चुपके से छिपा हुआ हो—सच्ची बात कोई जान नहीं सकता था!

बाघिन घर लौटने पर खाङ पर पड़ी हुई खूब रोई—यह रोना दिखावा न था। वह सचमुच रो रही थी और उसकी आँखें सूज गयी थीं।

वह खूब रो चुकी तो उसने आँसू पोंछकर श्याङचि से कहा, "अच्छी बात है तगड़े! तुम जैसा चाहो वैसा ही करो! मैंने गलत चाल चली। अब तो मैं तुम्हारे साथ फँस चुकी हूँ, इससे ज़्यादा और क्या कहूँ। ये रहे सौ युवान, जाओ और रिक्शा खरीद लो!"

दरअसल, वह अभी भी कुछ छिपा रही थी। शुरू में उसकी दो रिक्शे खरीदने की योजना थी, एक श्याङचि चलाता और दूसरा क़िराये पर देने के लिये। पर उसने अपना इरादा बदल दिया था। वह श्याङचि के चलाने के लिये केवल एक रिक्शा खरीद और बाकी धन अपने पास रख रही थी। ऐसा करने से अधिकार उसके हाथ में था। वह रिक्शा खरीदने के बाद श्याङचि के उसे धोखा देकर चले जाने के डर से सारे का सारा धन खर्च करने के लिये तैयार नहीं थी। उसे पूरी तैयारी रखनी चाहिए था। इसके अलावा बूढ़े के जाने के तरीके से वह महसूस करने लगी थी कि किसी पर भी भरोसा नहीं किया जा सकता था। कौन जाने कल क्या हो? असल बात तो यह थी कि जब तक सम्भव था तब तक वह मौज उड़ा ले, और इसके लिये उसे अपनी पसन्द की चीज़ें खरीदने के लिये धन चाहिए था, भोजनों के बीच में उसे कुछ न कुछ कुतरने की आदत तो थी ही। वे श्याङचि की कमाई से गुजारा चला सकते थे—वह अव्वल दरजे का रिक्शाचालक था—और अपने धन को जेबखर्च के तौर पर इस्तेमाल करके फिलहाल तो वह अच्छी तरह बसर कर सकती थी। धन हमेशा नहीं रहता पर आदमी भी तो अमर नहीं था! रिक्शावाले से शादी करना—हालाँकि कोई और चारा न था—अपने से नीचे के स्तर पर शादी करना रहा था; अब वह उससे हर रोज़ धन माँगकर अपने को और झुकाना नहीं चाहती थी। इस निर्णय पर वह कुछ प्रसन्न हो उठी, हालाँकि वह जानती थी कि भविष्य अन्धकारमय है, परन्तु कम से कम फिलहाल तो वह सिर उठाकर चल सकती थी। यह सूरज ढलने के समय चलने के समान था—दूर आकाश में अँधेरा हो चुका था, पर इतनी रोशनी थी

कि वह और कुछ कदम चल सकती थी।

श्याङचि अपना निजी रिक्शा मिल रहा होने और उससे छह या सात माओ कमाकर गुजारा चला पाने से सन्तुष्ट था, इसलिये उसने उससे बहस नहीं की। वह कुछ खुशी महसूस कर रहा था। उसके पहले के सभी दुख रिक्शा खरीदने के कारण ही थे। अब उसे रिक्शा मिल रहा था तो वह इससे ज़्यादा क्या चाहता? निस्सन्देह एक रिक्शा से दो जनों का गुजारा करने पर कुछ बचता नहीं और उसके जवाब दे जाने पर नया रिक्शा खरीदने के लिये हाथ में पूँजी न रह जाती। यह जोखिम की बात थी मगर अभी से इतनी दूर तक क्यों सोचा जाये? इस वक़्त एक रिक्शा खरीदना ही इतना कठिन था, इसलिये उसे सन्तुष्ट होना चाहिए।

उसका एक पड़ोसी अड़ छ्याङचि ठीक उसी समय अपना रिक्शा बेचना चाहता था। पिछली गर्मियों में उसने अपनी उन्नीस वर्ष की बेटी आनन्दी को चाँदी के दो सौ युवान में फौज के एक अफसर को बेच दिया था। कुछ समय तक वह धन से खेलता रहा, उसने गिरवी रखा हुआ सभी कुछ छुड़ा लिया और नये कपड़े बनवा लिये, इससे सारा परिवार बन-ठन उठा। उसकी बीवी चाल में सबसे नाटी थी, फूले हुए माथे, जबड़ों की उभरी हुई हड्डियों, गंजे सिर, चितकबरे चेहरे और बाहर निकले दाँतों वाली वह सबसे कुरूप भी थी। अपनी बेटी के बिछोह में रोते रहने से उसकी पलकें सूज गयी थीं, फिर भी उसने अपना नया नीला गाउन पहना हुआ था।

अड़ छ्याङचि बहुत गर्ममिजाज आदमी था। बेटी को बेच देने के बाद वह अक्सर शराब पीने निकल जाता; और पीने के बाद उसकी आँखों में आँसू भर जाते और वह खास तौर पर चिड़चिड़ा हो जाता। इसलिये बीवी को नये कपड़े और पेटभर खाना मिलना उसके लिये किसी तरह का मुआवजा नहीं था, वह पहले से भी अधिक पिटने लगी थी। चालीस वर्ष की उमर से ऊपर का हो जाने के कारण अड़ छ्याङचि ने रिक्शा चलाना बन्द करने का फैसला किया। उसने तरबूज, फल, मूँगफली और सिगरेट बेचने के लिये दो टोकरियाँ खरीदीं और उन्हें बहंगी पर लटकाया, दो महीने के बाद उसने मोटे तौर पर हिसाब किया तो देखा कि वह सिर्फ घाटा, बल्कि जबरदस्त घाटा उठा रहा था। रिक्शा चलाने का तो वह आदी था पर व्यापार करना नहीं जानता था। रिक्शा चलाना सीधा सादा धन्धा था, सवारी मिली तो मिली, नहीं मिली तो नहीं मिली, मगर फेरी लगाना झँझट का काम था और उसकी चलाकियाँ वह नहीं जानता था। सभी रिक्शावाले उधार पर जीते थे और वह अपने पुराने दोस्तों को चीज़ें उधार देने से इंकार करके अपनी इज्जत नहीं घटाना चाहता था; मगर अपना धन वापस लेना आसान नहीं था। उसे अच्छे गाहक नहीं मिलते थे, सारे गाहक पैसे देने से कतराते थे, इसलिये अन्त में वह घाटे में ही रहता। इससे वह इतना बेचैन हो उठा कि और भी अधिक शराब पीने लगा। फिर वह पुलिस वालो से झगड़ा कर बैठता या घर आकर अपनी निराशा पत्नी और बच्चों पर उतारता। इसमें दोष शराब का ही

था। नशा उतर जाने पर वह अपने किये पर बुरी तरह पछताता और बहुत उदास हो जाता। बेटी को बेचने से मिले धन को उड़ा डालने और ऊपर से पीकर दूसरों को पीटने के विचार से वह बहुत शर्म महसूस करता। ऐसे अवसरों पर वह पूरा दिन बिस्तर में पड़ा अपने दुख को सपनों में डुबोने की कोशिश करता रहता।

उसने फेरी लगाना छोड़कर फिर रिक्शा चलाने का फैसला किया। वह इस तरह अपने धन को अपनी उँगलियों में से फिर नहीं जाने दे सकता था। इसलिये उसने रिक्शा खरीद लिया। पीये होने पर वह बिल्कुल तर्कहीन हो जाता; सूफी होने पर वह दिखावा करना और शान झाड़ना चाहता। नये रिक्शे के साथ साफ़-सुथरे कपड़े पहनकर वह अपने को ऊँचे दर्जे का रिक्शावाला समझता जिसे उम्दा चाय पीनी चाहिए और शानदार सवारियों को बैठाना चाहिए। अड्डे पर वह अपने रिक्शे और सफ़ेद कपड़ों की शान दिखाता और दूसरों से गप्पें लड़ाता, मगर सवारी लेने के लिये कभी मुकाबला नहीं करता था। वह नीले कपड़े का नया पोंछा अपने रिक्शा पर झटकता, सफ़ेद तलों वाले नये काले सूती जूते पटकता, अपनी नाक के सिरे को ताकता-मुस्कराता इसी इन्तज़ार मे वहीं खड़ा रहता कि कोई आकर उसके रिक्शा की तारीफ़ करे और फिर कभी न खत्म होने वाली बातचीत का सिलसिला चल पड़े। वह कुछ दिन लगातार यही कर सकता था। उसे अच्छी सवारी मिलती भी तो उसकी टाँगे जवाब दे जातीं—वह तेज नहीं दौड़ सकता था! फिर घोर निराशा में वह अपनी बेटी को याद करने लगता और शराब पीने के सिवा उसके पास कोई चारा न बचता। इस तरह उसने सारा धन खर्च कर डाला और उसके पास सिर्फ रिक्शा ही बचा था।

मकर-संक्रान्ति के आसपास उसने एक दिन फिर बहुत ज़्यादा पी। उसके घर लौटने पर उसके दोनों बेटों—एक तेरह वर्ष का, दूसरा ग्यारह का—ने उससे बचने की कोशिश की। मारे गुस्से के उसने दोनों को एक-एक लात जमाई। इस पर उसकी पत्नी ने कुछ कहा तो वह उस पर पिल पड़ा और पेट में लात मारी। बड़ी देर तक वह धरती पर पड़ी रही, कुछ बोल न पायी। दोनों लड़कों ने पागलों की तरह बेलन और फरुहा उठाये और बाप की जमकर पिटायी करने लगे। इस रणसंकुल में उन्होंने कई बार अपनी माँ को भी पैरों से कुचल डाला। पड़ोसी दौड़े आये और उन्होंने अड़ छ्याङचि को जबरदस्ती खाङ पर लिटा दिया, दोनों बच्चे माँ के पास जाकर रोते रहे।

वह होश मे तो आयी मगर फिर जमीन पर पाँव न रख पायी। बारहवें चाँद्र मास के तीसरे दिन वह बेटी बेचने से मिले धन से खरीदा गया वही नीला गाउन पहने ही मर गयी। उसके मायके के लोगों ने आग बबूला होकर अदालत में जाने की धमकी दी और मित्रों के बीचबचाव करने पर ही समझौता हो सका। अड़ छ्याङचि ने उसे शान से दफ़नाने और उसके परिवार को पन्द्रह युवान देने की गारण्टी दी। इसलिये उसने साठ युवान में रिक्शा गिरवी रख दिया। नववर्ष के बाद उसने रिक्शा को छुड़ाने

की आशा न रह जाने पर उससे छुटकारा ही पाना चाहा। शराब पीकर उसने अपने एक बेटे को बेच देने के बारे में भी सोचा, परन्तु कोई भी खरीदने को तैयार न था, वह अपनी बेटी आनन्दी के पति से मिलने गया, परन्तु उसने "ससुर" को पहचानने से ही इंकार कर दिया, इसलिये बातचीत के सारे रास्ते ही बन्द हो गये।

श्याङचि उस रिक्शा के इतिहास से वाकिफ था, इसलिये वह उसे खरीदने को बहुत उत्सुक न था। बिकने के लिये बहुत सारे रिक्शे थे, फिर बेटी की क़ीमत पर खरीदे और पत्नी की हत्या के कारण बेचे गये प्रेतों की छाया वाले को ही क्यों खरीदे?

बाघिन इस तरह नहीं सोचती थी। उसका ख़्याल था कि अस्सी युवान से कुछ ऊपर देने पर वह इसे ले सकती थी और यह सौदा अच्छा था। वह सिर्फ छह महीने चला था, उसके टायरों का रंग तक भी नहीं बदला था। इसके अलावा वह पश्चिम नगर के मशहूर तछङ कारख़ाने का बना हुआ असली माल था। लगभग आधा पुराना रिक्शा भी पचास से लेकर साठ युवान तक में मिलता था। वह यह सौदा हाथ से निकलने नहीं देना चाहती थी। इसके अलावा नववर्ष के झट बाद हाथ तंग था और अड़ छ्याङचि धन की सख़्त ज़रूरत के कारण दाम न बढ़ाता। वह खुद रिक्शा देखने गयी, अड़ छ्याङचि से भाव तय करके उसे धन दे आयी। श्याङचि उसे चलाने का इन्तज़ार ही कर सकता था, धन अपना न होने से वह एतराज कर ही नहीं सकता था।

उसने बड़े ध्यान से रिक्शे की जाँच-परख की और उसे स्वीकार करना पड़ा कि वह मजबूत था। फिर भी वह कुछ असन्तुष्ट रहा। उसे सबसे ज़्यादा नापसन्द तो रिक्शे का ढाँचे का काला रंग और उस पर निकल का काम था। अड़ छ्याङचि ने इस मेल को बहुत खूबसूरत माना था मगर श्याङचि को वह मातमी होने की हद तक निराशाजनक लगता था। उसने महसूस किया कि रिक्शा को कुछ चमकीला बनाने के लिये निकल वाले हिस्से को काँसे के रंग में या दूधिया रंग में रँगवा दे; पर उसने बाघिन की जली-कटी सुनना न चाहने की वजह से यह मसला नहीं उठाया।

उसके रिक्शा बाहर निकालने पर लोगों का ध्यान उसकी ओर खिंचा, कुछ लोगों ने तो उसे "नन्ही विधवा" का नाम भी दे दिया। इससे श्याङचि बहुत चिढ़ा और उसने इसके बारे में न सोचने की कोशिश की, मगर वाहन तो सारा दिन उसके पीछे-पीछे रहता था इसलिये वह किसी भी दिन कुछ बिगड़ जाने की आशंका में हमेशा तनाव में रहता था। कभी-कभी अड़ छ्याङचि के दुर्भाग्य की सहसा याद आ जाने पर उसे लगता कि वह रिक्शा नहीं, कोई ताबूत चला रहा था। वह अक्सर रिक्शे के चारों ओर प्रेत छायाएँ घूमती देख रहा लगता था।

श्याङचि के हमेशा आशंकित रहने पर भी कुछ नहीं हुआ। मौसम गरम होने लगा था। पेइफिङ में वसन्त बहुत कम अरसे तक रहने की वजह से रूईदार कपड़े उतर गये, अस्तर लगे कपड़ों की ज़रूरत न रही, आम कमीज और पायजामा ही काफ़ी

थे। इतने लम्बे दिन हर किसी को ऊबाने और थकाने लगे थे। श्याङचि अलस्सुबह निकल जाता और तीसरे पहर चार या पाँच बज तक ही महसूस कर पाता कि उसने काफ़ी काम कर लिया था। उस समय भी सूरज आकाश में काफ़ी ऊँचा रहता था। उसे और अधिक रिक्शा चलाने की इच्छा न होती और वह छुट्टी भी नहीं करना चाहता था। वह अनिश्चित सा लम्बी और अलसाई जम्हाइयाँ लेता भटकता रहता।

अगर वह दिन लम्बे होने के कारण इस कदर थक और ऊब जाता था, तो उधर घर पर बाघिन और भी अकेली रहती थी। जाड़ों में वह अँगीठी के सामने बैठकर तापती रहती और बाहर चलती हुई हवा की आवाज सुनती रहती, इससे ऊबी होने पर भी अन्दर बाहर से ज़्यादा आराम होने की बात सोचकर कुछ राहत पा लेती थी। अब अँगीठी हटाकर बाहर ओलती के नीचे रख दी गयी थी, घर के अन्दर करने को कुछ बचा ही नही था। आँगन में गन्दगी और दुर्गन्ध भरी हुई थी, हरियाली के नाम पर वहाँ घास की पत्ती तक भी न थी। पड़ोसियों पर उसे भरोसा न था, इसलिये वह सौदा खरीदने के लिये बाजार जाती तो इधर-उधर घूमने के बजाये सीधे घर वापस आ जाती। वह कमरे में फँसी हुई उस मधुमक्खी के समान थी जो बाहर धूप तो देख सकती हो मगर उड़कर बाहर जाने में असमर्थ हो।

चाल की दूसरी औरतों से उसका कुछ भी साझा न था। उनकी गपशप पड़ोसियों के बारे में ही होती और उसे इसमें कोई दिलचस्पी नहीं थी। वह तो आदतन ही मुँहफट थी। उनका दुख अपनी ज़िन्दगी की कडुवाहट से पैदा हुआ था, छोटी से छोटी बात भी उन्हें रुला जाती; उसके दुख अपने भाग्य से असन्तोष की उपज थे, और उसके आँसू निकलते नहीं थे, इसलिये वह किसी न किसी से लड़कर अपना तनाव कम कर लेती थी। एक दूसरी को समझने में असमर्थ इन औरतों के लिये अच्छा यही था कि वे अपने काम से ही काम रखें।

मध्य-अप्रैल में ही आखिरकार उसे एक साथिन मिली। अड़ छ्याङचि की बेटी आनन्दी लौट आयी। उसका ''आदमी'' सेना में अफसर था। और वह अपनी नियुक्ति की हर जगह सौ या दो सौ युवान खर्च करके एक जवान लड़की, एक बड़ा पलंग और दो कुर्सियाँ खरीदकर एक सीधा-सादा घर बसा लेता और इस तरह कुछ अरसे तक मौज से रहता था। उसकी इकाई कहीं और चली जाती तो वह लड़की और पलँग को वहीं छोड़कर चल देता।

यह खर्च एक या दो साल काम चलाने के लिये करने लायक था। धुलाई, मरम्मत, खाना बनाने और घर के दूसरे काम करने के लिये नौकर रखने पर उसके खाने के खर्च सहित कम से कम दस युवान हर महीने खर्च करने ही पड़ते। किसी लड़की से ''शादी करने'' का मतलब यह था कि एक नौकरानी के साथ-साथ सोने के लिये औरत भी मिल जाती और वह उसे कोई यौन रोग न होने के बारे में भी सुनिश्चित हो सकता था। अगर वह उसे खुश रखती तो वह उसे फूलदार गाउन खरीद कर देने

पर एक या दो युवान खर्च कर देता; नहीं तो वह उसे घर पर अलफ नंगी छोड़ देता और इस पर वह कुछ न कर पाती। वह अपना पड़ाव उठाते समय पलँग और कुर्सियाँ वहीं छोड़ जाने में रत्तीभर दुख महसूस न करता, क्योंकि पिछले दो महीने का मकान का किराया देने का बन्दोबस्त लड़की को ही करना पड़ता और फर्नीचर बेचने पर भी शायद वह इतना धन न जुटा पाती। आनन्दी ने पलँग बेचकर किराया चुका दिया और विदेशी छींट के एक गाउन और एक जोड़ा चाँदी के झुमकों के साथ घर आयी थी।

रिक्शा बेचने और उसे गिरवी रखने का धन पूरे सूद सहित चुका चुके होने के बाद अड़ छ्याङचि के पास क़रीब बीस युवान बचे थे। कभी-कभी उसे लगता कि बीवी न रही होने वाला अधेड़ आदमी वाकई तरस का पात्र था; मगर किसी के हमदर्दी करने पर वह अपने आपको सान्त्वना देने के लिये अकेले ही शराब पीनी शुरू कर देता। ऐसे अवसरों पर धन उसे दुश्मन लगता और वह अन्धाधुँध उसे खर्च करता। फिर कभी-कभार उसे यह भी लगता कि अपने लड़कों का भविष्य बनाने के लिये उन्हें भलीभाँति बड़ा करने के लिये उसे मेहनत से रिक्शा चलाना चाहिए। तब वह पागलों की तरह उनके लिये बहुत सारा खाना खरीद लाता। आँखों में आँसू भरे उन्हें उसे हड़पते हुए देखकर वह खुद ही बुदबुदाता, ''बेचारे बिना माँ के बच्चो! अभागे बच्चो! तुम्हारा बाप तुम्हारे लिये खून-पसीना एक कर रहा है! मैं बकवास नहीं कर रहा, अगर तुम्हें भरपेट खाना मिल सके तो मुझे भूखे रहने में कोई एतराज नहीं। भकोसते जाओ! बस बड़े होने पर मुझे भुला मत देना!'' ऐसे अवसरों पर वह खुलकर धन खर्च करता और इस तरह सभी बीस युवान एक-एक करके खर्च हो गये।

हाथ में एक भी थुङछ्येन न रहने, शराब पीये और बिगड़ैल आदमी की तरह उसने कई दिन तक लड़कों की ओर ध्यान ही नहीं दिया। तब उन्हें अपना पेट भरने के लिये कुछ थुङछ्येन कमाने की जुगत सोचने के लिये मज़बूर होना पड़ा। वे शादियों और गमियों में सेवकों का काम करते, कूड़े-करकट की गाड़ियों से बटोरे लोहे लंगड़ और रद्दी कागजों को बेचते और कभी तवे पर पकायी एक-दो मोटी रोटियाँ तो कभी सिर्फ एक चिन छोटे शकरकन्द खरीदने लायक कमा लेते। उन शकरकन्दों को वे छिलके और जड़ों समेत पूरा खा डालते। कभी कभी दोनों को सिर्फ एक ही थुङछ्येन मिल पाता और तब उन्हें मुट्ठीभर मूँगफली या बड़े उड़द से गुज़ारा करना पड़ता। उनसे पेट तो नहीं भरता लेकिन काफ़ी देर तक चबाते रहने को कुछ मिल जाता था।

आनन्दी घर आयी तो लड़के खामोश, आँसू भरे मुस्कराते हुए उसकी टाँगों से चिपक गये। माँ नहीं रही थी, अब बड़ी बहन ही उनका पालन करेगी।

अड़ छ्याङचि आनन्दी के लौटने पर उदासीन लगा। एक पेट और भरना पड़ेगा। पर जब उसने बेटों की खुशी देखी तो वह मान गया कि परिवार में खाना पकाने और

कपड़े धोने के लिये एक औरत का होना ज़रूरी है। इसलिये उसने निर्णय किया कि अब जो जैसे होता है उसे वैसे होने दो।

आनन्दी देखने में बुरी न थी। वह बहुत छरहरी और दुबली हुआ करती थी, परन्तु सैनिक अफसर के घर रहते हुए वह कुछ बड़ी और कुछ मोटी भी हो गयी थी। उसे देखकर कोई विशेष आकर्षण नहीं होता था, परन्तु उसका गोल चेहरा और सुन्दर भौहें और आँखें प्यारी लगती थीं। उसका ऊपर का होंठ थोड़ा छोटा था, इससे चाहे वह मुस्कराती चाहे कुढ़ती, उसके सुन्दर सफ़ेद दाँत दिख जाते थे। ये दाँत ही अफसर को खास तौर पर पसन्द आये थे। ये दाँत दिखायी देने पर उसके चेहरे पर बेवकूफी और बेचारगी के भावों से वह कुछ बचकाना लगती। गरीब परिवारों की सभी सुन्दर लड़कियों की तरह ही उसका यह रूप उस फूल की तरह था जिसमें रंग या गन्ध आते ही उसे बेचने के लिये बाजार में रख दिया जाता है।

बाघिन आम तौर पर अपने पड़ोसियों की अनदेखी ही करती थी, परन्तु आनन्दी को देखते ही वह उसे चाहने लगी। पहली बात तो यह थी कि आनन्दी प्यारी थी; दूसरी यह कि उसके पास विदेशी छींटे का वह गाउन था; और तीसरी यह कि सैनिक अफसर के साथ रही होने के कारण उसने कुछ दुनिया देख रखी थी, इसलिये वह जानने लायक थी। औरतों में जल्दी ही दोस्ती नहीं होती, परन्तु एक बार शुरू करने पर बड़ी घनी दोस्ती करती हैं। कुछ दिनों में बाघिन और आनन्दी में गहरी दोस्ती हो गयी।

बाघिन कुछ न कुछ चबाते रहने की शौक़ीन थी, और जब कभी वह तरबूज के बीज या और कुछ खाती तो आनन्दी को बुलाकर खिलाती और वे दोनों गप करती हुई हँसती रहतीं। आनन्दी अपने सादा अन्दाज़ में अपने सफ़ेद दाँतों को झलकाकर बाघिन को ऐसी तमाम बातें बताती जो उसने पहले कभी न सुनी होतीं। आनन्दी ऐशोआराम में नहीं रही थी, मगर अफसर अच्छे रौ में होने पर उसे रेस्तराँ या थियेटर में ले जाता। इसलिये उसके पास बताने के लिये अनेक ऐसी बातें थीं जिनसे बाघिन के मन में उसके लिये ईर्ष्या पैदा होती थी।

कई और बातें भी थीं जो बताते हुए आनन्दी को शर्म आती थी। वह उन्हें अपमानजनक समझती थी, मगर बाघिन को उन्हें सुनने में बहुत मजा आता था। और बाघिन के वे सब बताने के लिये उसकी खुशामद करने पर अपनी तमाम किंकर्तव्यविमूढ़ता के बावजूद आनन्दी इंकार करना पसन्द नहीं करती थी। बाघिन उसे सभी लोगों से अधिक प्यार और ईर्ष्या करने योग्य समझती थी। ये कहानियाँ सुनने के बाद वह अपने बारे में सोचती—अपनी सूरत, अपनी उमर और अपना पति—और उसे लगता कि उसकी सारी ज़िन्दगी धोखे में गुजरी थी। उसके पास बात करने के लिये भी यौवन नहीं था और अब श्याङचि जैसे जिद्दी और अड़ियल के पल्ले पड़ जाने पर भविष्य भी नहीं रह गया था। उसे उससे जितनी चिढ़ होती आनन्दी

को वह उतना ही चाहने लगी। आनन्दी अभागी और दयनीय ज़रूर थी, पर बाघिन को लगता था कि जीवन में आनन्द भोग लेने और दुनिया देख लेने के बाद वह बिना किसी खेद के तत्काल मर भी सकती थी। बाघिन की निगाह में आनन्दी उस सबका श्रेष्ठ प्रतीक थी जिसकी कोई औरत ज़िन्दगी से प्रत्याशा कर सकती थी।

बाघिन आनन्दी की तकलीफ़ों की ओर ध्यान न दे रही लगती थी। वह लड़की खाली हाथ लौटी थी, मगर बाप के कुछ न करने पर उसे अपने दोनों भाइयों का पेट पालना पड़ रहा था। वह उन दोनों को खिलाने के लिये धन कहाँ से लाती?

एक दिन अड़ छ्याङचि नशे में था तो उसे एक विचार सूझा, "अगर तुम्हें अपने भाइयों के प्रति वाकई हमदर्दी है तो तुम उन्हें खिलाने का कोई तरीका निकाल सकती हो। मैं, अगर मैं सारा दिन लद्दू जानवर बना रहता हूँ तो मुझे सबसे पहले खाना पड़ेगा! क्या तुम समझती हो कि मैं भूखे पेट रिक्शा चलाते दौड़ता रह सकता हूँ? मेरा ख़्याल है कि तुम इसे मज़ाक समझोगी कि मैं मरकर सड़क पर गिर गया! तुम अपने पास बेचने के लिये कुछ तैयारशुदा माल होने पर भी अपना वक़्त यूँ ही बरबाद कर रही हो। तुम इन्तज़ार किस का कर रही हो?

आनन्दी ने शराब से मारी जा चुकी अकल वाले अपने बाप को देखा, अपने दुःखी, मरियल भाइयों को देखा और फिर अपनी ओर देखा। वह रोने के अलावा कुछ न कर सकी। मगर आँसू न तो उसके बाप का दिल पसीज सके और न ही उसके भाइयों का पेट भर सकें, उसे इससे कुछ अधिक व्यावहारिक काम करना पड़ा। लड़कों को खिलाने के लिये उसे अपना शरीर बेचना पड़ा। सबसे छोटे को उसने सीने से लगा लिया। उसने कहा, "बड़ी बहन, मुझे भूख लगी है।" उस समय उसके आँसू लड़के के बालों पर गिरने लगे। बड़ी बहन! नहीं, वह तो भाइयों को खाने के लिये दिया जाने वाला मांस का लोथड़ा थी!

बाघिन ने उसके प्रति सहानुभूति प्रकट करने के बजाये उसे अपने को और आकर्षक दिखा पाने के लिये बाद में अदा किये जाने के लिये कर्ज देने की पेशकश की। आनन्दी का कमरा बहुत गन्दा था, इसलिये बाघिन ने उसे अपने उससे ज़्यादा सुन्दर कमरों में से एक किराये पर देना भी स्वीकार कर लिया। उसके पास दो कमरे तो थे ही, इसलिये उन दोनों के लिये जगह थी। श्याङचि के सारा दिन बाहर रहने के कारण बाघिन अपनी सहेली की सहायता करने को उत्सुक थी। इसके साथ ही वह, वह तमाम जान लेती जो उसने जीवन में कभी नहीं देखा था और जो करना चाहने के बावजूद खुद कर नहीं पायी थी।

बाघिन ने केवल एक शर्त रखी—आनन्दी हर बार कमरे का इस्तेमाल करने पर उसे दो माओ दे। दोस्ती अलग है, धन्धा अलग है। आनन्दी की खातिर उसे कमरे को साफ़-सुथरा रखना होगा, इससे मेहनत के साथ खर्चा भी बढ़ेगा। क्या झाड़ू और धूल-कड़ाह पर खर्च न होता? दो माओ ज़्यादा न थे, और यह भी इसलिये कि वे

दोनों सहेलियाँ थीं और वह उसकी सहायता करना चाहती थी।

आनन्दी ने आँसुओं का घूँट पिया मगर उसके होंठ खुले और उसके सफ़ेद दाँत झलक गये।

श्याङचि को इसके बारे में कुछ पता न था, परन्तु उसकी रातें एक बार फिर हराम हो गयीं। बाघिन के आनन्दी की "सहायता करना" शुरू करने के बाद से वह श्याङचि के माध्यम से अपना खोया हुआ यौवन वापस पाने को बेचैन हो उठी थी।

अठारहवाँ अध्याय

जून आते-आते चाल में दिन के समय एकदम सन्नाटा छाया रहने लगा। अलस्सुबह, बच्चे टूटी फूटी टोकरियाँ लिये कूड़े-करकट में से काम लायक कुछ न कुछ बीनने के लिये निकल जाते। नौ बजते-बजते धूप उनकी दुबली-पतली पीठों को फफोलियाने लगती और वे अपनी बटोरी हुई चीज़ें लिये लौट आते, और उनके माँ बाप से जो कुछ उन्हें मुहैया करा सकते उसे खा लेते। फिर कुछ बड़े बच्चे अगर मिलकर कुछ थुङ्छ्येन पूँजी जुटा लेते तो वे बर्फ गाड़ियों से कुछ ढेले खरीदकर या चुराकर उन्हें दुबारा बेच देते। अगर उनके पास इतनी थोड़ी सी भी पूँजी न होती तो वे टोलियाँ बनाकर खाई में नहाने चले जाते। रास्ते में वे रेलवे स्टेशन से कुछ कोयले चुरा लेते या अमीर परिवारों के बच्चों को बेचने के लिये चिउरे या रइयें पकड़ लेते। कुछ कम उमर के बच्चे बहुत दूर घूमने जाने की हिम्मत नहीं कर पाते थे, वे चाल के बाहर पेड़ों की छाया में ही एकेशिया के पेड़ों पर मिले कीड़े-मकोड़े से या उनके प्यूपा खोदते-खेलते रहते। बच्चों के बाहर और मर्दों के काम पर चले गये होने पर औरतें पीठ नंगी रखकर घर के अन्दर ही रहतीं। बाहर न निकलने का कारण शर्म आना न था बल्कि उस वक़्त आँगन भट्ठी की तरह तप रहा होना था।

शाम हो रही होने पर मर्द और बच्चे एक-एक करके लौटने लगते। दीवारों की छाया वाले आँगन में कुछ ठण्डी बयार होती, मगर घर के अन्दर तो दिन की तपिश भापतापी पात्र की तरह भरी रहती। सब लोग बाहर बैठे औरतों के घर में शाम का खाना पकाने का इन्तज़ार करते रहते। तब आँगन में बिना सामान के बाज़ार जैसी चहल-पहल और हलचल मची रहती। लम्बे, गर्म दिन झेलने के बाद मिज़ाज चिड़चिड़े होते और भूख बढ़ जाने से चिड़चिड़ापन भी बढ़ जाता। किसी ने एक शब्द दूसरे को अप्रिय भाषा में कहा नहीं कि मर्द बच्चों को लतिया देते या अपनी बीवियों को पीटने लगते या गाली-गलौज करके उन पर गुस्सा उतारने लगते। यह झखझख खाना खाने के बाद तक जारी रहती। फिर छोटे बच्चों में से कुछ तो आँगन में ही सो जाते, कुछ गली में खेलते रहते। पेट भर जाने पर बड़ों का मिजाज कुछ ठीक हो जाता और

उनमें से कुछ मिलनसार तीन-तीन चार-चार की टोलियाँ बनाकर दिनभर की झेली हुई मुसीबतों के बारे में बातचीत करने के लिये एक साथ बैठ जाते। रात हो जाने पर शाम के खाने भर का जुगाड़ न कर पाने वाले कुछ सामान बचा होने पर भी गिरवी रख या बेच नहीं सकते थे। मर्द कमरे के अन्दर गर्मी की परवाह न करते हुए खाङ पर ढह जाता। कभी तो वह उदासी में बिल्कुल गुमसुम रहता, कभी दूसरों को सुना-सुनाकर भड़ास निकालता। आँखों में आँसू भरे औरत बारी-बारी से पड़ोसियों के यहाँ जाती और कई जगह से झिड़की जाने के बाद आखिर में शायद बीस थुङ्छ्येन का फटा पुराना नोट ले आती। इस खजाने को मुट्ठी में दबाकर वह बाहर जाती और कई तरह के आटों का मिला-जुला चोकर खरीद लाती और उससे पूरे परिवार के लिये एक भगोना दलिया बन जाता।

बाघिन और आनन्दी इस ढाँचे में कहीं समा नहीं पाती थी। बाघिन गर्भवती थी, इस बार सचमुच। श्याङचि रोज़ अलस्सुबह ही निकल जाता था, और वह गर्भवती महिलाओं के कम से कम चलने-फिरने की गलत पारम्परिक धारणा के तहत आठ नौ बजे तक बिस्तर पर लेटी रहती। इसके अलावा वह पड़ोसियों को अपना रुतबा भी दिखाना चाहती थी। उन्हें काम पर जाने के लिये बहुत जल्दी उठना पड़ता था, मगर वह जब तक चाहती, पड़ी अलसायी रहती। शाम को वह एक तिपाई लेकर चाल के बाहर किसी हवादार जगह पर बैठ जाती और सब लोगों के सोने चले जाने पर ही लौटकर आती। दरअसल वह अपनी पड़ोसिनों से बातचीत करना अपनी शान के खिलाफ समझती थी।

आनन्दी भी देर से सोकर उठती थी, मगर इसके कारण दूसरे थे। उसे डर था कि चाल के पुरुष उसे तिरछी नज़र से देखेंगे, इसलिये वह उनके चले जाने पर ही बाहर निकलती। दिन के समय वह बाघिन से मिलने आ जाया करती या अपनी इश्तिहारबाजी करने के लिये बाहर टहलती रहती। शाम को वह पड़ोसियों की निगाहों से बचने के लिये फिर सड़क पर टहलने निकल जाती और सभी के सो गये होने पर ही चोरी-चोरी लौटती।

पुरुषों में श्याङचि और अड़ छ्याङचि विचित्र थे। श्याङचि को इस चाल में घुसने से डर लगता था और खुद अपने घर में जाने से तो और भी ज़्यादा डर लगता था। लगातार बकबक सुनते-सुनते उसका भेजा भन्ना जाता और वह कोई एकान्त स्थान ढूँढने के लिये व्याकुल रहता था। घर में बाघिन अपने नाम को ज़्यादा से ज़्यादा सार्थक कर रही लगती थी। छोटे कमरे गरम और घुटनदार थे और बाघिन के वहाँ होने से वे उसे और भी दमघोटू लगते थे। पहले वह झगड़े से बचने के लिये जल्दी आ जाया करता था। लेकिन अब आनन्दी के साथ मिल जाने से वह उसे बहुत ज़्यादा तंग नहीं करती थी और वह देर से घर आने लगा था।

अड़ छ्याङचि तो पिछले कई दिनों से दिखायी ही नहीं दिया था। अपनी बेटी के

धन्धे के बारे में जानने की वजह से, पड़ोसियों को मुँह दिखाने में उसे शर्म आती थी। फिर भी अपने बच्चों का पेट भरने में असमर्थ होने के कारण वह बेटी को यह धन्धा करने से मना नहीं कर सकता था। इसलिये वह दूर ही दूर रहता, क्योंकि "आँख ओट, पहाड़ ओट"। कई बार वह अपनी बेटी से बहुत नफ़रत करता था। अगर वह पुरुष होती तो उसे इतना नीच काम न करना पड़ता। उसने इस परिवार में जन्म ही क्यों लिया? अपने भाइयों का पेट पालने के लिये अपना जिस्म बेचना पड़ रहा होने पर कई बार उसे उस पर तरस आता। दोनों सूरतों में वह कर कुछ नहीं सकता था। शराब पीने के बाद जेब खाली होने पर वह न तो उससे नफ़रत करता और न ही उस पर तरस खाता बल्कि धन माँगने के लिये लौट आता। ऐसे वक़्तों में वह बेटी को सिर्फ धन कमाने वाली चीज़ समझता और मानता कि बाप की हैसियत से उसे इस कमाई में से कुछ हिस्सा माँगने का हक़ था। फिर भी वह दिखावा करने की कोशिश करता था–सभी आनन्दी का तिरस्कार करते थे तो वह भी उसे बख़्शता नहीं था। वह धन लेने के लिये ज़ोर देने के लिये उस पर गालियाँ बरसाता, कुछ इस तरह जैसे दूसरों को जता रहा होता कि वह तो निर्दोष था लेकिन आनन्दी स्वभाव से ही बेशर्म थी।

वह आनन्दी पर चिल्ला रहा होता तो वह कभी एक भी शब्द न कहती। आम तौर पर बाघिन ही उसे डाँटती और समझाबुझाकर भेज देती। बेशक, वह कुछ धन तो लेकर ही जाता और उसे शराब पर उड़ाता रहता। अगर वह अपने पूरे होशो-हवास में उन्हें देख लेता तो उसे इतनी शर्म आती कि वह या तो नदी में कूद पड़ता या फिर फाँसी लगा लेता।

छठे चाँद्रमास का पन्द्रहवाँ दिन बुरी तरह झुलसाने वाला दिन था। सूरज निकलते ही ज़मीन तपने लगी थी। एक धूसर जहरीली भाप, जो न तो बादल थी न ही कुहरा थी, आसमान में काफ़ी नीचे लटकी हुई थी और वातावरण में घुटन थी। बयार का कहीं नाम न था। श्याङचि ने बैंगनी रंग के आसमान को ताका और शाम को चार बजे के बाद से रात की पाली में रिक्शा चलाने का फैसला किया। रात के दिन से निश्चित रूप से अधिक सहनीय होने के कारण वह कमाई कम होने पर तड़के तक रिक्शा चलाता रह सकता था।

बाघिन नहीं चाहती थी कि आनन्दी को कोई गाहक मिल जाने की हालत में वह वहाँ रहे। उसने उससे बाहर जाने का अनुरोध करते हुए कहा, "तुम समझते हो कि अन्दर बाहर से बेहतर है? दोपहर तक दीवारें भी तपने लगती हैं!"

उसने कुछ नहीं कहा, एक करछुल से निकालकर ठण्डा पानी पिया और चला गया।

सड़कों के किनारे सरो के पेड़ बीमार लग रहे थे, उनकी धूलभरी पत्तियाँ मुड़तुड़ गयी थीं, उनकी टहनियाँ लूलों की तरह बेहरकत लटक गयी थीं। सड़क बिल्कुल

सूखी और चमकदार सफ़ेद थी। फुटपाथों से धूल उड़कर जहरीली भाप से मिलकर रेत का एक ऐसा घटाटोप बना रही थी जो राहगीरों के चेहरे झुलसा रहा था। हर जगह झुलसती और उमसभरी थी, मानो पूरे का पूरा प्राचीन नगर एक ईंटों का जलसता भट्ठा बन गया था। कुत्ते अपनी गुलाबी जीभें लटकाये हुए ज़मीन पर पसरे पड़े थे; खच्चरों और घोड़ों के नथूने फूले हुए थे; फेरी वाले अपने माल बेचने के लिये चिल्लाने का साहस नहीं कर रहे थे; सड़कें तारकोल रिस रही थीं और दुकानों पर पीतल के साइनबोर्ड भी पिघल जाने वाले लग रहे थे।

सड़कों पर अजब सी खामोशी थी, केवल लोहारों की दुकानों से एकरस, बेचैनी बढ़ाती हुई टनटनाहट सुनायी दे रही थी। रिक्शावाले अगला खाना सवारियों पर ही निर्भर होने के बावजूद उन्हें बुलाने की ताकत भी नहीं जुटा पा रहे थे। कुछ अपने रिक्शा छाँह में खड़े करके टप चढ़ाकर गद्दी पर लेटे झपकी ले रहे थे; कुछ छोटे चायघरों में बैठे चाय पी रहे थे; और कुछ रिक्शा बिना लिये ही बाहर आ गये थे ताकि देख लें कि धन्धा चल सकता था या नहीं। सवारियाँ मिल जाने पर चुस्त नौजवान रिक्शावाले भी सिर झुकाकर धीरे-धीरे चलने में शर्म महसूस कर रहे थे। हर कुआँ जीवनदाता बन गया था। कुछ कदम चलने के बाद ही वे तेजी से वहाँ जाते और अगर ताजा पानी की बाल्टी न मिल पाती तो वे चरही में से खच्चरों और घोड़ों के साथ ही दो-चार घूँट पीकर सन्तोष कर लेते। अन्य कुछ धूप-आघात या हैजे का दौरा पड़ने से सिर के बल एकाएक गिर पड़ते और फिर कभी न उठ पाते।

श्याङचि भी घबरा गया था। अपना खाली रिक्शा लिये कुछ कदम चलने के बाद ही वह सिर से पैरों तक आग की तरह जलता महसूस करने लगा, उसके हाथों की उल्टी ओर भी पसीने से लथपथ हो गयी थी। फिर भी उसने एक सवारी दिखते ही उसे एक बार चल देने पर बदन में हवा लगने की बात सोचकर बिठाने का फैसला कर लिया। लेकिन वह सवारी लेकर चला ही था कि उसे लगा कि ऐसी जानलेवा गर्मी में कोई काम नहीं कर सकता था। दौड़ते हुए उसने महसूस किया कि उसका दम घुट रहा था और होंठ सूख गये थे। वह प्यासा नहीं था पर पानी देखते ही पीने के लिये ललकने लगा। उसके चाल धीमी करते ही वह झुलसाती हुई धूप उसके बाजुओं और पीठ को जलाती हुई महसूस होने लगती। किसी तरह मंजिल पर पहुँच जाने पर पसीने के मारे कपड़े उसके बदन से चिपक गये थे और हवा ही गर्म होने के कारण ताड़ के पत्तों के पंख का कोई फायदा न था। उसने अनगिनत बार ठण्डा पानी पिया, फिर भी नजदीक के चायघर की ओर दौड़ा और गर्म चाय की दो केतलियाँ पीने पर ही कुछ बेहतर महसूस किया। हर घूँट के साथ इस तरह पसीना बह निकला कि जैसे उसकी देह पीली हो गयी थी, और उसमें चाय की एक बूँद भी नहीं ठहर रही थी। वह चलने की हिम्मत नहीं कर पा रहा था।

बड़ी देर तक बैठे-बैठे वह ऊब गया था। बाहर जाने से डर रहा था मगर करने

को कुछ था ही नहीं, इसलिये उसे लगा कि मौसम जानबूझकर उसे मात कर देना चाहता था। नहीं, वह हार नहीं मानेगा। यह न तो उसकी पहली गर्मी थी, न ही वह पहली बार निकला था। वह पूरा दिन वहाँ बैठे-बैठे बरबाद नहीं करने जा रहा था। मगर उसकी टाँगें भारी हो गयी थीं और उसे लग रहा था कि वह निर्जीव हो गया था, कुछ इस तरह जैसे नहाने के बाद भी हड्डियों की थकान न धो पाया था। वह थोड़ी देर और बैठा रहा और फिर फैसला किया कि चलना चाहिए। वह वहाँ बैठा भी पसीना-पसीना हो रहा था, इसलिये चलकर रिक्शा ही क्यों न चलाए?

मगर बाहर आते ही उसने जान लिया कि गलती की थी। विषाक्त वाष्प तो नहीं रही थी और वातावरण कम दमघोटू था, मगर धूप कहीं ज़्यादा जुल्म ढा रही थी। हवा, छतें, दीवारें और सभी तरफ इतनी चौंध थी कि कोई आँख उठाकर देखने का साहस नहीं कर रहा था। धरती किरमिजी रंग में चमक रही थी। सारी दुनिया आतशी शीशा बन गयी लगती थी। उस पर सूरज की किरणें केन्द्रित होकर दहन कर रही थी। इस दमकती हुई सफ़ेद रोशनी के तले सभी रंग आँखों को जला रहे थे, सभी आवाजें कानों को फाड़ रही थीं और सभी गन्धों में से सिंकी हुई भूमि की दुर्गन्ध आ रही थी। सड़कें वीरान और एकाएक बहुत चौड़ी हो गयी लगती थीं परन्तु खुलेपन में भी ठण्डी हवा का एक झोंका नहीं आता था—यह चौंध बड़ी डरावनी थी।

श्याङचि समझ नहीं पाया कि क्या करे। उसने सिर झुकाया और भारी कदमों से बेमतलब घिसटता रहा, शरीर बदबूदार पसीने से चिपचिपा रहा था। थोड़ी ही देर में पैरों के तलुवे जूतों और मोजों से इस तरह चिपक गये, मानो वह पतले कीचड़ में चल रहा था, यह बहुत वीभत्स था। वह हर बार कुआँ नज़र आते ही तेजी से पानी पीने के लिये लपकता, प्यास बुझाने के लिये उतना नहीं, जितना पानी की ठण्डक का मजा लेने के लिये। ठण्डा पानी गले से नीचे उतरते हुए पेट में जाता तो उसे झुरझुरी लगती, शरीर के रोम सहसा सिकुड़ने लगते और इससे कुछ ताजगी महसूस होती। फिर वह पेट मथा जा रहा होने पर बार-बार डकार लेता।

सवारी खींच पाने का दम न होने पर भी वह इसी तरह चलते और सुस्ताते हुए दोपहर तक भटकता रहा। उसे भूख नहीं लगी। खाने का समय हो गया था मगर खाना देखते ही उसे मतली आने लगती। पेट तो गले तक पानी से भरा था और ऐसे गुड़गुड़ा रहा था जैसे घोड़े या खच्चर का खूब पानी पी लेने पर गुड़गुड़ाता है।

उसे गर्मियों के मुकाबले जाड़ों से हमेशा ज़्यादा डर लगता रहा था, पर अब उसे मालूम हुआ कि गर्मियाँ भी कितनी असहनीय हो सकती हैं। उसे शहर में बिताये पहले के सालों में कभी इतनी अधिक गर्मी पड़ने की याद नहीं थी। क्या सचमुच गर्मी ज़्यादा थी या वही अधिक कमजोर हो गया था? सहसा उसने कुछ कम निर्जीव महसूस किया और उसके दिल की धड़कन क्षणभर के लिये रुक गयी। यही बात थी, वह टूट रहा था। उसे आशंका ने दबोच लिया पर वह कर भी क्या सकता था?

वह बाघिन से पीछा छुड़ा नहीं सकता था, उसकी हालत अड़ छ्याङचि या पहले एक बार उसे मिले लम्बे रिक्शावाले या फिर बछेड़े के बाबा की तरह होने वाली थी। अब उसका अन्त आ गया था!

दोपहर के झट बाद उसे एक और सवारी मिली। वह उस साल गर्मियों के सबसे गर्म दिन का सबसे ज़्यादा गर्म वक़्त था लेकिन उसने फौरन वह सवारी उठाने का फैसला कर लिया। धूप भून रही थी तो कोई बात नहीं, अगर वह उस सवारी को बिना किसी दुर्घटना के ले जाने में सफल रहा तो साबित हो जाता कि वह अभी भी तन्दुरुस्त था; अगर नहीं तो वह जलती जमीन पर गिरकर मर भी नहीं सकता था!

कुछ कदम चलने के बाद उसे ठण्डी बयार का एक झोंका आया महसूस हुआ, यह बहुत गरम कमरे में दरवाज़े की दरार में से हवा आने की तरह था। अपनी इन्द्रियों पर विश्वास न करते हुए उसने सरो की टहनियों को देखा—वे सचमुच हिल रही थीं। दुकानों के अन्दर से लोग अचानक ताड़ के पत्तों के पंखे लिये हुए बाहर निकल आये और कूद-कूदकर चिल्लाने लगे, "ठण्डी हवा आ गयी, लो आ गयी!" सरो के वृक्ष आसमान से खबर लेकर आये हुए देवदूत बन गये थे। "सरो की टहनियाँ हिल रही है! हे भगवान हमें कुछ तो ठण्डक दो!"

गर्मी तो तब भी थी लेकिन लोगों ने राहत महसूस की। बयार हल्की होने पर भी उनमें आशा जगा गयी थी। ऐसे ही दो चार झोंके और आ जाने पर धूप भी कुछ कम झुलसाने वाली हो गयी। बारी-बारी से धूप कभी तीखी होती कभी धीमी होती, मानो रेती का झक्खड़ धूप के आरपार तैर रहा था। एकाएक बयार आँधी में बदल गयी और अभी तक सन्न सरो के पेड़ आनन्द से उत्तेजित होकर अपनी पहले से लम्बी हो गयी लगती डालियों को उछालने और लहराने लगे। आँधी का एक झोंका और आया और आसमान में अँधेरा छा गया। हवा में रेत भरी थी, फिर उसके बैठने तक उत्तर का आकाश काले बादलों से ढँक गया। श्याङचि को अब पसीना नहीं आ रहा था। उसने उत्तर की ओर देखा, फिर टप चढ़ाने और चादर लगाने के लिये रुका। वह गर्मियों में अन्धड़ आने पर उसकी रफ़्तार से अच्छी तरह वाकिफ था। गँवाने के लिये जरा भी वक़्त नहीं था।

उसके यह काम निपटाते ही एक और झोंका आया और काले बादल आधे आसमान में फैल गये। धरती की तपिश सूखी, बदबूदार धूल को घुमाते हुए उड़ा रही ठण्डी हवा में मिल गयी। एक साथ ठण्डा और गर्म लग रहा था। आकाश का दक्षिण आधा हिस्सा चमकीला और धूपीला था तो उत्तरी आधा हिस्सा घनघोर अँधेरे से काला था। कोई बड़ी भारी विपत्ति आने वाली होने की तरह अफ़रातफ़री सी मच गयी। सब रिक्शावालों ने जल्दी-जल्दी टप चढ़ा लिये, दुकानदारों ने साइनबोर्ड उतार लिये, खोमचे वालों ने खोमचे समेट लिये और राहगीर लपकते हुए रास्ता तय करने लगे। एक और झोंका आया और सड़कें खाली हो गयीं : साइनबोर्ड, खोमचे वाले, पैदल चलने

वाले, सभी आँधी से बह गये लगते थे। केवल आँधी में उन्मत्त होकर नाचती सरो की डालियाँ ही रह गयीं।

बादलों के आकाश में पूरी तरह घिरने के पहले ही धरती पर अँधेरा छा गया था। चमकीली और झुलसाती दोपहर सहसा अँधेरी रात में बदल गयी थी। हवा अपने साथ लायी हुई बारिश की बूँदों को लिये किसी चीज़ की तलाश में कभी यहाँ कभी वहाँ दौड़धूप करती रही। दूर कहीं उत्तर में लाल बिजली चमकने से बादलों में मानो खूनी घाव बन गया था। फिर आँधी थम रही थी, मगर उसकी सरसराहट लोगों को कँपा रही थी। फिर वह गुजर गयी, और हर चीज़, सरो की आशंका में इन्तज़ार कर रही टहनियों को भी दुविधा में डाल गयी। आकाश में एक बार और बिजली चमकी और सोंधी गन्ध वाली धूल उठाते हुए पानी गिरने लगा। श्याङचि की पीठ पर बड़ी-बड़ी बूँदें गिरी और वह कँपकँपाने लगा। फिर वर्षा रुक गयी और पूरे के पूरे आकाश में बादल छा गये। एक और जोरदार झोंका आने से सरो की डलियाँ एकदम छितरा गयीं; धूल का बवण्डर उठा और फिर मूसलाधार बारिश शुरू हो गयी। आँधी, धूल और बारिश सबके मिलने से ऐसा ठण्डा, धुँधला बगूला बन गया कि वृक्षों, धरती और बादलों में फ़र्क नहीं किया जा सकता था। आँधी फिर थमने पर भी सीधे ठोस पिण्ड की तरह मूसलाधार पानी गिरता रहा। धरती से अनगिनत तीर उछले, छतों से बह-बहकर हज़ारों प्रपाती झरने गिरे। कुछ ही मिनटों मे आकाश और धरती दोनों मिलकर एक मटमैली जलीय सृष्टि बन गये, बीच-बीच में सफ़ेद चमक भी दिख जाती थी।

श्याङचि बड़ी देर से भीगते हुए तरबतर हो चुका था और उसकी देह पर एक भी सूखा धब्बा तक न था। पुआल की टोपी के नीचे उसके बाल भी एकदम भीग गये थे। सड़क टखनों तक गहरे पानी में डूबी होने से चलना कठिन हो गया था। बारिश ने उसकी खोपड़ी और पीठ पर कोड़े बरसाये, चेहरे पर थपेड़े लगाये और आँखों पर साँटे मारे। वह सर नहीं उठा सकता था, आँखें खोल नहीं सकता था, न साँस ले सकता था और न चल सकता था। पानी में धँसा वह दिशाबोध ही खो बैठा। अपने पूरे शरीर पर हड्डियों को कँपकँपाने वाली पानी की धाराएँ बहने के बारे में ही सचेत वह सुन्न हो गया था। गरमाहट की एक ही जगह उसके दिल की गहराई में रह गयी थी और उसके कानों में वर्षा का तेज शोर भरा हुआ था। वह रिक्शा रोक देना चाहता था, मगर कहाँ खड़ा करे यह समझ नहीं पा रहा था। वह दौड़ना चाहता था, मगर उसके पाँव धँस गये थे। सर झुकाये हुए वह सवारी ढोते हुए बड़ी मुश्किल से कदम-दर-कदम घिसट रहा था। उसकी सवारी रिक्शाचालक को पानी के बीचोंबीच संघर्ष करने देने पर कुछ इस तरह खामोश थी जैसी मर गयी हो।

वर्षा कुछ धीमी होने पर श्याङचि ने अपनी पीठ थोड़ी सीधी की। उसने हाँफते हुए पूछा,"जनाब, थोड़ी देर कहीं शरण ले लें तो कैसा रहे?"

"चलते रहो! तुम मुझे यहाँ छोड़कर नहीं जा सकते!" उसने पैर पटककर चीखते हुए कहा।

दरअसल श्याङचि महसूस कर रहा था कि उसे रिक्शे को रोककर वर्षा से बचने के लिये कहीं शरण ले लेनी चाहिए। पर अपने बदन से बहकर गिरते पानी से वह समझ रहा था कि अगर उसने चलना बन्द कर दिया तो उसे कँपकँपी शुरू हो सकती थी। उसने सड़क पर पानी की गहराई की परवाह न करते हुए दाँत भींचकर दौड़ना शुरू कर दिया। थोड़ी ही देर में आकाश एक बार अँधियारा हुआ, फिर चमका और एक बार फिर बारिश ने उसकी नज़र धुँधला दी।

वे अपनी मंजिल पर पहुँचे तो सवारी ने एक भी थुङछ्येन ज़्यादा नहीं दिया। श्यङचि ने कुछ नहीं कहा, अब उसे ऐसी बातों की चिन्ता ही नहीं रह गयी थी।

बारिश थोड़ी देर के लिये थमी और फिर बूँदाबाँद होने लगी। श्याङचि बगटुट घर भागा और जाते ही अँगीठी के पास बैठ गया। वह वर्षा की मार खाई हुई पत्ती की तरह काँप रहा था। बाघिन ने उसे अदरक और गुड़ मिला उबला हुआ पानी दिया और वह उसे एक ही घूँट में पी गया। फिर वह रजाई में घुसकर तंद्रा में पड़ गया, बारिश की सरसराहट उसके कानों में गूँजती रही।

चार बजे तक काले बादल जलहीन हो गये लगे और बिजली की चमक कुछ मन्द पड़ गयी थी। पश्चिम में मेघ फट गये और उनके काले शिखरों के किनारे पर सुनहरी रंगत आ गयी और उनके नीचे श्वेत कोहरे के लच्छे मँडराने लगे। दक्षिण की ओर बिजली की चमक दिखायी दी और फिर दो-चार बार उसकी हल्की सी कड़क सुनायी दी। कुछ देर बाद पश्चिम में बादलों की फटनों में से धूप चमकने लगी, उसने पानी से भीगी पत्तियों को सुनहरी हरी कर दिया। पूर्व में बादलों के आरपार दोहरी इन्द्रधनुषी मेहराब बन गयी और उसके ऊपर नीले आकाश का एक टुकड़ा थमा हुआ दीखने लगा। थोड़ी ही देर में यह सब अब साफ़ हो गये आकाश से गायब हो गया। आकाश भी धरती की हर चीज़ की तरह अभी धुला हुआ अँधेरे में से खूबसूरती और चमक की एक शीतल, नई दुनिया में उभर आया लगा। कुछ रंगबिरंगे चिउरे चाल कें आँगन के पोखरों पर फुदकने लगे।

नंगे पाँव दौड़-दौड़कर चिउरों को पकड़ने की कोशिश करते हुए बच्चों के अलावा चाल में किसी को भी स्वच्छ आकाश का सौन्दर्य देखने की फुरसत नहीं थी। आनन्दी के कमरे की पिछली दीवार का कुछ हिस्सा ढह गया था और वह अपने भाइयों के साथ मिलकर अपने खाङ की चटायी से दीवार के टूटे हुए हिस्से को ठीक करने में जुटी हुई थी। चाल की बाहरी दीवार भी कई जगहों पर धँस गयी थी, परन्तु सभी के अपने कमरे ठीक कर रहे होने के कारण उसे सुधारने का समय किसी के पास नहीं था। कुछ कमरे देहलियाँ बहुत नीची होने के कारण पानी से भर गये थे, उनमें रहने वाले किसी तरह टूटे-फूटे बर्तनों से पानी उलीच-उलीचकर बाहर निकाल रहे थे।

कुछ लोग ढह गयी दीवारों की मरम्मत कर रहे थे। अपने कमरों की छतों से पानी टपका होने वाले अपना गीला सामान सुखाने के लिये उसे फटाफट अँगीठी के पास अथवा खिड़की की चौखट पर धूप में रख रहे थे। उन्होंने तूफ़ान से बचने के लिये ऐसे कमरों में शरण ली थी जो किसी भी क्षण भहराकर गिर और उन्हें ज़िन्दा ही दफ़न कर सकते थे; बरसात थमने पर वे बाहर निकलकर अपने नुकसान का अनुमान लगा रहे थे। ऐसी भारी वर्षा के बाद एक चिन अनाज का दाम एकाध थुङछ्येन भले ही कम हो जाता, मगर इससे उनका नुकसान तो नहीं भरता। वे किरायेदार थे, मगर कोई भी उनके मकानों की मरम्मत करने तब तक नहीं आता था, जब तक कि वे रहने लायक ही न रह जाते। वैसी हालत होने पर कुछ राजगीर भेज दिये जाते और वे उनके फिर ढहने लगने तक के लिये मिट्टी और टूटी ईंटें लगा-लगाकर मरम्मत कर देते। इसके बावजूद किराया देने में कोताही होने पर सारे परिवार को बाहर फेंक दिया और उनका सामान जब्त कर लिया जाता। इन मकानों के जानलेवा बन जाने पर भी किसी को कोई परवाह नहीं थी। ऐसे छप्परनुमा कमरों में रहने भर का किराया ही दे सकने वाले इससे अधिक क्या आशा कर सकते थे?

तूफ़ान का सबसे भयानक परिणाम तो उससे फैलने वाली बीमारियाँ थीं। रोज़ी कमाने के लिये पूरा दिन सड़कों पर घूमते रहने वाले बड़ों और बच्चों के गर्मियों की ऐसी वर्षा में फँसने की सबसे ज़्यादा सम्भावना रहती थी। वे अपनी शारीरिक मेहनत बेचने के कारण हर समय पसीने से भीगे रहते थे : उत्तर चीन में ऐसे ठण्डीले तूफ़ान अचानक आ जाते, और कभी-कभी अखरोट के बराबर ओले भी लाते हैं। उनके खुले मुसामों पर गिरती ठण्डी बारिश उन्हें कम-से-कम कुछ दिनों के लिये बुखार से गिरा देने के लिये काफ़ी थी। किसी बच्चे के बीमार हो जाने पर दवा के लिये पैसे न होते थे; बारिश मक्के और ज्वार की फसल के लिये तो माफ़िक होती, मगर शहर के अनेक गरीब बच्चों को भी मार डालती। और बड़ों का बीमार पड़ना तो और भी बुरा था। कवि कमल के फूलों पर वर्षा की बूँदों के मोती बनने या दोहरे इन्द्रधनुषों की तारीफ में भले ही गीत गाये; परन्तु गरीबों के घर में कमाने वाले के बीमार पड़ने पर सारे परिवार के भूखों मरने की नौबत आ जाती थी। हर तूफ़ान के बाद रण्डियों, चोरों और आदतन अपराधियों की संख्या बढ़ जाती थी। रोटी कमाने वाले के बीमार हो जाने पर उसके बच्चे भूखों मरने से बचने के लिये कुछ भी करेंगे। वर्षा के अमीर और गरीब, अच्छे और बुरे पर एक ही तरह गिरने के बावजूद दरअसल उसका न्याय न होने वाली दुनिया पर गिरना ही अन्याय है। श्याङचि बीमार पड़ गया था और वह चाल में अकेला मरीज भी नहीं था।

उन्नीसवाँ अध्याय

श्याङचि के दो दिन और दो रात मुर्दों की तरह पड़े रहने पर बाघिन संत्रस्त होने लगी। वह देवी के मन्दिर गयी और तिलिस्मी नुस्खा माँगा और थोड़ी सी भभूत और दो-तीन औषधीय जड़ी-बूटियाँ ले आयी। उसने इनका घोल श्याङचि के गले में डाल दिया और उसने सचमुच आँखें खोल दीं लेकिन न जाने क्या-क्या बड़बड़ाते हुए थोड़ी ही देर में फिर सो गया। तभी बाघिन ने डाक्टर बुलाया। कुछ एक्युपंक्चर और दवा की एक खुराक से वह होश में आ गया। उसने आँखें खोलते ही पूछा, "क्या अभी तक बारिश हो रही है?"

उसने दवा के कड़वे घोल की दूसरी खुराक लेने से इंकार कर दिया। एक तो इस कुढ़न से कि उसमें पैसा लगता था, दूसरे एक ही बार भीगने से बीमार पड़ जाने की शर्मिन्दगी से। यह साबित करने के लिये कि उसे दवा की कोई ज़रूरत नहीं, उसने उसी वक़्त उठने का फैसला कर लिया। मगर उठकर बैठते ही उसे लगा कि उसका सिर किसी भारी वजन से कुचला गया, गर्दन झूल गयी, उसकी आँखों के सामने सुनहरी तारे नाचने लगे और वह फिर बिस्तर पर गिर गया। उसके बारे में बहस की कोई गुंजाइश ही नहीं थी, इसलिये उसने कटोरा उठाकर दवा पी ली।

दस दिन तक वह वहीं पड़ा रहा और हररोज़ बहुत उत्तेजित रहता। कभी-कभी वह तकिये में चेहरा गड़ा बेआवाज़ रोता। वह कुछ कमा तो नहीं रहा था, इसलिये बाघिन ही सारा खर्चा कर रही थी; उसका धन खत्म हो जाने पर तो उन्हें रिक्शा के सहारे ही काम चलाना पड़ता। वह फिजूलखर्च थी और हर समय कुछ न कुछ चरते रहना पसन्द करती थी, वह उसका और फिर बच्चा भी आ रहा होने पर खर्च कैसे चला सकता था? बिस्तर पर पड़े रहने का अरसा बढ़ता जाने पर वह और ज़्यादा कुढ़ता और चिन्ता करता रहा, और इससे उसके ठीक होने में देर ही लगी।

कुछ बेहतर महसूस करते ही उसने पूछा, "रिक्शे का क्या हुआ?"

"चिन्ता मत करो," बाघिन बोली। "मैंने उसे तिङ सि को भाड़े पर दे दिया है।"

"ओह।" उसे चिन्ता हुई, तिङ सि या किसी और ने उसे तोड़-फोड़ दिया तो क्या होगा? मगर उसके खुद खड़ा न हो पा रहे होने पर जाहिर था कि उसे भाड़े पर दिया जाता, निश्चय ही उसे बेकार नहीं रखा जाना चाहिए था। उसने हिसाब लगाना शुरू किया। वह खुद रिक्शा चलाकर हररोज़ औसतन पाँच-छह माओ ले आता। ये दो लोगों के कपड़ों की बात छोड़ भी दें तो किराये, खाने, ईंधन, दिये के तेल और चाय के लिये भी मुश्किल से ही पूरे पड़ते, फिर भी उन्हें बाघिन की तरह फिजूलख़र्ची न करके किफायत बरतनी थी। अब रिक्शा के भाड़े से हररोज़ सिर्फ एक माओ मिल रहा था, इसका मतलब था कि दवा के खर्च के अलावा चार या पाँच माओ

और चुकाने पड़ते थे।

उसके ठीक न होने पर क्या होगा? इसमें हैरानी की बात न थी कि अड़ छ्याङचि पीता था, उसके फटेहाल दोस्त घटिया व्यवहार करते थे—यह धन्धा ही अन्धी गली था। गुजारा चलाने के लिये कितनी भी मेहनत क्यों न करनी पड़े, आपको शादी नहीं करनी, बीमार नहीं पड़ना और एक भी गलत कदम नहीं उठाना चाहिए। हूँ! उसे अपने पहले रिक्शे और बचत की याद आयी। उसने कभी किसी जीव को दुख नहीं दिया और उसके साथ बेइंसाफ़ी नहीं की थी, लेकिन उसके न तो बीमार और न ही विवाहित होने पर भी बेवजह से उसका रिक्शा और बचत दोनों हाथ से जाते रहे थे। आप कुछ भी करें, अच्छा या बुरा, यह रास्ता ही मौत की ओर जाता था और कोई नहीं जानता कि वह कब आ जायेगी। यह सोचते ही उसकी चिन्ता हताशा में बदल गयी। भाड़ में जाये, अगर वह खड़ा नहीं हो सकता था तो उठेगा नहीं—दोनों ही हालतें एक जैसी थीं। वह वहाँ खामोश लेटा रहा, उसका दिमाग़ एकदम खाली था। परन्तु थोड़ी ही देर में वह इसे और ज़्यादा बर्दाश्त नहीं कर पा रहा था और वह तुरन्त उठकर और फिर संघर्ष शुरू करने के लिये बेचैन हो उठा।

यह रास्ता अन्त हो सकता था, परन्तु वह अभी ताबूत में तो नहीं पहुँचा था, इसलिये साँस रहने तक आस थी। फिर भी उसमें अभी खड़े होने की ताकत नहीं थी।

बेहद हताशा में उसने बुझे हुए स्वर में बाघिन से कहा, "मुझे पता था कि वह रिक्शा मनहूस था!"

"ठीक होने की सोचो। हमेशा रिक्शे की ही बात करते रहते हो, तुम रिक्शे की दीवाने हो।"

उसने और कुछ नहीं कहा। हाँ, वह रिक्शे का दीवाना था! रिक्शा चलाना शुरू करने के वक़्त से ही वह यही मानता रहा था कि आख़िरकार रिक्शा ही सब कुछ था।...

थोड़ी सी ताकत महसूस करते ही वह खड़ा हो गया और शीशे में देखा। वह बड़ी मुश्किल से ही खुद को पहचान पाया। उसका चेहरा काली खूँटियों से ढक गया था, कनपटियाँ और गाल धसक गये थे, आँखें दो गड्ढे बन गयी थीं, और उसके घाव के निशान पर पहले से ज़्यादा झुर्रियाँ भी पड़ी हुई थी! घर के अन्दर दम घुट रहा था, फिर भी वह बाहर जाने का साहस न कर पाया। एक तो इसलिये कि उसे अपनी टाँगे थुलथुली और हड्डियों के बिना लग रही थीं, दूसरे किसी जानकार के मिलने के बारे में आशंकित था। इस चाल में और पूर्व और पश्चिम नगर के रिक्शा अड्डों पर हर कोई श्याङचि को सबसे तगड़ा जवान दिलेर मानता था। उसकी ऐसी दयनीय दशा कैसे हो सकती थी? वह बाहर जाना नहीं चाहता था मगर कमरे में बड़ी गर्मी थी। उसकी ख़्वाहिश थी कि एक ही बड़ा कौर खाकर फिर ठीक हो जाये और फिर

रिक्शा चलाने लगे। लेकिन उस जैसी विनाशकारी बीमारी मनमर्जी से आती और जाती है।

उसने एक महीना आराम किया, फिर पूरी तरह ठीक होने या न होने की परवाह न करते हुए उसने अपना रिक्शा बाहर निकाला। लोगों के पहचानने से बचने और आहिस्ते चल पाने के लिये उसने टोपी की बाढ़ से चेहरा काफ़ी हद तक ढँक लिया था। श्याङचि का नाम हमेशा "गति" का पर्याय रहा होने की वजह से अब अगर वह खुले आम रेंगता हुआ दिख गया तो उसकी कितनी जगहँसाई होती।

लेकिन उसका स्वास्थ्य अभी पूरी तरह ठीक न हुआ होने और उसके बीमारी के दिनों में हुए घाटे को पूरा करने के लिये अधिक सवारियाँ उठाना चाहने से वह बीमार पड़ गया। इस बार उसे पेचिश भी हो गयी। उसने अधीरता से अपने चेहरे पर थप्पड़ लगाये मगर इससे क्या होता था, उसका पेट रीढ़ से चिपका हुआ लग रहा था और अब भी चल रहा था। आख़िरकार पेचिश बन्द हुई तो उसे पैरों के बल बैठे होने पर उठ पाने में भी बहुत मुश्किल होती थी। रिक्शा चला पाने का तो सवाल ही न था। बाघिन के शायद अपना सारा धन खर्च कर चुकी होने की बात जानते हुए भी उसने एक महीना और आराम किया।

पन्द्रह अगस्त को उसने फिर काम शुरू करने का फैसला किया। उसने कसम खायी कि दोबारा बीमार पड़ा तो वह नदी में डूब मरेगा।

उसकी पहली बीमारी के दिनों में आनन्दी अक्सर उसे देखने आती थी, और उसके बहस में बाघिन को हरा न पाने और अपने मन में बहुत कुछ होने के कारण उसने कई बार आनन्दी के सामने मन हल्का किया था। इससे बाघिन बहुत नाराज हुई थी। श्याङचि के बाहर होने पर आनन्दी उसकी अच्छी सहेली थी; उसके लौट आने पर वह बाघिन के लफ्जों में "बेशर्म रण्डी" थी। उसने आनन्दी के कर्ज चुकाने पर जोर दिया और कहा, "अब से तुम यहाँ से दूर ही रहो!"

अपना कमरा इतना टूटा-फूटा—खाङ से उठायी गयी चटायी अभी तक टूट गयी दीवार पर लटकी थी—होने के कारण गाहकों को बुलाने की कोई जगह न रह जाने पर आनन्दी के पास "गश्ती कम्पनी"* में अपना नाम दर्ज करवाने के अलावा कोई रास्ता ही न बचा था। मगर "कम्पनी" के खास तौर पर "छात्राओं" और "भले परिवारों की लड़कियों" का धन्धा करने की वजह से उसे उसकी कोई ज़रूरत न थी। उसके ऊँचे लोगों से सम्बन्ध थे और वह क़ीमत भी अच्छी लेती थी; वह आनन्दी जैसी आम रण्डियाँ नहीं चाहती थी। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करे। अगर वह चकले में जाती तो अपना कोई सरमाया न होने से अपने बूते पर धन्धा चलाने लायक न होने की वजह से उसे अपनी सारी कमाई वहीं देनी पड़ती। इसका मतलब पूरी आज़ादी छिन जाना होता तो उसके भाइयों की देखभाल कौन करता?

* वेश्याओं के लिये खुफिया सम्पर्क-केन्द्र।

मौत ही सबसे आसान रास्ता था, धरती पर तो ज़िन्दगी नरक थी ही। वह मौत से नहीं डरती थी, मगर वह मरना भी नहीं चाहती थी, उसे कुछ और उदात्त तथा बहादुरी का काम करना था। अगर वह अपने भाइयों को अपना पेट भरने लायक कमाते देखने तक ज़िन्दा रह सकती तो वह चैन से मर सकती थी। मौत तो देर-सवेर आती ही, मगर वह दो जानें बचा पाती।

बहुत सोच-विचार के बाद उसे सिर्फ एक ही रास्ता सूझा—अपने आपको सस्ते में बेचना। उसके छप्परनुमा कमरे में आना चाहने वाला जाहिरा तौर पर ज़्यादा देने वाला न होता। तब ठीक है, क़ीमत अदा करने वाला हरेक आदमी ठीक है। इस तरह वह कम से कम कपड़ों और मेकअप पर होने वाला खर्च तो बचा सकती थी। उसका मजा लेने आने वाले कुछ थुङछूयेन देकर किसी भड़कीली सुन्दर की उम्मीद भी नहीं कर सकते थे। वह इतनी जवान थी कि उन्हें वह सौदा फायदे का ही लगता था।

अब बाघिन का पेट बच्चे की वजह से काफ़ी बड़ा हो गया था। वह उसके गिर जाने के डर से खरीददारी करने भी बाहर न जाती थी। श्याङचि के सारा दिन बाहर रहने और आनन्दी के पास न फटकने से वह घर में बँधे कुत्ते जितनी ही अकेली हो गयी थी। इससे उसकी कड़वाहट में बढ़ोत्तरी ही हुई और उसने महसूस किया कि आनन्दी महज उसे मात देने के लिये ही खुद को सस्ते में बेच रही थी। बदला लेने की नीयत से उसने बाहरी कमरे का दरवाज़ा खोलकर इन्तज़ार में बैठे रहना शुरू कर दिया। वह किसी को आनन्दी के कमरे में जाते देखती तो गालियाँ बकने लगती, इससे आने वाला और आनन्दी दोनों उलझन में पड़ जाते। आनन्दी के गाहक पहले से कम हो जाने पर उसे बहुत खुशी हुई।

आनन्दी जानती थी कि ऐसी ही हालत रही तो पूरी चाल के लोगों के उसे वहाँ से भगाने में बाघिन का साथ देने में देर नहीं लगेगी। उसे डर तो था लेकिन गुस्से करने की हालत में वह न थी, क्योंकि उस जैसी परिस्थिति में पड़े हुए लोगों को यर्थाथवादी होना ही पड़ता है। उसने अपने छोटे भाई को साथ लेकर बाघिन के सामने घुटने टेक दिये। उसने कहा तो कुछ नहीं परन्तु उसके रुख से जाहिर था कि अगर इतनी अवमानना काफ़ी न थी तो वह मरने को भी तैयार थी लेकिन इससे पहले वह बाघिन से अपना हिसाब ज़रूर चुकता करती। शर्मिन्दगी प्रतिरोध का पूर्वरंग होती है।

अब बाघिन के असमंजस में पड़ने की बारी थी। उसे लगा कि उसके पैंतरे से बड़ा पैंतरा चला गया था लेकिन अपना पेट फूला होने की वजह से लड़ने का जोखिम नहीं उठा सकती थी और इसलिये उसे बहाना बनाना पड़ा, अरे, वह तो सिर्फ छेड़छाड़ कर रही थी! अच्छी आनन्दी तो इसका बुरा मान गयी! ऐसी कैफियतों के बाद उनमें समझौता हो गया और बाघिन पहले की तरह ही आनन्दी की हर काम में मदद

करने लगी।

मध्य शरदोत्सव को रिक्शा चलाना शुरू करने के बाद से श्याङचि अपना खास ध्यान रखता रहा था। दो बीमारियों से उसे यह जाहिर हो गया कि वह लोहे का बना हुआ नहीं था। उसकी धन कमा पाने की उम्मीद कायम होने के बावजूद इन रुकावटों ने किसी आदमी के अकेले अपने बूते पर कुछ करना चाहने की कमजोरी उसे समझा दी थी। कई बार असली मर्द को जान लड़ाकर भी कुछ कर दिखाना चाहिए, मगर इसके बावजूद उसे भी खून उगलना पड़ सकता है! उसकी पेचिश ठीक हो चुकी होने पर भी उसे कभीकभार उदरशूल हुआ करता था। कई बार उसके रिक्शा चलाना शुरू करके रफ़्तार पकड़ने की सोच रहे होने पर ही उसकी आँतों में ऐंठन महसूस होने लगती और वह चाल धीमी कर देता। उसे अपने पेट में उठे दर्द को अपनी पूरी ताकत से बर्दाश्त कर पाने के लिये सिर झुकाये हुए ही अचानक रुकने के लिये मज़बूर भी हो जाना पड़ता था। अकेले रिक्शा चलाने में इतनी मुश्किल न थी, लेकिन औरों के साथ दौड़ते हुए उसके इस तरह ठिठक जाने से दूसरों को होने वाला अचरज उसे बहुत शर्मसार कर जाता। वह अभी बीस बरस से कुछ ऊपर का ही हुआ था और उसकी यह हालत थी, तो तीस या चालीस का हो जाने पर क्या होगा? यह ख़्याल ही उसके ठण्डे पसीने छुटा देता।

मासिक नौकरी में आराम करने के कुछ मौके मिल जाने से वह उसकी सेहत के लिये बेहतर रहती। तेज दौड़ना पड़ने के साथ ही बीच-बीच में आराम भी बहुत मिल जाता था, इसलिये वह फुटकर सवारियाँ उठाने से कहीं अधिक आसान था। लेकिन वह जानता था कि बाघिन इसके लिये कभी सहमत न होती। विवाह ने उसकी आज़ादी खत्म कर दी थी और इस सबके ऊपर बाघिन भी चण्डी बनी बैठी थी। यह तो उसकी बदकिस्मती ही थी!

इस तरह आधे साल तक वह नाखुश, फिर भी कड़े दृढ़संकल्प के साथ, न तो बहुत ज़्यादा मेहनत करते और न ही आलस से काम लेते हुए बीच के रास्ते पर चलता रहा। चौकसी के बावजूद वह आम रिक्शावालों के मुकाबले ज़्यादा ही कमा लेता था। पेटदर्द एकदम असहनीय न हो जाने तक वह जितनी सवारियाँ उठा सकता उन सबको उठाता ही चला जाता। उसने बहुत बढ़ा-चढ़ाकर किराया माँगने, आधे रास्ते में सवारी बदलने या सिर्फ ज़्यादा किराया देने वाली सवारी का इन्तज़ार करते रहने की अपने पेशे की चालें कभी अपनायी ही न थीं। इस तरह वह मेहनत तो ज़्यादा करता था, मगर नियमित आमदनी हो जाती थी। उसने कभी धोखा देने की कोशिश नहीं की, इसीलिये उसका कुछ भी दाँव पर न रहता था।

फिर भी वह इतनी कमाई न कर पाता कि कुछ बचत कर सकता। धन उसके बांए हाथ में आता और दायें से निकल जाता, हररोज़ वह खाली हो जाता। उसने कुछ भी बचाने की सारी उम्मीद छोड़ दी। वह किफायत से ज़िन्दगी गुजारना जानता

था मगर बाघिन भी निश्चित रूप से खर्च करना जानती थी। उसका प्रसव चाँद्र नववर्ष के बाद दूसरे महीने के शुरू में प्रत्याशित था और जाड़े की शुरुआत से ही उसका पेट काफ़ी बढ़ने लगा था। इससे भी बढ़कर तो यह था कि वह अपना महत्व जताने के लिये अपने बढ़े हुए पेट का दिखावा करना पसन्द करती थी। वह अपने आपको देखती तो खाङ से उतरना भी न चाहती और आनन्दी को खाना पकाने के लिये कह देती। जाहिर है कि बचा हुआ खाना लड़की के भाई खाते और इससे खर्च बढ़ जाता।

भोजन के अलावा बाघिन को बीच-बीच में भी खाना होता था। वह अपना पेट बढ़ता जाने पर महसूस करती कि वह खुद को स्वादिष्ट नाश्तों से वंचित नहीं रख सकती थी। वह न सिर्फ खुद अपने लिये चटपटी चीज़ें खरीद लेती बल्कि उसने श्याङचि को भी रोज़ कुछ न कुछ लाने का हुक़्म दे दिया। इसलिये वह जितना भी कमाता वह उसे सबको खर्च कर डालती, उसकी फ़रमाइशें उसकी आमदनी के मुताबिक ही बढ़ती और घटती रहतीं। और वह कुछ भी कह न सकता था। उसकी बीमारी के दौरान उन्होंने उसका धन ही खर्च किया था, अब उसकी जिम्मेदारी थी कि बाघिन को जो अच्छा लगे वह उसे खरीदकर दे। अगर वह हाथ रोककर खर्च करने की कोशिश करता तो वह झट बीमार पड़ जाती रही।

"गर्भाधान नौ महीने का रोग है," उसने उसे बताया। "तुम इसके बारे में कुछ नहीं जानते हो।" और वही सच भी था। नववर्ष के पास आते जाने पर उसकी फरमाइशें बढ़ती गयीं। वह खुद इधर-उधर न जा पाने की वजह से आनन्दी को एक के बाद दूसरे काम के लिये दौड़ाती रहती। उसे घर में बन्द रहना नापसन्द होने पर भी अब बाहर निकलने में उसके नखरे बहुत बढ़ जाने से वह बुरी तरह ऊब जाती थी। उसके पास मन बहलाने का एक ही तरीका ज़्यादा चीज़ें खरीदना रह गया था। वह कहती यही थी कि वे खुद अपने लिये नहीं, श्याङचि के लिये खरीदती थी।

"तुमने सालभर एड़ियाँ रगड़ी हैं, थोड़ा सा खाते क्यों नहीं?" वह कहती। "उस बीमारी के बाद से तुम अभी तक पूरी तरह ठीक नहीं हुए हो। यह साल का अन्त है, कुछ खाओ, या क्या तुम खटमल जैसे दुबले होने के इन्तज़ार में हो?"

श्याङचि को बहस करना पसन्द न था, वह बहस करना जानता भी न था। खाना तैयार हो जाने पर वह दो-तीन बड़े कटोरे भरकर खा लेती और कभी कसरत न करने के कारण वह अपना पेट इतना फूला महसूस करती कि उसे थामकर रोने लगती कि पेट में बच्चा होने से उसे मितली आती थी।

नववर्ष के बाद उसने श्याङ्चि को शाम के समय बाहर निकलने से एकदम रोक दिया। वह नहीं जानती थी कि कब बच्चा पैदा हो जाता और वह डरती थी। अब जाकर उसको अपनी असली उमर की याद आयी और वह इसे स्वीकार तो अब भी नहीं करती थी मगर उसने यह कहना बन्द कर दिया, "मैं तुमसे बस थोड़ी सी

बड़ी हूँ।"

उसके बात का बतंगड़ बनाने से श्याङचि परेशान हो जाता था। बच्चों की पैदाइश से ज़िन्दगी जारी रहती है और श्याङचि को बच्चा होने से कोई लाभ न होने पर भी वह कुछ आनन्द अनुभव किये बिना न रह सका, क्योंकि उस एकदम सीधे-सादे और जादू भरे लफ़्ज "पापा" से उसे भी पुकारा जाता जो पत्थर के आदमी के दिल को भी छू जाता था। श्याङचि बेढंगा और बेशऊर तो था और उसे अपने में गर्व करने लायक कोई बात नहीं दिखती थी लेकिन इस जादुई शब्द का ध्यान आते ही वह अचानक अपने महत्व के बारे में सजग हो उठा। उसके पास कुछ भी नहीं था, इसकी कोई अहमियत न रह गयी; अगर उसके अपना बच्चा हो जाता तो उसकी ज़िन्दगी खाली न रह जाती। और इसलिये उसने बाघिन के लिये जो भी कर सकता था और उसकी टहल के लिये सब करने की कोशिश की। अब वह सिर्फ "कोई" नहीं रह गयी थी। यह सच है कि वह नितान्त असुन्दर थी, मगर इस मामले में पूरा सेहरा उसी के लिये था।

यह सब होने पर भी उसकी मचाई हलचल निश्चय ही असहनीय होती जा रही थी। वह कभी कुछ चाहती तो कभी कुछ, और किसी शैतान के उस पर ग़ालिब होने की तरह व्यवहार करती। इधर श्याङचि को रोज़ी कमानी थी और उसे आराम भी चाहिए था। धन की फिजूलखर्ची से ज़्यादा फ़र्क नहीं पड़ता था, मगर दूसरे दिन क़ड़ी मेहनत शुरू कर पाने के लिये तो रात को उसे अच्छी तरह सोना ज़रूरी था। बाघिन उस रात को न काम पर जाने देती और न ही चैन से सोने देती, इसलिये वह दिनभर भारी सिर लिये भौंचक्का सा रहता। वह बारी-बारी से आनन्द, चिन्ता और नाराजगी महसूस करता, उसे कभी-कभी अपनी खुशी पर अपराध की या फ़िक्र में कुछ सन्तोष की भावना भी जगती लगती। और इतना सरलहृदय होने के कारण परस्परविरोधी भावनाएँ उसे असन्तुलित बना देतीं। एक बार तो वह सवारी का बताया हुआ पता ही भूल गया और मंजिल से आगे निकल गया।

फानूस मेले के आसपास बाघिन ने श्याङचि को दाई बुलाने भेजा—वह और नहीं सह पा रही थी। दाई ने बताया कि अभी बहुत देर है और उसे प्रसव का समय पता लगाने के बारे में समझाया। बाघिन दो दिन और सहती रही और फिर उसने इतना होहल्ला मचाया कि दाई को दोबारा बुलवाया गया। लेकिन अभी भी देर थी। बाघिन रोती और चीखती रही कि वह मरना चाहती थी, वह इतनी यातना नहीं सह सकती थी। श्याङचि की समझ में न आया कि क्या करे, मगर उसने उसका मन रखने के लिये अपना रिक्शा चलाना बन्द कर दिया।

महीने के आख़िर तक इसी तरह चलता रहा, तब श्याङचि भी देख पाया कि उसके प्रसव का समय आ ही गया था। बाघिन इंसान तो लगती ही न थी। दाई एक बार फिर आयी और उसने उसे संकेत दिया कि बाघिन की उमर और यह उसका

पहला बच्चा होने के कारण प्रसव में कठिनाई होगी। उसने गर्भावस्था में कोई व्यायाम नहीं किया था और चिकना भोजन अधिक करती रही थी, इसलिये भ्रूण का आकार बहुत बड़ा था, और वे प्रसव आराम से होने की आशा नहीं कर सकते थे। इससे भी बढ़कर यह था कि वह कभी डाक्टर को दिखाने नहीं गयी थी, और कोख़ में शिशु की गलत स्थिति ठीक करने में बहुत देर हो चुकी थी। दाई ऐसा कोई कौशल भी नहीं जानती थी। वह सिर्फ यही कह सकती थी कि वह आड़ा पैदा हो सकता और यह बहुत मुश्किल प्रसव था।

उस चाल में बच्चे पैदा होने और प्रसव में मृत्यु की बात एक साथ ही की जाती थी। लेकिन बाघिन को खतरा कहीं अधिक था। बाकी औरतें बच्चा पैदा होने के क्षण तक काम करती थीं, और उन्हें खाने को भी बहुत कम मिलता था, इसलिये उनके शिशु बहुत बड़े कभी नहीं हो पाते थे और प्रसव भी आसान हो जाता था। उनका सबसे बड़ा जोखिम तो प्रसव के बाद की बात थी। बाघिन का मामला उसके ठीक विपरीत था। उसकी विशेष सुविधाओं से भरी हुई आरामतलब ज़िन्दगी अब उसके लिये मुसीबत बन गयी थी।

श्याङचि, आनन्दी और दाई तीन दिन और तीन रात बाघिन की सेवा करते रहे। उसने देवताओं की मन्नत मानी और अनगिनत कसमें खायीं मगर कुछ लाभ नहीं हुआ। आख़िर उसकी आवाज फटने लगी और वह "माँ! ओह, माँ!" ही कराह पाती थी। दाई की अकल काम नहीं कर रही थी, बाकी सब भी कुछ समझ नहीं पा रहे थे। खुद बाघिन ने ही श्याङचि को तशङमन दरवाज़े के बाहर से छन दादी को बुला लाने के लिये कहा था। भेकात्मा के बोलने का माध्यम वह बुढ़िया पाँच युवान लिये बिना आने को तैयार न हुई, तो बाघिन ने अपने आख़िरी सात या आठ युवान निकाले।

"अच्छे श्याङचि, जल्दी जाओ! धन की मत सोचो। मैं चंगी होने पर ज़िन्दगीभर तुम्हारी बात मानूँगी। जल्दी करो!"

आख़िर दियेबाती का समय हो रहा था तो बुढ़िया अपने "वेदी सेवक" के साथ आ पहुँची। वह लगभग चालीस बरस का बदरंग चेहरे वाला हट्टाकट्टा आदमी था। छन दादी भी पचास के आसपास थी। उसने नीली रेशमी फतूही पहनी हुई और बालों में अनार के लाल फूल टाँगे हुए थे। इसके अलावा उसने सोने का पानी चढ़े जेवरों का सेट भी पहन रखा था। उसकी आँखें बरमियों की तरह तीखी थीं। पहले उसने अपने हाथ धोये और कुछ अगरबत्तियाँ जलायीं, फिर कोर्निश करके जल रही अगरबत्तियों वाली मेज़ के पीछ बैठकर उनके जलते हुए सिरों को बड़े गौर से देखने लगी। सहसा उसका सारा शरीर भयंकर दौरे से काँपने लगा। उसका सिर झुक गया, आँखें बन्द हो गयीं और वह काफ़ी लम्बा अरसा लगने वाले समय तक निश्चल रही। कमरे में ऐसा सन्नाटा था कि सुई गिरने पर भी आवाज़ सुनायी पड़ जाती, बाघिन ने अपनी कराहें तक थाम ली थीं।

धीरे-धीरे छन दादी ने सर उठाया और चारों ओर निहारा, इस पर "वेदी सेवक" ने श्याङचि को कोर्निश करने के लिये कोंचा। श्याङचि देवताओं में आस्था के बारे में निश्चित न था, इसलिये हक्केबक्केपन में वह कई बार अपनी खोपड़ी जमीन तक ले गया। वह एक बार फिर खड़ा हुआ तो उसने अगरबत्तियों के उन चमकते लाल सिरों को देखा जो भेकात्मा की तेज आँखें थीं, और सुगन्ध को सूँघा। उसमें एक अस्पष्ट सी आशा जगी कि शायद ऐसा करने से भला हो सकता था। वह भौंचक्क बैठा रहा, ठण्डी हथेलियों से पसीना छूटने लगा।

भेकात्मा अब ठहर-ठहरकर फंटे गले से बोलने लगी। "नहीं, नहीं, नहीं, कोई मामला नहीं! प्रसव जल्दी कराने के लिये तावीज लिखो!"

"वेदी सेवक" ने झट मोटे पीले कागज का एक टुकड़ा बुढ़िया को थमा दिया। आत्मा के माध्यम ने अगरबत्ती उठा ली और उसे थूक से भिगोकर उसी से लिखना शुरू किया। फिर वह कुछ शब्द बुदबुदायी, उनका अर्थ यह था कि किसी पूर्वजन्म में बाघिन के इस शिशु से कुछ कर्ज लेने की वजह से अब उसे यातना उठानी पड़ रही थी। श्याङचि का सिर भन्ना रहा था, वह कुछ साफ़-साफ़ सुनकर समझ तो नहीं पाया मगर भयभीत ज़रूर हो गया।

छन दादी ने विकराल जम्हाई ली और कुछ देर आँखें मूँदे बैठी रहने के बाद उन्हें सपने में से जगने की तरह खोला। "वेदी सेवक" ने उसे तत्काल बताया कि भेकात्मा ने क्या कहा था। इस पर वह प्रसन्न दिखायी दी। "आत्मा आज मोद में है और बोली है!" तब उसने श्याङचि को समझाया कि बाघिन को वह तावीज उसे दी गयी गोली के साथ कैसे निगलना था।

बुढ़िया तावीज के असर को देखने के लिये प्रतीक्षा करने को उत्सुक थी, इसलिये श्याङचि को उसे खाना भी खिलाना पड़ा। यह काम उसने आनन्दी को सौंपा और वह तिल की लेई वाली कुछ गरम मोटी रोटियाँ और सुअर की लवाबदार टाँग ख़रीद लायी। इतना करने पर भी शराब न होने पर बुढ़िया को शिकायत रही।

बाघिन के तावीज निगल जाने और छन दादी और "वेदी सेवक" के खाना खा चुके होने के बाद भी बाघिन लगभग एक घण्टे तक कराहती और छटपटाती रही और उसकी पुतलियाँ ऊपर की ओर लुढ़कनी शुरू हो गयी थीं। छन दादी को एक और उपाय सूझा और उसने शान्त स्वर में श्याङचि को कहा कि वह एक लम्बी अगरबत्ती के सामने झुककर प्रणाम करे। इस समय तक श्याङचि को छन दादी में ज़्यादा आस्था नहीं रह गयी थी, परन्तु वह पाँच युवान उसकी भेंट चढ़ा चुका था, इसलिये उसने सोचा कि वह उसके सभी तरीके आजमाकर देख सकता था। वह बुढ़िया का पीट नहीं सकता था, तब फिर उसकी बातें मानकर देख सकता था—उनमें से किसी का कोई नतीजा निकल भी सकता था।

अगरबत्ती के सामने वह घुटनों के बल सीधा बैठा समझ नहीं पा रहा था कि

किस देवता से प्रार्थना करे, मगर उसने महसूस किया कि उसे ईमानदार रहना चाहिए। टिमटिमाती अगरबत्ती पर टकटकी लगाकर देखने से उसे उसके जलते हुए सिरे पर कुछ छायात्मक रूप नज़र आते लगे और उसने उन्हीं से प्रार्थना की। अगरबत्ती जलते-जलते छोटी होती जा रही थी, उसका लाल सिरा राख से ढँकने लगा था। श्याङचि ने सर झुकाया, धरती पर हथेलियाँ रखीं और उसे ऊँघाई आ गयी। उसे अच्छी तरह न सोये हुए तीन दिन हो चुके थे। उसके सिर को आगे की ओर झटका लगा और वह चौंककर जागा तो अगरबत्ती लगभग पूरी जल चुकी थी। वह उठने का समय था या नहीं, इसकी परवाह न करके वह धीरे-धीरे खड़ा हुआ, उसकी टाँगें सुन्न हो गयी थीं।

छन दादी और "वेदी सेवक" गायब हो चुके थे।

छन दादी से घृणा करने का भी समय श्याङचि के पास नहीं था, वह तेजी से बाघिन के पास गया। वह जान गया था कि उसे कोई बचा नहीं सकता था। उसकी अन्तिम साँसें चल रही थी, वह कराहने में भी समर्थ नहीं रह गयी थी। दाई की समझ में कुछ न आया तो उसने श्याङचि को उसे अस्पताल ले जाने की सलाह दी।

श्याङचि के दिल के दो टुकड़े हो गये लगे, वह फूट-फूटकर रो पड़ा। आनन्दी के आँसू भी बह रहे थे, परन्तु वह मददगार होने के कारण अपना होश सम्भाले हुए थी। "भाई श्याङचि, रोओ मत! मैं अस्पताल जाकर पूछती हूँ!"

बिना यह जानने की परवाह किये कि उसकी यह बात उसने सुनी या नहीं, वह आँसू पोंछती हुई दौड़कर बाहर चली गयी।

एक घण्टे बाद वह दौड़ती हुई लौटी, हाँफने के कारण वह बोल भी नहीं पा रही थी। कष्टकर खाँसी से परेशान मेज से टिककर वह किसी तरह इतना ही बता पायी कि डाक्टर एक बार आकर सिर्फ मरीज की जाँच करने के ही दस युवान लेता था। प्रसव पर खर्च बीस था। प्रसव में कठिनाई होने पर उन्हें अस्पताल जाना पड़ेगा और उसमें कई दर्जन युवान लगने थे। "भाई श्याङचि, अब हमको क्या करना चाहिए?"

श्याङचि इन्तज़ार के अलावा और क्या कर सकता था। जिनकी किस्मत में मरना ही बदा था उन्हें मरना ही था!

अज्ञान और निर्ममता संसार में स्वाभाविक हैं, लेकिन इनके कारण अलग-अलग हैं।

आधी रात को बाघिन ने पेट में मरे हुए शिशु के साथ दम तोड़ दिया।

बीसवाँ अध्याय

श्याङचि ने अपना रिक्शा बेच दिया!

धन उसकी उँगलियों में से पानी की तरह बह गया। मुर्दे को दफ़नाना पड़ता है और ताबूत पर मरने का प्रमाणपत्र चिपकाने में भी पैसा लगता था।

वह काठ मार गया होने की तरह सभी को दौड़धूप करते हुए देखता रहा, करने के नाम पर सिर्फ ज़रूरत पड़ने पर धन देता रहा। उसकी आँखें डरावनी लगने की हद तक लाल हो गयी थीं, उनके कोनों पर पीला सा कफ था; यह न जानते हुए कि वह क्या कर रहा था, वह बहरे की तरह ठोकरें खाते हुए दूसरों के पीछे-पीछे चलता रहा।

बाघिन के ताबूत के पीछे चलते हुए शहर के बाहर पहुँचने पर ही उसका दिमाग़ कुछ साफ़ हुआ; तब भी वह अपने विचारों को एकाग्र नहीं कर पा रहा था। आनन्दी के दो भाई ही अन्य सोग मनाने वाले थे। दोनों भाइयों के हाथों में कागजी धन* की दो पतली गड्डियाँ थीं और वे रास्ते में आने वाली प्रेतात्माओं को भगाने के लिये उसे उड़ाते हुए चल रहे थे।

उसने चकराये हुए, सूखी आँखों से वाहकों को क़ब्र के अन्दर ताबूत उतारते हुए देखा। उसके सीने में आग का एक ऐसा गोला लगता था जिसने उसके सारे आँसू सुखा दिये थे और वह रो नहीं सकता था। वह सूनी आँखों से ऐसे ताकता रहा जैसे समझ नहीं पा रहा था कि लोग कर क्या रहे थे। मुख्य वाहक के उसे रस्म पूरी कर चुके होने के बारे में बताने पर ही उसने धर जाने के बारे में सोचा।

आनन्दी ने कमरों को ठीकठाक कर दिया था। उसकी हड्डियों तक में भी थकान भर गयी थी, घर पहुँचते ही वह खाट पर लेट गया। उसकी आँखें इतनी सूखी थीं कि उन्हें बन्द करना भी कठिन था, इसलिये वह छत पर बने पानी टपकने के धब्बों को एकटक ताकता रहा। नींद आ नहीं रही थी, उठ बैठा, चारों तरफ ताका, फिर आँखें झुका लीं। कुछ समझ न पाया कि क्या करे तो बाहर जाकर एक पैकेट सिगरेट ले आया और एक सुलगाने के लिये खाट पर एक किनारे बैठ गया। वैसे उसे सिगरेट पीना कभी अच्छा नहीं लगा था।

सिगरेट के सिरे से उठते हुए नीले धुएँ के लच्छे को ताकते हुए उसने न सिर्फ बाघिन बल्कि अपनी समूची ज़िन्दगी के बारे में सोचा तो अचानक उसके गालो पर आँसू बहने लगे। शहर में बिताये कुछ बरस और उसकी सभी कोशिशें इसमें खत्म हो गयीं! उसका रोना भी नीरव था! अरे, रिक्शा ही तो उसका चावलों का कटोरा था। उसने एक रिक्शा खरीदा और वह छिन गया; एक और खरीदा तो उसे बेच डाला। दो बार उसने अपने अभीष्ट को प्राप्त किया था, महज दोबारा गँवाने के लिये

* अन्धविश्वास के अनुसार इसे मृतक के इस्तेमाल के लिये समझा जाता था।

ही। फिर उसने इतने कष्ट और अन्याय भी बेकार ही सहे। उसके पास कुछ नहीं था, कुछ भी तो नहीं बचा था, उसकी पत्नी भी नहीं रही थी! बाघिन चण्डी भले ही रही हो, पर उसके बिना उसका घर कैसे हो सकता था? कमरे में सभी चीज़ें उसी की थीं, फिर भी वह नगर के दरवाज़ों के बाहर दफ़न पड़ी हुई थी। उसके मन में कड़ुवाहट भर गयी, दहकते गुस्से ने उसके आँसू सुखा दिये और वह बहुत कसकर सिगरेट के कश खींचने लगा। वह अधिक सिगरेट पीने को जितना ज़्यादा नापसन्द करता था उतने ही जोर से और ज़्यादा पी रहा था। पैकेट खाली हो जाने पर उसने सर को हाथों पर टिका लिया, उसके मुँह में तीती कड़ुवाहट की तरह का कसैलापन आत्मा में भी भरा हुआ था। उसे लगा कि वह चीखे या दिल का खून उलट दे।

तभी किसी वक़्त आनन्दी अन्दर आ गयी थी। वह बाहरी कमरे में कटायी-तख़्ते के पास खड़ी उसे एकटक देख रही थी।

उसने अचानक सिर उठाया और उसे देखा कि एक बार फिर उसके आँसू बह निकले। अपनी मौजूदा हालत में तो वह कुत्ते को देखकर भी रो पड़ा होता, दरअसल वह किसी भी प्राणी के सामने अपने दुख ऊँड़ेलने के लिये बेचैन था। वह उससे कुछ हमदर्दी पाने के लिये उससे बात करना चाहता था, मगर कहने को इतना ज़्यादा था और वह खामोश ही रहा।

"भाई श्याङचि!" वह कुछ नजदीक आयी।"मैंने सब चीज़ें ठीकठाक कर दी हैं।"

उसने उसका शुक्रिया अदा न करके महज सिर हिला दिया—दुख में औपचारिक नम्रता भी खोटी लगती है।

"अब तुम क्या करोगे?"

"हूँ?" वह कुछ भी समझ नहीं पाया लगा था। थोड़ी देर बाद लफ्ज उसके जेहन में बैठे तो उसने न में सिर हिलाया—उसने अभी उतनी दूर तक सोचा ही नहीं था।

वह कुछ और नजदीक आयी और सफ़ेद दाँत निकालते हुए अचानक शरमा गयी, मगर वह बोली कुछ नहीं। ज़िन्दगी ने उसे बेशर्म बनने के लिये मजबूर कर दिया था, परन्तु कोई सचमुच अहम बात होने पर वह औचित्यपूर्ण व्यवहार करने की पूरी कोशिश करने वाली शालीन औरत ही थी।

"मैं सोच रही थी..." उसने बस इतना ही कहा। उसके दिल में कहने को बहुत कुछ था, मगर इतना कहने पर ही वह गायब हो गया और वह एक लफ़्ज भी याद न कर पायी।

लोग शायद ही कभी एक दूसरे को पूरी सच्चाई बताते हैं, लेकिन औरत का शर्माना लफ़्ज़ों से कहीं ज़्यादा कह देता है। श्याङचि भी जान गया कि वह कहना क्या चाहती थी। उसकी नज़रों में वह बेहद ख़ूबसूरत थी, उसका हर पोर सुन्दर था। अगर वह ज़ख्मों से ढँक जाती और उसका माँस गलने लगता, फिर भी वह उसे ख़ूबसूरत लगती। वह ख़ूबसूरत, नौजवान, अपने को बेहतर बनाने की कोशिश करने

वाली ओर कमखर्च थी। वह दूसरी शादी करना चाहता तो वह आदर्श पत्नी होती। मगर उसे दूसरे विवाह की जल्दबाजी नहीं थी—अभी वह किसी तरह की भी योजनाएँ नहीं बना सकता था। लेकिन उसके इच्छुक होने और कटु यथार्थ के कारण यह पेशकश इतनी जल्दी करने के लिये मज़बूर होने से वह इंकार भी नहीं कर सकता था। वह इतनी शालीन थी और उसने उसकी इतनी ज़्यादा मदद की थी कि वह सिर्फ हाँ में सिर ही हिला सके। वह उसे अपनी बाँहों में भरकर बहुत, बहुत रोना और रोकर अपने सारे दुख भुलाना और उसके साथ नई ज़िन्दगी शुरू करने के लिये ललक रहा था। उसके लिये वह किसी पुरुष को औरत से मिल सकने और मिलने ज़रूरी होने वाले सुख देने वाली का साक्षात रूप थी। आम तौर पर बहुत कम बोलने वाला वह उसके सामने हर तरह की बात करने को बेताब था। उसके सुन रही होने पर वह बेमकसद बात न कर रहा होता। उसका एक बार सिर हिलाना या मुस्करा देना ही सबसे बढ़िया जवाब होता और वह महसूस करता कि सचमुच उसका भी कोई "घर" है।

उसी वक़्त आनन्दी का दूसरा भाई अन्दर आ गया। "दीदी! बापू आ गये हैं"

अड़ छ्याङचि आँगन में झोंके खाता आ रहा था तो आनन्दी ने चिढ़कर मुँह बनाया और दरवाज़ा खोल दिया।

"तुम श्याङचि के घर में क्या कर रही हो?" अड़ छ्याङचि गुस्से से घूर रहा था और उसके पाँव डगमगा रहे थे। "खुद को बेचती हो, यही काफ़ी बुरा है, इस पर भी तुम श्याङचि को मुफ़्त में अपनी देह देने आ गयी हो? बेशर्म रण्डी कहीं की!"

अपना नाम सुनकर श्याङचि बाहर आया और आनन्दी के पीछे खड़ा हो गया।

"मैं कहता हूँ, श्याङचि!" अड़ छ्याङचि ने सीना फुलाने की कोशिश की मगर वह तो सीधा खड़ा भी नहीं हो पा रहा था। "मैं कहता हूँ, तुम अपने को मर्द कहते हो? अरे, तुम्हें मुफ़्त में माल उड़ाने के लिये और कोई नहीं मिला जो तुम इसी को लूटने चल दिये? सुअर कहीं के!"

श्याङचि पीये हुए आदमी से झगड़ा तो नहीं करना चाहता था, मगर उसके दुख उसे इतना कचोट रहे थे कि वह गुस्सा रोक पाने में असमर्थ था। वह एक कदम आगे बढ़ा। उन दोनों की खूनी नज़रें एक दूसरी से हवा में टकरायीं और चिनगारियाँ फेंकती लगीं। श्याङचि ने उसे कन्धों से पकड़ा, छोटे बच्चे की तरह उठाया और उठाकर आँगन के पार फेंक दिया।

अड़ छ्याङचि की दर्द के मारे जान निकली जा रही थी और शराब पीये होने के कारण उसने पी होने से ज़्यादा का नाटक करते हुए गुस्से का दिखावा किया। वैसे गिरने से उसका नशा थोड़ा बहुत तो हिरन हो ही गया था। वह जवाबी हमला करना चाहता था, मगर यह भी जानता था कि श्याङचि के मुकाबले में टिक नहीं सकता। दूसरी ओर चुपचाप पीछे हट जाना भी बहुत अपमानजनक होता। वह वहाँ रहने के

असंमजस के बावजूद उठना न चाहते हुए भी वहीं ज़मीन पर बैठ गया। अपनी इस उलझन में वह अण्टसण्ट ही बड़बड़ा सकता था। "मैंने अपनी बेटी को डाँटा तो तुम बीच में पड़ने वाले कौन होते हो? मुझे पीटोगे? पीटकर दिखाओ! तुम्हारी दादी को चोदूं! इसका खामियाजा भुगतना पड़ेगा!"

श्याङचि ने जवाब नहीं दिया, बस चुपचाप उसके जवाबी हमले के इन्तज़ार में खड़ा रहा।

आँखों में आँसू भरे आनन्दी हतप्रभ सी खड़ी रही। पिता से तर्क करने की कोशिश का कोई लाभ न था और वह उसे श्याङचि के हाथों पिटते भी नहीं देखना चाहती थी। अपने जेबों को अच्छी तरह टटोलने के बाद उसने क़रीब दर्जनभर थुङछ्येन निकालकर भाई को थमा दिये। आम तौर पर लड़का बाप से बात करने की हिम्मत न करता था, लेकिन आज उसे फेंके जाते देखने के बाद उसने साहस जुटाया। "ये लो, अब तुम्हारा यहाँ से चले जाना बेहतर होगा!"

अड़ छ्याङचि ने आँखें टेढ़ी करके धन को देखा, फिर उसे जेब में रख लिया और बड़बड़ाते हुए खड़ा हो गया। "इस बार तो मैं तुम हरामियों को छोड़ देता हूँ! अगर बहुत आगे बढ़ने की कोशिश की तो सबको मार डालूँगा!" चाल से बाहर निकलने के पहले वह चिल्लाया, "श्याङचि अभी हमारा हिसाब चुकता नहीं हुआ है! हम बाहर देख लेंगे!"

उसके चले जाने पर श्याङचि और आनन्दी वापस कमरे में चले गये।

"मैं क्या कर सकती हूँ?" आनन्दी खुद ही बड़बड़ायी। इस एक फिकरे में उसकी ज़िन्दगी की सारी हताशा और श्याङचि के उसे स्वीकार करने और कोई राह दिखाने की आशा जाहिर हो रही थी।

लेकिन इस घटना ने श्याङचि को आनन्दी को अपनाने में बहुत सी बाधाएँ जतला दी थीं। वह उसे प्यार तो करता था, परन्तु महसूस करता था कि वह उसके भाइयों और पियक्कड़ पिता को खिलाने का बोझ नहीं उठा सकता था। वह अब भी ऐसा नहीं समझता था कि बाघिन की मौत ने उसे आज़ाद कर दिया था। उसमें अनेक गुण भी थे और उसने कम से कम अपने धन से उसकी बहुत मदद की थी। वह यह तो नहीं सोचता था कि आनन्दी उस पर बोझ होती, पर यह एक सच्चाई थी कि उसके परिवार की कमाई कुछ भी नहीं थी। प्रेम हो या न हो, ग़रीबों को कोई फर्क नहीं पड़ता, वे तो धन को देखकर फैसला करते हैं। "प्रेम के अंकुर" तो सिर्फ अमीरों के बीच फूटते हैं।

उसने अपना सामान बाँधना शुरू कर दिया।

"तुम्हें घर छोड़कर जा रहे हो?" वह एकदम फक रह गयी। उसके होंठ तक सफ़ेद हो गये थे।

"हाँ!" उसने दिल कड़ा करके जवाब दिया। इस अन्यायपूर्ण संसार में ग़रीबों

को अपनी थोड़ी-सी भी आज़ादी कायम रखने के लिये कड़े दिल वाले ही बनना पड़ता है।

उसने उसे देखा और सर झुकाकर बाहर चली गयी। उसे रत्तीभर भी घृणा या रोष महसूस न हुआ, वह सिर्फ हताश हो गयी।

बाघिन को उसके सारे गहनों और बढ़िया कपड़ों में दफनाया गया था, वह अपने कुछ पुराने कपड़े, फर्नीचर की टूटी लकड़ियाँ और अपने बर्तन-भांडे ही छोड़ गयी थी। श्याङचि ने उन कपड़ों में से कुछ बेहतर चुनकर बाक़ी सब बिना मोलतोल किये हुए एक कबाड़ी को एक दर्जन से कुछ ज़्यादा युवान मे बेच डाले। वह हर चीज़ से छुटकारा पाने की इतनी जल्दबाजी में था कि उसने किसी बेहतर क़ीमत देने वाले की तलाश करने की जेहमत उठाने की ज़रूरत भी नहीं समझी। कबाड़ी के चले जाने के बाद सिर्फ श्याङचि का बिस्तर और नंगे खाङ पर पुराने कपड़े ही रह गये थे। कमरे को इतना खाली देखकर उसे कुछ राहत मिली, मानो उसने अपने बँधन तोड़ फेंके हों और अब कहीं दूर उड़ जाने को आज़ाद था।

फिर भी थोड़ी ही देर बाद उसे उन सब चीज़ों की याद आ गयी। मेज तो जा चुकी थी, मगर जमीन पर जहाँ उसकी चारों टाँगें टिकी हुई थी वहाँ धूल के छोटे छोटे चौकोर निशान वह छोड़ गयी थी। ऐसे निशान देख-देखकर उसे सपने की तरह गायब हो गये फर्नीचर और बाघिन की याद आ गयी। वे अच्छी रहे हों या बुरे उनके बिना श्याङचि के दिल के लिये कोई आरामगाह नहीं था। वह खाङ के किनारे बैठ गया और सिगरेट का पैकेट निकाल लिया।

सिगरेट के साथ ही एक फटा-पुराना नोट भी निकल आया और उसने बिना सोचे ही अपना सारा धन खोज-खोजकर निकाला। पिछले कई दिन से उसे धन गिनने का समय ही नहीं मिला था। इसका काफ़ी ढेर था : चाँदी के युवान, एक माओ के नोट, फन के नोट और थुङछ्येन के सिक्के मिलाकर बस बीस युवान से कुछ ही कम थे। कबाड़ी को बेचे सामान के बारह युवान से ज़्यादा इसमें और जोड़ लें तो उसकी कुल पूँजी तीस युवान से बस थोड़ी-सी अधिक थी।

उसने खाङ पर पड़े धन को घूरा, वह समझ न पाया कि हँसे या रोये। कमरे में बस वह था और इन फटे-पुराने नोटों और मैले सिक्कों के अलावा और कुछ न था। कुछ समय में न आया कि क्या करे?

उसने लम्बी साँस भरी और धन को फिर अपने जेब मे भर लिया। फिर उसने अपना बिस्तरबन्द और कपड़े उठाये और आनन्दी को ढूँढने चला गया।

"ये कपड़े तुम्हारे लिये है। पहले मुझे कोई रिक्शा अहाता खोजना होगा, इसलिये मैं अपना बिस्तर यहीं छोड़ जाता हूँ। इसे बाद में लेने आऊँगा।" यह बोलते हुए वह उसकी ओर देखने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहा था, इसलिये सिर झुकाये हुए कहता चला गया।

उसका एकमात्र जवाब बुदबुदाती हुई सहमति था।

श्याङचि रिक्शा अहाता ढूँढने के बाद बिस्तर लेने वापस आया तो रोने से आनन्दी की आँखें सूज चुकी थीं। उसे कहने को कुछ सूझ न रहा होने पर भी वह अचानक बोल पड़ा, "मेरा इन्तज़ार करना। मैं कुछ धन कमा लूँगा तो वापस आऊँगा, मैं ज़रूर आऊँगा!"

आनन्दी ने सिर हिलाकर हामी भरी, पर खामोश रही।

सिर्फ एक दिन आराम करके श्याङचि फिर रिक्शा चलाने लगा। अब न तो वह बहुत उतावला और न ही आलसी था, बस किसी तरह दिन काटता चला जा रहा था। लगभग एक महीने के बाद वह काफ़ी शान्त हो गया और उसका चेहरा भी कुछ भर गया, मगर पहले की तरह लाल नहीं था। वह न तो हट्टाकट्टा दिखता था और न ही कमजोर। उसकी आँखों में चमक तो थी। मगर कोई खास रुख न था, कुछ इस तरह कि वह चौकस तो हर समय रहता, फिर भी कुछ देखता नहीं था वह किसी तूफ़ान के बाद धूप में शान्त, मगर फिर हिलने से डर रहे पेड़ की तरह था। वह कभी बातूनी नहीं रहा था पर अब तो और भी चुप्पा हो गया था। मौसम काफ़ी गर्म हो चुका था और सरो के वृक्ष कोमल हरी पत्तियों से चमक उठे थे। कभी-कभी वह रिक्शा को खींचकर धूप में ले जाता और सिर नीचे किये हुए बैठा कुछ न कुछ बुदबुदाता रहता या चेहरा धूप की ओर करके थोड़ी देर ऊँघ लेता। बहुत ज़्यादा ज़रूरत न पड़ने तक वह किसी भी प्राणी से न बोलता।

उसे सिगरेट पीने की लत पड़ गयी थी। सवारी के इन्तज़ार में अपने रिक्शे पर बैठे हुए पायदान के नीचे सिगरेट रखने की जगह पर उसके बड़े हाथ सिगरेट टटोलने लगते। वह धीरे-धीरे कश लगाता और उसकी आँखें ऊपर उठते धुएँ के छल्लों को गौर से देखती रहतीं। फिर वह किसी निष्कर्ष पर पहुँच जाने की तरह एकाएक सिर हिलाकर अपने आप हामी भरता।

वह अभी तक ज़्यादातर रिक्शावालों से तेज दौड़ता था, लेकिन अब इतनी ज़्यादा कोशिश नहीं करता था। मोड़ों और ढलानों पर वह खास तौर पर बेहद सावधान रहता। कोई उसे दौड़ लगाने के लिये कितना भी क्यों न उकसाता, वह सिर झुकाये अपनी सधी हुई चाल से चलता रहता। यह पूरी तरह मोहभंग हो जाने पर अब उसके तारीफ होने या शोहरत मिलने की कोई परवाह न करने जैसा था।

फिर भी, रिक्शा अहाते में उसने चुप्पा होने के बावजूद दोस्त बनाये, खामोश जंगली बत्तख भी तो अपने साथियों के साथ ही उड़ना चाहती है। साथियों के बिना उसका अकेलापन और भी असहनीय हो जाता। वह जेब से सिगरेट का पैकेट निकालते ही औरों की ओर बढ़ाने लगता। सिर्फ एक ही बचा होने और किसी के उसे न लेने पर वह बस इतना ही कहता, "मैं और खरीद लूँगा!" दूसरों के जुआ खेलने पर वह अब पहले की तरह कन्नी न काटकर देखने के लिये पास आ जाता और कभी-कभी

तो हार या जीत की परवाह न करके अपनी ओर से दाँव भी लगा देता। वह शायद यह दिखाना चाहता था कि वह उनमें से ही एक और है जो जानता था कि उन सबको दिनभर कड़ी मेहनत के बाद किसी न किसी तरह के मनोरंजन की ज़रूरत थी। जब वे शराब पीते तो वह ज़्यादा तो नहीं मगर पीता और हरेक को अपनी ओर से चिखौनी खिलाता। पहले नापसन्द करने वाले सभी काम अब उसे ठीक-ठाक लगने लगे थे। वह नाकामयाब रहा था तो क्यों न यह मान ले कि दूसरे भी ठीक हो सकते थे?

उसके किसी दोस्त के यहाँ शादी या ग़मी होती तो वह चालीस थुङछ्येन देता या कोई तोहफ़ा खरीदने में हिस्सेदारी करता, यह उसने पहले कभी सपने में भी न सोचा था। यही नहीं वह मातम मनाने या बधाई देने भी पहुँचता, उसने समझ लिया था कि यह धन की बरबादी न होकर इंसानी भाईचारे का लाज़िमी हिस्सा था। ऐसे अवसरों पर दुख या आनन्द सच्चे थे—लोग महज़ दिखावा नहीं करते थे।

फिर भी उसने लगभग तीस युवान से ज़्यादा की अपनी उस रकम को हाथ नहीं लगाया था। उसने सफ़ेद कपड़े का एक टुकड़ा लिया और उस धन को उसमें रखकर एक बड़े सूए से उसे बड़ी अनगढ़ता से सी डाला और उसे अपने जिस्म के पास ही रखता। वह इसे खर्च नहीं करना चाहता था। अब रिक्शा भी नहीं खरीदना चाहता था। उसे अपने शरीर पर बाँधे रहना एक तरह की चौकसी थी—आप कभी नहीं जान सकते कि कब मुसीबत आ पड़े। वह बीमार पड़ सकता या उसे किसी और विनाश का सामना करना पड़ सकता था, तैयार-बर-तैयार रहना हमेशा बेहतर था। अब वह समझ गया था कि इंसान लोहे के नहीं बने हुए थे।

शरद शुरू होने के ठीक पहले उसे एक मासिक नौकरी मिल गयी। यह उसकी पहले की सभी नौकरियों के मुकाबले हल्की थी; नहीं तो उसने वह स्वीकार ही न की होती। अब वह जान गया था कि अपने लिये क्या और कैसे चुनना था। अगर कुछ अनुकूल होता तो वह स्वीकारता, अगर नहीं, तो वह फुटकर सवारियाँ उठाने के लिये भी तैयार रहता। अब वह अपना सब कुछ अर्पित नहीं करता था, वह इस बारे में सजग था कि उसे अपनी सेहत का ध्यान रखने की ज़रूरत थी और अगर उसके पहले करने की तरह रिक्शावाला अपने ऊपर बहुत जुल्म ढाये तो वह अपने को बेमतलब मार डालता। अनुभव लोगों को होशियारी सिखाता है—आख़िरकार, यह ज़िन्दगी आप एक ही बार तो जी सकते हैं!

उसकी नई नौकरी युङहो लामाविहार के नज़दीक थी। उसके मालिक श्री श्या पचास बरस के ऊपर के थे। वह मर्यादाओं को समझने वाले और पढ़े-लिखे थे, एक पत्नी और बारह बच्चे थे। फिर भी, उन्होंने हाल ही में एक रखैल रख ली थी और अपने परिवार को बताने का साहस न होने से यह एकान्त स्थान चुनकर यहाँ दूसरा छोटा घर बसा लिया था। वहाँ खुद उनके और रखैल के अलावा एक नौकरानी और

एक रिक्शावाला—श्याङचि—रहते थे।

श्याङचि को यह नौकरी बहुत पसन्द थी। छह कमरों वाला छोटा मकान था। उनमें से तीन श्री श्या के पास थे, एक में रसोई और बाकी दो में नौकर रहते थे। आँगन बहुत छोटा था। दक्षिणी दीवार के पास बेर का एक छोटा पेड़ उगा हुआ था। उसकी ऊपर की शाखाओं पर दर्जनभर मोटे अधपके बेर लगे हुए थे। झाड़ू लगाते समय दो-तीन हाथ मारते ही पूरा आँगन साफ़ हो जाता था, यह उसके लिये बहुत आसान था। पानी देने के लिये फूलों के पौधे न होने से वह बेर के पेड़ की काट-छाँट करने को प्रेरित हुआ, परन्तु उसने बेर के पेड़ों की छँटायी के बाद उनके गाँठदार और टेढ़े बढ़ने की अटल प्रवृति से वकिफ होने की वजह से यह न किया।

और कुछ करने को था ही नहीं। श्री श्या सुबह अपने दफ्तर में काम करने जाते और तीसरे पहर पाँच बजे तक नहीं लौटते थे। श्याङचि को सिर्फ उन्हें पहुँचाना और वापस लाना होता था। उनके छिप रहे होने की तरह श्री श्या घर लौटने के बाद फिर कभी बाहर नहीं जाते थे। श्रीमती श्या अक्सर बाहर तो जाती थीं मगर श्याङचि को अपने पति को लाने जाने देने के लिये वह भी चार बजे तक लौट आती थीं, और एक बार उन्हें घर लाने के बाद उसकी दिनभर की छुट्टी हो जाती थी। इससे भी बढ़कर तो यह था कि श्रीमती श्या सिर्फ तुङआन बाजार या चुङशान पार्क तक ही जाती थीं, इसलिये वहाँ भी आराम करने के लिये बहुत समय मिल जाता था। श्याङचि के लिये यह काम बच्चों का खेल था।

श्री श्या बड़े कंजूस थे और कभी आसानी से किसी को एक थुङछ्येन तक नहीं देते थे। वह जाते हुए आसपास किसी के और कुछ भी न होने की तरह सीधे सामने ही देखते थे। लेकिन रखैल का हाथ खुला था और वह हर कुछ दिन बाद खरीददारी करने जाती। अगर वह खाना खरीदती और उसे पसन्द न आता तो वह उसे नौकरों को दे देती। वह नई चीजें खरीदने के लिये धन माँगना चाहती तो अपने पास पहले से मौजूद कई और चीज़ें भी उन्हें दे देती। ऐसा लगता था कि श्री श्या का जीवन में एकमात्र लक्ष्य अपनी सारी शक्ति और धन अपनी रखैल पर लुटा देना था—उनके और कोई मनोरंजन या दिलचस्पियाँ नहीं थीं। उनका सारा धन रखैल ही खर्च करती थी, उनके खुद कभी किसी को देने की बात तो दूर रही, वह खर्च भी नहीं करते थे। उनकी मूल पत्नी और बारह बच्चे पाओतिङ में रहते थे, और कहा जाता था कि उन्हें कभी-कभी चार या पाँच महीने तक उनसे एक थुङछ्येन भी न मिलता था।

श्याङचि इस श्री श्या के चोर की तरह कूबड़ निकाले, गर्दन अन्दर धँसाये, नज़रें पैरों की उँगलियों पर टिकाये हुए रेंगने, चुपचाप और गमगीन बने रहने के तौरतरीके नापसन्द करता था। रिक्शा में भी बैठे वह दुबले-पतले बन्दर ही लगते थे। कभीकभार उनके मुँह से कुछ फूटता भी तो वह लाजिमी तौर पर कुछ ऐसे बुरा लगने वाला होता जैसे बाक़ी सभी बदमाश और सिर्फ वही एकमात्र ईमानदार, पढ़ेलिखे शरीफ

थे। ऐसे व्यक्ति को पसन्द करना असम्भव था। लेकिन धन्धा तो धन्धा था और श्याङचि हर महीने वेतन मिल जाने तक बाक़ी चीज़ों की परवाह क्यों करता? फिर रखैल भी खूब आराम-पसन्द थी और उसे खाना और ऊपर से भी कुछ न कुछ देती रहती थी। फिर बाल की खाल क्यों निकाले? इसका मतलब महज़ एक बेमुरौवत बन्दर को बिठाकर रिक्शा चलाना था।

श्याङचि रखैल को भी खास पसन्द नहीं करता था, वह उसे बस बख़्शीश देने वाली ही समझता था। वह आनन्दी से कहीं ज़्यादा खूबसूरत थी। वह रेशम और साटिनों में लिपटी, इत्र और पाउडर लगाने वाली के सामने कहीं भी नहीं टिक सकती थी। लेकिन वह सुन्दर और अच्छा पहनने-ओढ़ने के बावजूद उसे बड़े अजीब ढंग से बाघिन की याद दिलाती थी। यह उसके कपड़ों या चेहरे की वजह से नहीं था, बल्कि कुछ और ही था जिसे वह उसके रवैये और व्यवहार में स्पष्टतः नहीं बता पाता था। उसके शब्दों में वह भी उसी किस्म का माल थी।

वह बाईस या तेईस साल की होने पर भी बहुत परिपक्व लगती थी और उसमें नयी-नवेली दुल्हन जैसा कुछ न था, बाघिन की ही तरह उसने भी कभी लड़कियों की सी कोमलता और लज्ज़ा न दिखायी थी। उसके बाल लहरदार थे, वह ऊँची एड़ी के जूते पहनती थी और उसके कपड़ों की बनावट मटकते हुए चलने पर उसके जिस्म के सभी घुमाव दिखा जाती थी। श्याङचि भी देख सकता था कि उस सारी शान के बावजूद उसका लहज़ा आम शादीशुदा औरतों जैसा नहीं था। फिर भी वह वेश्या नहीं लगती थी। उसे किसी खास दर्ज़े में रख पाने में असमर्थ श्याङचि को वह बाघिन की तरह ही डरावनी लगती थी। दरअसल, उससे जवान और खूबसूरत होने की वजह से उससे भी कहीं ज़्यादा डरावनी। वह औरत की उस तमाम निर्दयता और कुटिलता का जीवित रूप थी जिसे वह पहले भुगत चुका था। वह सचमुच उससे आँख से आँख मिलाने की हिम्मत नहीं कर पाता था।

कुछ दिन बाद वह उससे और भी ज़्यादा घबराने लगा। श्याङचि ने श्री श्या को कभी ज़्यादा खर्च करते हुए नहीं देखा था, लेकिन वह भी जब तब एक बड़ी फार्मेसी में जाने और दवा खरीदने लगे थे। श्याङचि नहीं जानता था कि वह दवा क्या थी, मगर हर बार ऐसी खरीददारी के बाद श्री और श्रीमती श्या एक दूसरे से कुछ ज़्यादा ही मोहब्बत दिखाते लगते और आम तौर पर मरियल से श्री श्या भी असाधारण शक्ति का प्रदर्शन करने लगते। लेकिन कुछ दिन के अन्दर ही उनकी फिर हवा निकल जाती। वह बाजार में खरीदी गयी ज़िन्दा मछली को पानी की बाल्टी में डाले जाने पर उसके उसमें थोड़ी देर छटपटाने के बाद एकदम शान्त हो जाने की तरह पहले से भी ज़्यादा धड़टूटे हो जाते थे। जब भी श्री श्या रिक्शा में सिकुड़कर बैठे हुए भूत की तरह दिखायी देते तो श्याङचि समझ जाता कि फार्मेसी जाने का समय आ गया था। वह इस आदमी को नापसन्द करता था, मगर हर बार उनके दवा खरीदने

जाने पर उसे इस दुबले-पतले बूढ़े बन्दर पर तरस आ ही जाता। तब वह बाघिन के बारे में सोचता और बहुत दयनीय महसूस करने लगता। वह मर चुके से नफ़रत नहीं करना चाहता था लेकिन जब वह अपनी तथा श्री श्या की ओर देखता तो वह बाघिन को दोष दिये बिना न रह पाता। बेशक वह पहले की तरह ताकतवर नहीं रह गया था और इसकी मुख्य ज़िम्मेदार बाघिन ही थी।

उसने नौकरी छोड़ देने पर विचार किया पर उसे अपने से असम्बद्ध कारणों से ऐसा करना बेहूदा लगा। सिगरेट के कश खींचते हुए उसने अपने आपसे कहा, "इससे मेरा क्या वास्ता?"

इक्कीसवाँ अध्याय

गुलदाउदी के पौधे बाजार में आये तो श्रीमती श्या ने चार गमले खरीदे और नौकरानी याङ अम्मा ने उनमें से एक तोड़ डाला। इसके लिये उसे खूब फटकारा गया। याङ अम्मा गाँव की रहने वाली थी और फूलों-पौधों में उसे कोई खास बात नहीं दिखायी देती थी। फिर भी उसने किसी की सम्पत्ति, चाहे वह कितनी भी मामूली हो, का नुकसान कर देने जैसी लापरवाही की होने के कारण कुछ कहा नहीं। लेकिन श्रीमती श्या बोलती ही गयी और उसे उन्होंने गँवार और हरामज़ादी कहा तो याङ अम्मा गुस्सा न रोक सकी और पलटकर ज़वाब देने लगी। देहाती लोग एक बार नाराज हो जाने पर अपनी जबान पर काबू नहीं रख पाते, इसलिये याङ अम्मा ने एक से एक भद्दी गाली सुनायी। इस पर श्रीमती श्या आगबबूला हो गयीं और उसे अपना बोरी-बिस्तर गोल करने और निकल जाने का हुक्म दिया।

श्याङचि ने इसलिये बीच में दखल नहीं दिया था कि एक तो वह बोलता ही कम था और दूसरे दो झगड़ती औरतें उसके बस का रोग ही नहीं थीं। उसने याङ अम्मा को श्रीमती श्या को छिनाल कहते सुना तो वह समझ गया कि याङ अम्मा की नौकरी गयी और अन्दाज़ा लगाया कि उसकी भी छुट्टी कर दी जायेगी, क्योंकि श्रीमती श्या ऐसे किसी नौकर को घर में नहीं चाहेगी जो उनके नीच अतीत को जान गया था। याङ अम्मा के चली जाने के बाद वह अपनी बर्खास्तगी का इन्तज़ार करने लगा और उसने हिसाब लगाया कि नई नौकरानी आ जाने पर उसका काम खत्म कर दिया जायेगा। उसे इसकी कोई परवाह न थी, तजुर्बे ने उसे धीरज से नौकरी करना और छोड़ना सिखा दिया था। किसी भी बात पर उत्तेजित होने की कोई ज़रूरत नहीं थी।

मगर याङ अम्मा के जाने के बाद श्रीमती श्या बड़े अजीब ढंग से श्याङचि के प्रति बहुत नम्र हो गयीं। नौकरानी नहीं होने से उन्हें खुद खाना पकाना पड़ता और

वह उसे सौदा लाने के लिये धन दे दिया करती थी। उसके वापस आने पर वह गोश्त काटतीं और चावल उबालती हुई उसे बतातीं कि क्या धोना था और क्या छीलना था। इस पूरे वक़्त वह बातें करती रहतीं।

वह गुलाबी रंग की चोली, काला पायजामा और कसीदाकारी वाली सफ़ेद साटन की चप्पलें पहने हुए थीं। श्याङचि अपने छिटपुट काम बड़ी फूहड़ता से करता रहा और बहुत चाहत के बावजूद श्रीमती श्या को देखने की उसकी हिम्मत नहीं पड़ी। उनके लगाए हुए इत्र की खुशबू उसकी नाक में तरसाहटभरी गुदगुदी कर रही थी और फूलों की खुशबू के शहद की मक्खियों को अपनी ओर खींचने की तरह उसे उन्हें देखने के लिये उकसा रही थी। अपनी इच्छा के विरुद्ध उसने उन्हें एक झलक देखा।

उसने इस खूबसूरत रखैल को नीच नहीं समझा। छिनाल और रखैल होने पर भी वह कुछ न थी। अपने इस रवैये को सही मानने के लिये उसने सोचा कि दरअसल वह दुबला-पतला बूढ़ा बन्दर श्री श्या ही घृणित और निन्दनीय था। ऐसा पति होने पर उसका कुछ भी करना गलत नहीं कहा जा सकता था और ऐसा मालिक होने पर श्याङचि भी अपनी मनमर्जी से कुछ भी कर सकता था। उसका हौसला लौट आया।

फिर भी उसने उसके उसे खास ढंग से देखने की ओर ध्यान नहीं दिया और खाना तैयार हो जाने पर रसोई में अकेली ही खा चुकने पर उसे पुकारा, "आओ खा लो! फिर बर्तन धो डालना। आज शाम मालिक को लेने जाओ तो शाम का किराना भी ला सकते और इस तरह एक चक्कर बचा सकते हो। कल इतवार है, मालिक घर पर होंगे। मैं कोई नौकरानी खोजने जाऊँगी। क्या तुम किसी अच्छी नौकरानी को जानते हो? हाँ मिल पाना बहुत मुश्किल है! कोई बात नहीं, खाना ठण्डा होने से पहले ही खा लो!"

वह बड़ी स्वाभाविकता और सहजता से बोलीं। अचानक वह गुलाबी चोली श्याङचि को कम शोख लगी। उसे निराशा और फिर शर्म महसूस हुई। साफ़ बात यह थी कि अब वह बिना किसी लक्ष्य वाला व्यक्ति, बल्कि बुरा आदमी भी बन चुका था! बहुत परेशानी महसूस करते हुए उसने झटपट दो कटोरे भर भात निगले। बर्तन धोने के बाद वह अपने कमरे में चला गया और कुछ देर तक एक के बाद एक सिगरेट फूँकता चला गया।

तीसरे पहर वह श्री श्या को लेने गया तो एकाएक उसे इस दुबले-पतले बूढ़े से नफ़रत होने लगी थी। उसका वाकई मन हुआ कि वह तेजी से दौड़ते हुए बूढ़े की हालत बेवकूफ़ों जैसी दिखाने के लिये रिक्शा गिरा दे। उसने जानबूझकर उन्हें हिलाने-डुलाने के लिये रिक्शा के बमों को कुछ बार झटका। इस पर श्री श्या कुछ न बोले तो श्याङचि ने कुछ परेशानी महसूस की। उसने ऐसी हरक़त पहले कभी नहीं की थी, और आज ऐसा करने की जायज़ वजह होने पर भी वह उसे बहाना नहीं

बना सकता था।

शान्त हो जाने पर वह इस निरर्थक घटना को भूल गया, और फिर कभी अचानक याद आ जाने पर वह उसे सरासर बेहूदी लगी।

अगले दिन, श्रीमती श्या नौकरानी खोजने गयीं और परखने के लिये एक को साथ लेकर लौटीं। श्याङचि समझ गया कि उसे जाना होगा, लेकिन यह पूरा मामला उसमें एक कड़ुवाहट भर गया।

सोमवार को दोपहर के खाने के बाद श्रीमती श्या ने नौकरानी के बहुत गन्दी होने की वजह से उसे निकाल दिया। तब उन्होंने श्याङचि को एक चिन चेस्टनट खरीदने भेजा।

वह गरमागरम चेस्टनेट खरीदकर लाया तो उसने उनके कमरे के दरवाज़े के बाहर से ही उन्हें पुकारा।

"अन्दर ले आओ!" वह भीतर से ही बोलीं।

वह अन्दर गया तो उसने उन्हें आयीने के सामने चेहरे पर पाउडर लगाते हुए देखा। उन्होंने गुलाबी चोली अभी भी पहनी हुई थी मगर पायजामा बदलकर हल्के हरे रंग का पहन लिया था। आयीने में उसे देखकर वह फुर्ती से घूमीं, मुस्करा दीं। उस मुस्कराहट में श्याङचि को एक जवान और खूबसूरत बाघिन दिखायी दी। वह कठियाया से रहा। उसकी हिम्मत और आसें, आशंकाएँ और सतर्कता लोप हो गयी, उसमें उसका उत्साह बढ़ाने के लिये गर्म साँस ही बची रह गयी थी। उस समय वही गर्म साँस ही उसको संचालित कर रही थी—उसकी अपनी कोई ताकत नहीं रह गयी थी।

तीन या चार दिन बाद एक शाम को वह अपना बिस्तर लिये हुए रिक्शा अहाते में लौट आया।

वह जिससे पहले भयभीत रहता था और जिसे कबूलने में शर्म के मारे मर गया होता, उसे अब वह हर किसी को मजाक करते हुए बताता था—वह पेशाब नहीं कर पा रहा था।

हर कोई उसे क्या दवा खरीदनी, किस डाक्टर के पास जाना चाहिए, के बारे में बताने को बेहद उत्सुक था। किसी को भी इसमें कोई शर्म की बात नहीं लगी, बल्कि उन्होंने उसे सहानुभूतिपूर्वक सलाह दी, और कुछ लाल से चेहरे के साथ गर्व से ऐसे ही अनुभवों के बारे में बताया। कुछ नौजवान रिक्शावालों ने यह बीमारी लेने के लिये खुद क़ीमत अदा की थी; कई अधेड़ रिक्शावालों को यह मुफ़्त में ही हो गयी थी; और बहुत से मासिक नौकरी करने वाले भी कुछ ऐसी ही परिस्थितियों में पड़ गये थे; फिर कुछ ऐसे भी थे जिन्हें ऐसा तजुर्बा नहीं हुआ था लेकिन उनके पास अपने मालिकों की अलग-अलग तरह की कहानियाँ सुनाने के लिये थी। श्याङचि के रोग ने उनकी ज़बानें खोल दीं और वे बिना किसी संकोच के बोलने लगे। वह

अपनी शर्म भूल गया पर उसे अपने पर कोई गर्व महसूस नहीं हुआ। उसने इस सबको जुकाम हो जाने या हल्के से धूप-आघात की तरह बड़ी सहजता से लिया।

दवा और नुस्खों पर एक दर्जन से ज़्यादा युवान खर्च हो गये मगर थोड़ा सा बेहतर होते ही दवा लेना बन्द कर देने से वह पूरी तरह ठीक न हो सका। बादलों वाले दिनों को या मौसम बदलने पर उसके जोड़ों में दर्द होने लगता तो वह दवा खा लेता या फिर बेरहमी से उसे बर्दाश्त करता रहता। अब वह इसकी चिन्ता नहीं करता था। ज़िन्दगी में पहले से इतनी कड़ुवाहट होने से सेहत अच्छी या खराब होने से क्या फर्क पड़ता था?

आख़िरकार चंगा होने पर वह एकदम बदल गया था। लम्बा तो था ही लेकिन अब पहले जितना तगड़ा नहीं रह गया था। वह जानबूझकर अपने कन्धे धँसाये रहता और हर वक़्त उसके होंठों में सिगरेट झूलता रहता। कभीकभार वह एक टुर्रा कान के पीछे खोंस लेता, इसलिये नहीं कि वह सुविधाजनक जगह थी बल्कि अपने आपको कुछ फैशनबाज दिखाने की गरज से। वह अभी तक चुप्पा होने के बावजूद मन होने पर जवाब दे ही देता था। उसमें कोई खास फर्राटा या हाज़िरजवाबी न होने पर भी सही टंकार ज़रूर होती। उसका मनोबल डूब चुका था और उसके समूचे रवैये में लापरवाही सी थी।

फिर भी अपने साथियों की तुलना में उसका रवैया बहुत बुरा नहीं था। अकेला होने पर वह अपने अतीत को याद करता और कुछ कमा पाने की कामना करता था। वह इस तरह निराश नहीं होना चाहता था। महत्वाकांक्षा से कुछ नहीं होता था लेकिन आत्मघात में भी कोई समझदारी न थी। ऐसे वक़्तों में वह रिक्शा खरीदने की सोचने लगता। उसके पहले के तीस युवान से ज़्यादा में से एक दर्जन से ज़्यादा उसकी बीमारी पर खर्च हो गये थे। वह भी कितनी फिज़ूलखर्ची थी! लेकिन बीस युवान पास होने पर वह एक थुङछ्येन भी न होने वालों से कहीं बेहतर हालत में था। उसने महसूस किया कि अपना अधपिया पैकेट फेंक दे, तम्बाकू और शराब बन्द कर दे और डटकर धन बचाने लगे। फिर उसे आनन्दी की याद आती और वह अपने आपको सचमुच कसूरवार महसूस करने लगता। चाल छोड़ने के बाद से वह एक बार भी उसे मिलने नहीं गया था। अब उसके पास धन भी नहीं था, मगर उसके साथ ही शर्मनाक बीमारी भी लग गयी थी।

फिर भी दोस्तों के साथ होने पर वह सिगरेट और मौका मिलने पर थोड़ी शराब भी पीता रहा और फिर वह उसे एकदम भूल गया। वह पहलकदमी कभी नहीं करता था लेकिन साथियों का साथ देने से इंकार भी नहीं कर पाता था। दिनभर कड़ी मेहनत करने और शिकवे-शिकायतों के गले तक भरे होने को उनके साथ बतियाते और मज़ाक करते हुए ही थोड़ी देर के लिये भुलाया जा सकता था। फिलवक़्त आनन्द में उसने अपने ऊँचे आदर्श भुला दिये थे। वह कुछ मजे के बाद गहरी नींद सो जाना

चाहता था। ज़िन्दगी इतनी बेमक़सद, कड़वी और निराशाभरी होने पर कौन यह सब करने को पहल न देता? ज़िन्दगी के नासूरों को तम्बाकू, शराब और औरतों से ही दबाया जा सकता था। जहर को जहर से काटे। हर कोई जानता था कि यह दिल को काट डालता मगर इससे छुटकारे का कोई बेहतर रास्ता कौन जानता था?

उसकी इच्छाशक्ति कमज़ोर होने के साथ साथ उसका खुद पर तरस खाना बढ़ता गया। पहले उसे कुछ भी डरा नहीं सकता था तो अब वह अपने आराम का बहुत ध्यान रखने लगा—आँधी, बारिश के दिन वह रिक्शा नहीं चलाता था, दर्द या पीड़ा होने पर कुछ दिन तक आराम करता रहता। अपने पर तरस खाने की वजह से वह बहुत खुदगर्ज़, अपने धन में से किसी को एक भी थुङछ्येन उधार देने का अनिच्छुक हो गया था, वह उन बारिश, आँधी के दिनों के लिये सम्भालकर रखता जाता। दूसरों को सिगरेट या शराब पिलाना तो वाजिब था, लेकिन उधार देना सही न था। वह जितना ज़्यादा आरामतलब होता गया उतना ही आलसी भी बनता गया और करने के लिये कुछ नहीं होने पर ऊब के मारे परेशान वह किसी न किसी मनोरंजन पर धन खर्च करता, या खाने की कोई उम्दा चीज़ खरीदता। धन या समय को इस तरह बरबाद न करने की सूझने पर भी उसके पास अपने तजुर्बे से निकाली हुई यह दलील रहती कि "मैंने पहले भी धन कमाने की कोशिश की और मुझे क्या मिला?' यह अकाट्य और इसका जवाब नहीं था। इसलिये श्याङचि को खुद को बरबाद करने से रोकने वाला क्या था?

आलस लोगों को उग्र बनाता है और श्याङचि अब लड़ाका बन गया था। अब वह सवारियों, पुलिसजनों या किसी और को भी खुश करने की कोशिश नहीं करता था। उसके कड़ी मेहनत करने पर उससे न्याय नहीं किया गया। अब वह अपने पसीने का मूल्य पूरी तरह जान चुका था और अगर एक बूँद कम बहाने से काम चलता तो वह एक बूँद कम ही बहाता। अब वह अपना और बेजा फायदा नहीं उठाने देगा! वह क़ायदों की कोई परवाह न करके जहाँ-जहाँ और जब चाहता वहीं अपना रिक्शा खड़ा कर देता। पुलिसजन उसके पास आकर उससे वहाँ से चले जाने के लिये कहता तो वह बहस करने लगता और जितनी देर तक हो सकता वहीं डटा रहता। वहाँ से जाना ज़रूरी लगने पर वह और जोर से चिल्लाने लगता और गाली-गलौज पर उतर आता। अगर कहीं पुलिसजन ने पलटकर जवाब दे दिया तो श्याङचि अपने तगड़े होने की बात जानते हुए बड़ी सहजता से मारपीट शुरू कर देता। पुलिसजन को पीटने के बाद वह कुछ दिन जेल में काटने की भी परवाह नहीं करता था। ऐसी लड़ाइयों से उसे अपनी ताकत और लियाक़त का अहसास होता था। अपनी पूरी ताकत से किसी की जमकर धुनाई करने पर वह इतना खुश हो जाता कि उसे धूप भी ज़्यादा उजली लगने लगती। पहले उसने झगड़ा करने के बारे में कभी सपने में भी न सोचा होता मगर अब उसे इसमें सचमुच मजा आता था। यह वाकई हँसी की

बात थी!

गैरहथियारबन्द पुलिसजनों से उसे कोई डर नहीं लगता था और सड़कों पर चलती कारों से भी नहीं। वे धूल उड़ाती और खड़खड़ाती हुई उसकी ओर आतीं तो पूरे ज़ोर से हार्न बजाते या सवारियों के शोर मचाते रहने पर भी वह उन्हें रास्ता न देता था। वाहन को धीमे चलने पर मज़बूर करने के बाद ही वह धूल फाँकने से बचने के लिये एक तरफ हटकर रिक्शा चलाने लगता। कार के उसके पीछे से आने पर भी वह यही करता। किसी भी ड्राइवर के उससे टकराने की हिम्मत न करने के बारे में अच्छी तरह जानते हुए उसे कोई वजह नज़र नहीं आती थी कि वह एक ओर हटे और कार को सड़क पर धूल उड़ाने दे। पुलिसजन सिर्फ मोटर वाहनों के तेजी से जाने और उन्हें धूल उड़ाने देने के लिये ही दूसरों को उनके रास्ते से हटाते थे। श्याङचि पुलिसजन नहीं था, इसलिये वह उन्हें कैसे धूल उड़ाने दे सकता था। पुलिस की नज़रों में वह अब तेजतर्रार "नागफनी" था और उनमें से किसी की उसे गुस्सा दिलाने की हिम्मत न थी। ग़रीबों में आलस उनके अपुरस्कृत कड़े परिश्रम का स्वाभाविक परिणाम और उनकी उग्रता का भी कारण होता है।

वह अपनी सवारियों से भी कोई रिआयत नहीं करता था। वह उन्हें उनकी बतायी हुई जगह तक ही पहुँचाता, एक भी कदम आगे तक नहीं। अगर वे कहतीं कि फलाँ गली के "मुहाने" तक जाना है और वहाँ पहुँचने पर आशा करतीं कि उन्हें गली के "अन्दर" ले जाये तो श्याङचि भी उससे ज़्यादा तरेरकर उसे पस्त कर देता। वह जानता था कि ये शरीफ़जादे अपने विदेशी सूट गन्दे हो जाने से कितना डरते और उनमें से ज़्यादातर कितने बेमुलाहिजा और कंजूस थे। इसलिये अगर वे भड़कते तो वह उनके साठ युवान के सूट की एक आस्तीन पकड़ने और अपना काला पंजा उस पर छापने के लिये तैयार रहता था। इसके बाद भी अपनी पतली-दुबली बाँह को दुखता छोड़ गयी उसकी पकड़ की ताकत जानते हुए उन्हें किराया तो देना ही पड़ता था।

दौड़ता वह अब भी काफ़ी तेज था, लेकिन मुफ़्त में रफ़्तार नहीं पकड़ता था। अगर उसकी सवारियाँ तेजी से चलने को कहतीं तो वह अपने बड़े पाँव जमीन पर घिसते हुए पूछता, "तेज जाने का क्या दोगे?" वह मेहरबानी क्यों करता? वह अपना खून और पसीना बेच रहा था। वह अब बड़ी बख़्शीश मिलने की उम्मीद नहीं करता था। हर चीज़ की क़ीमत थी, और उसे अपने को खपाने से पहले वह तय कर लेनी चाहिए थी।

अब वह अपने रिक्शे की भी पहले जैसी देखभाल नहीं करता था। अपना रिक्शा खरीदने का विचार छोड़ने के बाद से उसने दूसरों से किराये पर लिये हुए रिक्शों की परवाह भी छोड़ दी थी। यह महज रिक्शा ही तो था। उसे चलाकर वह रोटी और कपड़े और रिक्शा का भाड़ा कमाता था। अगर वह नहीं चलाता तो उसे भाड़ा देने की

भी ज़रूरत न थी, इसलिये दिनभर के खाने के लिये काफ़ी होने पर, उसे रिक्शा क्यों चलाना चाहिए? आदमी और रिक्शा के बीच बस यही रिश्ता तो था। बेशक, वह जानबूझकर किसी दूसरे के वाहन को नुकसान नहीं पहुँचाता, मगर बिना वजह बहुत ज़्यादा ध्यान रखने की भी कोई ज़रूरत नहीं थी। अगर संयोगे से कोई रिक्शावाला उसके रिक्शा में टक्कर मार देता तो वह आगबबूला होने के बजाये उसे बहुत धीरज से वापस अहाते में ले जाता। अगर उसे पाँच माओ का हर्जाना देने के लिये कहा जाता तो वह दो माओ थमा देता और उससे ज़्यादा नहीं। अगर मालिक विरोध करता और घूँसों से मामला निपटाना चाहता तो श्याङचि उस पर यह अहसान करने के लिये भी तैयार रहता।

ज़िन्दगी तजुर्बे के सहारे चलती है और वही लोगों के चरित्र बनाता है—रेगिस्तान में प्योनी के फूल खिलना नामुमकिन है। श्याङचि अब आम ढर्रे पर चल रहा था, दूसरे रिक्शावाले से वह न तो बेहतर था और न ही बदतर लेकिन उन्हीं के साँचे में ढल चुका था। दरअसल, इसमें वह ज़्यादा आराम महसूस करता था और बाकी रिक्शावालों भी उसे अपना समझते थे। सभी कौवे काले हैं और वह उनके बीच अकेला सफ़ेद कौवा नहीं बनना चाहता था।

एक बार फिर जाड़ा आ गया। एक ही रात में रेगिस्तान से धूलभरी आँधी ने अनेक लोगों को ठण्ड से जमाकर मौत की नींद सुला दिया। उसे बाहर हुआते सुनते हुए श्याङचि ने अपना सिर रजाई में छिपा लिया, और वैसे ही पड़े रहने का फैसला किया। उसकी बेरहम सीटियाँ बजनी रुक जाने के बाद ही वह बेमन से उठा और फिर भी बाहर जाने या न जाने का निर्णय नहीं कर पाया। रिक्शा के बर्फ की तरह ठण्डे बम उठाने की इच्छा नहीं थी और वह उस दमघोटू, मिचली पैदा करने वाली आँधी से डरता था। तीसरे पहर चार बजे तक सूरज डूब गया और आँधी पूरी तरह रुक गयी और साँझ के आकाश में कुछ गुलाबी रोशनी दिखने लगी थी। तब उसने बड़ी मुश्किल से अपने को बाहर निकाला और धीरे-धीरे और उदासीन सा चलने लगा। अपने हाथों को आस्तीनों में घुसाये हुए उसने सीने से रिक्शे की आड़ी लकड़ी को ठेला और एक बुझा हुआ सिगरेट उसके होंठ से झूलता रहा।

अँधेरा हो गया। उसने जल्दी छुट्टी कर पाने की गरज से झटपट कोई सवारी मिलने की उम्मीद की। वह रिक्शा के लैम्प जलाने में भी आलस कर रहा था और रास्ते में पुलिसजनों के चार या पाँच मर्तबा टोकने पर ही उसने उन्हें जलाया।

ढोल भवन के सामने सड़क के लैम्पों के नीचे उसे एक सवारी मिल पायी और उसने पूर्व नगर की ओर चलना शुरू कर दिया। अपना रूईदार लबादा उतारे बिना ही वह दुलकी चाल चलता रहा। वह जानता था कि यह शर्मनाक था मगर वह इसकी क्या परवाह करता था। क्या अच्छा दिखते रिक्शावाले को कोई ज़्यादा धन देता था? वह जैसे रिक्शा नहीं चला रहा था, यों ही वक़्त काट रहा था। माथे पर पसीने की

बूँदें आ जाने पर भी उसने लबादा नहीं उतारा, बल्कि उसे पहने हुए ही चलते रहने की सोची। एक छोटी गली में एक कुत्ते ने लम्बे लबादे पहने रिक्शावाले न देखे होने की वजह से उसके गुल को काटा। वह रुका, अपने पंखों वाले झाड़न को उसकी डण्डी से पकड़ा और कुत्ते के पीछे दौड़ा। उसे भगा देने के बाद वह थोड़ी देर यह देखने के लिये रुका रहा कि वह कहीं फिर लौट न आये, फिर बड़े जोर से गाली देते हुए बोला, "माँ के लौड़े! तू क्या समझता है कि मैं तुमसे डरता हूँ?"

"तुम कैसे रिक्शावाले हो जी?" उसकी सवारी ने झुँझलाकर पूछा।

श्याङचि के कान खड़े हो गये—आवाज तो पहचानी हुई थी। गली में अँधेरा था और उसके लैम्पों की रोशनी तेज ज़रूर थी पर उनकी किरणें नीचे की ओर जा रही थीं, इसलिये वह अपनी सवारी का चेहरा नहीं देख पाया। सवारी ने टोप पहना हुआ था और उसकी नाक और मुँह बड़े रुमाल से ढँके थे, सिर्फ आँखें ही नज़र आती थीं। श्याङचि अभी ताज्जुब में पड़ा सोच ही रहा था कि वह कौन है कि उस व्यक्ति ने पूछा, "तुम श्याङचि हो न?"

तब श्याङचि समझा कि वह तो मालिक ल्यू था! वह एकदम हक्काबक्का रह गया और उसका शरीर जलने लगा। क्षणभर के लिये वह समझ न पाया कि क्या करे।

"मेरी बेटी कहाँ है?"

"मर गयी!" श्याङचि निडर होकर बोला। उस समय उसे अपनी आवाज ही परायी लगी।

"क्या? मर गयी?"

"मर गयी!"

"तुम्हारे मनहूस हाथों उसका और क्या होता!"

श्याङचि सहसा अपने होश में आ गया। "तुम दफ़न हो जाओ, चलते बनो, दफ़ा हो जाओ! बहुत बूढ़े हो, नहीं तो तुम्हें पीटकर ठीक कर देता, इसलिये ख़ैरियत इसी में है कि चले जाओ!"

मालिक ल्यू काँपता हुआ रिक्शे से उतर गया। "मुझे बता दो, उसे दफ़न कहाँ किया गया है?"

"इससे तुम्हें क्या मतलब!" श्याङचि ने बम उठाये और चल दिया।

काफ़ी दूर निकल जाने पर उसने सिर घुमाया और देखा कि बूढ़ा एक बड़ी काली छाया की तरह तब भी गली में खड़ा था।

बाईसवाँ अध्याय

वह कहाँ जा रहा था, यह साच बिना ही श्याङचि सिर ऊँचा किये, आँखों में चमक भरे, बमों को कसकर पकड़े हुए दिशा और मंजिल को भुलाये हुए लम्बे कदम उठाता बढ़ता जा रहा था। वह बेपरवाह और खुश महसूस कर रहा था, मानो उसने बाघिन से विवाह करने के बाद पायी तमाम कड़ुवाहट मालिक ल्यू के सिर पर पटक दी थी। ठण्ड और सवारियों की चिन्ता छोड़कर वह चलते और चलते ही रहना चाहता था, शायद उसे लग रहा था कि उसे कहीं अपनी पुरानी शख़्सियत, वह आज़ाद, बेबोझ, मर्यादित, महत्वाकांक्षी और मेहनती श्याङचि मिल सकता था।

गली के बीचोंबीच उस काली छाया, उस बूढ़े की झलक पर किसी टिप्पणी की ज़रूरत न थी। मालिक ल्यू पर जीत हासिल करके उसने हर चीज़ पर विजय पा ली थी। उसने बूढ़े को न तो मारा था और न ही लतियाया था, फिर भी मालिक ल्यू ने अपनी एक ही नज़दीकी रिश्तेदार भी गवाँ दी थी जबकि वह, श्याङचि, हवा की तरह आज़ाद था। अगर यह बदला न था, तो और क्या हो सकता था! बूढ़ा अगर गुस्से में आकर वहीं नहीं मरा, तो यह उसके क़ब्र में पहुँचने की रफ़्तार ज़रूर बढ़ा देता। बूढ़े ल्यू के पास सब कुछ था, श्याङचि के पास कुछ भी नहीं, फिर भी श्याङचि खुश रहकर रिक्शा चलाता था जबकि उसे यह भी न पता था कि उसकी बेटी कहाँ दफ़नायी गयी थी। बूढ़े ल्यू के पास भले ही धन के घड़े रहे हों और उसका मिज़ाज भी डरावना रहा हो लेकिन वह बड़ी मुश्किल से पेट भर पाने वाले कंगाल रिक्शावाले के मुकाबले में कुछ भी नहीं था।

वह इस बारे में जितना सोचता उसके मन में उतना ही उत्साह भरता जाता, उसकी इच्छा हुई कि वह विजय का गीत गाये और पूरी दुनिया जान जाये कि श्याङचि फिर ज़िन्दा हो गया था और जीत गया था।

बर्फ़ीली रात में हवा उसके चेहरे को छील रही थी लेकिन उसे ठण्ड नहीं बल्कि और ज़्यादा जान आती महसूस हो रही थी। सड़क के लैम्प धुँधले-धुँधले चमक रहे थे मगर उसका दिल गरमाहट से उद्दीप्त था और उसे चारों ओर अपने भविष्य को उज्ज्वल बनाती हुई चमक दिखायी दे रही थी। उसने काफ़ी देर से सिगरेट नहीं पिया था मगर तलब भी नहीं हो रही थी। अब से तम्बाकू या अल्कोहल बन्द; श्याङचि पहले की ही तरह काम करने और खुद को बेहतर बनाने के लिये ज़िन्दगी का नया अध्याय शुरू करने जा रहा था। आज उसने मालिक ल्यू को हरा दिया था, हमेशा के लिये उसे हरा दिया था। बूढ़े की गालियों ने श्याङचि में कामयाबी की आस को और ज़्यादा बढ़ाया ही था।

उसकी नफ़रत को गन्दी हवा के झोंके की तरह निकलने का रास्ता मिल गया था और अब से वह हमेशा ताजा हवा में साँस लेगा। वह अभी जवान था, क्या नहीं? उसे एक नज़र देखें तो! हाँ, वह हमेशा जवान रहेगा। मालिक ल्यू को मरने दो, वह, श्याङचि, अपनी खुशी और ख्वाहिशों के साथ ज़िन्दा रहेगा। सभी बुरे लोगों की अपनी अपनी सजायें थीं और वे मरते—उसका रिक्शा छीनने वाले फौजी, नौकरों को भूखा मारने वाली श्रीमती याङ, उसे सताने और उसका तिरस्कार करने वाला मालिक ल्यू, उसे ब्लैकमेल करने वाला जासूस सुन, उसे ठगने वाली छन दादी और वह मोहनी श्रीमती श्या—वे सभी मरेंगे। सिर्फ ईमानदार श्याङचि ही हमेशा ज़िन्दा रहेगा!

"लेकिन श्याङचि," "अब से तुम्हें सचमुच कड़ी मेहनत करनी होगी! मैं क्यों न मेहनत करूँ? मुझमें इच्छाशक्ति है, ताकत है, मैं जवान हूँ!" और उसने अपने आपको आश्वस्त किया, "एक बार मैं खुश रहने लगूँ तो मुझे धन कमाकर ज़िन्दगी सुधारने से कौन रोक सकता है? मेरी तरह इतनी मुसीबतें झेलने के बाद कौन निराश और किसका पतन न हो जाता? लेकिन यह सब तो अतीत हो चुका। कल से मैं नया श्याङचि बन जाऊँगा, पहले से भी बेहतर, उससे कहीं ज़्यादा बेहतर!"

अपने आपसे बुदबुदाते हुए उसने अपनी रफ़्तार तेज कर दी, मानो यह साबित करना चाहता था कि उसने जो कहा वह कर दिखाने के लिये कृतसंकल्प था। इससे क्या फर्क पड़ता था कि वह बीमार रहा था और उसने एक शर्मनाक बीमारी पकड़ ली? यह हृदय परिवर्तन निश्चय ही उसे जल्दी ही फिर से तगड़ा बना देगा।

पसीने से तर और प्यासे उसे अब पूरी तरह समझ आया कि वह हओमेन दरवाज़े पर पहुँच गया था। चायघर जाने की जेहमत न करके उसने रिक्शा दरवाज़े के पश्चिम में अड्डेपर खड़ा कर दिया, मिट्टी के घड़े से चाय बेच रहे एक बच्चे को बुलाया, और पतली चाय के दो पीले कटोरे गटक गया। उसका स्वाद बुरा था लेकिन उसने खुद को समझाया कि अब से वह और कुछ नहीं पिया करेगा—अच्छी चाय और बढ़िया खाने पर धन बरबाद नहीं करेगा। यह फैसला कर लेने के बाद उसने सोचा कि अपनी नई, कमखर्च और कड़ी मेहनत वाली ज़िन्दगी की शुरुआत की तैयारी के लिये कुछ ठोस खाना खा ले। इसलिये उसने पत्तागोभी के बाहरी सख्त पत्तों से भरे मोटे आटे से बने दस च्येनपाओ* खरीदे। उनका स्वाद बहुत बुरा था मगर वह किसी तरह उन्हें गले से उतार गया, और अपने हाथ के पिछले हिस्से से मुँह पोंछ लिया। इसके बाद उसे क्या करना चाहिए?

वह सिर्फ दो लोगों पर ही भरोसा कर सकता था और अगर उसे ज़िन्दगी बनानी है तो उन्हीं से मिलना चाहिए—आनन्दी और श्री छाओ। श्री छाओ ऐसे "सन्त" थे जो उसे समझते, उसकी मदद करते और उसे सलाह देते। अगर उसने श्री छाओ के कहने के अनुसार काम किया और आनन्दी उसकी पत्नी हुई तो खुद बाहर का काम करने और उसके घर का काम सम्भालने से उसकी कामयाबी निश्चित, एकदम तय

* पाओचि से मिलता-जुलता एक सस्ता पकवान। इसे भाप पर न बनाकर, पानी में थोड़ा सा तेल मिलाकर ढक्कन वाली कड़ाही में पकाते हैं।

थी, इसमें रत्तीभर भी शक न था।

मगर क्या श्री छाओ लौट आये थे? कोई बात नहीं, कल ही वह पेइछाङ मार्ग पर जाकर पता लगाएगा। अगर वह वहाँ पता न लगा पाया तो च्वो के घर जाकर देखेगा। उसके श्री छाओ से मिलते ही सब ठीक हो जायेगा। ठीक, वह पूरी रात रिक्शा चलाएगा और सबेरे श्री छाओ को खोजेगा, उसके बाद आनन्दी को मिलने और उसे यह शुभ समाचार देने जायेगा—श्याङचि ने अभी तक कोई खास तरक्की नहीं की थी मगर वह कड़ी मेहनत कर रहा था और चाहता था कि वह भी उसके साथ रहे।

इन योजनाओं से उसे खुशी हुई और गिद्ध की तरह चमकती उसकी आँखें इधर-उधर देखने लगीं। उसने एक सवारी देखी और उधर दौड़ा, किराया तय करने से पहले ही उसने अपना रूई का लबादा उतार फेंका। उसकी टाँगे पहले जैसी मजबूत तो नहीं थी लेकिन उल्लास से भरे होने की वजह से उसने दौड़ने में अपना पूरा दिल लगाया। आख़िरकार, वह अब भी श्याङचि ही था और जब वह पूरे मन से कुछ करता तो कोई उसके सामने ठहर नहीं सकता था। उसने किसी आविष्ट किये हुए की तरह दूसरे सभी रिक्शों को पीछे छोड़ दिया। उसके शरीर से पसीना बहे जा रहा था। एक सवारी उठाने के बाद उसे हलकापन महसूस हुआ, टाँगों में पुरानी लोच आ गयी थी—वह और दौड़ना चाहता था। उसकी हालत उस विजेता घोड़े की तरह थी जो काफ़ी न दौड़ा महसूस करते हुए घुड़दौड़ के बाद अपने खुरों से धरती को कुरेद रहा हो। उसके अहाते में लौटने पर सुबह एक बजे का वक़्त था, उसके जेब में भाड़ा चुका पाने के अलावा नौ माओ से ज़्यादा थे।

वह पौ फटने तक सोता रहा, फिर उसने करवट बदली और सूरज काफ़ी चढ़ आने तक दोबारा आँखें नहीं खोलीं। खूब थक जाने के बाद आराम से बढ़कर प्यारा कोई आनन्द नहीं होता। उसने अँगड़ाई ली और अपने जोड़ों को चटकते सुना। उसका पेट खाली और वह मरभुखा था।

थोड़ा सा खाने के बाद उसने खुशी-खुशी अहाते के मालिक को बताया, "मैं आज दिनभर आराम करूँगा, कुछ काम निपटाना है।"

उसने पूरी योजना बना रखी थी—आज सब बन्दोबस्त ठीक हो जाने पर वह कल से नई ज़िन्दगी शुरू कर देगा।

वह श्री छाओ के वापस आ गये या न आये होने का पता लगाने के लिये सीधे पेइछाङ मार्ग की ओर बढ़ा। चलते-चलते वह प्रार्थना करता जा रहा था—श्री छाओ लौट आये हों, मुझे निराश न लौटना पड़े! शुरुआत ही खराब होने से सब बिगड़ सकता था। अब श्याङचि ने एक नया अध्याय शुरू किया था, तो ईश्वर निश्चय ही उस पर कृपादृष्टि रखता!

वह छाओ के घर के सामने रुक गया, काँपते हाथ से उसने घण्टी दबायी। उसके इन्तज़ार कर रहे होने पर उसका दिल उछलकर बाहर आने को हो रहा था, और उसे

अतीत भूल चुका था। वह सिर्फ यही उम्मीद कर रहा था कि यह सुपरिचित दरवाज़ा एक जाना-पहचाना चेहरा दिखाने के लिये खुलता। वह इन्तज़ार करता रहा। शायद घर में कोई नहीं था, नहीं तो वह इतना शान्त, इतने भयावह ढंग से शान्त क्यों था? अचानक उसने भीतर एक आवाज़ सुनी और वह बुरी तरह चौंक पड़ा। फिर दरवाज़ा चरमराकर खुला और तुरन्त बड़ी प्यारी, बड़ी स्नेहभरी आवाज कानों में पड़ी, "अरे!" वह काओ अम्मा थी।

"श्याङचि? लम्बे अरसे से नहीं दिखे! अरे, तुम तो दुबले हो गये हो!" दरअसल, काओ अम्मा पहले से मोटी हो गयी थी।

"क्या मालिक घर में हैं?" श्याङचि सिर्फ इतना ही कह सका।

"हाँ, हैं। तुम अच्छे आदमी हो, सिर्फ मालिक की ही सोच रहे हो, मानो हम दोनों एक दूसरे को जानते ही नहीं! कैसी हो, तक नहीं कहा! वाह, तुम भी अजब हो!"

उसने उसे अन्दर ले जाते हुए कहा, "अन्दर चलो। कैसे रहे, क्या सब ठीक चलता रहा?"

"हूँ, इतना अच्छा नहीं रहा!" श्याङचि मुस्करा दिया।

"मालिक," काओ अम्मा ने पढ़ने-लिखने के कमरे के बाहर से पुकारा। "श्याङचि आया है!"

श्री छाओ नरगिस के कुछ पौधों को धूप में रख रहे थे। "अन्दर आ जाओ!"

"ठीक है, तुम अन्दर जाओ, हम बाद में बात करेंगे। मैं जाकर मालकिन को बताती हूँ; हम लोग अक्सर तुम्हारी बातें किया करते हैं। मैं तो कहूँगी, एक न एक दिन घूरे के भी दिन फिरते हैं!" काओ अम्मा बुदबुदाती हुई चली गयी।

श्याङचि अन्दर चला गया। "मालिक, मैं आ गया हूँ!" उसे लगा कि उसे अभिवादन के तौर पर कुछ कहना चाहिए मगर उसके मुँह से यह नहीं निकल पाया।

"अरे, श्याङचि!" अपने अध्ययन कक्ष में श्री छाओ छोटी फतूही पहने खड़े थे, उनके चेहरे पर स्नेहभरी मुस्कान थी। "बैठो! अरे!..." वह एक क्षण सोचते रहे, "हमें लौटे हुए काफ़ी दिन हो गये हैं। लाओ छङ ने बताया था, हाँ...यही तो, उसने कहा था कि तुम मिलाप अहाते में थे। काओ अम्मा तुम्हें वहाँ खोजने गयी मगर तुम नहीं मिले। बैठो न! कैसे हो? कामकाज कैसा है?"

श्याङचि के आँसू बहने को हो आये। उसके अन्तरंग विचार रक्त से लिखे हुए और दिल की अन्दरूनी गहराइयों में दबे पड़े थे। वह उन्हें किसी के सामने अभिव्यक्त करना नहीं जानता था। उसे अपने उस दिल के कुछ खून को सादा लफ़्ज़ों में बदलने की कोशिश कर पाने लायक शान्त होने में कुछ वक़्त लगा। हर बात उसकी याद्दाश्त में ताजा थी, बस उसे उन सबको एक-एक करके सिलसिला देना था। उसके पास बताने के लिये एक जीवित इतिहास था, और भले ही वह उसकी महिमा नहीं जानता

था, लेकिन उसके साथ किये गये अन्याय वास्तविक और निश्चित थे।

श्री छाओ ने देखा कि वह सोच में डूबा था और वह उसके बोलने के इन्तज़ार में चुपचाप बैठ गये।

कुछ समय तक श्याङचि एकदम खामोश सिर झुकाये बैठा रहा। अचानक उसने सिर उठाकर श्री छाओ को ऐसे देखा जैसे कह रहा था कि उसकी बात सुनने वाला कोई भी न होने से वह खामोश भी रह सकता था।

"कहो, कहो!" श्री छाओ ने उसकी ओर देखते हुए सिर हिलाया।

इसलिये उसने देहात से शहर में आने से शुरू करके अपने अतीत के बारे में बातचीत शुरू की। वह इन बेकार की बातों का ज़िक्र तो नहीं करना चाहता था लेकिन उसे लगा कि इन्हें बताये बिना उसे राहत महसूस न होती और उसकी कहानी भी अधूरी रह जाती। खून, पसीने और दर्द से भरी उसकी यादें आसानी से नहीं सुनायी जा सकती थीं और वह कोई बात अनकही भी नहीं छोड़ना चाहता था। खून और पसीने का हर कतरा उसकी ज़िन्दगी से बहा था, इसलिये उसके साथ हुई हर घटना बताने लायक थी।

उसने बताया कि वह कैसे नगर में आया, कुली का काम किया और फिर रिक्शा चलाने लगा; कैसे उसने धन बचा-बचाकर एक रिक्शा खरीदा, फिर वह भी गँवा बैठा। और इस तरह वर्तमान तक सब बयान कर डाला। अपने बयान की लम्बाई और सहजता से वह खुद भी हैरान था। एक के बाद एक घटना उसके दिल से कूदकर अपने लिये सही लफ़्ज़ों की खोज कर रही लगती बाहर आती गयी। एक के बाद दूसरा वाक्या अपने आप यथार्थ, स्नेह और दुख को प्रगट करता हुआ निकलता गया। वह इन यादों को अपने अन्दर दबाकर नहीं रख पा रहा था इसीलिये लफ़्ज़ बेरोकटोक या हकलाहट के बिना निकलते चले गये। वह अपना समूचा दिल खोलकर रख देने को उत्सुक लगता था। उसके खुद को भूलकर बोलते जाने के साथ-साथ उसकी राहत बढ़ती गयी, उसने हर फिकरे में अपने को पूरी तरह पेश कर दिया था। हर वाक्य उसका साक्षात् रूप ही था—महत्वाकांक्षी, दलित, परिश्रमी, पस्त श्याङचि। उसके अपना बयान खत्म करने पर माथे पर पसीना चमक रहा था, और उसे अपना दिल किसी के बेहोशी के बाद ठण्डे पसीने में तर होश में आने की तरह खाली और चैन से भरा लग रहा था।

"तुम चाहते हो कि मैं तुम्हें आगे क्या करने के बारे में सलाह दूँ?" श्री छाओ ने पूछा।

श्याङचि ने सिर हिलाकर हामी भरी। इतनी देर तक बोलते रहने के बाद वह अब मुँह खोलने में संकोच कर रहा लगता था।

"अब भी तुम रिक्शा चलाना चाहते हो?"

उसने एक बार सिर हिलाकर हामी भरी। इसके अलावा वह और कर ही क्या

सकता था?

"उस हालत में," श्री छाओ ने आहिस्ता-आहिस्ता कहा, "तुम्हारे पास दो विकल्प हैं। एक यह है कि बचत करके रिक्शा खरीदो, दूसरा यह है कि फ़िलहाल एक रिक्शा किराये पर ले लो, ठीक है? तुम्हारी कोई बचत नहीं है और अगर तुम धन उधार लोगे तो उस पर सूद देना पड़ेगा, इसलिये दोनों में कोई फर्क कहाँ रहा? बेहतर यही है कि किराये पर ले लो और मासिक काम पकड़ लो। नौकरी आम तौर पर नियमित है और खाना और रहना निश्चित है। तुम मेरे पास ही आ जाओ। मैंने अपना रिक्शा श्री च्वो को बेच दिया था, इसलिये वह तो तुम्हें किराये पर लेना ही पड़ेगा, क्यों यह कैसा रहेगा?"

"बहुत बढ़िया रहेगा!" श्याङचि खड़ा हो गया।"क्या आप उस घटना को भूल गये, जनाब?"

"कौन सी घटना?"

"वही, जब आपने और मालकिन ने श्री च्वो के घर में पनाह ली थी।"

"ओह!" श्री छाओ हँस पड़े। "वह घटना!" मैं तब कुछ ज़्यादा ही घबरा गया था। मालकिन और मैं कुछ महीने शाङहाए में रहे। दरअसल, श्री च्वो के सब ठीकठाक कर देने से इसकी भी कोई ज़रूरत नहीं थी। उसे भूल जाओ, मैं तो भूल ही चुका हूँ। अब तो हम अपने काम की बात करें। तुमने उस आनन्दी का नाम लिया था, उसका क्या हुआ?"

"मुझे कुछ पता नहीं!"

"तो मेरी बात सुनो। उससे शादी करने और बाहर किराये पर कोई कमरा लेने की तुम्हारी हैसियत नहीं है, किराये, कोयले, लैम्प के तेल सब पर धन खर्च होगा और तुम्हारे पास यह काफ़ी नहीं होगा। अगर वह तुम्हारे काम की जगह पर ही नौकरी करे... मगर हालात कभी उतने आदर्श नहीं होते... ऐसी नौकरी खोजना आसान नहीं है जहाँ तुम रिक्शा चलाओ, वहीं वह नौकरानी का काम करे। वाकई मुश्किल है!" उन्होंने अपना सिर हिलाया। "अब भावुक मत होना, लेकिन क्या वह भरोसे लायक है?"

श्याङचि का चेहरा शर्म के मारे लाल हो गया और उसने जवाब देने से पहले कई बार राल घोटी। "उसने वह सब हताशा में ही किया। मैं सिर की बाजी लगाकर भी कह सकता हूँ कि वह एक भली लड़की है! वह।.." उसकी सारी मिलीजुली भावनाएँ बाहर निकलने का रास्ता खोजने की कोशिश में उसे लफ्ज़ों की तलाश में भटका गयीं।

"अगर ऐसी बात है," श्री छाओ धीरे-धीरे बोलते गये, "तो शायद मैं तुम्हें यहीं काम दे सकता हूँ। तुम अकेले हो या विवाहित, तुम्हें एक कमरा मिलेगा, वह कोई समस्या नहीं है। वह क्या कपड़ों की धुलाई और मरम्मत कर सकती है? अगर वह

जानती है तो काओ अम्मा की मदद कर सकती है। मालकिन के जल्दी ही एक और बच्चा होने वाला है, काओ अम्मा अकेली पूरा काम नहीं कर सकती। अगर मैं उसे खाना दूँगा तो उसे वेतन नहीं दूँगा, तुम क्या कहते हो?"

"वह ठीक ही रहेगा!" श्याङचि अपनी पूरी सादगी में खिल उठा।

"पर मैं अकेले ही फैसला नहीं कर सकता। मुझे इस बारे में मालकिन से बात करनी होगी।"

"बेशक। अगर मालकिन को भरोसा न हो तो मैं आनन्दी को यहाँ ले आऊँगा, तब वह खुद उसे देख सकेंगी।"

"यह ख़्याल अच्छा है।" श्री छाओ मुस्करा दिये। उन्होंने श्याङचि को कभी इतना होशियार नहीं समझा था। "देखो, मैं मालकिन से बात करूँगा और तुम फिर किसी दिन उसे ले आना। अगर मालकिन राजी हो जाती हैं, तो बात पक्की ही समझो।"

"अब मैं जाऊँ, मालिक?" श्याङचि आनन्दी को खोजने और उसे सपने में भी न सोची यह अच्छी खबर सुनाने की जल्दबाजी में था। वह छाओ के घर से चला तो क़रीब ग्यारह बजे थे यानी जाड़ों में दिन का सबसे अच्छा समय था। मौसम खास तौर पर बढ़िया था, नीले आकाश में एक बादल न था और साफ़ हवा में से छनकर आती धूप गरमाहट पहुँचा रही थी। मुर्गों की बागें, कुत्तों की भौं-भौं और खोमचे वालों की आवाज़ें दूर तक जाती हुई अगली सड़क पर भी साफ़ सुनायी पड़ती थीं, आसमान से उतरते हुए सारसों की बोलियों की ही तरह।

सारे रिक्शावालों ने टप बन्द कर दिये थे और उनका पीतल का काम सोने की तरह चमक रहा था। सड़कों पर तेजी से दौड़ती कारों और ट्रामों के साथ ही उनके किनारों पर ऊँट बड़े आराम से चल रहे थे। जमीन पर चलते लोग और घोड़े, आसमान में उड़ते सफ़ेद कबूतर इस प्राचीन नगर में शान्त गतिविधि का माहौल बना रहे थे। चहलपहल और हँसी-खुशी का मिलन हो रहा था। स्वच्छ नीला आकाश इन सब ध्वनियों और जीवन की सुन्दरताओं के ऊपर चन्दोवे जैसा तना हुआ था, और जहाँ तहां वृक्ष मौन खड़े थे।

श्याङचि का दिल आकाश में सफ़ेद कबूतरों के साथ-साथ उड़ने और मँडराने का उत्सुक लगा। अब उसके पास सब था—नौकरी, तनख्वाह और आनन्दी। उसने कभी सोचा तक न था कि महज कुछ शब्दों से ही यह सब इतनी अच्छी तरह हल हो सकता था। ज़रा इस निर्मल खुले आकाश को देखो, उत्तर में रहने वाले सीधे सादे खरी बात बोलने वाले लोगों जैसा ही। किसी के खुश होने पर तो मौसम भी ज़्यादा सुहावना लगने लगता है। जाड़ों में इतना प्यारा और निर्मल दिन देखा होने की उसे याद न थी। अपनी उत्साहभरी भावनाएँ प्रगट करने के लिये उसने जमा हुआ शिचि* खरीदा। पहली बार दाँत गड़ाते ही बर्फ के कणों से उसका मुँह भर गया, उसके दाँत

* चीन का एक खास फल।

ठण्डक से जकड़े, फिर वह धीरे-धीरे उसके सीने में उतर गयी और उसे झुरझुरी लगने लगी। दो-चार कौर में ही उसने पूरा शिचि खा डाला। उसकी जीभ सुन्न हो गयी मगर दिल उमंग से भर गया था।

फिर वह तेजी से आनन्दी को ढूँढने चल दिया। उसके मन में उसी भीड़भाड़ वाली चाल, छोटे कमरे और अपनी प्रेयसी की तस्वीर बसी हुई थी। काश, वहाँ उड़कर पहुँचने के लिये उसके पंख होते! उसके साथ वह अतीत को भुला सकता और नई ज़िन्दगी की शुरुआत कर सकता था। अब तो वह श्री छाओ से मिलने जाने से पहले से भी ज़्यादा जल्दबाजी में था। श्री छाओ उसके दोस्त और मालिक थे—दोनों एक दूसरे की सहायता करते थे। आनन्दी महज दोस्त न थी, वह तो अपनी सारी ज़िन्दगी उसे देने को तैयार थी। वे दोनों एक ही नरक में फँसे हुए थे, अब दोनों अपने आँसू पोंछकर और हाथ में हाथ डाले मुस्कराते हुए आगे बढ़ सकते थे।

श्री छाओ के शब्दों ने उसको बहुत गहरे प्रभावित कर दिया था, मगर आनन्दी तो कुछ कहे बिना ही उसके दिल को छू सकती थी। उसने श्री छाओ को विश्वासपात्र बनाया था मगर आनन्दी के सामने तो वह वाकई दिल खोलकर रख सकता था और उसे वह सब बता सकता था जो किसी से कभी नहीं कहा जा सकता था। वह उसकी ज़िन्दगी ही बन चुकी थी, उसके बिना सब बेमतलब था। वह सिर्फ अपनी ज़रूरतें पूरी करने के लिये ही कड़ी मेहनत नहीं कर सकता था, उसे उसको उस छप्परनुमा कमरे से निकालना और अपने साथ-साथ सुथरे गर्म कमरे में, खुश, अच्छी तरह और प्यार के साथ दो नन्ही चिड़ियों की तरह रहने के लिये लाना चाहिए था।

वह अपने पिता और दो भाइयों की देखरेख करना बन्द कर सकती थी और उसे इसके बजाये उसके साथ रहते हुए उसकी मदद करनी चाहिए। अड़ छ्याङचि अपना पेट किसी न किसी तरह पाल सकता और दोनों लड़के भी किसी न किसी तरह गुज़ारा कर सकते थे, शायद रिक्शा चलाकर; मगर वह उसके बिना नहीं रह सकता था। उसे उसके शरीर और आत्मा दोनों की ज़रूरत थी और अपने काम धन्धे में भी उसकी मदद चाहिए थी। उधर आनन्दी को भी उस जैसे आदमी की ज़रूरत थी।

उसकी बेसब्री बढ़ने के साथ-साथ उसकी खुशी भी बढ़ती चली गयी। दुनियाभर की औरतों में एक भी ऐसी न थी जिसकी आनन्दी की तरह उससे बढ़िया जोड़ी बनती। यह सच था कि वह उसके सपनों की खालिस और बेदाग कुँवारी न थी लेकिन यही वजह तो थी जिसने उसे उसकी नज़रों में और ज़्यादा रहम की पात्र और उसे उसकी मदद करने योग्य बना दिया था। गाँव की सीधी-सादी लड़की कुमदनी की तरह सफ़ेद हो सकती थी, मगर उसमें आनन्दी जैसी योग्यता और प्रतिभा नहीं हो सकती थी। किसी भी तरह उसकी अपनी क्या हालत थी? वह भी तो दागी था। इसलिये दोनों की जोड़ी अच्छी मिल गयी थी, दोनों में से कोई दूसरे को नीची निगाहों से नहीं देख सकता था। वे दोनों ऐसे चटके हुए घड़ों की तरह थे जिनमें पानी ठहर

सकता था और एक दूसरे के अगल-बगल खड़े रहने के लायक थे।

फिर भी वह इसे एक आदर्श व्यवस्था के रूप में देखता था। कुछ देर तक इसी तरह खोये रहने के बाद वह आख़िरी कल्पनालोक से धरती पर आ गया। सबसे पहले उसे श्री छाओ से एक महीने की पेशगी तनख्वाह लेनी और आनन्दी के लिये रूईभरा लबादा और खूबसूरत जूते खरीदने चाहिए, और फिर उसे श्रीमती छाओ से मिलवाना होगा। नये कपड़े पहनकर सर से पाँव तक सजी-सँवरी वह अपने यौवन, तौरतरीक़ों और छवि से एकदम कमसिन दिखेगी, और श्रीमती छाओ उसे देखकर निश्चय ही खुश हो जायेंगी। इसमें कोई सन्देह नहीं था।

वह पसीने से तरबतर अपनी मंजिल पर पहुँचा। चाल की टूटी-फूटी ड्योढ़ी देखना बहुत लम्बे अरसे के बाद घर लौटने की तरह था। वह डाँवाँडोल दरवाज़ा, चरमराती दीवार और ड्योढ़ी की छत पर पीली घास, सब प्यारे लगे।

वह अन्दर गया और सीधे आनन्दी के कमरे की ओर बढ़ा। बिना खटखटाये या आवाज दिये उसने ठेलकर दरवाज़ा खोल दिया और तुरन्त चौंककर पीछे हट गया। एक अधेड़ औरत खाङ पर बैठी थी। कमरे में कोई अँगीठी न थी, इसलिये उसने एक फटी-पुरानी रजाई ओढ़ी हुई थी। श्याङचि जड़वत दरवाज़े के बाहर ही खड़ा रह गया।

"क्या है?" उसने कमरे के भीतर से ही कहा। "क्या अपने बाप के मरने की खबर बताने आये हो जो इस तरह घुस आये? किसे खोज रहे हो?"

श्याङचि का कुछ भी कहने का मन नहीं हुआ। अचानक उसे और पसीना आना बन्द हो गया था। टूटे-फूटे दरवाज़े के सहारे खड़ा वह उम्मीद छोड़ने का हौसला नहीं कर पा रहा था।"मैं आनन्दी को खोज रहा हूँ।"

"मैं उसे नहीं जानती! और फिर कभी किसी, आनन्दी हो या कोई और, को खोजने जाओ तो अन्दर आने के पहले आवाज़ देना!"

वह चाल के दरवाज़े के बाहर बड़ी देर तक बैठा रहा, उसका दिमाग़ खाली था। वह भूल ही गया था कि वह किस काम से आया था। थोड़ी देर बाद उसे कुछ समझ आने लगा और उसे अपने दिल में घूमने वाले फानूस पर बनी क़ाग़ज़ी औरत के बेमतलब चक्कर काट रहे होने की तरह आनन्दी आगे-पीछे आती जाती नज़र आने लगी। वह अपने और उसके बीच सम्बन्ध को भूल ही गया लगता था। फिर धीरे-धीरे वह आकार सिमटकर छोटा होता गया, वह फिर महसूस करने लायक हो गया और उसके दिल में दर्द हुआ।

किसी बात का महत्व अनिश्चित होने पर लोग हमेशा बेहतरी की उम्मीद करते हैं। श्याङचि ने अन्दाज़ा लगाया कि शायद आनन्दी ने घर बदल लिया था, बस यही। यह तो उसका ही कसूर था। वह अक्सर उससे मिलने क्यों नहीं आता रहा था? शर्म ने उसे अपनी गलती सुधारने की कोशिश करने के लिये प्रेरित किया।

पहले कुछ पूछताछ करना बेहतर था। फिर अन्दर लौटकर उसने एक पुराने पड़ोसी से पूछा मगर कोई निश्चित जानकारी न मिली। उसने आशा फिर भी नहीं छोड़ी। भूख लगी थी पर खाने के लिये कहीं नहीं गया और उसने अड़ छ्याङचि या आनन्दी के दोनों भाइयों को खोजने का फैसला किया। वे तीनों कहीं सड़कों पर ही होंगे और खोजने में मुश्किल नहीं होनी चाहिए।

उसने रिक्शा अड्डों पर, चायघरों में, चालों में सभी जगह यही पूछताछ की। टाँगों में दम रहने तक वह यही पूछता चलता गया, मगर दिन ढल जाने पर भी उसे कोई खबर न मिली!

रात घिरने पर वह रिक्शा अहाते में लौट आया। मारे थकान के वह पस्त था और अपने सोच में डूबा हुआ था। निराशा के पूरे दिन के बाद अब वह और आशा करने की हिम्मत न कर सका। गरीब बड़ी आसानी से मरते और उतनी ही आसानी से भुला भी दिये जाते हैं। क्या आनन्दी मर तो नहीं चुकी थी? नहीं मरी, तो कहीं उसके बाप ने उसे फिर कहीं दूर रहने वाले के हाथों बेच तो नहीं दिया था? यह काफ़ी सम्भव था और मृत्यु से भी बदतर!

शराब और तम्बाकू एक बार फिर उसके दोस्त बन गये। अगर वह तम्बाकू न पीता तो सोच कैसे पाता? और अगर शराब न पीता तो सोचना बन्द कैसे कर पाता?

तेईसवाँ अध्याय

वह घोर निराशा में सड़क पर चला जा रहा था कि अचानक बछेड़े के बाबा से मुलाकात हो गयी। वह बुजुर्ग अब रिक्शा नहीं चलाते थे और उनके कपड़े पहले से कहीं ज़्यादा तार-तार और चीथड़ा हो रहे थे। एक कन्धे पर वह बबूल की बहंगी उठाये हुए थे। उसके एक सिरे पर मिट्टी की चाय की एक बड़ी केतली और दूसरे सिरे पर एक टूटी सी गोल डलिया लटकी हुई थी। डलिया में तवे पर पकायी कुछ मोटी रोटियाँ, कुरकुरे पुए और एक बड़ी ईंट रखी हुई थी। वह श्याङचि को पहचान गये।

थोड़ी बहुत बातचीत के बाद बुजुर्ग ने श्याङचि को बताया कि छह महीने से ज़्यादा पहले बछेड़ा मर गया और उन्होंने अपना खड़खड़िया रिक्शा बेच डाला था। अब वह हररोज़ चाय, रोटी और कुरकुरे पुए रिक्शा अड्डों पर बेचने जाते थे। वह भले ही पहले की ही तरह विनम्र और स्नेहशील थे, मगर उनकी कमर पहले से और ज़्यादा झुक गयी थी, हवा में आँखों में पानी भर जाता था। और पपोटे रोते रहने की तरह लाल थे।

श्याङचि ने उनसे एक प्याला चाय खरीदी और संक्षेप में अपना दुखड़ा सुनाया।

"तुम समझते हो कि तुम अकेले कमा-धमा लोगे?" बुजुर्ग ने टिप्पणी की। "कौन नहीं ऐसा सोचता? मगर कौन कर पाया है?" अपने जमाने में मैं मोटा और भला था मगर अब मुझे देखो! ताकतवर? लोहे का बना होने पर भी कोई आदमी हमारे रहने के इस बड़े पिंजड़े में से बच नहीं निकल सकता। ईमानदार? उसका फ़ायदा ही क्या है? कहा जाता है कि भला करने वालों को पुरस्कार मिलता है और बुरा करने वालों को सजा भुगतनी पड़ती है। क्या तुम्हें इसमें विश्वास नहीं? अपनी जवानी में मैं सचमुच उदार था और दूसरों के लिये कुछ भी करने को तैयार रहता था। इसका कोई फ़ायदा हुआ? रत्तीभर भी नहीं! मैंने लोगों को डूबने और फाँसी लगाकर मरने से बचाया है। इसका मुझे क्या ईनाम मिला? कुछ नहीं! मैं तुम्हें बताता हूँ, मेरी हालत यह हो गयी है कि किसी भी दिन ठण्ड के मारे मेरी जान निकल सकती है।

"मैं जानता हूँ कि हम मेहनतकशों के लिये अकेले अपना भाग्य बना पाना दुनिया में सबसे मुश्किल काम है। अकेले आदमी का भविष्य ही क्या है? कभी टिड्डा देखा है? वह अकेले बड़ी लम्बी छलाँग लगा लेता है, मगर किसी छोटे बच्चे को उसे पकड़ने और बाँधने दो और वह उड़ भी नहीं सकता। लेकिन उनका पूरा गिरोह हो तो क्या कहने! वे कुछ दिनों में ही कई एकड़ फसल चाट जाते हैं और कोई कुछ नहीं कर पाता! क्या नहीं? अपने समूचे अच्छे दिल के बावजूद मैं एक छोटे पोते को भी न बचा पाया। वह बीमार पड़ा और मेरे पास अच्छी दवा के लिये धन न था। मैंने उसे अपनी बाँहों में मरते हुए देखा। छोड़ो, क्या फायदा?... चाय! चाय वाला! है कोई गरमागरम चाय पीने वाला?"

अब श्याङचि वाकई समझ गया था। उसके तमाम लानत भेजने से भी मालिक ल्यू, श्रीमती याङ या जासूस सुन को सजा न मिलती। जहाँ तक उसका अपना सवाल था, वह भरसक कोशिश के बावजूद कुछ नहीं कर सकता था। बिना मदद के अकेला वह बुजुर्ग के बताने के मुताबिक उसी टिड्डे की तरह था जिसे किसी बच्चे ने पकड़ा और बाँध रखा था। अब उसके पंख उसकी मदद कैसे कर सकते थे?

अब उसका मन छाओ परिवार में जाने का नहीं था। अगर वह जाता तो अपनी ओर से पूरी मेहनत करता और फायदा क्या होता? तब फिर बेतरतीब ही क्यों न चला जाता? खाने के लिये कुछ न रहे तो रिक्शा निकालो; दिनभर के लिये काफ़ी रहे तो आराम करो और कल आने पर ही कल की सोचो। न सिर्फ यह एक रास्ता था बल्कि यही एकमात्र रास्ता था। रिक्शा खरीदने के लिये बचत करने का मतलब उसके छीने जाने का बन्दोबस्त करना था, तब क्यों झंझट में पड़ना? जब तक हो सके तब तक क्यों न मौज करो?

अगर वह आनन्दी को खोज पाता तो वह जान लड़ाकर मेहनत कर सकता था, अपने लिये न सही तो उसी की खातिर। मगर उसे तो खोज न पाया था, इसलिये किसके लिये कोशिश कर रहा था? वह पोता छिन गये इसी बुजुर्ग की तरह ही था। उसने बुजुर्ग को आनन्दी के बारे में बताया, क्योंकि उसे लगा कि यह उसका सच्चा दोस्त था।

"है कोई गरम चाय लेने वाला?" बुजुर्ग ने हाँक लगायी। फिर उसने कहा, "जहाँ तक मैं समझता हूँ उसके सामने दो ही रास्ते थे। अड़ छ्याङचि या तो उसे किसी के रखैल बना पाने के लिये या फिर उसे तवायफ बनने के लिये सफ़ेद बँगले में बेच चुका है। बहुत सम्भव है कि दूसरा ही मामला होगा। क्यों? क्योंकि अगर तुम्हारे कहने के मुताबिक वह पहले ब्याहता रही थी तो उसे चाहने वाला कोई दूसरा आदमी मिलना आसान नहीं है। पुरुष 'अक्षतयोनिनियों' को रखैल बनाना चाहते हैं। इसलिये ज़्यादा मुमकिन है कि वह सफ़ेद बँगले में होगी। मैं तक़रीबन साठ का हो गया हूँ, मैंने बहुत दुनिया देखी है। अगर कोई तगड़ा जवान रिक्शावाला कुछ दिनों तक रिक्शा अड्डों पर न दिखायी दे तो समझ लो कि या तो उसे मासिक नौकरी मिल गयी या फिर वह पीकर सफ़ेद बंगले में बेहोश पड़ा है। और अगर रिक्शावालों की औरतें या बेटियाँ अचानक गायब हो जायें तो चाहो या न, वे वहीं गयी होती हैं। हम अपना पसीना बेचते हैं, हमारी औरतें अपने जिस्म बेचती हैं। मैं जानता हूँ, मैं इसे अच्छी तरह जानता हूँ! तुम वहीं जाओ और खोजो। मैं उम्मीद करता हूँ कि वह वहाँ न हो, मगर... चाय ले लो! गरम चाय!"

श्याङचि एक ही साँस में दौड़ता हुआ शीचिमन दरवाज़े के बाहर निकल गया।

क्वानश्याङ से आगे बढ़ने पर देहात में तबाही ने उसका ध्यान अपनी ओर खींचा। सड़क के किनारे पेड़ नंगधड़ंग थे, उनकी टहनियों पर एक भी पंछी न था। सूखे पेड़, सूखी धरती और मैले कुचैले मकान मटमैले आकाश के नीचे दूर तक खामोश फैले हुए थे। दूरी पर ठण्डी नंगी पश्चिमी पहाड़ियाँ दीखती थीं। रेललाइन के उत्तर में एक जंगल था और उसके किनारे कुछ छोटे मकान थे। श्याङचि ने अनुमान किया कि ये मकान ही सफ़ेद बँगला होने चाहिए। पेड़ों के बीच सन्नाटा छाया हुआ था। थोड़ा और उत्तर में जाकर वानशङयुवान के बाहर दलदल में सूखे नरकटों और घासों के झुरमुट थे।

मकानों के बाहर कोई न था, कहीं भी कोई आवाज नहीं सुनायी पड़ती थी। उस घोर खामोशी से वह सन्देह में पड़ गया कि क्या वाकई वही बदनाम सफ़ेद बँगला था। साहस जुटाकर वह उसकी ओर बढ़ा। हर दरवाज़े पर चमकदार नयी पीली चिकें लटकी हुई थीं। उसने सुन रखा था कि यहाँ गर्मियों में औरतें छातियाँ दिखाती हुई राहगीरों को पटाया करती थीं। उनके "मेहमान" गन्दे गाने गाते हुए उनके पास आते और इस तरह वे दिखाना चाहते कि वे अनाड़ी नहीं थे। तो अब यहाँ इतनी खामोशी क्यों है? क्या वे जाड़ों में धन्धा बन्द कर सकती थीं?

वह अभी अचरज में ही पड़ा हुआ था कि उसके सबसे नज़दीक के दरवाज़े के

ऊपर टंगी चिक हिली और एक औरत का सिर नज़र आया। वह औरत बाघिन से इतनी मिलती-जुलती थी कि वह चौंक गया। "मैं आनन्दी को खोजने आया हूँ," उसने सोचा। "कैसी बदकिस्मती होगी अगर मुझे यहाँ उसके बजाये बाघिन मिले!"

"अन्दर आओ, भोंदू कहीं के!" उसने कहा। उसकी आवाज बाघिन जैसी न होकर फटी-फटी और घबरायी हुई सी थी। इससे उसे थ्येनछ्याओ में अक्सर जंगली जड़ी-बूटियाँ बेचने वाले एक बूढ़े की याद आ गयी।

उस औरत और एक छोटे से खाङ के अलावा कमरे में कुछ न था। खाङ पर चटायी भी न थी, मगर उसे गरम करने वाली धीमी आग ने कमरे में एक तुर्श बू भर दी थी। खाङ पर पड़ी एक पुरानी रजाई के किनारे उसकी ईंटों की तरह घिस जाने से चमकीले और चिकने नज़र आते थे। वह औरत चालीस साल की दीखती थी, उसके बाल और कपड़े उलझे-पुलझे और अनधुले थे। वह अस्तर लगा हुआ पायजामा और रूईभरी काली फतूही पहने हुई थी और उसने बटन भी बन्द नहीं किये हुए थे। श्यांङचि को अन्दर घुसने के लिये सर नीचा करना पड़ा और उसके घुसते ही औरत ने उसे अपनी बाँहों में घेर लिया। उसकी बटन बन्द की हुई फतूही खुल गयी और उसके दो बड़े-बड़े लटके हुए स्तन दिखायी देने लगे।

श्याङचि कमरे में सीधा खड़ा नहीं हो पा रहा था, इसलिए खाङ के किनारे पर ही बैठ गया। वह इस मुलकात से बेहद खुश था क्योंकि उसने लोगों को अक्सर "मैदे की बोरियाँ" उपनाम से पुकारी जाने वाली एक औरत की बातें करते हुए सुना था। यह वही होगी। उसका यह नाम उसके बड़े-बड़े स्तनों के कारण पड़ा था। उसने इधर-उधर की न हाँककर सीधे पूछा कि क्या उसने आनन्दी को देखा था। वह उसे नहीं जानती थी। मगर जब उसने उसका हुलिया बताया तो उसे उसकी याद आ गयी।

"हाँ क्यों, ऐसी एक लड़की थी। नौजवान थी और उसे अपने सफ़ेद-सफ़ेद दाँत दिखाते रहने की आदत थी। हाँ, ठीक है हम उसे 'रसभरी गुड़िया' कहा करती थीं।"

"वह किस कमरे में है?" श्याङचि की आँखें गुस्से से लाल हो गयीं।?

"वह? उसने तो काफ़ी पहले ही खुद को खत्म कर डाला!" मैदे की बोरियाँ ने बाहर इशारा करते हुए कहा। "उसने जंगल में फाँसी लगा ली थी!"

"क्या!"

"रसभरी गुड़िया आयी थी तो उसके दूसरों से ताल्लुकात बहुत अच्छे थे। लेकिन उसमें यहाँ की ज़िन्दगी बर्दाश्त करने का दम न था। एक दिन, दियेबाती के वक़्त—मुझे अच्छी तरह से याद है मैं दो बहनों के साथ दरवाज़े पर बैठी हुई थी—एक गाहक आया और सीधा उसके दरवाज़े की ओर बढ़ा। उसे हम लोगों के साथ बाहर बैठना पसन्द न था और इसी वजह से शुरू-शुरू में उसने मार भी खायी थी। मगर बाद में, उसकी पूछ होने लगी तो हम सब उसे अपने कमरे में अकेली बैठने देने लगे। असल

में उसके गाहक किसी और को चाहते ही न थे। उस दिन, खाना खाने में लगने वाले वक़्त में ही उसका गाहक निकला, और सीधे वहाँ जंगल में चला गया। हमने इसके बारे मे कुछ खास न सोचा और कोई उससे मिलने उसके कमरे में भी न गया। मादाम अपना धन उगाहने आयी तो उसने कमरे में एक आदमी को नंगधड़ंग गहरी नींद में सोये देखा। वह बुरी तरह धुत्त था। रसभरी गुड़िया उसके कपड़े लेकर भाग गयी थी। होशियार तो वह थी। अँधेरा न होता तो वह कभी न भाग पाती, मगर रात में उसने मर्द की पोशाक पहनकर हम सबको बेवकूफ़ बना दिया। मादाम ने झट चारों ओर उसकी खोज में लोग दौड़ाये। जंगल में घुसते ही उन्होंने उसे वहाँ लटकी हुई देखा। उन्होंने रस्सी काटकर उसे उतारा तो वह मर चुकी थी, मगर उसकी जबान ज़्यादा बाहर निकलकर नहीं आयी थी और वह भयानक भी नहीं लग रही थी। मौत में भी प्यारी थी! इतने महीने बीत गये हैं, मगर जंगल में रात के समय शान्ति रहती है और उसका प्रेत लोगों को डराने नहीं आता। वह सचमुच भली लड़की थी!..."

श्याङचि उसकी पूरी बात सुनने के लिये नहीं रुका, लड़खड़ाता हुआ बाहर आ गया। किसी तरह वह एक कब्रिस्तान में पहुँचा, उसके चारों ओर बड़ी सफाई से चीड़ के पेड़ लगे हुए थे। वहाँ कोई दर्जनभर कब्रें थीं। धूप भी मद्धिम हो गयी थी और पेड़ों के बीचोंबीच तो वह और भी मद्धिम थी। वह बिखरी हुई सूखी घास और चीड़ के फलों वाली ज़मीन पर बैठ गया। टहनियों पर कुछ कौओं के शोक में काँव-काँव कर रहे होने के अलावा सब शान्त था। वह अच्छी तरह जानता था कि आनन्दी वहाँ नहीं दफ़नायी गयी थी, फिर भी उसके मोटे-मोटे आँसू झर-झरकर बहने लगे। सब खत्म हो गया था, आनन्दी भी मर गयी और दफ़ना दी गयी थी! उसने अपनी ओर से पूरी कोशिश की थी और आनन्दी ने भी, फिर भी उसके पास बेकार आँसू ही बचे थे, और उसने तो फाँसी ही लगा ली थी। एक चटायी और इस उजाड़ में एक क़ब्र, मेहनत की ज़िन्दगी सिर्फ वहीं पहुँचाती थी।

रिक्शा अहाते में लौटकर वह दो दिन तक सुन्न पड़ा सोता रहा। वह अब छाओ के घर कभी नहीं जायेगा, उसने उन्हें कोई खबर भी न दी, क्योंकि श्री छाओ उसकी हिफ़ाज़त नहीं कर सकते थे। दो दिन बाद उसने रिक्शा बाहर निकाला। उसके दिमाग़ और आत्मा में खालीपन था। बुद्धि और आशा जा चुकी थी, वह सिर्फ पेट भरने के लिये मेहनत करता, फिर सो जाता। अब और आशा क्यों करे? शकरकन्द बेचने वाले की बहंगी के पास कुछ छिलकों और जड़ों के इन्तज़ार में बैठे एक मरियल आवारा कुत्ते को देखकर उसे लगा कि वह भी इस कुत्ते की तरह कुछ टुकड़ों के लिये संघर्ष कर रहा था। किसी भी तरह ज़िन्दा रहने का बन्दोबस्त हो जाने तक वह किसी और बात के बारे में क्यों सोचे?

अनुश्च

इस किताब का चीनी संस्करण कई बार पुनर्मुद्रित हो चुका है। वर्तमान संस्करण में मैंने कहीं-कहीं भद्दी भाषा और कुछ अनावश्यक वर्णन (इसमें पूरा चौबीसवाँ अध्याय भी शामिल है।—सम्पादक) हटा दिये हैं।

मैंने यह कहानी उन्नीस वर्ष पहले लिखी थी। इसमें मैंने मेहनतकश लोगों के प्रति अपनी सहानुभूति और उनके गुणों के लिये अपनी प्रशंसा अभिव्यक्त की थी, परन्तु मैं उन्हें अपने दुखों से मुक्त होने का अथवा भविष्य का कोई मार्ग नहीं दिखा सका था। वे दीनहीन अवस्था में रहते थे और अन्यायों की मार खाकर मरते थे। ऐसा इसलिये था कि मैं उन दिनों समाज की दीनता ही देख पाता था और क्रान्ति की आशा को नहीं जानता था, मैं किन्हीं क्रान्तिकारी सत्यों को पहचानता ही नहीं था। उन दिनों की कठोर सेंसरशिप भी मुझे सावधान किये रहती थी कि गरीबों को विद्रोह करने के लिये मैं न कहूँ। किताब छपकर आने के बाद मैंने कुछ श्रमजीवियों को कहते हुए सुना, "इस पुस्तक को पढ़कर मालूम होता है कि हम लोग सचमुच कितने दीनहीन और असहाय हैं!" यह सुनकर मुझे बहुत शर्म आयी।

आज उन्नीस वर्ष बाद श्रमजीवी अपने भविष्य के स्वयं मालिक बन चुके हैं। अब तो मैं भी क्रान्ति के विषय में कुछ समझने लगा हूँ और मैं कम्युनिस्ट पार्टी और अध्यक्ष माओ चतुङ (माओ त्सेतुङ) के प्रति बहुत कृतज्ञ हूँ। मेरी इस पुस्तक के वर्तमान पुनर्मुद्रण का निश्चित रूप से केवल यह लक्ष्य है कि लोगों को पुराने समाज के भयानक अन्धकार की याद दिलानी है और उन्हें यह बताना है कि हमें आज के आनन्द और आलोक को किस प्रकार सँजोकर रखना चाहिए। प्रतिक्रियावादियों को किसी भी दशा में दुबारा सत्ता में नहीं आने देना चाहिए। हमें क्रान्ति की उपलब्धियों की अपनी पूरी शक्ति लगाकर हिफ़ाज़त करनी चाहिए।

लाओ श

सितम्बर 1954
पेइचिङ

मैंने "रिक्शावाला" उपन्यास कैसे लिखा

"रिक्शावाला" लिखना शुरू करने का सही दिन और महीना मुझे ठीक से याद नहीं। मेरी सब पुस्तकों के साथ जापानी-आक्रामण-विरोधी युद्ध के पहले की मेरी सभी डायरियाँ चीनान के पतन के समय खो गयी थीं। इसलिये इसका सही पता लगा पाने का कोई तरीका ही नहीं रह गया है।

यह पुस्तक मेरे लेखकीय जीवन में एक मोड़ थी। इसे लिखना आरम्भ करने के पहले मैं अध्यापक था और केवल खाली समय में लिखा करता था। कहने का अर्थ यह है कि आम तौर पर मैं अपना सारा समय अध्यापन में लगाता और जाड़ों या गर्मियों की छुट्टियों में स्कूल बन्द हो जाने पर ही लिखा करता था। इस व्यवस्था से मैं तनिक भी सन्तुष्ट नहीं था, क्योंकि न तो मैं एकाग्रचित हो पाता और न किसी साल वास्तव में छुट्टियों में आराम कर पाता। मेरा स्वास्थ्य बिगड़ने लगा। सारा समय लेखन को देने का विचार मेरे मन में विदेश से पेइफिङ लौटने से ही था। अनेक अच्छे मित्रों के आग्रह करने पर शानतुङ में छीलू विश्वविद्यालय में अध्यापन कार्य स्वीकार करना पड़ा। मैंने छीलू विश्वविद्यालय से त्यागपत्र दिया तो मैं यह मुख्य उद्देश्य लेकर शाङहाए(शांघाई) पहुँचा कि क्या सारा समय लिखने को देना सम्भव है। उन दिनों पुस्तकें बहुत नहीं बिकती और इतनी सारी साहित्यिक पत्रिकाएँ भी नहीं थीं। शाङहाए में मित्रों ने मुझे यह जोखिम न उठाने की सलाह दी। इसलिये मैंने शानतुङ विश्वविद्यालय में एक नौकरी की पेशकश स्वीकार कर ली। मुझे अध्यापन पसन्द नहीं है। बात तो यह है कि मैं बहुत विद्वान व्यक्ति नहीं हूँ और इसीलिये कभी-कभी मुझे यह बहुत अटपटा लगता है। यदि मैं अच्छा अध्यापक होता तो भी मुझे उसमें लिखने जैसा आनन्द न आता। परिवार का पोषण करने के लिये मुझे बँधी-बँधाई मासिक आमदनी केवल भावनावश छोड़ देने का साहस न हुआ परन्तु अपने अन्तरतम में मैंने पूरा समय लेखन के आनन्द का अनुभव करने की अपनी इच्छा क्षणभर के लिये भी नहीं छोड़ी थी।

शानतुङ विश्वविद्यालय में दो वर्ष अध्यापन करने के बाद वहाँ कुछ गड़बड़ हुई और अपने कई सहयोगियों के साथ मैंने भी त्यागपत्र दे दिया। इस बार शाङहाए जाकर परिस्थिति को भाँपने और किसी से परामर्श करने के बजाय मैंने छिङताओ मे रहते हुए लिखकर रोजी कमाने का निर्णय किया। यह 1937 में जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध शुरू होने से एक साल पहले की बात थी। पूर्णकालिक लेखक के तौर पर "रिक्शावाला" मेरा पहला प्रयत्न था। मैंने तय किया था कि यदि

सफल हुआ तो मैं निश्चिन्त होकर प्रति वर्ष दो उपन्यास प्रकाशित करता रह सकूँगा। किन्तु यदि यह उपन्यास बेकार साबित हुआ तो मैं फिर अध्यापन करने लगूँगा, हो सकता है कि इतना निराश हो जाऊँ कि लिखना ही छोड़ दूँ। यही कारण है कि इस पुस्तक के लिखने का मुझे लेखक के रूप में अपने विकासक्रम की एक महत्वपूर्ण घटना के रूप में स्मरण रहता है।

मुझे जहाँ तक याद है 1936 के वसन्त में मैं एक मित्र के साथ शानतुङ विश्वविद्यालय में बैठा बातचीत कर रहा था कि उन्होंने मुझे एक रिक्शावाले के बारे में बताया जो पेइफिङ में उनकी सेवा किया करता था। इस व्यक्ति ने अपना निजी रिक्शा खरीद लिया था परन्तु उसे बेचने पर बाध्य हो गया था। ऐसी घटना तीन बार हुई और वह जीवनभर कंगाल ही रहा। तब मैंने कहा था, "इस विषय पर तो एक पुस्तक लिखी जा सकती है।" तो मेरे मित्र कहने लगे, "एक और रिक्शावाला एक बार कुछ सैनिकों के हाथों पड़ गया था। ऐसे विपत्ति से बचकर निकल आने का सौभाग्य उसे होगा, यह कौन जानता था। जब सैनिक स्थानान्तरण कर रहे थे तो वह तीन ऊँट साथ लेकर भाग निकला।"

मैंने कभी उन दोनों रिक्शावालों का नाम-धाम जानने का प्रयत्न नहीं किया। मुझे केवल वही बात याद रही जो मित्र ने उनके और ऊँटों के बारे में बतायी थी। इसी से मुझे "रिक्शावाला" नामक कहानी की प्रेरणा मिली। वसन्त बीता और ग्रीष्म आ गया, इसी बीच मैंने सीधी-सादी कहानी का विस्तार करने और उसका कोई एक लाख शब्दों का उपन्यास बना डालने का निर्णय किया।

इस अनिश्चय में पड़कर कि इस प्रेरणा का क्या उपयोग होगा मैं श्री छी थ्येहन से ऊँटों के जीवन और आचरण के बारे में पूछने लगा जो पेइफिङ के बाहर पश्चिमी पहाड़ियों में रहते थे और जहाँ तराई में अनेक परिवार ऊँट पालते थे। उनके उत्तरों से मुझे समझ में आया कि मैं रिक्शावालों पर अधिक ध्यान दूँ, ऊँटों को केवल एक साहित्यिक शिल्प के रूप में इस्तेमाल करूँ। ऊँटों पर अधिक ध्यान देने का अर्थ यह होता कि मुझे घास के मैदानों और ऊँटों के विषय में अधिक जानने के लिये विशेष यात्रा करनी पड़ती। परन्तु यदि मेरा मुख्य कथानक रिक्शावालों के बारे में होता तो मैं अपनी जगह से खिसके बिना उन्हें हर दिन देखता और पहचानता रह सकता था। इस प्रकार मैंने ऊँटों को और श्याङचि को मिला दिया, परन्तु ऊँटों का उपयोग तो केवल मेरे कथानायक का परिचय कराने भर का ही था।

अब प्रश्न यह था कि मैं श्याङचि को कैसा चित्रित करूँ? पहले मैंने अलग-अलग प्रकार के रिक्शावालों का अध्ययन किया ताकि उनमें उसका क्या स्थान होगा यह जान सकूँ। यह करने के बाद मैं दूसरे प्रकार के रिक्शावालों का प्रसंगवश वर्णन कर देता और श्याङचि उसका केन्द्र बना रहता, बाकी सब गौण हो जाते। इस तरह मैंने न केवल अपने कथानायक को पा लिया बल्कि उसके सामाजिक परिवेश को भी

जान लिया। इससे वह नायक और अधिक वास्तविक बन गया। मेरी दृष्टि पूरा समय श्याङचि पर केन्द्रित थी यद्यपि मैं औरों के विषय में भी लिख रहा था। यह शैली मैंने श्याङचि का चरित्र उभारने के लिये अपनायी।

श्याङचि के साथी रिक्शावालों के अलावा मैंने रिक्शा मालिकों पर भी विचार किया जिनसे श्याङचि रिक्शा किराये पर लेता था और उन व्यक्तियों की भी कल्पना की जो रिक्शे पर बैठते थे। ऐसा करने से मैं रिक्शावालों के संसार का विस्तार कर सका। मगर ये लोग कहानी में केवल इसलिये थे कि यह श्याङचि की कहानी थी। मैं तुला हुआ था कि किसी को भी श्याङचि की जगह कथानायक नहीं बनने दूँगा।

जब मैंने अपने पात्रों को पकड़ लिया तो कथानक बनाना अपेक्षतया आसान हो गया। चूँकि श्याङचि ही मुख्य पात्र है इसलिये कहानी रिक्शा चलाने के इर्दगिर्द ही रहनी चाहिए। अगर बाकी सब लोग किसी न किसी प्रकार रिक्शा से जुड़े रहते हैं तो श्याङचि का ठीक-ठीक वह स्थान बन जाता जो मैं चाहता था।

हालाँकि मेरे पात्र और घटनाएँ तब रिक्शावालों से घनिष्ठ रूप से जुड़ी हुई थीं, पर मुझे लगता था कि उनके जीवन का मेरा वर्णन कहीं न कहीं कमज़ोर है। मैंने अपने मन में सोचा, "जब रेतीला तूफ़ान आता है तो रिक्शावालों को कैसा लगता होगा? या जब मूसलाधार वर्षा होती है तो उन्हें क्या अनुभव होता है?" यदि मैं इस अनुभव को विस्तार से बता पाऊँ तो मेरा नायक और अधिक वास्तविक हो जायेगा। मैंने सोचा उसका जीवन अवश्य ही एक अन्तहीन यंत्रणा होगा। इस यंत्रणा में उसका आधे पेट भोजन करना भी शामिल होगा और आँधी-पानी से उसकी पीड़ा भी शामिल होगी।

फिर मैंने सोचना शुरू किया कि औरों की भाँति रिक्शावाले की भी रोटी से अलग भी कुछ समस्याएँ होंगी। उसके अपने आदर्श और कामनाएँ होंगी, परिवार और बच्चे होंगे। इन समस्याओं से वह कैसे निपटता होगा। निपट भी कैसे पायेगा? इस तरह मैंने जो सीधी-सादी कहानी सुनी थी वह एक पूरे समाज को समेटती हुई विराट आकार वाली कथा बन गयी। मुझे यह आवश्यक जान पड़ा कि रिक्शावाले के पहनावे, बोली और हावभाव के बारीक ब्यौरे ही नहीं बल्कि उस व्यक्ति के आन्तरिक जीवन की भावनाओं को भी गहरा अध्ययन करके जानूँ। इससे मैं मानो नरक में झाँककर देखने को मजबूर हुआ। रिक्शावाले के बाहरी स्वरूप की एक एक बात उसके इतिहास और परिस्थितियों में से उत्पन्न होती हुई दिखायी दी। मुझे आवश्यक जान पड़ा कि मैं इन गरीब श्रमिकों के मन में समाज के प्रति जो कटुता है वह बताने के पहले इन लोगों की जड़ों तक पहुँचूँ।

1936 के वसन्त से लेकर ग्रीष्म तक मैं पागलों की तरह सामग्री जुटाता परिश्रम करता रहा। अनेक बार मैंने श्याङचि के जीवन और यहाँ तक कि उसके स्वरूप में भी परिवर्तन किया, क्योंकि मेरी जमा की हुई सामग्री में परिवर्तन होता तो मेरा नायक

भी बदलता।

उस वर्ष ग्रीष्म में मैंने शानतुङ विश्वविद्यालय से त्यागपत्र दिया तो मैं श्याङचि की कथा लिपिबद्ध करने लगा। मैंने कथानक पर विचार करते हुए काफ़ी लम्बा समय लगा दिया था और काफ़ी अधिक मात्रा में सामग्री जमा कर ली थी, इसलिये जब कागज पर कलम चलाने का समय आया तो मुझे कोई कठिनाई नहीं हुई। "रिक्शावाला" के धारावाहिक रूप की पहली किस्त जनवरी 1937 में "य्वीचओफ़ङ" नामक पत्रिका में प्रकाशित हुई, उस समय उपन्यास ठीक-ठीक पूरा नहीं हुआ था यद्यपि मैं पूरी कहानी की रूपरेखा बना चुका था और मैं जानता था कि वह कितनी लम्बी रहेगी। उस रूपरेखा में इतने ब्यौरे मौजूद थे कि मैं उसका अन्त देख सकूँ। यदि ऐसा न होता तो मैं किस्तों में उसे छापने का कभी साहस न करता। जब वह लिखने की प्रक्रिया जारी थी, मैंने ग्रीष्म के आरम्भ में उपन्यास समाप्त कर डाला, उसमें चौबीस अध्याय थे। पत्रिका प्रतिमास दो अध्याय छापती थी, इसलिये पूरे एक वर्ष की ठीक-ठीक मात्रा में सामग्री हो गयी थी।

उपन्यास समाप्त करते ही मैंने पत्रिका के सम्पादकों को बताया कि अभी तक मैंने जो कुछ लिखा है उसमें सबसे अधिक आनन्द देने वाला यही उपन्यास है। बाद में जब यह पुस्तक के रूप में छपा तो प्रकाशक ने मेरे यही शब्द परिचय में छाप दिये। मैं इससे इतना प्रसन्न क्यों था? एक तो इसलिये कि इसकी कथा मेरे मन में बहुत समय से बैठी हुई थी और मैंने काफ़ी सामग्री जमा की थी, जिससे लिखना आरम्भ करने पर सटीक शब्द आते गये। मेरी कलम विषयवस्तु से न हटी, न डगमगायी, कोई भरती भी नहीं की गयी। दूसरे, मैंने इसी लेखन के साथ पूर्णकालिक लेखक बनना आरम्भ किया था और यह बात मेरे मन में बैठी हुई थी, यद्यपि मैं दिनभर में एक या दो हज़ार शब्द से अधिक नहीं लिख पाता था परन्तु जब मैं कलम रखता तब भी वास्तव में रुकता नहीं बल्कि कहानी को अपने मन में गढ़ता जाता। गहराई से सोचने से कलम खून, पसीने और आँसू की सृष्टि करती है। तीसरे, मैंने शुरू से ही तय कर रखा था कि अलंकार को छोड़कर गम्भीर शैली पर ध्यान दूँगा। आम तौर से जब कभी परिहास का अवसर आता तो मैं तुरन्त उसे पकड़ लेता। कभी-कभी जब किसी विषय में वास्तव में कोई हास्यास्पद बात न होती तब भी मैं उसे थोड़ा सा हास्यास्पद बनाने के लिये मज़ाकिया भाषा इस्तेमाल कर लेता। शायद ऐसा करने से भाषा सजीव और रोचक बनती है परन्तु कभी-कभी ऐसा ही करने से वह काफ़ी ऊबाऊ भी बन जाती है। यह समस्या "रिक्शावाला" में नहीं उठी। यह हास्य से एकदम रिक्त भी नहीं है, और उसमें जो हास्य है वह कथा से ही निकला है, जानबूझकर उसमें घुसेड़ा नहीं गया है। मेरे इस प्रयोग ने मेरी शैली को किंचित बदल दिया। मैंने सीखा यदि मेरे पास अच्छी सामग्री है और कहने को बहुत कुछ है तो मैं बिना हास्य की शरण लिये ही सफल हो सकता हूँ। चौथे, एक बार मैंने हास्य पर निर्भर न रहना तय कर लिया तो अपने आप भाषा सरल और सीधी-सादी और किसी शान्त झील की तरह निर्मल हो गयी। इस उपलब्धि के लिये मैंने सरलता की खोज में ऊबाऊ न हो जाने का संकल्प किया। संयोगवश इसी समय मेरे अच्छे मित्र कू शिच्युन ने मुझे पेइचिङ(पेइफिङ) की बोली के अनेक शब्द और मुहावरे जुटा दिये, जिन्हें लिखना मुझे शुरू में असम्भव जान पड़ता था। इसके पहले मैं अपने लेखन में इनका प्रयोग करने से मन मारकर कतराता था, क्योंकि मैं सोचता था कि वे क़ागज़ पर उतारे ही नहीं जा सकते। परन्तु अब श्री कू की सहायता से मेरी भाषा बोलचाल के मुहावरे को सिद्ध करके स्वयं समृद्ध हो गयी और सीधी-सरल भाषा में ताजगी और जीवन्तता आ गयी तथा पाठकों को वह अधिक प्रामाणिक जान पड़ने लगी। यही कारण है कि "रिक्शावाला" को पढ़कर सुनाया जा सकता है; उसकी भाषा सजीव है।

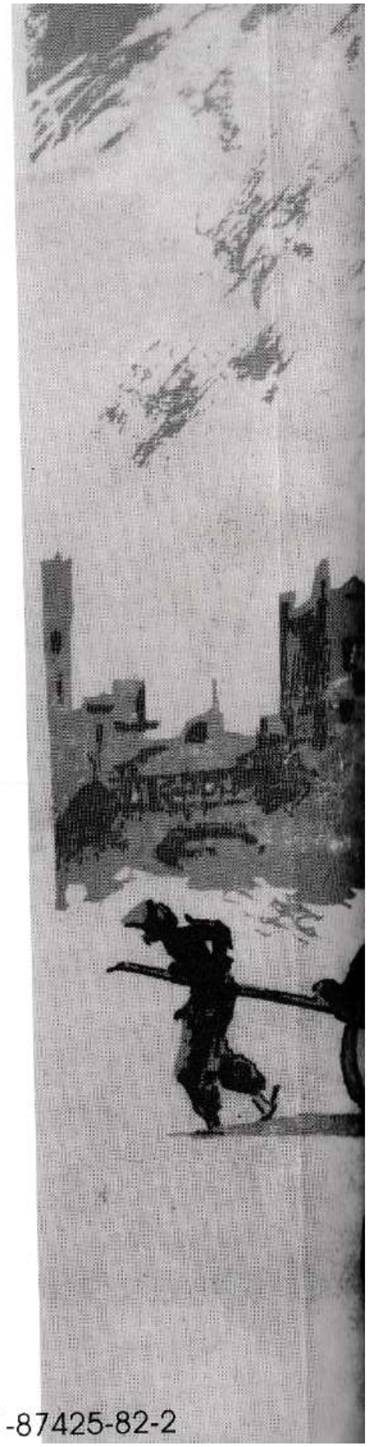
निश्चय ही पुस्तक में अनेक दोष है। मैं स्वयं उसके हठात् अन्त से प्रसन्न नहीं हूँ, क्योंकि यह किस्तों में प्रकाशित हो रही थी, मुझे पूरे चौबीस अध्याय ही लिखने थे। वास्तव में मुझे दो-तीन अतिरिक्त अध्याय लिखने चाहिए थे, तभी कहानी पूरी होती। जो हो अब इस विषय में कुछ नहीं किया जा सकता, क्योंकि एक बार प्रकाशित हो जाने पर किसी रचना को संशोधित नहीं करना चाहता।

"रिक्शावाला" का भाग्य आरम्भ में बहुत अच्छा नहीं था। उसका केवल आधा अंश पत्रिका में छपा था कि 7 जुलाई को जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध आरम्भ हो गया। मुझे मालूम नहीं कि इस पत्रिका का शाङ्हाए में प्रकाशन कब बन्द हुआ, मुझे यह भी नहीं पता कि "रिक्शावाला" आरम्भ से अन्त तक धारावाहिक रूप में छपा भी या नहीं। बाद में जब य्वीचओफङ प्रकाशन-गृह क्वाङ्चओ आ गया तो सबसे पहला काम उन्होंने यह किया कि इसे पुस्तक के रूप में छापा। परन्तु मुझे बताया गया कि पुस्तक छप भी न पायी थी कि यह नगर शत्रु के हाथों में पड़ गया और उसी के साथ "रिक्शावाला" शत्रु के हाथों पड़ गया। प्रकाशन-गृह ने फिर स्थान बदला। बाद में वह क्वेइलिन आ गया और पुस्तक दुबारा प्रकाशित करने का अवसर मिला। परन्तु डाक की व्यवस्था बिगड़ी होने के कारण वह छुङछिङ और छङ्तू इन दोनों नगरों में बहुत दिखायी नहीं दिया। बाद में जाकर जब सांस्कृतिक जीवन प्रकाशन-गृह ने इसका सर्वाधिकार खरीद लिया तब इन दोनों नगरों में पुस्तक की प्रतियाँ अधिक संख्या में दिखायी दीं।

अब लगता है कि "रिक्शावाला" के भाग्य का उदय हो चुका है। मित्रों से मालूम हुआ है कि इस पुस्तक का अनुवाद रूसी, जापानी और अंग्रेज़ी भाषा में हो चुका है।

1945





रिक्शावाला चीन के बहुसर्जक आधुनिक लेखक लाओ श (1899-1966) का अत्यन्त हृदयस्पर्शी और सफल उपन्यास है। वह चरित्रों के जीते-जागते चित्रण और भाषा के संयत तथा जीवन्त प्रयोग के लिये सम्भवतः सर्वप्रसिद्ध हैं।

यह उपन्यास अपने मुख्य पात्र रिक्शावाले की तरह के आम लोगों की दुखद हालत के बारे में लेखक की सीधी जानकारी पर आधारित है। यह पहले धारावाहिक रूप में य्वीचओफ़ङ पत्रिका में प्रकाशित हुआ लेकिन जापानी आक्रमण के ख़िलाफ युद्ध के कारण क़िताब के तौर पर इसके प्रकाशन में देर हुई। आखिरकार जब यह सामने आई तो देश-विदेश में इसका समान उत्साह से स्वागत हुआ।

1957 में रिक्शावाला का नाट्य रूपान्तर हुआ और फिर उसके बड़े पैमाने पर प्रदर्शन हुए।

इसी उपन्यास पर आधारित फ़िल्म ''रिक्शावाला'' को 1982 की विशिष्ट फ़िल्म के तौर पर संस्कृति मंत्रालय ने पुरस्कृत किया। 1983 में चीन का प्रतिष्ठाजनक ''सुनहरा मुरगा'' पुरस्कार भी ''रिक्शावाला'' को ही दिया गया।

परिकल्पना प्रकाशन

ISBN:81-87425-82-2